मात्र
एक
ही

समर्थन

जब मिशनरी आन्दोलन नेतृत्व के बारे में बाते की जाती है, तब मैंने अक्सर यही कहा है कि कर्टिस सार्जेंट हम सब में श्रेष्ठ है। उनके पास प्रतिभाशाली स्तर की बुद्धिमत्ता, एकाग्र ध्यान वाले, प्रमाणिक मानवता, और ज्वलंत जूनून है। इस ज्वलनशील संयोजन का परिणामपुरे विश्व में राज्य का आन्दोलन है। ये पुस्तक साधारण, और बुनियादी लग सकती है, लेकिन इसके द्वारा आप बेवकूफ न बन जाए। इस छोटी सी पुस्तक में उसने जो कुछ लिखा है, वह वास्तव में शिष्यों को बनाने की कुंजी है। यह पुस्तक विशव को बदल देने में एक खिड़की की तरह है, इस कारण इस पर ध्यान दे।

नील कोल
ग्लोबल आर्गेनिक चर्च आन्दोलन के उत्प्रेरक और कई पुस्तकों के लेखक जिनमे ये भी शामिल है आर्गेनिक चर्च, *प्राइमल फायर, और राइजिंग टाइड्स*

मैं जन्तु हूँ कि कर्टिस सार्जेंट का वैश्विक मिशन पर किसी और से भी कहीं अधिक प्रभाव पड़ा है। क्यों? *मात्र एक ही* एक मनुष्य के हृदय और सोच को प्रकट करती है, जो पूरी तरह यीशु के राज्य के लिए बिक चूका है और-पूरी तरह भावुक और समर्पित है। मैंने अपने आप को पूर्ण रूप से प्रेरित, दोषी, और गहंन रूप से चुनौती पूर्ण पाया। यदि आपकी लालसा परमेश्वर के राज्य का विस्तार पूरी दुनिया में देखने की है, तो मैं आपको सलाह देना चाहूँगा कि न केवल इस पुस्तक को पढ़े, बल्कि इसके सिद्धांतों को आपके जीवन को बदलने दे।

फ़ेलिसिटी देल
के लेखक *एन आर्मी ऑफ आर्डिनरी पीपल* और *स्माल इज बिग* के सहलेखक!

कर्टिस सार्जेंट ने व्यवहारिक धारणाओं और संसाधनों को इकठ्ठा करने का अद्भुत काम किया है, जो आपके विश्वास को व्यवहार में लाने की चुनौती देगा। यह परमेश्वर के साथ आपके भीतर शांत और क्रांतिकारी बदलाव लायेगा।

पॉल एश्लेमैन
प्रेसिडेंट, फिनिशिंग द टास्क और जीसस फिल्म प्रोजेक्ट

मैं कर्टिस सार्जेंट को अत्याधिक बुद्धिमान और सुदृढ़ बुद्धि वाले व्यक्तिगत रूप में व्यक्तिगत रूप से कई वर्षों से जानता हूँ। फिर भी कर्टिस में स्वयं और दूसरो के लिए मसीह को सबसे ज्यादा ढूढने और उसकी आज्ञा मानने की अतृप्त इच्छा है, जो इस महत्वपूर्ण पुस्तक को संचालित करती है। कर्टिस पढने वालो को हर बात में मसीह पर सम्पूर्णता के लिए करना चाहते है। कर्टिस तात्कालिकता और ध्यान करने की विशिष्टता के साथ लिखते है, जैसे हमारा जीवन और अनंत काल का प्रभाव परमेश्वर की योजना की हमारी समझ के संतुलन पर टिका हुआ है। वह करते हैं। मैं आपको चुनौती देना चाहूँगा कि आप इस पुस्तक की सामग्री पर ध्यान दे।

जॉन हिरेमा
फाउन्डर और प्रेसिडेंट, बिगलाइफ

बाइबल का सत्य क्या ही सोने की खान है। यह परमेश्वर के साथ आपके घनिष्ठ सम्बन्ध, परमेश्वर के लोगों के साथ आपकी एकता और परमेश्वर के राज्य पर आपके प्रभाव को बढाने के शानदार और व्यवहारिक ज्ञान से भरा है।

डैन हित्ज़हुसेन
निदेशक, इस्साकार इनिशिएटिव, और पूर्व अंतर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, ई3 पार्टनर्स

मात्र एक ही किसी तरह परमेश्वर के लिए "होने" और "करने" के बीच सही सम्बन्ध का पता लगता है। मेरा मानना है कि ऐसा इसलिए है, क्योंकि पुस्तकों का लेखक उन पड़ावों में से गुज़रा है। *मात्र एक ही* वास्तव में यह समझाने पर ध्यान केन्द्रित नहीं करती है कि चेला बनाने का आन्दोलन

नीतिगत रूप से कैसे लाया जाये। लेकिन मुझे विश्वास है कि यदि हममें से अधिक से अधिक लोग इस पुस्तक में दिए गए निर्देशों का पालन कर सके, तो आन्दोलन की धुन बढ़ जाएगी। ऐसा इसलिए है क्योंकि सूत्रों और शीघ्रता से समाधान होने वाली युक्तियों पर ध्यान केन्द्रित करने के बजाय, यह पुस्तक इस बात पर ध्यान केन्द्रित करती है कि चेले कैसे बनाये। आपको इससे अधिक बाइबल-आधारित दृष्टिकोण नहीं मिलेगा। ना तो आपको कोई लेखक इतना विनम्र मिलेगा, न ही यीशु मसीह के पीछे चलने का प्रयास करने वाला, और न ही मनुष्य जाति को नरक से छिनने के लिए विवशता मिलेगा। यहाँ मुख्य कथन है: यदि आप यीशु जैसा बनना चाहते हो, बाइबल पढ़े-और इस पुस्तक को पढ़े।

डौग लुकास
टीम एक्सपेंशन के संस्थापक और अध्यक्ष

मात्र एक ही को पढने और लागू करने करने से आपके जीवन में जहाँ भी और जब भी आप जायेंगे, हमारे पिता के प्रेम को जाने और बोने का आनंद-से भरा रोमांच आपके भीतर फूट पड़ेगा!! कर्टिस और मैं विलाप कर हैं और फसल काट रहे है क्योंकि परमेश्वर ने हमारे जीवन को ख़ुशी से भरे उद्देश्य और चेलों की बढ़ोतरी के काम के लिए एक साथ जोड़ा है। जैसे ही आप *मात्र एक ही* के हर अध्याय को पढ़ते, सुनते, लागू करते, साझा करते है, समाचार, कैलेंडर, और प्रार्थना करते हैं, पवित्र आत्मा आपको हर कदम पर परमेश्वर में, उसके द्वारा और उसके लिए पूरी तरह से जीवन जीने के लिए अपनी ओर खींचेगा। तो इस कारण जैसे दाऊद ने 1 इतिहास 28:20, हियाव बाँध और दृढ होकर इस काम में लग जा। मत डर। में अपने पुत्र से कहा था, मैं आपसे कहता हूँ। "दृढ हो और हियाव रख"-और **बस ये करें!**

कुलीन मिलर
ग्लोबल अलायंस फॉर में प्रार्थना इग्नाइटर सैचुरेशन चर्च प्लांटिंग
और गोस्पेल मीडिया आउटरीच

कर्टिस सार्जेंट ने इसे फिर से किया! परमेश्वर में, उसके द्वारा और उसके लिए पूरी तरह से जीने का उनका दृष्टिकोण किसी भी मसीह चेले को परमेश्वर के राज्य को ध्यान में रखते हुए जीने की इच्छा रखने वाले लोगों को उत्साहित करता है। कर्टिस विचारशीलता के साथ गूढ़ ज्ञान देने का एक बड़ा काम करते है, जो पवित्रशास्त्र में गहराई से आये व्यवहारिक अनुभव और व्यक्तिगत अध्ययन से प्राप्त होता है। यह पुस्तक अविश्वसनीय रूप से व्यापक है, लेकिन अपने जीवन में लागू करने और दूसरों को भी सिखाने में बहुत आसान भी है। कर्टिस मेरे जीवन और दुनियाभर में असंख्य लोगों के जीवन में यीशु के साथ घनिष्ठता से चलने के लिए प्रेरणा का एक स्रोत हैं। जब आप यह पुस्तक पढेंगे तो मुझे उम्मीद है कि यही सच आपके जीवन में भी आएगी। सुनने, लागू करने और दूसरों के साथ साझा करने के लिएऔर वह सब कुछ करने के लिए जिसे करने हेतु आपको परमेश्वर ने बुलाया है, आप भी तैयार हो जाइए।

जेरेड नेल्म्स
उपाध्यक्ष, तिमोथी इनिशिएटिव

मात्र एक ही में, विश्वासी-स्थान की परवाह किये बिना, पालन-पोषण, शिक्षा, या संस्कृति-को उत्साहित और मार्गदर्शन से सशक्त बनाए जाते है जिससे कि अपने सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ मसीह का अनुसरण किया जाए। मुझे कर्टिस सार्जेंट के साथ महान आदेश के कार्य में एक साथ काम करने का सौभाग्य मिला है और मैं यह प्रमाणित कर सकता हूँ कि यहाँ लिखे गए शब्दों से यीशु मसीह, उसके अपने प्रेम और उसके दर्शन के प्रति आनंदमय समर्पण का फल है। हमें इस जोशीले भाई से बहुत कुछ सीखना है! इन प्रष्ठों में दिए गए पाठ, प्रार्थनाएँ, और व्यवहारिक संसाधन हमारे त्रिएक परमेश्वर के प्रति सम्पूर्ण समर्पित जीवन जीने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति के पढ़ने हेतु महत्वपूर्ण है, जो सदैव महिमा आदर और सामर्थ्य के योग्य है। और धन्यवाद, कर्टिस ने मसीह के वैश्विक देह के लिए बिना किसी कीमत को लिए इस नए उत्साहित करने वाले नए संसाधनों को उपलब्ध कराया। यह विश्वास का सच्चा कार्य और प्रेम का परिश्रम है!

कर्ट नेल्सन
अध्यक्ष, ईस्ट वेस्ट मिनिस्ट्रीज़

कर्टिस की विनम्रता और प्रभु यीशु के साथ लम्बी और बेहद करीबी यात्रा को यहाँ *मात्र एक ही* में कैद किया जाता है। अपनी बाइबल को अपने हाथ में लेकर धीरे धीरे पढ़े, क्योंकि इसकी सामग्री की गहराई आपके अनुमान से कहीं अधिक है। आपके पास यीशु के लिए सम्पूर्ण रीति से जीने के लिए एक मार्गदर्शिका है। व्यर्थ शब्द नहीं।

स्टीव पलारती
साउथ ईस्ट एशिया में आन्दोलन उत्प्रेरक

कर्टिस ने व्यक्तिगत चेले के लिए एक पासबान के दिल को, सम्पूर्ण दुनिया में बाइबल के अनुसार कलीसियाओं को बनते और बढ़ाते हुए देखने की आवश्यकता के लिए एक रणनीतिकार के दिमाग को और "शब्द को सही ढंग से विभाजित करने" के लिए एक धर्मशास्त्री की बुद्धि को व्यक्त किया है। इसी के साथ, उनका यह सबसे हालिया प्रयास उत्साही मसीह – चेले को यह जानने का मार्ग प्रदान करता है कि हमारा उद्धारकर्ता हम सभी के लिए क्या चाहता है: एक घनिष्ठ रिश्ता, जिसे, जब एक दूसरे के साथ संगति में खोजा जाता है, तब वह सचमुच में एक बदलाव लाने की क्षमता रखता है। सिर्फ पढ़े ही नही। अपितु इसका अनुभव भी करे, इसके माध्यम से चले, और देखे कि क्या यह आपको परमेश्वर का सम्मान करने के लिए अगुवाई करता है या नहीं जैसे कि वह चाहता है। परमेश्वर केवल यह नहीं चाहता कि आप उसे जाने, बल्कि वह यह भी चाहता है कि आप उसे संसार के सामने जिए भी।

डेविड पॉप
इस्सकर इनिशिएटिव और ग्लोबल चर्च प्लांटिंग नेटवर्क के पूर्व निदेशक

चेलापन अनुशासित बाइबल अध्ययन, गहरा प्रार्थना जीवन, विश्वासयोग्य आराधना और गवाही नहीं है; ये प्रक्रिया के संसाधन है, लेकिन चेलापन परमेश्वर के प्रति जागरूकता और समझ के प्रति आज्ञाकारिता में मसीह जैसा बनना केवल अपने आप का इंकार करना और समर्पण के द्वारा सीखना है। यह पुस्तक पाठकों को इन सत्यों को खोज करने और उन्हें अपनी जीवनशैली में लागू करने के बारे में सिखने की व्यक्तिगत यात्रा पर ले जाती है। यह लोगो के समूह को शिष्यता के लिए एक अद्भुत मार्गदर्शिका है, जो पारस्परिक जवाबदेही के साथ आगे बढ़ने के लिए, या दूसरों को सलाह देने वाले किसी व्यक्ति के लिए एक संसाधन के रूप में प्रतिबद्ध है।

जेरी रैंकिन
पूर्व अध्यक्ष, इन्टरनेशनल मिशन बोर्ड, साउथर्न बैप्टिस्ट कन्वेंशन

हम बदलते हुए और उथल-पुथल से भरे समय में जी रहे थे। कर्टिस की पुस्तक इस समय के दौरान चर्च के लिए एक भविष्यद्वाणी और लंगर है। यह गहन रूप से भक्ति से भरी हुई और आत्मिक होने के साथ साथ व्यवहारिक है, जिसे वैश्विक और अंतर्राष्ट्रीय अनुभव वाले अभ्यासकर्ता द्वारा लिखा गया है। ज़रूर पढ़े और बुद्धिमान बने।

फ्रैंक शैत्नर
जोनाथन प्रोजेक्ट इंटरनेशनल कोओर्डीनेटर, *द व्हील मॉडल* के लेखक

कर्टिस सार्जेंट दशकों से प्रभु यीशु मसीह के एक ईमानदार और विश्वासयोग्य अनुयायी रहे है। बिना संदेह के, वे इस पृथ्वी पर चेले बनाने वाले एक सफल व्यक्ति रहे है, जिन्होंने चेले बनाने के आन्दोलन को व्यक्तिगत रूप से प्रेरित किया है, या इसके लिए आंशिक रूप से ज़िम्मेदार रहे है। इस पुस्तक में, जो उनकी पहली पुस्तक है, उन्होंने आत्मिक रूप से फलदायी होने के रहस्यों को प्रकट किया है। वे सभी भक्ति, आज्ञाकारिता, और मसीह में बने रहने के इर्द गिर्द घूमते रहते हैं। कोई भी विश्वासी कभी भी कहीं भी उसके सिद्धांतों का पालन कर सकता है। मैं इस पुस्तक की पर्याप्त रूप से सिफारिश नहीं कर सकता। सोच समझ कर पढ़े, चुनौती का सामना करे और परमेश्वर की महिमा के लिए ज्यादा से ज्यादा फल पाने का आनंद ले।

डेविड सर्वेंट
संस्थापक, हेवेन्स फॅमिली

कर्टिस इस पुस्तक के सन्देश को जी कर दिखाया है। परमेश्वर और उसके खोये हुए लोगों के प्रति उनका जूनून उमड़ता है और दूसरों को भी प्रभावित करता है। उनका प्रशिक्षण और मार्गदर्शन चेलों को और अधिक विश्वासयोग्य और फलवंत बनाने में मदद करता है। परमेश्वर विभिन्न प्रकार के पृष्ठभूमि में चेले बनाने के आन्दोलन को लाने के लिए सरल, प्रभावी सेवकाई विधियों को आशीषित करता है। यह पुस्तक धार्मिकता से भरी जीवनशैली के अब्यास के व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों पहलुओं को शामिल करती है और इसे बढाने के साधनों कों भी इसमें शामिल करती है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि बहुत से लोग आनंदपूर्वक इस सन्देश पर ध्यान देंगे।

एंडी स्मिथ
एवेंजिलाज़शन के अंतर्राष्ट्रीय समन्वयक, ओएमफ इंटरनेशनल

अनुभवी अगुवे जानते हैं कि वे शून्य में नेतृत्व नहीं कर सकते। वे ये भी जानते हैं कि परमेश्वर के राजदूत होने का नाते हर दिन एक व्यक्ति को उंडेलने की ज़रूरत है, जिससे निरंतर ताज़ा रहने की ज़रूरत भी शामिल है। कर्टिस सार्जेंट *मात्र एक ही* एक व्यक्ति के हृदय और जीवन को स्वस्थ ले में रखने और सेवा करने हेतु परमेश्वर पर निर्भरता स्थापित करके इसे सम्बंधित करते हैं। सिर्फ एक बार पढ़ने से अधिक, यह पुस्तक मेरे जीवन के नियंत्रण पर एक नया साधन है।

नेट वेंडर स्तेल्ट
कार्यकारी उपाध्यक्ष, ग्लोबल अलाइंस फॉर चर्च मल्टीप्लिकेशन

कर्टिस सार्जेंट उतनी ही प्रमाणिकता पर *मात्र एक ही* के लिए जीते हैं जितना मैं जानता हूँ। मेरे जीवन की दिशा मौलिक रूप से बदल गई है-उनके सिद्धांतों से नहीं, बल्कि उनके जीवन से। यह पुस्तक हमें यह देखने और अनुभव करने में मदद करने हेतु एक महत्वपूर्ण संसाधन है कि अद्भुत परमेश्वर और राजा में, उसके साथ और उसके लिए पूर्ण रूप से जीने क्या अर्थ है। अगर आप जानना चाहते हैं कि वह कैसा दिखता है, तो इस पुस्तक को पढ़े और इसे जीवन में लागू करे।

टॉम विक्टर
राष्ट्रपति, द ग्रेट कमीशन कोएलिशन

आज मैं-केन्द्रित और अहंकार से प्रेरित संस्कृति में, हमें इस सन्देश की बहुत ज़रूरत है। मेरे करीबी मित्र कर्टिस सार्जेंट द्वरा लिखित, *एक मात्र ही* परमेश्वर-केन्द्रित सोच के उद्देश्य और सामर्थ्य और परमेश्वर – केन्द्रित जीवन जीने के मार्ग को शानदार ढंग से समझाते है। इस पुस्तक को धीरे-धीरे और प्रार्थना पूर्वक पढ़े, और अपने प्रतिउत्तरों पत्रिका को रोजनामचे में लिखे। फिर इसकी दूसरी कॉपी को अपने मित्र को दे और इसे दोबारा पढ़े, एकसाथ इस पर चर्चा करें। यह पुस्तक परिवर्तनकारी है।

रिक वारेन
द पर्पस-ड्रिवन लाइफ के लेखक और सैडलबैक चर्च के संस्थापक

यह स्वपनदर्शी और इन पर काम करने वालों की पुस्तक है। यह शास्त्र सम्मत है, लेकिन सिर्फ ज्ञान प्राप्त करने वाली पुस्तक नहीं है। यह ये भी बताती है कि कैसे प्रायोगिक तरीकों से करने वाले बने, न सिर्फ वचन को सुनाने वाले। यह पुस्तक एक अच्छा संसाधन है, जो परमेश्वर और एक दूसरे के साथ घनिष्ठता और एकता से गुणात्मकता के तरीके और सिद्धांतों को दूसरे तक पहुंचती है। कर्टिस कोई सिद्धांतकर्ता नहीं है, बल्कि जो उसने लिखा है उसको अभ्यास करने वाले है। जो कोई भी इसे पढ़ता है और उसे लागू करता है जो कोई इसे साझा करता है, वह आशीषित होगा और परमेश्वर की महिमा के लिए विश्वासयोग्य और फलवंत दोनों होने के लिए तैयार जाएगा।

ली वुड
वन बॉडी ग्लोबल, के संस्थापक और अध्यक्ष

मात्र एक ही

परमेश्वर में, उसके द्वारा, और उसके लिए सम्पूर्ण रीति से जीना

कर्टिस सार्जेंट

WILLIAM CAREY PUBLISHING

मात्र एक ही परमेश्वर में, उसके द्वारा, और उसके लिए सम्पूर्ण रीति से जीना
© कर्टिस सार्जेंट द्वारा 2019

सर्वाधिकार सुरक्षित।

इस पुस्तकों को प्रकाशक क पूर्व लिखित अनुमति के बिना, पुनर्प्राप्ति प्रद्धति में संगृहीत, किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से-इलेक्ट्रोनिक, मेकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, या अन्यथा-प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता, परन्तु समाचार पत्रों में समीक्षाओं के सम्बन्ध में उपयोग किये गए संक्षिप्त उद्धरण को छोड़कर। अनुमति के लिए, permissins@wclbooks.com।

जब तक अन्यथा चिन्हित न किया जाए, सभी पवित्रशास्त्र उद्धरण हिंदी बाइबल (पुराना संस्करण, ओ.वी) से लिया गया है |

अनुमति द्वारा प्रयोग किया गया है |

मूल रूप से विलियम कैरी पब्लिशिंग
द्वारा अंग्रेजी में प्रकाशित | missionbooks.org

मेटाकैम्प द्वारा प्रकाशित
8487 राजमार्ग 49 दक्षिण
डेडविले, अलबामा | metacamp.org

क्रिस्चियन लिंगुआ द्वारा
अनुवाद किया गया |

ISBNs: 979-8-9889932-2-3 (epub)

विश्व भर में बांटा गया |

लाइब्रेरी ऑफ़ कांग्रेस कंट्रोल नम्बर 2019945985 (अंग्रेजी) |

विषय-वस्तु

चेक बॉक्स **1** जब आपने अध्याय को **पढ़ा और आत्मसात किया**;

2 जब आपने सामग्री को अपने जीवन में **लागू किया**;

3 जब **आपने किसी को सामग्री सिखाई हो**;

4 जब वह व्यक्ति जिसने सीखा है उसे **इस पर काम करना** शुरू कर दिया है;

5 जब उस व्यक्ति ने **किसी ओर को सिखाया** जो अपने उन्हें सिखाया।

मैंने ये पुस्तक क्यों लिखी **x**

आभार **xiv**

इस पुस्तक को कैसे पढ़े **xvi**

धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास का एक परिचय **xviii**

भाग 1: धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास के व्यक्तिगत पहलू

	1	2	3	4	5	
1. जीवन का एक सर्वव्यापी तरीका	☐	☐	☐	☐	☐	3
2. हमारे पास जीने के लिए सिर्फ एक ही जीवन ह	☐	☐	☐	☐	☐	9
3. परमेश्वर को जानना हमारा प्राथमिक लक्ष्य है	☐	☐	☐	☐	☐	15
4. परमेश्वर का राज्य हमारे लिए दिशा सूचक यन्त्र है	☐	☐	☐	☐	☐	23
5. हमारे शत्रु भय और घमंड है	☐	☐	☐	☐	☐	33
6. दुःख हमारा मार्ग है	☐	☐	☐	☐	☐	41

भाग 2: धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास के सामाजिक पहलू

	1	2	3	4	5	
7. नई वाचा	☐	☐	☐	☐	☐	53
8. नई आज्ञा	☐	☐	☐	☐	☐	61
9. परमेश्वर को एक साथ सुनना	☐	☐	☐	☐	☐	71
10. एकता के लिए त्रिएक हमारा आदर्श है	☐	☐	☐	☐	☐	79
11. बातचीत के लिए परमेश्वर हमारा आदर्श	☐	☐	☐	☐	☐	93

भाग 3: व्यावहारिक अवधारणाएँ और धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास वाले जीवन में विकास के लिए साधन

	1	2	3	4	5	
12. मसीह उद्धारकर्ता और प्रभु दोनों है	☐	☐	☐	☐	☐	103
13. मसीह में ही हमारी विशेष निष्ठा है	☐	☐	☐	☐	☐	113
14. 3/3: विश्वासयोग्य जीवन जीने की शैली	☐	☐	☐	☐	☐	123
15. उत्तरदायी जीवन जीना	☐	☐	☐	☐	☐	137
16. प्रार्थना में बढ़ना	☐	☐	☐	☐	☐	143
17. चेलोंों को चेले बनाने के लिए प्रशिक्षित करना	☐	☐	☐	☐	☐	151

अतिरिक्त संसाधन **158**

लेखक के बारे में **160**

परिशिष्ट 1: राज्य की विनतिया **161**

मैंने ये पुस्तक क्यों लिखी

औरप्रभु पूरी पृथ्वी का राजा होगा;
उस दिन**परमेश्वरएकमात्र**एक ही होगा,
और उसका नाम एकमात्र है।
-ज़कर्याह 14:9

मैंने यह पुस्तक आपको यह बताने के लिए लिखी कि मैंने पृथ्वी के कुछ अन्धकार से भरे स्थानों पर दशकों के सुसमाचार प्रचार के कार्यों को स्थापित करने के द्वारा यीशु के साथ चलना सीखा है। यद्धपि स्थान विदेशी है, पर सिद्धांत सार्वभौमिक है। ये उन सभी पर लागू होते हैं, जो यीशु का अनुसरण करना चाहते हैं।

अपने जीवन के पहले अठाईस वर्ष के दौरान, मैंने हर उस चीज़ में उत्कृष्टता हासिल की है, जिसमे भी मैंने अपना हाथ बढाया है। मैं एक उम्दा छात्र और खिलाड़ी रहा था। परिणामस्वरूप, मैं बहुत ज्यादा आत्मविश्वासी हो गया। और सभी ने, मेरे सहित, मुझमे एक "भले विश्वासी" को देखा जो परमेश्वर के वचन का पालन करने और उसके राज्य का विस्तार करने के लिए कार्य कर रहा था।

मैंने ऐसे लोगों तक जिन तक सुसमाचार नहीं पहुँचा और जो लोगों से जुड़े हुए नहीं है (यूयूपीजी) लोगों तक पहुँचने में ध्यान केन्द्रित किया है। एक बड़े द्वीप की जनसँख्या सत्तर लाख थी, पर विश्वासियों की सँख्या सौ से भी कम थी। इसी सन्दर्भ में, मैंने खोज की कि मेरे तोड़े और मेरी मेहनत काफी नहीं है। मैंने सच में, पहली बार यह महसूस किया, कि यीशु ने जब ये कहा तो वह बिलकुल गंभीर थे, "मुझसे अलग होकर तुम कुछ नहीं कर सकते" (यूहन्ना 15:5ब)।

मैंने महसूस किया कि मेरा दृष्टिकोण उलट-पलट हो गया है। मुझे लग रहा था कि शायद मैं शीर्ष पर हूँ पर मैंने तो कभी चढ़ना भी शुरू नहीं किया था। मेरे सभी कार्य और उपलब्धियों का कोई अर्थ नहीं अगर ये सब परमेश्वर की इच्छा से अलग है। मेरे स्वयं के कार्य कभी भी परमेश्वर के कार्य को पूर्ण नहीं कर पायेंगे। सिर्फ यही एक तरीका जिसके द्वारा मैं उसकी राह, उसका समय, और उसकी सामर्थ्य के द्वारा परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीवन जी सकता था।

इस तरह जीवन जीने के लिए अधिक सुनाने की ज़रूरत है और और अपने आप को बहुत कम आगे बढ़ने की। इसका अर्थ उसका मुझमे बढ़ना ज्यादा और मुझे कम होना होगा। व्यंग्यपूर्वक, मैंने पहले ही यूहन्ना 3:30 को अपने जीवन की आयत मान लिया था: "अवश्य है कि वह बढे और मैं घटू।" उस पड़ाव पर, मैंने यह समझना शुरू किया कि उस आयत का क्या अर्थ है।

पाच वर्ष के दौरान मैंने इस पुस्तक में आये हुए संसाधनों और सिद्धांतों को विकसित किया या दूसरों से इकट्ठे किये गए हैं। मुझे आनंद, संपूर्णता और यीशु के साथ घनिष्ठता का अनुभव होने लगा, और मैंने और मेरी पत्नी ने फलदायी जीवन

को देखना शुरू किया जब हम युयुपीजी के बीच में काम कर रहे थे। पाँच वर्षों के अंत तक मैंने उस फल को देखा जिसकी लालसा मैंने अपने पूरे जीवन में की। जल्दी ही इस बहुत बड़े लोगोंगो के समूह का हर गाँव एक कलीसिया बन गया। ये हज़ारों कलीसियाएँ अन्य लोगों के समूह में एक मिशन बल के रूप में कार्य कर रही है। चेलों ने और चेले, कई आत्मिक पीढ़ियों तक बनाये। मैंने महसूस किया मेरी इच्छाएँ कमज़ोर है। मेरी आकाक्षाएँ बहुत छोटी है। परमेश्वर की योजनायें मेरी कल्पानाओं के कहीं बढ़कर और बेहतर है।

मैंने अपना सारा समय और शक्ति दूसरे लोगों को अनुभव कराने में शुरू किया जिसका स्वाद मैं चखता था। मेरे शिक्षक, मेरी तरह, इस गृह के अन्धकार भरे स्थानों पर ध्यान केन्द्रित करते है जो लम्बे समय से मिशनरी थे। कई लोगोंगो ने सामान परिणाम और सामान अनुभव किया। सात साल के प्रशिक्षण और एक महीने के कार्यक्रमों के द्वारा एक हज़ार से ज्यादा लोगों को प्रशिक्षित करने के बाद, परमेश्वर मुझे संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थानांतरित होने के लिए बुला रहा है।

मैं अमेरिका वापस नहीं जाना चाहता था। हालाँकि मेरे माता पिता मिशनरी थे और मैं विदेश में पला बढ़ा था, ये बुलाहट मेरे लिए अनचाही थी जिससे मेरा कोई लेना देना नहीं था। मैंने इसे एक असुविधा के रूप में देखा। क्योंकि अब मुझे आत्मिक रूप से अन्धकार भरे स्थानों में पहुँचने के लिए लाबी यात्रा तय करनी थी, जहाँ पर मुझे एक उच्च विद्यालय के छात्र के रूप में बुलाया गया। मैंने अपना सारा ध्यान इस बात पर केन्द्रित कर दिया कि परमेश्वर के राज्य का इन अंधकार भरे स्थान का क्या प्रभाव पड़ेगा।

फिर, ग्यारह वर्षो तक पूरी दुनिया में सुसमाचार से वंचित लोगों के समूह और स्थानों पर संयुक्त राज्य अमेरिका से संचालन करते हुए ध्यान केन्द्रित करने के बाद, परमेश्वर में मुझे साफ़ तौर पर दिखाया कि अब मुझे अपनी आधी मेहनत सयुंक्त राज्य के लिए करनी है। वह मुझसे चाहता है कि मैं उनके साथ वो साझा करूँ जिसे मैं न पहुँचे हुए स्थानों में सुसमाचार को साझा कर रहा था। उसने मुझे दर्शाया कि बहुत से अमेरिकी मसीही के वर्षों से मेरी ही तरह अंधे थे, जो ये नहीं जानते थे कि उनके लिए भी बहुतायत से जीवन उपलब्ध है। वे परमेश्वर से प्रेम करते हैं और सर्वोत्तम तरीके से परमेश्वर की सेवा करने का तरीका खोज रहे हैं। वे वही सब कुछ कर रहे हैं जो उन्हें सिखाया गया था और उनसे इसकी उम्मीद भी लगाईं गई थी। यह कुर्सियों पर बैठे हुए और सुसमाचार के लिए मंच पर खड़े दोनों के लिए सच है। लेकिन परमेश्वर के पास हमारे लिए और भी बहुत कुछ है, अगर हम सम्पूर्ण रूप से उसका अनुसरण करना सीख ले।

अपने विश्वास के जीवन को जीने का एकमात्र तरीका मैंने यह देखा कि परमेश्वर ने मुझे बहुत ही निराशाजनक परिस्थिति में डाल दिया, उसने मुझे सारी बाहरी सहयता देने वाली बातें (सिर्फ मेरी पत्नी, डेबी को छोड़कर) और ध्यान भटकाने वाली सब बातों को मेरे जीवन से दूर कर दिया। वहाँ मुझे अपनी अपर्याप्तता का सामना करना पड़ा और उस पर निर्भर रहने के लिए मजबूर होना पड़ा। इसके

बिना, शायद मैं कभी भी अपने विश्वास को जीने का कोई दूसरा तरीका नहीं देख पाता।

कई उत्तरी अमेरिका के विश्वासियों को ये मौका कभी नहीं मिला है। उनके पास पर्याप्त सहायता पद्धति और अनिवार्य बाधाएँ थी। उन लोगों के रूप में भी बढ़ाएं हैं, जो इस दिशा में आन्दोंलनों का विरोध करते हैं, क्योंकि वे अपरिचित आत्मिक अभिव्यक्तियों की शुरुआत से खतरा महसूस करते हैं और इस प्रकार किसी को भी हतोत्साहित करते हैं, जो परिचित पद्धति पर प्रश्न उठाना शुरू कर देता है।

मैं पिछले सात वर्षों से अपना आधा-समय ध्यान केन्द्रित कर अनुसरण कर रहा हूँ। परमेश्वर यहाँ भी सीमांत मिशन जगहों की तरह ही कार्य कर रहा है। हर संस्कृति की अपनी कुछ खूबियाँ और कमजोरिययाँ होती है। हर स्थान की सुसमाचार के लिये अपनी स्वयं की बाधाएँ होती हैं।

मेरा मानना है कि अमेरिका में वास्तविक शिष्यत्व का सबसे बड़ा शत्रु यीशु का अनुसार करने का प्रचलित आदर्श है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर इस पुस्तक का इस्तेमाल इस अवधारणा को बदलने में करेगा। मैं विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर अपनी सारी संतान के लिए एक मुलभूत रूप से बदलाव की इच्छा रखता है। मौलिक मसीहियत के बारे में बोलना राजनितिक रूप से एकदम अलग है। हलाकि, यीशु मौलिक था, और हमें उनकी तरह ही चलने के लिए बुलाया गया है (1 यूहन्ना 2:6)।

समय दर समय, मुझे दूसरें लेखकों की पुस्तकों को समर्थन करने के लिए कहा गया। मेरी नीति सिर्फ अभ्यास करने वाले सफल लेखकों को ही समर्थन करने की रही है, न कि उच्च विचार रखने वालो की। कौन ऐसे व्यक्ति की द्वारा परवरिश पर लिखी पुस्तक को पढ़ना चाहेगा जो कभी माता पिता बना ही न हो।

अब, जबकि पहली बार, मैंने अपनी पुस्तक लिखी। तो मैंने कभी एक पुस्तक लिखने की इच्छा नहीं की। मैंने इसे लिखा क्योंकि मैं विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर ने मुझे इसे लिखने को कहा। मुझे संदेह है कि यह मेरे लिए भी उतनी ही लाभदायक होगी जितनी किसी और के लिए। मुझे ये थोडा अजीब भी लगता है क्योंकि जब मैं खुद के समर्थन मानदंड पर सोचता हूँ। मैं इस पुस्तक में चर्चा की गई हर एक बात का सफल अभ्यासकर्ता होने का दावा नहीं कर सकता-लगातार तो बिलकुल भी नहीं। मैंने यहाँ सुझाई गई ज़्यादातर जीवनशैली को अपने जीवन में लागू किया है, लेकिन अभी भी कुछ पहलू महत्वाकांक्षी है। लेकिन पौलुस भी सिद्ध नहीं था, या, जब उसने लिखा 1 कुरिन्थियों 11:1, में विशावासियों को कहा, “तुम मेरी सी चाल चलो, जैसे मैं मसीह की सी चाल चलता हूँ।” मैन्विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर मुझसे चाहता है कि मैं मैं दूसरों की भी मदद उन सिद्धांतों को भी शामिल करके करूँ जिनके द्वारा मेरा भी मार्गदर्शन हुआ है।

कई वर्षों से थिओडोर रूजवेल्ट का ये वाक्य मेरी मेज़ पर पड़ा हुआ है:

> यह आलोचक नहीं जो आलोचना करता है, न ही कोई व्यक्ति जो बताता है कि एक एक ताकतवर आदमी कैसे लड़खड़ाता है, या काम करनेवाला उसे बेहतर तरीके से कर सकता है। इसका वास्तव मे श्रे य उस आदमी को जाता है जो सचमुच में अखाड़े में खड़ा है, जिसका मूँह धूल, पसीना और खून से लथपथ है; जो हियाव के साथ कोशिश कर रहा है, जो गलतियाँ करता है और बार बार चूक जाता है, क्योंकि गलतियों और कमियों के बगैर को कोशिश नहीं होती, परन्तु जो वास्तव में काम करने को कोशिश करता है, जो बड़ा उत्साह, और बड़ी लगन को जानता है, जो खुद को एक अच्छे काम के लिए लिए देता है, जो एक अच्छी उपलब्धि की विजय को अंत में अच्छे रूप में जानता है, और जो सबसे बुरी स्थिति में, यदि वह विफल हो जाता है, तो कम से कम बहुत ज्यादा साहस करते हुए असफल हो जाता है, ताकि उसकी जगह कभी भी उन ठंडी और डरपोक आत्माओं के साथ न हो जो न तो जीत जानते हैं और हारते नहीं।

तो इस तरह से, मैं भी एक अभ्यासकर्ता हूँ। मैं कोशिश करता हूँ। इतने वर्षों के दौरान मैंने अपनी परमेश्वर के साथ यात्रा में बढ़ोतरी देखी है। और इससे मुझे बहुत अधिक आशा और पूर्वानुमान मिलता है। मेरी प्रार्थना है कि मेरे द्वारा समझाई गई चुनौतियों और अभी वर्तमान की परिस्थिति के अंतराल को पढ़ने के बाद आप निराश नहीं होंगे, बल्कि यह कि आप आपके सामने आने वाले अवसर की खोज में लग जायेंगे और परमेश्वर को हर दिन लगन से जानेंगे, प्रेम करेंगे और उसकी सेवा करेंगे।

हालाँकि यह पुस्तक महत्वाकांक्षी है, इसलिए केवल वर्णनात्मक नहीं है। यह निर्देशात्मक है। मैं ये दृढ़ विश्वास करता हूँ कि मैंने इस पुस्तक में जिन विषयों की चर्चा की है, वे सब आगे बढ़ने के लिए हैं और मसीह के पीछे चलने वाले हर एक व्यक्ति द्वारा उसकी प्रसन्नता के लिए अभ्यास किए जाते है।

आभार

इसमें कोई संदेह नहीं कि, मैं जिस भी व्यक्ति को यहाँ शामिल कर रहा हूँ, वे सब परमेश्वर का उपहार और रचना है। अंत में सारा आभार और आदर उसी को मिले। वही सब भली वस्तुओं का स्रोत है।

मेरी पत्नी, डेबी, का मुझ पर और मेरे प्रिय मित्र पे एक अच्छा प्रभाव है। कई तरह से वह मेरी समपूर्णता और कई मायनों में मेरा समर्थन और प्रोत्साहन है – दोनों जाने और अनजाने, दृश्य और अदृश्य में।

मेरे माता पिता ने अपने जीवन का आदर्श बनाया जिससे पता चलता है कि वे परमेश्वर के प्रति अपने जीवनके प्रबंध के लिए कितने गंभीर थे। ये एक दृढ़ता से भरी नींव थी।

मेरे बच्चे और पोते पोतियाँ (वर्तमान और भविष्य) भी मेरे जीवन पर एक और बड़ा प्रभाव है। परमेश्वर की संतान होने के बारे में मैं अभी तक जो भी सीखा है वो मैंने एक पिता और दादा होने के अपने अनुभव से सीखा है।

मेरे संपादकों, ब्रूस बैरन और मार्क एस्पिन्वल, ने मेरे इस पुस्तक के सन्देश को प्रभावी रूप से तैयार करने और जोड़ने में मेरी बहुत सहायता की जो मैं कभी भी अकेले नहीं कर सकता था। ब्रूस ने इसमें पहला कदम उठाया, और उसके दयालु पर दृढ़ मार्गदर्शन की अत्यधिक ज़रूरत थी। मार्क ने भी बहुत योगदान दिया, क्योंकि मैंने यह पता लगानेकी कोशिश की कि कैसे दूसरों के योगदान को प्रार्थमिकता दी जा सकती है और अनुप्रयोग की जाने वाली बातों को कैसे उपयोगी बनाया जाए। ये भी वास्तव में मददगार कि वह पुस्तक में शामिल दृष्टिकोणों का एक अच्छा अभ्यास करने वाला था। उसने इसे और पढ़ने योग्य बना दिया।

मैं विलियम कैरी पब्लिशिंग के लोगों द्वारा राज्य के लिए ह्रदय और प्रेमपूर्ण सेवाभाव प्रदान करने के लिए सराहना करता हूँ, जिसमे डेनिस व्यान, मेलिसा हिक्स, एंड्रयू स्लोअन, कैटी मेकगैफी, माइक रिश्टर शामिल हैं।

मैं राज्य की बढ़ोतरी करने वाले उन सैंकड़ों भागीदारों का आभारी हूँ जिन्हें मैंने सिखाया, सलाह दी, और जिनके साथ मैंने काम किया। वे सभी पुरुष और महिलायें, जो सभी देश और सीमाओं में चेले बनाने और कलीसिया स्थापित करने में अपने जीवन को समर्पित करते हैं, वे सभी मेरे मित्र और उत्साहित करने वाले है और उन्होंने मुझे हमेशा प्रेम और अच्छा कार्य करने के लिए बढ़ावा ही दिया है। सामूहिक रूप इनका उपयोग एक हज़ार आन्दोलनों को प्रेरित करने के लिए किया गया है, जिसके परिणामस्वरुप पिछले तीस वर्षों में पचास लाख घरेलू कलिसियायें और

अस्सी लाख लोगों को बप्तिस्मा दिया जा चुका है। उन्हें जानना और उनके साथ काम करना एक आदर और सौभाग्य की बात है।

मैं इस पूरे समूह को प्रस्तुत करने के लिए एक नाम लूँगा-स्वर्गीय-स्टीव स्मिथ, जो इन सबका प्रतिनिधित्व करते हैं। हम सभी हमजोली थे। मैंने स्टीव को तब जाना जब मैं 1990 के दशक में एशिया में एक महीने की रणनीति समन्वयक प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षित कर रहा था। फिर मैंने कुछ समय तक उसको मार्गदर्शन दिया, पर जल्द ही वो एक कुशल सहकर्मी, अभ्यासकर्ता, प्रशिक्षक, अगुवा, और लेखक बन गए। (उसकी आखिरी पुस्तक, *स्पिरिट वॉक* 2018 में लिखी गई, जो इस पुस्तक में दिए गए कुछ मुद्दों पर भी गौर करती है।) हमारे परिवारों ने एक साथ छुट्टियाँ बिताईं। हमने कई वर्षों तक एक ही देश में काम किया। हमने दूर से ही एक दूसरे को उत्साहित किया।

हाल ही में, जब स्टीव ने 1990 के दशक की शुरुआत में सामान्य मूल से उभरे कई आन्दोलनों को एक करने में 24:14 का संगठन को शुरू किया, तब हमने दोबारा समय बिताना शुरू किया जब उसने मुझे अपने साथ काम करने को कहा। जैसे ही इसे शुरू किया गया उनके कैंसर का पता चल गया, और फिर अठारह महीनों बाद वह महिमा में चले गए। हममे से कई लोग उन्हें याद करेंगे जिनको उनके जीवन ने गहराई से छुआ। वह राज्य के नायक कहलायेंगे।

अंततः, मैं शुक्रगुजार हूँ उन लोगों का जो ये पुस्तक पढ़ रहे हैं। मैं आपसे इन पृष्ठों के द्वारा बात करने के लिए आभारी हूँ। जब आप इस पुस्तक के पाठों को अपने जीवन में लागू करेंगे और दूसरों तक पहुँचाएंगे, तो मैं आशीषित होऊँगा, मैं इन सबके लिए आभारी हूँ।

कर्टिस सार्जेंट
मार्च 13, 2019

इस पुस्तक को कैसे पढ़े

ये पुस्तक मसीही जीवन को हर दिन के कामों में लागू करने के बारे में हैं। इसका उद्देश्य हर दिन के जीवन में बदलाव लाना है। इसलिए, यदि आप इसे पढ़ते और इसके बारे मे सोचते हैं, लेकिन अपने जीवन का तरीका बदलने के लिए कोई योजना नहीं बनाते है, तो आपको इससे कोई लाभ नहीं होगा।

हर एक अध्याय को पढ़नें के बाद, मैं सुझाव दूँगा कि आप रुके और अपने कामों की योजना बनाने के लिए विचार करे। आपके विचार करने के समय में निम्न बातों को शामिल करें:

1. हर अध्याय के बाद आए प्रश्नों को पढ़े और अपने जवाबों को एक डायरी में लिख ले (भौतिक या इलेक्ट्रोनिक रूप से)।
2. प्रार्थना में समय बिताये, परमेश्वर से पूछे कि वो क्या चाहता है कि आप सीखें, लागू करे, और अध्याय से साँझा करे। फिर चुपचाप सुने।
   अ. वह आपसे क्या ज़रूरी काम करवाना चाहता है। यह बाइबल की आयातों को याद करने जितना आसान और अफगानिस्तान जाने जितना बड़ा हो सकता है। सामान्यताओं को टालें। परमेश्वर से मांगे कि वह आपको आपका अगला, मापने योग्य कदम दिखाए। परमेश्वर से पूछे कि वह आपसे कब चाहता है कि आप अपना अगला कदम ले। लक्ष्य एक इच्छा से (उदाहरण "मुझे परमेश्वर से और ज्यादा प्रेम करना चाहिए") एक योजना की ओर बढ़ना है (उदहारण "मैं अपनी घडी का अलार्म तीस मिनट पहले लगाऊँगा, ताकि मैं सुबह प्रार्थना कर सकूँ")।
   ब. परमेश्वर से कम से कम एक नाम पूछे जिससे वह चाहता है कि आप अध्याय से विचार उसके साथ साझा करें, वह कौन सा विचार है, और कब आपको साझा करना चाहिए।
   स. सारे कामों और तारीखों को अपनी डायरी और केलेंडर में लिखे।
   द. प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको इन प्रतिबद्धताओं का पालन करने में सक्षम बनाए और उन लोगों के दिलों को तैयार करे जिनके साथ आप ज्ञान साझा करना चाहते हैं।
   क. (विकल्प) यदि आप दूसरों के साथ इस पुस्तक को पढ़ रहे हैं, आपने जो परमेश्वर से सुना और वायदों को उनके साथ साझा करे। कुछ समय लेकर इन वायदों के बारे में एक साथ प्रार्थना करें। तय करे कि आप और आपके साथ काम करने वाले लोग एक दूसरे की प्रगति की जाँच कब करेंगे ये अक्सर तब होता है जब आप अगले अध्याय पर चर्चा करने हेतु मिलते हैं।

3. नया अध्याय शुरु करने से पहले, अपनी डायरी खोले और अपने विचारों का अवलोकन करें। यदि आप लक्ष्य निर्धारित तारीख से चूक गए हैं, तो नयी तारीख तय करे।

हर अध्याय के शुरुआत और अंत में, आपको ये कदम उठाने के लिए याद दिलाया जायेगा।

इस बात का ध्यान दे कि सामग्री तालिका पृष्ठ पर सामग्री और लागू करने वाले चार्ट का उपयोग हर अध्याय का विकास करने, अनुप्रयोग करने, पढ़ाने, और गुणा करने में आपकी प्रगति पर नज़र रखने के लिए किया जाना चाहिये। इस पुस्तक का उद्देश्य आपके और आपसे जुड़े हुए लोगों के जीवन को बदलना है।

मैं आशा करता हूँ कि आपको ये पुस्तक पढ़ने में कोई मुश्किल नहीं होगी। यह मुश्किल नहीं है। इसे अभ्यास में लाना चुनौती है। अपना पूरा जीवन मसीह को देने के निहितार्थ परेशान करने वाले हो सकते हैं। मैं आशा करता हूँ कि आप चुनौती को स्वीकार करेंगे। धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास की चुनौती को स्वीकार करने से अच्छा और महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है जो आप अपने जीवन में कर सकते हैं-आपके पास जो कुछ भी है उसे देने, हर दिन, परमेश्वर के लिए पूर्णता से जीने के लिए।

धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास का एक परिचय

धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास एक *ऐसा जीवन जो परमेश्वर में, उसके द्वारा, और उसके लिए जिया जाता है-एक एसा जीवन जो पूर्ण रीति से परमेश्वर पर निर्भर है।*

> एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हे जो बुलाये गए तहर अपने बुलाये जाने से एक ही आशा है; एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बप्तिस्मा, और सब का एक ही पमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर और सब के मध्य में और सब में है।
>
> -इफ़िसियों 4:4-6

क्या आप अपने जीवन के सभी वायदों और जिम्मेदारियों को संतुलित करने में संघर्ष कर रहे हैं? क्या आप अपने जीवन की ज़रूरतों को पूरा करने हेतु एक साथ कई कामों को कर रहे हैं? यदि आपको एक ही अच्छा काम करना हो तो वो क्या होगा? क्या ये सरलता मनचाही होगी।

यीशु ने ज़ाहिर तौर पर ऐसा सोचा था, क्योंकि उसने ऐसे ही हमें जीने को कहा था। उसने हमें अन्य सभी बातों पर ध्यान केन्द्रित करने और केवल उसी पर चित्त लगाने के लिए आमंत्रित किया-उसे जानना और उसके पीछे चलना। ये पुस्तक इसी के बारे में हैं।

***धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास* (शाब्दिक रूप से, "ईश्वरीय अभ्यास") वास्तव में एक जीवनशैली है, जो मसीह को जानना, उसका अनुसरण करना, परमेश्वर के राज्य की खोज करना, और जीवन की हर एक बात को परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखना है। इसके लिए सम्पूर्ण रूप से उसकी इच्छाएँ, तरीकों, उद्देश्यों, चरित्र, स्वभाव, इच्छाए और विचारों के साथ सम्पूर्ण एकता और समर्पण की आवश्यकता है। यह परमेश्वर का कार्य, परमेश्वर के तरीके से, परमेश्वर के समय में, और परमेश्वर की अनुमति से करन है।**

धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास जीवन आसान नहीं है। पर यह आसान है। इसके लिए परमेश्वर की आवाज़ को पहचानना सीखना और जो वो कहता है उसे करने की ज़रूरत है। वह आपसे सिर्फ वही मांगेगा जो आप कर सकते हो। हमारी सामने बड़ी चुनौती ये नहीं है कि हम वह नहीं कर सकते जो परमेश्वर हमसे चाहता है, लेकिन हम अपने जीवन में उन बातों को हटाने में सफल हो जाते हैं जो वह हमें करने से मना कह रहा है। इसलिए हम बहुत ज्यादा व्यस्त और परेशान महसूस करते हैं-हम बहुत सी ऐसी बाते कर रहे हैं जो हमें नहीं करनी चाहिए। ऐसा नहीं है कि ये बाते बुरी है। कई बार वे अच्छी हो सकती है-या, बुरी, निष्पक्ष। लेकिन ये वे नहीं जिसे परमेश्वर हमें करने के लिए बुला रहा है।

धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास एक साधारण शब्द नहीं है। दूसरी ओर,

कई लोग *जीवन का व्यवहार*, या सही अभ्यास शब्द से परिचित है। जीवन का व्यवहार की तुलना कई बार जीवन की शिक्षा या सही विश्वास से की जाती है। असल बात यह है कि परमेश्वर (रजीवन की शिक्षा) के बारे में सही विश्वास किसी काम का नहीं यदि उन्हें वास्तविक जीवन की मायताओं के साथ नहीं जोड़ा जाता है।

धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास एक कदम आगे बढ़ जाती है। यह अभ्यास के पीछे के उद्देश्य और उस अभ्यास को जीने की क्षमता के स्रोत का व्याख्यान करती है। उद्देश्य परमेश्वर के पीछे चलना है, और वही इस सब को करने की सामर्थ देने वाला स्रोत है।

यीशु कहता है कि,

> जो मुझसे "हे प्रभु, हे प्रभु" कहता है, उनमे से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। उस दिन बहुत से लोग मुझसे कहेंगे, "हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकला, और तेरे नाम से बहुत से आश्चर्यकर्म नहीं किये?" तब मैं उनसे खुलकर कह दूँगा, "हे कुकर्म करने वालो मेरे पास से चले जाओ"।
>
> -मत्ती 7:21-23

इस अनुच्छेद में, जिनको अनंत दंड के लिए भेजा जा रहा था, वे सब अच्छा काम करते हुए प्रतीत हो रहे थे और यीशु के नाम पर कर रहे थे। हालाँकि, उन्होंने परमेश्वर की इच्छा पूरी नहीं की। उन्होंने न तो उसकी बात सुनी, औए न ही प्रतिक्रिया दी, जो वह उनसे करने के लिए कह रहा था। बजाय इसके, उन्होंने वही किया जो उन्होंने सोच कि वह करने के लिए कहेगा। उन्होंने नहीं सुना क्योंकि वे सुनते ही नहीं थे। उन्होंने उसकी आवाज़ को नहीं पहचाना क्योंकि वे उसे जानते ही नहीं थे। संक्षेप में, वे भले ही अच्छे काम कर रहे थे, पर वे उस काम नहीं कर रहे थे जिसे परमेश्वर उनसे चाहता था। इस प्रकार, उनके कार्यों का उद्देश्य या कारण गलत था। इसके अलावा, वे पूर्ण पवित्र आत्मा की पूर्ण अधिकारिता के द्वारा से नहीं, पर अपनी सामर्थ्य से काम कर रहे थे। इस प्रकार, ये अनुच्छेद ये सुझाव देता है कि जीवन का व्यवहार भी कम पड़ सकता है।

धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास कोई विधर्मी झूठा धर्म नहीं है जो यह विश्वास करता है कि अच्छे कार्य परमेश्वर से है। यह हमसे अपने उद्धार के लिए कार्य करने और अर्जित करने के लिए नहीं कहता। यह इस बात से भी इनकार नहीं करता कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश उसके द्वारा अयोग्यता न होने पर भी दिए अनुग्रह पर आधारित है। बल्कि, पश्चाताप में परमेश्वर के अलावा की अन्य बातों के प्रति समर्पण और उस पर निर्भर रहने से अलग केवल उसकी आराधना करना और उसी पर निर्भर रहना शामिल है।

जब हम सिर्फ परमेश्वर के प्रति समर्पित और उसी पर ही निर्भर रहते हैं, तब हमारा प्रेम, कृतज्ञता, और भक्ति उसका अनुसरण करने, उसकी सेवा करने, और उसे प्रसन्न करने के प्रति हमारे वायदे को व्यक्त करता है। हमारी इच्छा उसे अधिक गहराई से जानने और और निकटता के साथ उसका साथ देने की होती है। ये बातें केवल पवित्र आत्मा के भरे होने और उसकी अधिकार में रहने के द्वारा ही हो सकती है। ये यात्रा धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास है।

मेरे मित्र गेरी लीडरबैक ने अपनी भावना को प्रार्थना में अच्छी तरह व्यक्त किया है (सारे वचन हिंदी बीएसआई बाइबल से लिए गए हैं):

आपकी आत्मा मेरे मन, इच्छा, और प्राण की भावनाओं में काम कर रही है, आप मुझे अन्दर से बाहर तक बदल रहे है "मसीह का मन" (1 कुरिन्थियों 2:16), से "मसीह का नाम धारण करना" (मरकुस 9:41, "मसीह की आत्मा" से भरा होना) (रोमियों 8:9) "मसीह के लहू की सहभागिता" (1 कुरिन्थियों 10:16), "मसीह की देह में सहभागिता" (1 कुरिन्थियों 10:16), "मसीह की सुगंध" निकालना (2 कुरिन्थियों 2:15), "मसीह के प्रेम" से विनती करना (2 कुरिन्थियों 5:14), "मसीह की सच्चाई" (2 कुरिन्थियों 11:10), हर दिन "मसीह के अनुग्रह" में जीना (गलातियों 1:6), "मसीह के सुसमाचार" को बाँटना (फिलिप्पियों 1:27), अपने साथी कार्यकर्ताओं और सेवकों के साथ जुड़ रहा हूँ "मसीह के भागीदार" के रूप में (इब्रानियों 3:14), "मसीह के विश्वासयोग्य सेवक" बनने की खोज करना (कुल्लुसियों 1:7), "मसीह की शांति" को अपने हृदय में वास करने देना (कुल्लुसियों 3:15) और "मसीह का वचन" मेरी आत्मा में वास करे (कुल्लुसियों 3:16), "मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाये जाने" के द्वारा मुझे सशक्त करता है (गलतियों 2:19) ताकि मैं हर दिन "मसीह में जीवन" जी सकूँ (1 कुरिन्थियों 1:30)। जैसे आप है, वैसे ही मैं भी मेरी दुनिया में रहूँ (1 यूहन्ना 4:17)। मुझे - "यीशु मसीह के स्वरूप" में होने के लिए रचा गया और बुलाया गई (रोमियों 8:29) जो कुछ भी मैं करता हूँ, जो कुछ भी मैं सामना करता हूँ, जो कुछ भी मैं जय पता हूँ, और जो कुछ भी मैं बनता हूँ, वह सब इस उद्देश्य के लिए है-आप मुझे हर दिन अपने जैसा बनाते है। मेरे दिन के हर क्षण में हर चुनाव या चुनौती मेरे लिए बढ़ने का अवसर है "परिपक्वता की ओर, मसीह के पूर्ण कद के माप तक" जिससे कि "सब बातों में उसमे जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ाते जाएँ" (इफ़िसियों 4:11-16) मैं ऐसा नहीं कर सकता, पर "(मेरा) बुलाने वाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा" (1 थिस्सलुनीकियों 5:24)।

यीशु मसीह के नाम से मैं प्रार्थना करता हूँ आमीन।

भाग 1

धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास के व्यक्तिगत पहलू

1 जीवन का एक सर्वव्यापी तरीका

धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास आदर्श सिद्धांत है, जो जीवन के हर भाग को परिभाषित करता है,-दोनों को अर्थात् क्या करते है और क्यों करते हैं।

> और वह इस निमित्त सबके लिए मरा कि जो जीवित है, वे आगे को अपने लिए न जिए परन्तु उसके लिए जो उनके लिए मरा और फिर जी उठा।
>
> -2 कुरिन्थियों 5:15

> क्योकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रकट है, जो सब मनुष्य के उद्धार का कारण है, और हमें चेतावनी देता है कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताये, और उस धन्य आशा की अर्थात अपने महान परमेश्वर और उद्धारकरता यीशु मसीह के प्रकट होने की बाट जोहते रहे। जिस ने अपने आप को हमारे लिए दे दिया कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले, और शुद्ध करके अपने लिए एक ऐसे जाति बना ले जो भले-भले कामों में सरगर्म हो।
>
> -तीतुस 2:11-14

यीशु मरा बदलने के लिए *क्यो* हम जियें (2 कुरिन्थियों 5:15) वह इसलिए मरा ताकि हम उसके लिए जी सके, ना की अपने लिए। और उसका अनुग्रह बदल देता है कि *कैसे* हम जीते है (तीतुस 2:11-14)। हमें उसके लोग बनना है, "अच्छे कार्यों के लिए उत्साही"। धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास का जीवन यही है। बाइबल इसे कई तरीकों से दर्शाती है।

- आत्मा से भरना (प्रेरितों का कम 2:4; 4:8, 31; 9:17; 13:9, 52);
- ज्योति में चलना (यूहन्ना 8:12; 11:9; 12:35; इफिसियों 5:8; 1

यूहन्ना 1:5-7);
- जीवन के नयेपन में चलना (रोमियों 6:4);
- आत्मा में चलना (रोमियों 8:4; गलातियों 5:16, 25);
- प्रेम में चलना (रोमियों 14:15; इफ़िसियों 5:2);
- विश्वास से चलना (2 कुरिन्थियों 5:7);
- सच्चाई में चलना (3 यूहन्ना 1:1, 3-4);
- मसीह में बने रहना (यूहन्ना 15:4-7, 9-10; 1 यूहन्ना 2:27-28; 3:6, 24; 4:13);
- पवित्र आत्मा में बने रहना (यूहन्ना 14:17);
- ज्योति में बने रहना (1 यूहन्ना 2:10);
- पुत्र और पिता में बने रहना (1 यूहन्ना 2:24);
- यीशु के जैसे चलना (1 यूहन्ना 2:6);
- प्रभु के योग्य चलना (कुल्लुसियों 1:10); और
- अपनी बुलाहट के योग्य चलना (इफ़िसियों 4:1)।

ये विवरण दर्शाता है कि विश्वासियों को अपने जीवन के हर पहलू में "सब कुछ" होना चाहिए। परमेश्वर से सम्बंधित होना एक अनुभव है, जो जीवन के हर पहलू को नियंत्रित करता है।

धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास जीवन उद्धार प्राप्त करने की कोशिश नहीं है। यह हमारे प्रिय परमेश्वर के अद्भुत अनुग्रह और महान दया के प्रति आभारी प्रतिक्रिया है। अन्य प्रतिक्रिया तब अकल्पनीय होती है, या हम पहचानेंगे कि हम योग्य है और परमेश्वर हमें क्या देता है। जब लोग परमेश्वर द्वारा छुटकारा पाने के बाद अपना जीवन अपनी मर्ज़ी से नीरस जीने लगते हैं, तो यह उनके उद्धार की प्रमाणिकता पर प्रश्न उठता है।

जैसे की डॉलस विलार्ड ने कहा (http://www.dwillard.org/articles/individual/live-life-to-the-full), अनुग्रह प्रयास का विरोधी नहीं है। ये अर्जित करने का विरोधी है। अभ्यास क्रिया है। अर्जित करना व्यवहार है। नया नियम परमेश्वर की संतानों से उम्मीद करता है कि वे अपने विश्वास को जीने के अनुसार कार्य करें।

इब्रानियों 6 इस बात को दर्शाता है। लेखक विश्वास के प्राथमिक पहलूओं, जैसे पश्चाताप और अनंत जीवन के बारे में बात करता है (6:1-3), लेकिन वह अपनी पुस्तक को पढ़ने वाले पाठकों को परिपक्वता में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है, जो उनके जीवन जीने के तरीके में दिखाई देगा (4-9)। फिर, पद में 10-12, वो कहता है, "क्योंकि परमेश्वर अन्यायी नहीं कि तुम्हारे काम, और उस प्रेम को भूल जाए, जो तुम में उसके नाम के लिए इस रिती से दिखाया, कि पवित्र लोगों की सेवा की और कर भी रहे है। पर हम बहुत चाहते है कि तुम में से हर एक जन अंत तक पूरी आशा के लिए ऐसा ही प्रयत्न करता रहे। ताकि तुम आलसी न हो जाओ, वरन उसका अनुसरण करो जो विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के वारिस होते हैं।"

परमेश्वर हमारे कार्यों की चिता करता है। वास्तव में, हमें उनमे लगन दिखानी है। हमें आलसी नहीं बनना है। परमेश्वर के कार्य करने में हमारी लगन हमारे विश्वास को दर्शाती है और यह दिखाती है कि हम परमेश्वर की विरासत मिलने वाले लोगों में से है। इब्रानियों 9:14 हमें बताता है कि "मसीह का लहु" हमें "जीवाते परमेश्वर की सेवा करने" के लिए शुद्ध करता है।

यहाँ दो गंभीर गलतियाँ हैं जिन्हें हम कर सकते है। पहली ये विश्वास करना कि हमें अपना उद्धार स्वयं किसी भी तरह अर्जित करना है। नहीं! उद्धार "अनुग्रह से आता है... विश्वास के द्वारा... कार्यों के परिणाम स्वरूप नहीं" (इफिसियों 2:8-9)। दूसरा यह सोचना कि हालाँकि हम अनुग्रह द्वारा बचाए गए हैं, कार्य महत्वपूर्ण नहीं है-हम बचाए जा चुके हैं और अब इसे हम आसानी से अपना बना सकते है।

हमारे समय में, ये दूसरी गलती अधिक फ़ैलाने वाली है। परमेश्वर हमें निष्क्रियता के लिए नहीं, लेकिन कार्य करने के लिए बुलाता है-ताकि हम परमेश्वर के राज्य के कार्य में उसके साथ शामिल हो, अभी और अनंत काल के लिए। परमेश्वर के सामने मसीह के कार्यों पर हमारा उद्धार और धार्मिकता निर्भर करती है, लेकिन अब हमें उसके द्वारा उसका कार्य शुरू करने के लिए उसके साथ शामिल होने हेतु बुलाया गया है। (1 यूहन्ना 1:24)

याकूब 2:14-26 कहता है कि विश्वास कर्म बिना "मरा हुआ है"। याकूब ये नहीं कह रहा है कि भले कार्यों से उद्धार मिलता है, लेकिन ये कार्य उद्धार को दर्शाते हैं। काम विश्वास को बचाने के लक्षण है, उद्धार का स्रोत नही। विश्वास, विश्वास को दर्शाने वाले सह-कार्य, एक असम्भवता है-स्वयं में विरोधाभास। जिस पर हम विश्वास करते है और महत्व देते हैं, और उसकी इच्छा रखते है उसका हमारे जीवन, शब्दों, और कार्यों पर असर पड़ेगा। हम अपना समय, उर्जा, और संसाधनों को किस प्रकार नियत करते हैं उससे हमारे मूल्यों और प्राथमिकताओं का पता चलता है। हमारे निर्णय हमारी निष्ठां को दर्शाते हैं।

यूहन्ना 15:1-17, यीशु हमें बताता हैं कि हम उसके बिना कुछ भी नहीं कर सकते। इसका ये मतलब नहीं है कि हमें काम नहीं करना है। इसका मतलब है कि हमें उससे अलग होकर काम नहीं करना है। इस अनुच्छेद में, यीशु फल लाने के बारे में बोलता है उतना ही बोलते है जितना कि बने रहने के बारे में। यदि हम उसमें बने रहेंगे, तो हम बहुतायत से फल्लायेंगे और इस प्रकार हम उसकी महिमा करेंगे। वह बार बार हमारे द्वरा किये जाने वाले कार्यों की बात करता है: अपने जीवन को समर्पित करना, उसकी आज्ञाओं का पालन करना, उसके कामों कोसझा करना, और फल उत्पन्न करना। हमारा जीवन केवल उसमें और उसके द्वारा ही अर्थ पा सकता है। हम उसके हैं, और वह हमें काम पर लगाने की योजना बना रहा है।

हम अपने राजा और राज्य के लिए काम करते हैं उससे हमें डींगे हांकने का अधिकार नहीं मिलता। ये हमारे उसका अनुसरण करने का स्वाभाविक परिणाम है। यीशु ने इस दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से बताया है: लूका 17:7-10:

> "तुम में ऐसा कौन है, जिसका दास हल जोतता या भेड़ें चराता हो, और जब वह खेत से आये, तो उससे कहे, तुरंत आकर भोजन करने बैठ"? और यह ना कहे, मेरा खाना तैयार कर, "और जब तक मैं खाऊँ पिऊँ तब तक मेरी कमर बांधकर मेरी सेवा कर, इसके बाद तू भी खा पी लेना?" क्या वह अपने उस दास का एहसान मानेगा कि उसने वे ही काम किए जिसकी आज्ञा तुम्हे आज्ञा दी गई थी? **इसी रीतिसे तुम भी जब उन सब कामों को कर चुको जिसकी आज्ञा तुम्हें दी गई थी, "तो कहो, हम निकम्मे दास है, जो हमें करना चाहिए था हमने केवल वही** किया है।"

इफ़िसियों 2:8-10 अनुग्रह द्वारा बचाए जाने और परमेश्वर के कार्य में शामिल होने के लिए बचाए जाने के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध दर्शाता है। हम बैठने के लिए नहीं, लेकिन अच्छे कामों के लिए बचाए गई हैं जो उसने हममे से हर एक के लिए तैयार किया है:

> क्योकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह से ही तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है, और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमंड करे। क्योकि हम उसके बनाये हुए है, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए हैं जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।

इसी प्रकार, लोग अक्सर इस बात पर ज्यादा जोर देते हैं कि हमारे लिए परमेश्वर का प्रेम हमारे व्यवहार और नज़रिए से मेल नहीं खाता। यह बार बार दिखाया जजता है कि परमेश्वर हमें उससे अधिक या उससे कम प्रेम नहीं कर सकता है अधिक प्रेम नहीं कर सकता। हालाँकि ये उसके सच्चे प्रेम *अगापे* (परमेश्वर के समान प्रेम ले लिए बाइबिल क्र, मूल बाइबिल शब्द) प्रेम के बारे में सच है, ये उसके *फिलोस* (भाईचारे या स्नेह वाला प्रेम) के प्रेम के बारे में सच नहीं है।

परमेश्वर *अगापे* का प्रेम हमारी योग्यता पर निर्भर है। परमेश्वर सब लोगों को इसी प्रकार प्रेम करता है। यह इन अनुच्छेदों द्वारा स्पष्ट है मत्ती 5:44-45, यूहन्ना 3:16, और रोमियों 5:8। हालाँकि, परमेश्वर का प्रेम हमारे लिए, *फिलोस*, उसके प्रति हमारी प्रतिक्रिया पर निर्भर करता है। ये बिलकुल स्पष्ट है यूहन्ना 16:27:

> क्योकि पिता तो आप ही तुम से प्रेम रखता है, इसलिए कि तुम न्र मुझ से प्रेम रखा है और यह भी विश्वास किया है कि मैं पिता की ओर से आया।

शब्द *फिलोस* का प्रयोग यूहन्ना 20:2 में यूहन्ना के लिए यीशु मसीह के प्रेम को वर्णन करने के लिए किया गया है जब यूहन्ना को "चेले जिसे यीशु प्रेम करता था" के रूप में दर्शाया गया है। ये विशिष्ट विशेषता ही यूहन्ना को अलग करती है। मैं परमेश्वर के साथ उसी तरह का रिश्ता रखना चाहता हूँ। मैं ऐसा व्यक्ति बनना चाहता हूँ जिसके साथ वह रहना चाहता है। मैं उसे प्रसन्न करना चाहता हूँ। इसलिए मैं कार्य करने में उत्कृष्टता प्राप्त करना चाहता हूँ जो वह मुझसे कहता है। मैं उसकी इच्छा के लिए ज़िम्मेदार बनना चाहता हूँ। मैं मेरे लिए उसकी इच्छा के प्रति चौकस रहना चाहता हूँ। मैं वह अनुभव करना चाहता हूँ जो पौलुस कुलुस्सियों के लिए प्रार्थना करता है कुल्लुसियों 1:9ब-12अ:

कि तुम सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहिचान में परिपूर्ण हो जाओ, ताकि तुम्हारा चाल-चलन प्रभु क योग्य हो, और वेह सब प्रकार *उसे* प्रसन्न करते रहो और हर अच्छे काम में फल लाओ और तुम परमेश्वर की पहिचान में बढ़ते जाओ, उसकी महिमा की शक्ति के अनुसार सब प्रकार की सामर्थ्य में बलवंत होते जाओ, यहाँ तक कि आनंद के साथ हर प्रकार से धीरज और सहनशीलता दिखा सको, और पिता का धन्यवाद करते रहो।

प्रार्थना

हे प्रभु, आप मारे गए ताकि मैं आपके लिए जी सकूँ। आपका अनुग्रह मुझे आपके साथ और आपके राज्य के लिए कार्य करने में मदद हेतु बनाया गया है। इसे याद रखने में मेरी मदद करे। इसी तरह जीने में मेरी मदद करे। मैं जानता हूँ कि आपके लिए जिया गया जीवन उतना संभव जीवन है। लेकिन मैं कभी कभी आलसी या विचलित या स्वार्थी हो जाता हूँ। मुझे क्षमा करे। मुझे राज्य-केन्द्रित जीवन जीने के लिए मेरा पहला कदम दिखाएँ। मुझे ये कदम उठाने का सहस दो। फिर मुझे अगला कदम, और अगला और अगला कदम दिखाएँ। औए मुझे इसके लिए भी साहस दे।

प्रशन

निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें, फिर प्रार्थना करें और परमेश्वर से पूछें कि वह आपसे क्या सीखना और कराना चाहता है। शांत होकर सुनें।

अपनी डायरी में दिए गए प्रश्नों में से अपने किसी भी वायदे को लिखें। उन तारीखों को लिखें जब तक आप उन वायदों को पूरा करने की योजना बना रहे हैं।

1. क्या मैं यीशु के लिए जी रहा हूँ या अपने लिए? कैसे?

2. क्या मैं निष्क्रिय रूप से अपने अनंत पुरस्कार के लिए जी रहा हूँ या सक्रिय रूप से परमेश्वर के राज्य की बढ़ोतरी के लिए कार्य कर रहा हूँ? कैसे?

3. मैं जो करता हूँ और अपना समय जिस प्रकार बिताता हूँ, वेह यह दिखाता है कि परमेश्वर का राज्य मुझे लिए प्रेरित सामर्थ्य है? कैसे?

4. इस अध्याय के प्रत्युत्तर में परमेश्वर मुझसे कौन-सी विशिष्ट कार्य करवाना चाहता है? (उन्ह अपने डायरी में लिख ले और अपने कैलेंडर में नियत कर ले।)

5. मैंने जो सीखा है, उसके अनुसार परमेश्वर किसके साथ चाहता है कि उसे (कम से कम एक नाम) साझा करूँ?

प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको इन प्रतिबद्धताओं का पालन करने में सक्षम बनाए और उन लोगों के दिलों को तैयार करे जिनके साथ आप ज्ञान साझा करना चाहते हैं।

2 हमारे पास जीने के लिए सिर्फ एक ही जीवन है

समय हमारे लिए एक अनमोल उपहार है और ये धीरे धीरे फिसलता जा रहा है। इसलिए ये बहुत महत्वपूर्ण है कि हम अपना समय अच्छी तरह से निवेश करे।

हम को अपने दिन गिनने की समझ दे कि हम बुद्धिमान हो जाएँ।
-भजन संहिता 90:12

इस जीवन में, हमें केवल समय ही व्यतीत करना है। धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास की मांग है कि हम इसे परमेश्वर के लिए खर्च करें।

केवल एक जीवन, शीघ्र ही समाप्त हो जायेगा।
केवल वही जो मसीह के लिए किया गया है, आखिर तक बना रहेगा।

-सी. टी. स्टड द्वारा लिखित "सिर्फ एक ही जीवन" से बचे।

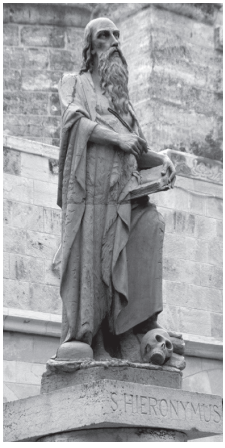

यह बैतलहम में चर्च ऑफ़ नेटिविटी में संत जेरोम की मूर्ति है। जेरोम बाइबल के लातिनी बुल्गाता अनुवाद के अनुवादक थे, जो 1500 से अधिक वर्षों तक आधिकारिक कैथोलिक पवित्रशास्त्र के रूप में उपयोग किया गया और इसे इतिहास में अभी तक के बाइबल अनुवादों में सबसे महत्वपूर्ण अनुवाद धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास माना जाता है।

चर्च ऑफ़ नेटिविटी का निर्माण सुरंग और गुफाओं की एक श्रृंखला के ऊपर किया गया था, जहाँ जेरोम ने तीस वर्षों से अधिक रहकर अनुवाद का काम किया। जेरोम की मूर्ति में उसके बाएँ टखने पर ज़ंजीर से बंधी एक मानव खोपड़ी

दिखाई देती है। परपरा के अनुसार, जेरोम ने खुद को जीवन की क्षणभंगुरता को लगातार याद दिलाने के लिए खोपड़ी को अपने पैर में ज़ंजीर से बाँध लिया। उसके जीवन वचन था भजन संहिता 90:12: "हम को अपने जीवन के दिन गिनने की समझ दे कि हम बुद्धिमान हो जाये।" उसके ध्यान ने परमेश्वर के राज्य के लिए दुनिया पर व्यापक प्रभाव डालने में सक्षम बनाया।

हमारे समय में, इस तरह का केंद्र बनाये रखना शायद पहले से कहीं अद्धिक कठिन है। नईं दिल्ली से बीजिंग तक, लाओस से साओ पाउलो तक, लंदन से न्यूयॉर्क तक बढ़ते हुए शहरीकरण और लोगों के जीवन में नईं तकनीक के एकीकरण ने व्यस्तता और गरीबी की एक नई भावना को जन्म दिया है-समय की गरीबी। जब मैं दूसरों को चेले बनाना चाहता हूँ और उन्हें चेले बनाने के लिए तैयार करता हूँ, तब बार-बार मुझे समाय की कमी से सम्बंधित आपत्तियाँ सुनने को मिलती हैं।

क्यों? हर दिन में चौबीस घंटे होते हैं। लम्बे जीवन की संभावना और समय बचने वाली कई तकनीकों के विकास से कम के बजाय अधिक समय होने की भावना पैदा होनी चाहिए। क्या बदल गया?

यीशु ने एक केन्द्रित जीवन का आदर्श तैयार किया। उसने बार बार वही कहा जो उसने पिता से सुना था और वही किया जो उसने पिता को करते सुना (यूहन्ना 5:19; 8:28; 12:49-50; 14:10)। इसी तरह से जीवन जीते हुए, उसने यशायाह 11 में शाखा के धर्मी शासन के बारे में भविष्यद्वाणी को पूरा किया: और उसको यहोवा का भय सुगंध सा भाएगा। वह मुँह देखा न्याय न करेगा और न अपने कानों के सुनने के अनुसार निर्णय करेगा: (यशायाह 11:3)। उन्होंने दिखाई देने वाली परिस्थितियों की बजाय परमेश्वर की इच्छा पर आधारित जीवन जिया। हम यह सोचने के लिए प्रलोभित हो सकते हैं कि इस प्रकार का जीवन हमारे लिए दुर्गम है, लेकिन यीशु ने, यूहन्ना 16:13-14 में कहा कि पवित्र आत्मा अपने अनुयायियों को अस्तित्व में इसी तरीके का अनुभव करने में सक्षम बनाएगा।

आओ अधिक बारीकी से देखें। यीशु ने कहा, "मैं अपने आप से कुछ नहीं करता परन्तु जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया वैसे ही ये बाते कहता हूँ।" (यूहन्ना 8:28ब) "क्योकि मैंने अपनी और से बातें नहीं की; परन्तु पिता जिसने मुझे भेजी है उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि क्या क्या कहूँ और क्या क्या बोलूं" (यूहन्ना 12:49) यीशु ने संकेत दिया कि उसने न केवल वह सब कुछ किया जो पिता ने उससे कहा था, बल्कि यह भी कि उसने कुछ और नहीं किया या कहा। यूहन्ना 17:4में, एक आश्चर्यजनक बयान दिया: "जो कार्य तूने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैंने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है।" यीशु जनता था कि पिता उससे क्या करवाना चाहता है; और उसने किया भी-और कुछ नहीं।

धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास जीवन में, प्रभु हमें जो मार्गदर्शन दे रहा हैं उसके बाहर किसी भी बात के लिए कोई जगह नहीं है। हम जो कुछ भी करते है या कहते हैं या कहने में असफल हो जाते हैं वह या तो परमेश्वर के निर्देशन में

होता है या हमारे लिए उसकी योजना के बाहर होता है। इफ़िसियों 2:10 में, पौलुस भले कामों में के बारे में बात करता है, जिन्हें परमेश्वर ने हममें से हर एक के लिए तैयार किया है। हालाँकि हमारे पास सिमित समय, उर्जा और संसाधन हैं, इसलिए परमेश्वर मेरे लिए जो काम करने के लिए तैयार किया है, उसके बाहर मैं भी जो पल बिताता हूँ, वह उस बात से समय निकाल रहा है जो उसने मेरे लिए चाहा है।

हम बहुत अधिक व्यस्त होना महसूस करते हैं, क्योकि हमारे पास "दोनों/और" करने के लिए पर्याप्त समय नहीं है-अर्थात् दोनों परमेश्वर ने हमारे लिए क्या योजना बनायी है और हम क्या करना चाहते हैं। यदि हमें लगता है कि हम बहुत व्यस्त है, तो यह संकेत दे सकता है कि खुद को परमेश्वर की इच्छा तक सीमित रखने की बजाय, हम प्रभु की अगुवाई के बाहर कुछ गतिविधियाँ भी करना चाह रहे हैं, जिन्हें हम करना चाहते हैं। परिणामस्वरूप, हमारे पास दोनों काम करने के लिए प्रयाप्त समय नहीं है। इसी तरह, अगर हम वो कहते हैं जो हम कहना चाहते हैं बजाय खुद को कहने से रोकने के लिए कि प्रभु क्या कह रहा है, तो हम अपने चारों ओर का शोर बाधा बन सकता है, हम लेकिन उन उद्देश्यों को हासिल करने में असफल हो जाते हैं जिन्हें परमेश्वर हमारे लिए चाहता हैं।

कुछ लोगों के लिए, ये बाहरी गतिविधियाँ बुरी चीजें है, पापपूर्ण चीज़े हैं। दूसरों के लिए, वे हाशिए पर रहने वाली है, लेकिन परमेश्वर की अगुवाई से परे है। एक सामान्य उदहारण स्क्रीन पर दिया है: टेलिविज़न, वेब सर्फिंग, यूट्यूब, फेसबुक, और कंप्यूटर गेम्स। बाहरी लोगों के लिए, बाहरी गतिविधियाँ अच्छी और ध्यान भटकाने वाली होती है, जैसे किसी भले उद्देश्य के लिए अपनी इच्छा से काम करना या व्यायाम करना। यह ध्यान भटकाने वाला बन जाता है, हालाँकि यह ऐसा कुछ नहीं है जिसे प्रभु ने आपसे करने के लिए कहा है लेकिन ये कुछ ऐसा जिसे आपने चुना है, क्योकि आप उसे करना चाहते थे।

प्रभु ने जो योजना हमारे लिए बनाई है और जो हम करना चाहते हैं उसे करने के लिए पर्याप्त समय नहीं है। यदि हम अपनी इच्छा के अलावा वह काम करते हैं जो प्रभु चाहता हैं, तो वहाँ निश्चित रूप से पर्याप्त समय, उर्जा, या संसाधन नहीं होंगे। ये भण्डारीपण का विषय है। हमें हर दिन दिए गए चौबीस घंटों का सही इस्तेमाल करने के लिए आत्मा के साथ अधिक तालमेल बिठाने की ज़रूरत है। हमें अपनी गतिविधियों में और दूसरों के साथ अपने संचार में उनके उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रभु के इरादों और इच्छाओं के प्रति लगातार चौकस रहने की ज़रूरत है।

पौलुस ने लिखा,

> परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार जो मुझे दिया गया है, मैंने बुद्धिमान राजमिस्त्री के समान नींव डाली और दूसरा उस पर रद्दा रखता है। परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है। यदि कोई इस नींव पर सोना या चाँदी या बहुमूल्य

> पत्थर या काठ या घास या फूस का रद्दा रखे, तो हर का काम प्रकट हो जायेगा; क्योकि वह दिन उसे बताएगा, इसलिए कि आग के सस्थ प्रकट होगा और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है। जिसका काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पाएगा। यदि किसी का काम जल जाएगा, तो वह हानि उठेगा; पर वह आप बाख जाएगा परन्तु जलते-जलते।
>
> -1 कुरिन्थियों 3:10-15

हम अपना समय कैसे निवेश करते हैं, इस्सके अनंत परिणाम होंगे। हमारा बोलना और कार्यों की दैनिक पद्धति पर कामों का एक समूह बनाते हैं, जिसका मूल्यांकन परमेश्वर न्याय के दिन करेगा। यह हमारे उद्धार को प्रभावित नहीं करेगा, जो सुरक्षित है, लेकिन ये हमारे प्रतिफल के स्तर को निर्धारित करेगा। इसी प्रकार, आत्मा के साथ तालमेल बिठाना इस जीवन और अनंत काल दोनों के लिए महत्वपूर्ण है।

यद्यपि हम प्रभु के काम के लिए बुलाये नहीं जाने के मामले में कभी भी "काम न करते हुए" नहीं होते हैं, सृष्टिकर्ता ने हमें मनोरंजन और विश्राम की आवश्यकता के लिए बनाया है। वह हमसे बेहतर जानता है कि हमें क्या चाहिए। वह बार-बार हमें इन गतिविधियों की और निर्देशित करेगा-गतिविधि की कमी की और। उसने हमें अपने और अपनी रचना का आनद लेने के लिए भेजा है। यहाँ तक कि पुराने नियम की व्यवस्था में भी, परमेश्वर ने सब्त और विभिन्न पर्वों के माध्यम से विश्राम और उत्सव के समयों को सुनिश्चित किया। हमरा पिता प्रेमी है। वह हमें जवान का आनंद लेते देख कर प्रसन्न होता है।

क्या होगा यदि हमें विश्वास नहीं कि हम अपने समय के उपयोग के बारे में परमेश्वर से सुन रहे हैं। तब हम अपने उत्तम निर्णय का उपयोग करते हैं। वह समझता है कि उसे सुनने की हमारी क्षमता के मामले में हम कहाँ कदम पर हैं। जब तक हम उसका अनुसरण करने हेतु उससे सुनना चाहते है, वह हमारी अनिश्चितता के लिए हमें दोषी नहीं ठहराएगा। ये सरल जागरूकता है कि वह इस बात की परवाह करता है कि हम अपना समय कैसे निवेश करते हैं, परिपक्वता में बढ़ने के लिए यह हमारे लिए सहायक है।

प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता, मुझे आपकी सहायता की ज़रूरत है। मैं आपका हूँ। मेरा सारा समय आपका है। फिर भी मैं अक्सर इसे उन बातों पर समय व्यतीत करता हूँ, जिन्हें मैं पसंद करता हूँ, न कि जैसे आप अगुवाई करते हैं। परिणामस्वरुप, मैं परेशांन और निराशाओं को महसूस करता हूँ। मैं अस्पष्ट हूँ। मेरे पास अपने समय से कही अधिक मांग है जिसे मैं पूरा नहीं कर सकता हूँ। लेकिन वे सभी मांग आपकी ओर से नहीं हैं। मुझे आपकी वाणी को सुनना और आपकी अगूवाई को पहचानना सिखा। मुझे उन कार्यों को ना कहना सिखा जो आपकी और से नहीं है और जो है उन्हें हाँ कहना सिखा। मुझे अपना मुँह बंद करना सिखा, सिवाय इसके कि जब आप मुझे कुछ कहने को दे। मुझे यीशु की तरह यह बोलने में सक्षम करे, कि मैं केवल वही करूँ जो मैं अपने पिता से सुनू हूँ और केवल वही करूँ जो मेरे पिता को करते हुए देखूँ।

प्रशन

निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़े और फिर प्रार्थना करें और परमेश्वर से पूछे कि वह आपको क्या सिखाना और क्या कराना चाहता है। शांत होकर सुनें।

अपनी डायरी की समीक्षा करें। क्या आपकी कोई पिछली प्रतिज्ञाएँ हैं जिन्हें आपने पूरा नहीं किया है? यदि आवश्यक हो, तो संशोधित समापन तिथियाँ निर्धारित करें।

1. क्या मैं अपने समय का सही भण्डारी हूँ?

   अ. क्या मैं अपना समय पापपूर्ण कार्यों और विचारों में व्यतीत कर रहा हूँ?

   ब. क्या मैं हाशिए पर रहने वाली बातों में अपना समय बर्बाद कर रहा हूँ?

   स. क्या मैं उन बातों पर अपना समय बर्बाद कर रहा हूँ, जिनके लिए परमेश्वर न मुझे नहीं बुलाया है?

   द. क्या परमेश्वर मुझे कुछ ऐसा करने के लिए बुला रहा है, जो मैं नहीं कर रहा हूँ?

2. इस सम्बन्ध में मुझे किन बड़े क्षेत्रों में सुधार की ज़रूरत है? क्या मुझे जितना कहना चाहिए उससे अधिक बोल रहा हूँ या पर्याप्त नहीं बोल रहा हूँ मुझे जितना करना चाहिए उससे अधिक कर रहा हूँ या पर्याप्त नहीं कर रहा हूँ?

3. इस अध्याय के प्रत्युत्तर में परमेश्वर मुझसे कौन-सी विशिष्ट कार्य करवाना चाहता है? (उन्ह अपने डायरी में लिख ले और अपने कैलेंडर में नियत कर ले।)

4. मैंने जो सीखा है, उसके अनुसार परमेश्वर किसके साथ चाहता है कि उसे (कम से कम एक नाम) साझा करूँ?

प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको इन प्रतिबद्धताओं का पालन करने में सक्षम बनाए और उन लोगों के दिलों को तैयार करे जिनके साथ आप ज्ञान साझा करना चाहते हैं।

3 परमेश्वर को जानना हमारा प्राथमिक लक्ष्य है

मेरे जीवन का प्राथमिक लक्ष्य परमेश्वर को जानना होना चाहिए-उसे अधिक भरपूरी और अधिक निकटता से जानना।

> जो वस्तुएँ मेरे के लिए लाभ की थीं, उन वस्तुओं को मैं ने मसीह के के लिए हानि समझ लिया है। उस से भी अधिक, परन्तु जो जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैं ने मसीह के कारण हानि समझ लिया है। वरन् मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूँ। जिसके कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूँ, जिससे मैं मसीह को प्राप्त करूँ और उसमें पाया जाऊँ; न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ, जो व्यवस्था से है, वरन् उस धार्मिकता के साथ जो मसीह पर विश्वास करने के कारण है और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है; ताकि मैं उसको और उसके मृत्युञ्जय की सामर्थ्य को, और उसके साथ दुःखों में सहभागी होने के मर्म को जानूँ, और उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूँ कि मैं किसी भी रीति से मरे हुओं में से जी उठने के पद तक पहुँचूँ।
>
> -फिलिप्पियों 3:7-11

फिलिप्पियों 3 पौलुस बताता है कि उसका जीवन एक चीज़ पर केंद्रित था। उसने यीशु को जानने और "उसमें पाए जाने" के लिए संघर्ष किया, बलिदान दिया और कष्ट सहा। सबसे पहले, पौलुस अपने निष्कलंक वंश और कड़ी मेहनत से हासिल की गई धार्मिक उपलब्धियों का वर्णन करता है (3:4-6); फिर वह उन्हें "मसीह यीशु की पहिचान की उत्तमता" की तुलना में "कचरा" (शाब्दिक रूप से, कूड़ा) कहकर रद्द कर देता है। हमारा आनंद, घमण्ड और संतुष्टि हमारी योग्यताओं, उपलब्धियों या विरासत से नहीं होनी चाहिए (3:1-6)। मसीह को जानना, और उसमें पाया जाना, एक वस्तु है-एकमात्र वस्तु-जो इस योग्य है, जिसके लिए जिया या मरा जा सके। मसीह धार्मिकता और अनन्त जीवन का स्रोत है। पौलुस लिखता है, उन आशीषों का मार्ग उसे जानने और पूरी तरह से उसकी पहचान के साथ

पाया जाता है (3:7-11)। पौलुस पहचान लेता है कि वह अभी तक अपने गंतव्य तक नहीं पहूँचा है; लेकिन यही एक चीज़ थी जो उसके हर विचार और उसकी हर सांस पर हावी थी।

यीशु का अनुसरण करने वाले सभी लोगों को इस तरह सोचना चाहिए। पौलुस उन लोगों को प्रोत्साहित करता है जो "सिद्ध" या परिपक्व हैं, उन्हें "यह विचार रखने" के लिए प्रोत्साहित करता है (3:15)। "हे भाइयो, तुम सब मिलकर मेरी सी चाल चलो" (3:17)। पौलुस उस निशाने की ओर बढ़ने का प्रयास करता है और हम सभी को मसीह के साथ एक गहरा रिश्ता बनाने के लिए कहता है। परमेश्वर हमें बैठने और विश्राम करने के लिए नहीं, बल्कि उसके साथ और उसकी ओर परिश्रम करने के लिए बचाता है।

इसके विपरीत, जो लोग सांसारिक सुखों के लिए जीते हैं और यीशु के अलावा अन्य चीजों पर घमण्ड करते हैं, उन्हें मसीह के क्रूस के बैरी कहा जाता है। वे संसार के नागरिक हैं, परमेश्वर के राज्य के नहीं। अंत में, वे नष्ट हो जाएँगे, जबकि राज्य के नागरिक हमारे महिमामय राजा की समानता में बदल जाएँगे और हमेशा उसके साथ रहेंगे (3:18-21)।

पौलुस कोई बीच का रास्ता नहीं सुझाता। हम या तो परमेश्वर के लिए जिएँगे या किसी और चीज़ के लिए। फिर भी आज कलीसिया में, कई लोग मैदान के बीच में अर्थात् अस्तित्वहीन रहने की कोशिश कर रहे हैं। यह बेहद परेशान करने वाली बात है। लौदीकिया की गुनगुनी कलीसिया की तरह, हमें बाट जोहने और पश्चाताप करने की ज़रूरत है (प्रकाशितवाक्य 3:14-19)। हमें यीशु की आवाज़ सुनने और उसके साथ फिर से संगति प्राप्त करने की ज़रूरत है (प्रकाशितवाक्य 3:20)।

जीवन का मुख्य उद्देश्य परमेश्वर को जानना और उस ज्ञान पर प्रतिक्रिया देना है। अगर हम उसे करीब से जानते हैं, अगर हम समझते हैं कि वह कौन है, और अगर हम खुद को उसकी इच्छा, तौर-तरीकों, उद्देश्य, स्वभाव, प्रकृति, इच्छाओं और विचारों में डुबो देते हैं-तो हमारी अपनी इच्छा, तौर-तरीकों, उद्देश्य, स्वभाव, प्रकृति, अभिलाषा, और विचारों को उसके द्वारा आकार दिया जाएगा। हम अधिकाधिक उसके जैसे बनते जाएँगे। जहाँ तक हम उसे जानते हैं, हम उसके स्वरूप में फिर से बनाए जाएँगे।

हम इस प्रक्रिया को यहाँ, पृथ्वी पर, आंशिक रूप से संगति और आराधना की अनंत काल की तैयारी के लिए शुरू करते हैं। जिस हद तक हम प्रभु को जानते हैं वही वह हद है जहाँ तक वह हमें अपने स्वरूप में बदल सकता है। यह तब तक पूरी तरह से नहीं होगा जब तक हम अनंत काल में प्रवेश नहीं कर लेते और उसकी उपस्थिति में जाग नहीं जाते (1 यूहन्ना 3:2-3), लेकिन हमें इस परिवर्तन का अनुभव अब से शुरू करना चाहिए (रोमियों 12:2)।

जब हम पृथ्वी पर ही हैं, प्रभु की योजना है कि वह दूसरों से अपने बारे में बात करने के लिए हमारा उपयोग करेगा। उसे जानना (फिलिप्पियों 3:8) और उसे दूसरों को बताना (प्रेरितों के काम 20:24) एक शिष्य का जीवन है। ये दोनों जुड़े हुए हैं। जितना बेहतर हम उसे जानते हैं, उतना ही बेहतर हम उसे दूसरों को बता सकते हैं। जितना अधिक स्पष्ट रूप से हम उसे सुनेंगे, उतना ही अधिक स्पष्ट रूप से हम उसके वचनों और इच्छा को बोल सकते हैं।

अपने आप, हम संभवतः प्रभु को समझ नहीं सकते हैं। केवल उसकी दया ही से हम उसकी संगति प्राप्त कर सकते हैं (मत्ती 11:27)। लेकिन वह अपने आप को ज्ञात करवाने के लिए उत्सुक है। वह लगातार बात कर रहा है। वह बड़े स्तर पर बात करता है: प्रकृति के माध्यम से, सृष्टि के माध्यम से, साम्राज्यों के उत्थान और पतन के माध्यम से, मानव इतिहास को प्रकट करने के माध्यम से। वह शांति से और परिचित रूप से भी बात करता है: विचारों, स्वप्नों और शांत छापों के माध्यम से; किसी मित्र के छोटे-छोटे इशारों या चेहरे के भावों के माध्यम से। वह पवित्रशास्त्र के माध्यम से, प्रार्थना के माध्यम से, साथी विश्वासियों के शब्दों के माध्यम से, दर्द या दुःख के माध्यम से संवाद करता है।

यीशु अंतिम वचन है, पिता का सम्पूर्ण अभिव्यक्ति है (कुलुस्सियों 1:15-20)। यूहन्ना 1:1 और यूहन्ना 1:14 में उसे वचन कहा गया है। इब्रानियों का लेखक हमें बताता है कि परमेश्वर कई तरीकों से बात करता है, जिनमें से सबसे बड़ा मसीह के माध्यम से है (इब्रानियों 1:1-4)।

निस्संदेह, हम परमेश्वर को केवल आंशिक रूप से ही जान सकते हैं। वह अनंत है; हम सीमित हैं। परिणामस्वरूप, हममें से प्रत्येक के पास एक मानसिक बक्सा है जो परमेश्वर की हमारी धारणा को सीमित करता है। चुनौती उस बक्से का विस्तार करने की है-अर्थात अपने अनंत परमेश्वर को बेहतर ढंग से समझने की।

बक्से का ऊपरी सिरा परमेश्वर के बड़े काम करने की क्षमता के बारे में हमारे दृष्टिकोण का वर्णन करता है। इसे बढ़ाने की जरूरत है। याईर के साथ यही कुछ हुआ था (मरकुस 5:22-24, 35-43; लूका 8:41-42, 49-56) जब उसकी बेटी मर गई। यीशु ने उससे कहा कि वह डरे नहीं और उसे मृतकों में से जीवित करने के लिए आगे बढ़े। उस दिन याईर के बक्से का सिर ऊँचा किया गया था।

बक्से के किनारे परमेश्वर की चिंता की व्यापकता के बारे में हमारी धारणा का वर्णन करते हैं। हमारे बक्से के किनारों को विस्तारित करने की आवश्यकता है। यह पतरस के साथ प्रेरितों 10 में हुआ, जब एक दर्शन और फिर कुरनेलियुस के साथ उसकी मुलाक़ात के माध्यम से, उसने सीखा कि सुसमाचार अन्यजातियों के लिए भी था।

बक्से का निचला हिस्सा हमारी समझ का वर्णन करता है कि परमेश्वर छोटी-छोटी चीज़ों के बारे में भी चिन्ता करता हैं। हमारे बक्से के निचले हिस्से को नीचे

करने की जरूरत है। हमारा परमेश्वर जानता है कि प्रत्येक व्यक्ति के सिर पर कितने बाल हैं (मत्ती 10:30)। सारी सृष्टि में कुछ भी, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो, परमेश्वर की सोच और नियंत्रण से बाहर नहीं है। क्या आपके जीवन में कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जो आपको लगते हैं कि परमेश्वर की चिंता के लिए बहुत छोटे हैं?

परमेश्वर को जानने के लिए, उसके वचन का ज्ञान आवश्यक है, लेकिन पर्याप्त नहीं। हम उसके वचन पर कैसी प्रतिक्रिया देते हैं, यह भी मायने रखता है। शैतान किसी भी इंसान से अधिक पवित्रशास्त्र जानता है, लेकिन उसने आभारी समर्पण के बजाय घमण्ड और विद्रोह के साथ जवाब दिया। परिणामस्वरूप, वह अपने सृष्टिकर्ता से अलग हो गया है। विश्वास भी पर्याप्त नहीं है; दुष्ट आत्माएँ परमेश्वर पर विश्वास करती हैं-और काँपती हैं (याकूब 2:19)। ज्ञान फूलता है, लेकिन प्रेम बढ़ता है (1 कुरिन्थियों 8:1 एनआरएसवी)। इससे बचने के लिए, जो कुछ भी हम सीखते हैं, हमें उस पर विनम्र आज्ञाकारिता के साथ प्रतिक्रिया देने की आदत डालनी चाहिए।

बाइबल के दृष्टिकोण से, परमेश्वर को सुनना और उसकी आज्ञा का पालन करना अभिन्न है। वास्तव में, क्रिया "आज्ञापालन करना" के लिए यूनानी शब्द "सुनना" क्रिया का एक गहन रूप है। इसलिए, परमेश्वर की बात सुनना और आज्ञाकारिता के साथ जवाब देना मसीह के अनुयायी के लिए वैकल्पिक नहीं है; वे आवश्यक हैं। यीशु ने कहा कि उसके अनुयायी उसकी आवाज़ सुनेंगे और उसका अनुसरण करेंगे (यूहन्ना 10:27)। इसके विपरीत, उसने यहूदियों के एक समूह से कहा कि उन्होंने परमेश्वर की आवाज़ नहीं सुनी क्योंकि वे परमेश्वर के नहीं हैं (यूहन्ना 8:47)। उसने अपने शिष्यों से कहा कि वे केवल दास नहीं थे, बल्कि मित्र थे जिन पर उसने विश्वास किया था (यूहन्ना 15:15)। पौलुस कहता है कि जो लोग परमेश्वर की आत्मा की अगुवाई में चल रहे हैं वे परमेश्वर के पुत्र हैं (रोमियों 8:14)। पतरस का कहना है कि विश्वासियों को यीशु मसीह का आज्ञा मानने के लिए आत्मा के पवित्र कार्य द्वारा चुना जाता है (1 पतरस 1:1-2)। यूहन्ना का कहना है कि मसीह की आज्ञाकारिता इस बात का प्रमाण है कि हम वास्तव में उसके हैं (1 यूहन्ना 2:3-6)।

परमेश्वर पवित्र आत्मा और अपने वचन (बाइबल) दोनों के माध्यम से सीधे बात करता है। पवित्रशास्त्र में, विशेष रूप से पत्रियों में, कई बार वचन और आत्मा का उपयोग परस्पर एक दूसरे के लिए उपयोग किया जाता है (उदाहरण के लिए, इफ़िसियों 5:18ब-19 समानांतर कुलुस्सियों 3:16)। वे आपस में विरोधी नहीं हैं, बल्कि एकता में हैं (यूहन्ना 3:34; इफ़िसियों 6:17)। फिर भी कलीसिया के बड़े वर्ग एक या दूसरे पर जोर देते हैं: या तो परमेश्वर को उसके वचन (यानी, बाइबल) के माध्यम से जानना या पवित्र आत्मा *से सीधा बात करना*।

निःसंदेह, स्वयं को वचन से तर करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। पवित्रशास्त्र के बिना, हम आत्मीयता के सागर में बह जायेंगे। बाइबल एक अद्भुत उपहार है जो हमें सिखाती है कि परमेश्वर कौन है और वह कैसे कार्य करता है। यदि हम बाइबल के माध्यम से परमेश्वर को जानने को प्राथमिकता देने में

असफल रहते हैं, तो हम वास्तव में अदूरदर्शी हैं।

हालाँकि, क्योंकि प्रभु के उद्देश्य हममें से प्रत्येक के लिए विशिष्ट हैं (इफ़िसियों 2:10), हमें उसकी इच्छाओं को विशेष रूप से समझने के लिए पवित्र आत्मा की पल-पल अगुवाई की भी आवश्यकता है। बाइबल में सिद्धांत और उदाहरण इस प्रकार का मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए नहीं बनाए गए हैं। पवित्रशास्त्र, पवित्र आत्मा की आवाज़ को पहचानने में पहली परीक्षा है, लेकिन यह हमारे साथ परमेश्वर की बातचीत के अंत के बजाय आरम्भ के रूप में कार्य करता है।

उदाहरण के लिए, लूका 4:23-27 में यीशु ने एलिय्याह की सारफत की विधवा के लिए सेवकाई और सीरियावासी नामान के लिए एलीशा की सेवकाई का उल्लेख करते हुए कहा कि इन भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर द्वारा उन विशिष्ट व्यक्तियों के लिए निर्देशित किया गया था, न कि दूसरों के लिए जो कहीं अधिक प्रत्यक्ष और सुलभ थे। यीशु ने कहा कि यही बात उसके लिये भी सच है। उसे कैसे पता चला कि किसे चँगा करना है? उसने पिता से सुना।

पवित्र आत्मा अलग-अलग लोगों से अलग-अलग तरीकों से बात करता है, और एक ही व्यक्ति से अलग-अलग समय पर अलग-अलग तरीकों से बात करता है। उदाहरण के लिए, कभी-कभी मैं इस प्रबल भावना के साथ जागता हूँ कि परमेश्वर मेरे द्वारा देखे गए सपने के माध्यम से मुझसे बात कर रहा है। कुछ अवसरों पर मैंने सपनों के आधार पर बड़े पैमाने पर जीवन बदलने वाले निर्णय लिए हैं। हालाँकि, यह प्रभु से मैंने जो सुना है उसका एक छोटा सा अंश है। बहुत अधिक बार, मैं पवित्रशास्त्र के माध्यम से परमेश्वर से सुनता हूँ (अक्सर विशेष अनुप्रयोगों के बारे में अपने विचारों के माध्यम से बोलने वाली आत्मा के साथ संयोजन में), या मैं पवित्रशास्त्र में प्रतिरूप देखता हूँ जो वही प्रतिबिंबित करते हैं जो मैं परमेश्वर को अपने चारों ओर करते हुए देख रहा हूँ। मैं किसी गीत या संत के शब्दों से, या दुनिया में किसी देखने योग्य चीज़ के सावधानीपूर्वक विचार से प्रभावित होता हूँ जिसे आत्मा मुझ पर प्रकाश डालता है।

क्योंकि पवित्र आत्मा हमारे अन्दर वास करता है, अक्सर उसकी आवाज़ को केवल हमारे अपने विचारों के रूप में माना जाता है। इसलिए, यह पहचानना अथवा सीखना महत्वपूर्ण है कि वह वास्तव में किन विचारों के साथ हमसे बात कर रहा है। उम्मीद है, समय के साथ हम परमेश्वर को अपने विचारों के बढ़ते हिस्से में बात करते हुए देखेंगे, जब तक कि हमारा विचार जीवन प्रभु के साथ एक अंतहीन बातचीत नहीं बन जाता। हम इस क्षेत्र में जितनी अधिक बढ़ते जाएँगे, उतना ही अधिक हम अपने जीवन के लिए परमेश्वर की विशिष्ट योजनाओं के अनुरूप हो सकेंगे। यदि परमेश्वर को हमारे सिर पर बालों की सँख्या की चिंता है (मत्ती 10:30; लूका 12:7), तो संभवतः मेरे छोटे-छोटे दैनिक निर्णयों के बारे में उसकी एक राय होगी।

पवित्रशास्त्र के साथ संगति के अलावा, मेरे विचारों के स्रोत का मूल्यांकन करने के

लिए मैं जो सबसे बहुमूल्य जाँच का उपयोग करता हूँ वह यह है कि क्या वे आत्मा के फल या शरीर के फल की विशेषता हैं (गलातियों 5:19-23)। यदि उनमें घृणा, स्वार्थी महत्वाकांक्षा, यौन अनैतिकता, या शरीर के अन्य लक्षण शामिल हैं, तो मैं निश्चिंत हो सकता हूँ कि ये विचार परमेश्वर की ओर से नहीं आ रहे हैं। इसी तरह, मेरे विचारों का स्वर मुझसे बहुत कुछ कहता है। उदाहरण के लिए, पवित्र आत्मा दोषी ठहराता है जबकि शत्रु निंदा करता है।

परमेश्वर को सुनने की हमारी क्षमता में वृद्धि करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि हम उसे जो कहते हुए सुनते हैं उस पर कार्य करें। वह हमारी सीमाएँ और हमारी कमजोरियाँ जानता है। अगर हम उसकी आवाज़ के बारे में अनिश्चित हैं तो वह हमसे कोई बड़ी चीज़ नहीं मांगेगा। वह धैर्यवान है। हालाँकि, यदि हम वह करने में असफल हो जाते हैं जो वह हमें बताता है, तो हम उसे सुनने और उसका अनुसरण करने की हमारी क्षमता में कमज़ोर रह जाएँगे। दूसरी ओर, यदि हम उससे जो सुनते हैं उस पर कार्य करते हैं, तो वह भविष्य में हमसे अधिक स्पष्ट रूप से बात करेगा और हमसे और अधिक पूछना शुरू कर देगा। यह परमेश्वर के साथ घनिष्ठता का मार्ग है। परमेश्वर की आवाज़ के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना एक ऐसी यात्रा है जिसे हम तब तक पूरा नहीं करेंगे जब तक हम उसे आमने-सामने नहीं देख लेते। तब तक हम "रास्ते में" या "प्रक्रिया में" हैं।

हमारे चारों ओर, परमेश्वर स्वयं को ज्ञात और महिमान्वित करने के लिए लगातार कार्य कर रहा है। इसलिए, हम लगातार उसे अनुभव करने और उसे पूरी तरह से समझने के अवसरों से घिरे रहते हैं। हम अपने आस-पास और दुनिया में परमेश्वर की गतिविधि को किस हद तक समझ रहे हैं? हम उसके बारे में क्या सीख रहे हैं? परमेश्वर के बारे में हम जो सीखते हैं उसका हम क्या करते हैं, सोचते हैं, कहते हैं और क्या बनते जा रहे हैं, उस पर क्या प्रभाव पड़ता है?

यदि हम परमेश्वर को जानना और उसकी आज्ञा मानना चाहते हैं, तो हम उनके शिष्य हैं, उनके अनुयायी हैं। लेकिन अगर हम किसी को देख या सुन नहीं सकते तो हम उसका अनुसरण कैसे कर सकते हैं? खुशी की बात है कि ब्रह्माण्ड विज्ञान से लेकर उप-परमाण्विक स्तर तक, परमेश्वर हमारे चारों ओर हर स्तर पर निरंतर काम कर रहा है। वह निरंतर बोल रहा है; हमें बस सुनने के लिए कान चाहिए।

जिस हद तक हम उसके भावों को समझते हैं, हम सार्थक रूप से प्रतिक्रिया दे सकते हैं। ऐसा करने में हमारी विश्वासयोग्यता ही एक चेले का जीवन है। यह वस्तुतः विश्वास से भरा जीवन है। यह एक ऐसा जीवन है जो उन अस्थायी चीजों पर आधारित नहीं है जिन्हें हमारी आँखें हमारे चारों ओर देख सकती हैं, बल्कि उन अनदेखी, शाश्वत वास्तविकताओं पर आधारित है जो वह हमारे सामने प्रकट करता है।

प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता, आपने अपनी आत्मा को हमारे मनों में डाल दिया है, जो आपकी ओर से आँहे भरता है, "अब्बा," "पिता।" हालाँकि हमारे प्राण आपके लिए तरसते हैं, फिर भी हम अक्सर अपने आस-पास की चीज़ों से आकर्षित हो जाते हैं। मुझे यह स्वीकार करने में शर्म आती है कि मैं अपना अधिकांश समय, ऊर्जा और प्रयास आपके अलावा अन्य चीजों में खर्च करता हूँ। मुझे क्षमा करे। मुझे बदल दें। कृपया मेरा हृदय बदल दें और मुझे पूरी तरह से, जो कुछ भी मेरे पास है, आपको खोजने के लिए प्रेरित करें। उन चीज़ों को मेरे जीवन से निकाल दो जो मुझे आपसे दूर रखती हैं, भले ही मैं उन्हें कसकर पकड़े हुए हूँ और उनसे बहुत प्रेम रखता हूँ। क्योंकि मैं गहराई से जानता हूँ कि केवल आपके पास ही वह है जो मुझे चाहिए। मुझे अपनी आवाज़ पहचानना और आज्ञापालन करना सिखा। और जैसे ही मैं आज्ञा मानूं, मुझे आपको जानना और आपको अधिक स्पष्ट रूप से सुनना सिखाएँ।

प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें, फिर प्रार्थना करें और परमेश्वर से पूछें कि वह आपसे क्या सीखना और कराना चाहता है। शांत होकर सुनें।

अपनी डायरी की समीक्षा करें। क्या आपकी कोई पिछली प्रतिज्ञाएँ हैं जिन्हें आपने पूरा नहीं किया है? यदि आवश्यक हो, तो संशोधित समापन तिथियाँ निर्धारित करें।

1. क्या यीशु को जानना मेरे जीवन की सबसे महत्वपूर्ण बात है?

2. मैं अपने दैनिक जीवन में कितनी बार और कितनी स्पष्टता से परमेश्वर की आवाज़ सुनता और पहचानता हूँ?

3. मैं उसकी आवाज़ को और अधिक विश्वासपूर्वक कैसे सुन सकता हूँ?

4. इस अध्याय के प्रत्युत्तर में परमेश्वर मुझसे कौन-सी विशिष्ट कार्य करवाना चाहता है? (उन्ह अपने डायरी में लिख ले और अपने कैलेंडर में नियत कर ले।)

5. मैंने जो सीखा है, उसके अनुसार परमेश्वर किसके साथ चाहता है कि उसे (कम से कम एक नाम) साझा करूँ?

प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको इन प्रतिबद्धताओं का पालन करने में सक्षम बनाए और उन लोगों के दिलों को तैयार करे जिनके साथ आप ज्ञान साझा करना चाहते हैं।

4 परमेश्वर का राज्य हमारे लिए दिशा सूचक यंत्र है

परमेश्वर का अनंत काल का राज्य इस अस्थायी दुनिया में रहने के लिए मार्गदर्शक वास्तविकता है।

> इसलिये हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नष्ट होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है। क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है; और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं; क्योंकि देखी हुई वस्तुएँ थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएँ सदा बनी रहती हैं।
>
> -2 कुरिन्थियों 4:16-18

परमेश्वर का राज्य कई मायनों में विरोधाभासी है। परमेश्वर के राज्य में:

बड़ा बनने का तरीका सेवा करना है (मत्ती 20:25-28)।

मजबूत होने का तरीका कमजोर होना है (2 कुरिन्थियों 12:9-10)।

अमीर बनने का तरीका सब कुछ दे देना है (मरकुस 10:21)।

बुद्धिमान बनने का तरीका मूर्ख बनना है (1 कुरिन्थियों 1:18-25)।

आनंदित होने का तरीका विलाप करना है (लूका 6:20-26)।

प्रथम होने का तरीका अंतिम होना है (मरकुस 9:35)।

जीतने का तरीका हारना है (लूका 9:25)।

जीने का तरीका मरना है (मत्ती 10:38-39)।

हमें बचाने के लिए परमेश्वर की अपनी योजना प्रतिकूल है। हर वस्तु के असीम शक्तिशाली सृष्टिकर्ता ने मानवीय शरीर लेकर और एक गरीब परिवार में एक असहाय बच्चे के रूप में जन्म लेकर खुद को मनुष्य को बताने का फैसला किया। यीशु गुमनामी में बड़ा हुआ, तीन साल एक भ्रमणशील गुरु के रूप में बिताया, और फिर उसे क्रूरतापूर्वक सताया गया और मार डाला गया। लेकिन उनकी मृत्यु इतिहास का निर्णायक क्षण साबित हुई। मरकर, यीशु ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की, अपने स्वयं के अनंत राज्य का आश्वासन दिया, और हमारे अनंत काल के उद्धार को प्रदान किया। यह एक अप्रत्याशित कहानी है।

थियोप्रैक्सी अर्थात् धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास का जीवन जीने के लिए, हमें विपरीत ढंग से सोचना सीखना चाहिए। हमें एक अनदेखी आत्मिक वास्तविकता पर ध्यान केंद्रित करना और उस पर अपना जीवन आधारित करना सीखना चाहिए। गिनती 13 में बारह भेदिए एक उदाहरण हैं। दस ने उन तथ्यों पर समाचार दिया और तार्किक निष्कर्ष निकाला जो उन्होंने देखे थे: "उन लोगों पर चढ़ने की शक्ति हम में नहीं है; क्योंकि वे हम से बलवान् हैं।" (गिनती 13:31)। लेकिन दो भेदिए, यहोशू और कालिब, एक अलग निष्कर्ष पर पहुँचे: "यहोवा हमारे संग है; उन से न डरो।" (गिनती 14:9)। उन्होंने वही तथ्य देखे-वही विशाल और बड़ी दीवारों वाले शहर। लेकिन उन्होंने उन तथ्यों को अदृश्य आत्मिक वास्तविकता के चश्मे से देखा: "यहोवा हमारे संग हैं।" परमेश्वर के दृष्टिकोण से चीजों को देखने में दस भेदियों की विफलता के कारण पूरे इस्राएल राष्ट्र को चालीस वर्षों तक जंगल में भटकना पड़ा जब तक कि उनकी पूरी पीढ़ी मर नहीं गई।

2 राजा 6 में, जब अराम के राजा ने एलीशा को मारने के लिए अपनी सेना भेजी, तो एलीशा का नौकर चिंतित हो गया। एलीशा ने अपने सेवकों की आँखें खोलने के लिए प्रार्थना की, और उसने आग के रथों को-प्रभु की सेनाओं को-सुरक्षा के लिए उन्हें घेरते हुए देखा। क्योंकि एलीशा को अदृश्य सेना के बारे में पता था, वह देखे जा सकने वाले दुश्मन के बारे में पूरी तरह से बेपरवाह था। इस रवैये के कारण उसने उन्हें अंधा करने के लिए प्रार्थना करने और उन्हें अपने राजा के पास ले जाने की निर्भीक प्रतिक्रिया व्यक्त की। इसके बाद उन्होंने राजा को निर्देश दिया कि वे शत्रु योद्धाओं के साथ सम्मानित अतिथि के रूप में व्यवहार करें और उन्हें शांति से घर भेजें। इस मुठभेड़ के परिणामस्वरूप युद्ध से कुछ समय के लिए राहत मिली।

मत्ती 14:28-33 में, हमारे पास एक और उदाहरण है। वहाँ, पतरस कुछ देर के लिए पानी पर चलता है। वह यीशु को लहरों पर चलते हुए देखता है। यीशु के निमंत्रण पर, पतरस यीशु की ओर पानी पर चलने के लिए नाव से बाहर निकला। लेकिन हवा को देखकर वह डर गया और डूबने लगा। यीशु ने पतरस को पकड़कर कहा, "हे अल्पविश्वासी, तू ने सन्देह क्यों किया?" उसके बारे में सोचें। यीशु ने पतरस को यह संदेह करने के लिए डाँटा कि, यीशु की मदद से, वह पानी पर चल सकता है। यीशु चाहता था कि पतरस को पता चले कि उसकी अदृश्य शक्ति हवा,

लहरों और गुरुत्वाकर्षण की दृश्य शक्ति से अधिक है। और वह चाहता था कि पतरस उस ज्ञान पर आत्मविश्वास से काम करे। यह एक वैकल्पिक वास्तविकता पर आधारित कार्य है। सांसारिक वास्तविकताओं के बजाय परमेश्वर के राज्य पर आधारित जीवन जीने के लिए स्वर्गीय सक्षमता की आवश्यकता होती है।

हमारी आँखों को यीशु और राज्य की अनंत वास्तविकताओं पर केंद्रित रखना और उसके अनुसार जीना ही धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास वाले जीवन की चुनौती है (इब्रानियों 12:1-11; 2 कुरिन्थियों 4:7-18; कुलुस्सियों 3:1-4)। यही विश्वास का जीवन है (इब्रानियों 11:1-3)। हम किसी अन्य तरीके से परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते (इब्रानियों 11:6)। ऐसा जीवन इस बात का प्रमाण है कि हम परमेश्वर पर विश्वास करते हैं और केवल उसी पर विश्वास करते हैं, उसकी खोज करते हैं, उसकी सेवा करते हैं, उससे प्रेम करते हैं और उसकी उपासना करते हैं।

इब्रानियों 11 में महान "विश्वास के कक्ष" के बीच में, लेखक बताता है कि विश्वास के सभी महान नायकों में क्या समानता है:

> ये सब विश्वास ही की दशा में मरे; और उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएँ नहीं पाईं, पर उन्हें दूर से देखकर आनन्दित हुए और मान लिया कि हम पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं ये सब विश्वास ही की दशा में मरे; और उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएँ नहीं पाईं, पर उन्हें दूर से देखकर आनन्दित हुए और मान लिया कि हम पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं। लेकिन वैसे भी, वे एक बेहतर देश, यानी स्वर्गीय देश की चाहत रखते हैं। इसी लिये परमेश्वर उनका परमेश्वर कहलाने में उनसे नहीं लजाता, क्योंकि उसने उनके लिये एक नगर तैयार किया है। (इब्रानियों 11:13-16)

क्योंकि ये महान संत परमेश्वर के अनदेखे भविष्य के वायदों पर ध्यान केंद्रित करते थे, न कि यहाँ और अभी दिखाई देने वाले वायदों पर, "परमेश्वर को उनका परमेश्वर कहलाने में कोई शर्म नहीं है।"

विश्वास के इस जीवन का ध्यान विशेष रूप से यीशु पर है, जैसा कि इब्रानियों 12:1-11 समझाता है। इसके लिए हमें "हर एक रोकनेवाली वस्तु और पाप को दूर करें जो हमे उलझा सकता है।" हमें ऐसी किसी भी चीज़ से दूर रहना है जो हमारा ध्यान भटकाती है या बाधा डालती है-यहाँ तक कि अच्छी चीज़ें भी-जैसे यीशु ने केवल वही किया जो उसने पिता को करते हुए देखा और केवल वही कहा जो उसने पिता को कहते हुए सुना।

हमें विशेष रूप से उस दौड़ को दौड़ने पर ध्यान केंद्रित करना है जो उसने हमारे सामने रखी है। ऐसा करने में, हमें यीशु पर दृढ़ता से भरोसा करना है, यह याद करते हुए कि कैसे वह अपने सामने खुशी की आशा करता था और उस पीड़ा और शर्म को तुच्छ समझता था जिसे उसे सहना पड़ा था।

इब्रानियों का लेखक हमें उन संघर्षों की याद दिलाता है जिनका सामना हमें पाप का विरोध करने और पिता के अनुशासन में दृढ़ रहना होगा। लेकिन वह वायदा करता है कि परमेश्वर का अनुशासन पिता के प्रेम से आता है, जिसके परिणामस्वरूप हमारी पवित्रता बढ़ेगी, और अंततः "धार्मिकता का शांतिपूर्ण फल मिलेगा" (इब्रानियों 12:11) जैसे प्रभु हमारे जीवन में अपना लक्ष्य प्राप्त करते हैं। वे वास्तव में उसकी काट-छाँट के प्रति पूरे दिल से समर्पण करने के लिए आश्वस्त करने वाले प्रोत्साहन हैं।

दूसरा कुरिन्थियों 4:7-12, 16-18 उन्हीं विषयों की गूँज को सुनाता है। पौलुस उन कठिनाइयों से पीछे नहीं हटता जिनका अनुभव हमारे लिए तय है जब हम विश्वास का जीवन जीते हैं:

> परन्तु हमारे पास वह धन मिट्टी के बरतनों में रखा है कि यह असीम सामर्थ्य हमारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर ही की ओर से ठहरे; हम चारों ओर से क्लेश तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निरुपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते; सताए तो जाते हैं, पर त्यागे नहीं जाते; गिराए तो जाते हैं, पर नष्ट नहीं होते।; हम यीशु की मृत्यु को अपनी देह में हर समय लिये फिरते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारी देह में प्रगट हो। क्योंकि हम जीते जी सर्वदा यीशु के कारण मृत्यु के हाथ में सौंपे जाते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारे मरनहार शरीर में प्रगट हो। इस प्रकार मृत्यु तो हम पर प्रभाव डालती है और जीवन तुम पर। इसलिये हम हियाव नहीं छोड़ते, परन्तु यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व घटता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है। क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है, और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं; क्योंकि देखी हुई वस्तुएँ थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएँ सदा बनी रहती हैं।

पौलुस विश्वास का जीवन जीने के लिए आवश्यक बलिदान स्वेच्छा से करता है क्योंकि वह जानता है कि अनदेखी चीजें उन चीजों की तुलना में अधिक स्थायी, अधिक सुरक्षित और अधिक ठोस हैं जिन्हें वह देख सकता है, छू सकता है और चख सकता है। वह जहाजों के टूटने, पत्थरबाजी, मार-पीट, कारावास और भूख को "हल्का" और "अस्थायी" मानता है, जो कि परिणाम के रूप में इकट्ठी हो रही "महिमा के शाश्वत महत्व" की तुलना में "हल्का" और "अस्थायी" है। पौलुस के लिए, अनदेखी चीज़ें देखी गई चीज़ों से अधिक वास्तविक हैं-और वह उसी के अनुसार अपना जीवन जीता है।

1 कुरिन्थियों 15:50-57 में, पौलुस बताता है कि कैसे "पलझण भर में, पलक झपकते ही" हमारे नश्वर शरीरों को अमर शरीरों से बदल दिया जाएगा। आयत 58 में, उसने निष्कर्ष निकाला, "इसलिये [वायदे किए गए अनन्त इनाम के कारण] हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है।" हमारा वायदा किया हुआ भविष्य अब राज्य के अनुसार जीवन जीने का एक मकसद है।

पहला कुरिन्थियों 9:24-27 भी हमसे राज्य के मामलों पर अपने प्रयासों को केंद्रित करने का आग्रह करता है:

> क्या तुम नहीं जानते कि दौड़ में तो दौड़ते सब ही हैं, परन्तु इनाम एक ही ले जाता है? तुम वैसे ही दौड़ो कि जीतो। हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है। वे तो एक मुरझानेवाले मुकुट को पाने के लिये यह सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिये करते हैं जो मुरझाने का नहीं। इसलिये मैं तो इसी रीति से दौड़ता हूँ, परन्तु लक्ष्यहीन नहीं; मैं भी इसी रीति से मुक्कों से लड़ता हूँ, परन्तु उस के समान नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है। परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता और वश में लाता हूँ, ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूँ।

पौलुस बताता है कि यह अनुशासित ध्यान निर्गमन के दौरान इस्राएलियों द्वारा की गई गलतियों से बचने की उनकी इच्छा से प्रेरित है (1 कुरिन्थियों 10:1-12)। उन सभी को "मूसा में बपतिस्मा दिया गया।" उन सभी ने "आत्मिक पानी" पिया और "आत्मिक भोजन" खाया। "फिर भी, उनमें से अधिकांश से परमेश्वर प्रसन्न नहीं था; इसीलिए वे जंगल में ढेर हो गए।" इस्राएल के राज्य में उनकी सदस्यता, लाल सागर पार करना, मन्ना खाना, चट्टान से आश्चर्यजनक ढंग से निकला पानी पीना और मूसा के आश्चर्यजनक में भागीदारी उन्हें परमेश्वर के लिए स्वीकार्य बनाने के लिए पर्याप्त नहीं थी। परमेश्वर अप्रसन्न था क्योंकि वह बुरी चीजों की लालसा रखते थे, मूर्ति पूजा में लगे रहते थे, और परमेश्वर के विरुद्ध बड़बड़ाते थे (पद 6, 7, 10)।

हमें उसी गलती से बचना होगा। *"परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ीं, दृष्टान्त की रीति पर थीं; और वे हमारी चेतावनी के लिये जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गईं हैं। इसलिये जो समझता है, "मैं स्थिर हूँ," वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े"* (आयतें 11-12)। हम भी वायदा किये गये देश से चूक सकते हैं। यदि हम उस पर और उसके राज्य पर ध्यान केंद्रित करने में विफल रहते हैं और खुद को विचलित होने देते हैं, तो हम भी परमेश्वर द्वारा हमारे लिए दी गई आशीष को खो सकते हैं।

कुलुस्सियों 3:1-4 इसी तरह हमारा ध्यान स्वर्ग के राज्य की ओर पुनर्निर्देशित करता है:

> अत: जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहाँ मसीह विद्यमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। क्योंकि तुम तो मर गए और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे।

बार-बार दोहराया जाने वाला विषय सुस्पष्ट है: परमेश्वर के साथ महिमा की शाश्वत आशा पर ध्यान लगाते हुए, पृथ्वी पर रहते हुए स्वयं के लिए मरना। यही

कारण है कि पौलुस ने लिखा कि विश्वास, आशा और प्रेम हमेशा के लिए बने रहेंगे (1 कुरिन्थियों 13:13)। प्रेम परमेश्वर के राज्य की अंतिम विशेषता है, लेकिन विश्वास वह जीवन जीने का साधन है जिसे वह देता है, और आशा उस जीवन में बने रहने की सामर्थ्य देती है।

चूँकि हम धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास वाला का जीवन जीते हैं, तो हमारे पास एक ही उद्देश्य होता है: परमेश्वर का उद्देश्य। जैसा कि पौलुस ने तीमुथियुस से कहा, "मसीह यीशु के एक अच्छे योद्धा के रूप में, *मेरे* साथ कष्ट सहो। सक्रिय सेवा में कोई भी सैनिक रोजमर्रा की जिंदगी के मामलों में खुद को नहीं उलझाता है, ताकि वह उसे खुश कर सके जिसने उसे एक सैनिक के रूप में भर्ती किया है" (2 तीमुथियुस 2:3-4)। यह संदेश मुख्य रूप से तीमुथियुस का ध्यान केंद्रित करने से संबंधित है। पौलुस यह सुनिश्चित कर रहा है कि तीमुथियुस सांसारिक मामलों से विचलित न हो और अनंत काल के मामले में अपना ध्यान न खोए।

इस मामले को छंटाई की प्रक्रिया द्वारा चित्रित किया जा सकता है। कुछ समय के लिए, मैंने शहतूत उत्पादन करने वाले एक किसान के रूप में काम किया। मेरे पास आपके लिए कुछ सलाह है: यदि आप जामुन उगाने वाले हैं, तो काले शहतूत से शुरुआत न करें। इन्हें उगाना ज्यादा परिश्रम से भरा है। आपको दो तारों के साथ एक जालीदार प्रणाली स्थापित करनी होगी और हर छह फीट पर एक खंभे के बगल में एक फल का पौधा लगाना होगा। हर साल, पौधों से कई "डालियाँ" निकालती है। आपको दो डालियों को छोड़कर बाकी सभी को छांटना होगा और फिर इन दोनों को खंभे पर चढ़ाने का प्रयास करना होगा। जैसे-जैसे वे बढ़ते हैं, आप उभरने वाले किसी भी अतिरिक्त अंकुर को काटते समय उन्हें खंभे पर बांध देते हैं। फिर आप उन्हें तारों के साथ लगाएँ, प्रत्येक तार पर एक डाली। फिर, आप लगातार किसी भी बाहरी टहनी को छाँटते हैं। एक ऋतु के दौरान, एक शहतूत का किसान 90 प्रतिशत विकास को कम कर सकता है ताकि अंत में केवल ये खंभों और तारों के साथ बढ़ती चली जाएँ।

अंत में, इस कार्य को प्रत्येक खंभे और तार के साथ प्रचुर मात्रा में फसल का इनाम मिलता है। सहायता देने वाली प्रणाली के बिना, पौधा इतना फल नहीं ले पाएगा। शहतूत बड़े और रसदार हैं। सभी शहतूत आसानी से उपलब्ध हो जाते और जल्दी और आसानी से काटे जा सकते हैं।

हमारे देश के विभिन्न हिस्सों में जंगली शहतूत भी हैं। शहतूत बहुत छोटे होते हैं। प्रति पौधा केवल कुछ शहतूत होते हैं। उन्हें चुनने के लिए, आपको कांटों और झाड़ियों के बीच जाते हुए संघर्ष करना होगा। आप पाँच मिनट में सावधानी से उगाई गई उतने शहतूत तोड़ सकते हैं जितने आप दो घंटे में जंगली शहतूत तोड़ सकते हैं। लेकिन उस स्थिति तक पहुँचने के लिए, एक महत्वपूर्ण प्रतिबद्धता शामिल है-न केवल अच्छी तरह से छंटाई प्रक्रिया जिसका मैंने पहले ही वर्णन किया है, बल्कि फसल के बाद आपको पिछली सभी ऋतुओं की वृद्धि में एक बार

फिर कटौती करनी होगी और शुरू करना होगा। उस तरह की फसल प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण स्तर के अनुशासन की आवश्यकता होती है।

सुविधाजनक, आकस्मिक और आलसी तरीके से मसीह का अनुसरण करना संभव है, जैसे कि जंगली शहतूत उगाना। आपको कुछ फल मिल सकता है, लेकिन परिणाम कभी भी उसके उद्देश्यों और खुशी के लिए पूरी तरह से अलग किए गए जीवन से तुलनीय नहीं होगा।

यीशु ने इसी तरह के अलंकार का उपयोग यूहन्ना 15 में किया है वह कहता है, कि "सच्ची दाखलता मैं हूँ, और मेरा पिता किसान है। जो डाली मुझ में है और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है; और जो फलती है, उसे वह छाँटता है ताकि और फले। *शाखा* जो फल लाती है, वह उसकी काट-छाँट करता है, ताकि वह अधिक फल दे सके।" यीशु की कहानी में, हम किसान नहीं हैं; हम वे शाखाएँ या डालियाँ हैं, जिन्हें फल उत्पन्न करने के लिए काटा जाना चाहिए। पिता परमेश्वर किसान है जो फल लाने के लिए काटता है, और यीशु वह डाली है जिससे सभी शाखाएँ उगती हैं और भोजन प्राप्त करती हैं।

यदि हमारा लक्ष्य परमेश्वर के राज्य में फलदायी है, तो हमें काट-छाँट के लिए तैयार रहना चाहिए। हमें स्वेच्छा से अपने प्यारे पिता के कष्टदायक अनुशासन के प्रति समर्पित होने की आवश्यकता है, जो "हमें *हमारी भलाई के* लिए *अनुशासित* करता है, ताकि हम उसकी पवित्रता के भागी हों जाएँ" (इब्रानियों 12:10)। पवित्रताई (हमारे दैनिक जीवन में पवित्र बनना) में हमारे व्यवहार को बदलना शामिल हो सकता है, जैसे कि उन अंशों में जो हमें अपने पुराने तरीकों को "छोड़ने" और एक नया जीवन "पहनने" के लिए कहते हैं (उदाहरण के लिए, इफ़िसियों 4:20-32; कुलुस्सियों 3:8-17)। लेकिन अक्सर इसमें आंतरिक परिवर्तन की आवश्यकता होगी। इसका मतलब एक जैसी चीजें करना हो सकता है, लेकिन उन्हें अपने लिए करने के बजाय परमेश्वर के लिए करना।

यीशु ने चेतावनी दी कि न्याय के दिन कुछ लोग दावा करेंगे कि वे सही काम कर रहे हैं लेकिन फिर भी परमेश्वर उन्हें अस्वीकार कर देगा। वे कहेंगे कि, "हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत से आश्चर्यकर्म नहीं किए?" और फिर भी, यीशु कहेगा, "मैं तुम्हें कभी नहीं जानता था" (मत्ती 7:22-23)।

धार्मिक गतिविधियाँ और आत्मिक गतिविधियाँ परमेश्वर के प्रति निष्ठा साबित नहीं करती हैं, न ही आश्चर्यकर्म से भरी आशीषें आवश्यक रूप से परमेश्वर की प्रसन्नता का संकेत हैं। मत्ती 11:20-24 में, यीशु ने उन शहरों पर कूच किया जहां उसने अधिकांश चमत्कार किए क्योंकि उन्होंने पश्चाताप नहीं किया। उसने कहा कि उन आश्चर्यकर्मों के परिणामस्वरूप उन शहरों के खिलाफ भारी न्याय होगा। *पश्चाताप और प्रतिबद्धता के बिना, परमेश्वर की आशीष भी एक सजा है, जैसे मसीह के लिए कष्ट उठाना वास्तव में एक पुरस्कार है* (मत्ती 5:10-12;

प्रेरितों के काम 5:41; 2 कुरिन्थियों 4:17)।

मैं समझता हूँ कि क्यों कुछ लोग चिन्हों और आश्चर्यकर्मों से मोहित हो जाते हैं, लेकिन मुझे कभी भी उनमें बहुत दिलचस्पी नहीं रही। बहुत से लोग चाहते हैं कि वे यीशु के आश्चर्यकर्मों को प्रत्यक्ष रूप से देख पाते। मेरी भी इच्छा है कि मैं पृथ्वी पर उसका अनुसरण कर पाता, लेकिन एक बहुत अलग कारण से। मुझे यह देखना अच्छा लगेगा कि किसी व्यक्ति के लिए धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास वाला आदर्श से भरा जीवन जीना कैसा होता है। उसने अपने समय, ऊर्जा और संसाधनों के उपयोग में, हर पल, हर बातचीत में पिता की इच्छा की सही अभिव्यक्ति कैसे प्रदर्शित की? वह कैसे व्यापार करता था, बढ़ईगीरी करता था, या एक चुटकुला सुनाता था? लोगों के साथ घूमते समय उन्होंने क्या बात की? एक इंसान के लिए इस दुनिया में स्वर्गीय राज्य के एक आदर्श नागरिक के रूप में रहना कैसा दिखता है?

इसी तरह, मिशनरी समाचार-पत्र पढ़ते समय, बहुत से लोग फ़ोटो खींचवाना पसंद करते हैं, पत्र की विषय-वस्तु के साथ समझौता करते हैं, और इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेज़ या आंकड़ों से घृणा करते हैं। मैं इसके विपरीत हूँ। मैं शायद ही कभी तस्वीरें भी देखता हूँ। आखिरकार, कुछ प्रशिक्षण सत्रों में प्रतिभागियों की कतार जो मेरे द्वारा देखी गई ऐसी ही सौ अन्य तस्वीरों की तरह ही दिखती है। मैं पाठ को खोजता हूँ और स्प्रैडशीट्स इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेज़ या आंकड़ों का अध्ययन करता हूँ। मेरे लिए, वे केवल एक फोटो की तुलना में क्या हो रहा है, इसके बारे में बहुत कुछ बताते हैं। परमेश्वर की भी प्राथमिकताएँ हैं। वह दिखावे को देखता है, वह कार्यों की ओर ध्यान देता है, लेकिन वह मुख्य रूप से हृदय को देखता है (1 शमूएल 16:7)।

धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास में, हम एक दर्शक को सेवा प्रदान करते हैं। वही क्रिया परमेश्वर लिए या स्वयं के लिए या किसी अन्य उद्देश्य के लिए करना संभव है। यदि हम परमेश्वर की महिमा के लिए सब कुछ करते हैं, तो परमेश्वर देखता है। तब हमारा जीवन आराधना का कार्य बन जाता है। हमारा पूरा जीवन एक प्रार्थना हो सकता है (1 कुरिन्थियों 10:31)।

यीशु ने चार मिट्टी के दृष्टांत के साथ मनुष्यों के दिलों का वर्णन किया (मत्ती 13:3-23; मरकुस 4:3-25; लूका 8:5-15)। वचन सुनने या प्राप्त करने में विफलता एक कठोर हृदय को प्रकट करती है। कठिन समय और अभाव उथले दिलों को प्रकट करते हैं। आसान समय और समृद्धि विचलित दिलों को प्रकट करते हैं। केवल पवित्र आत्मा के माध्यम से ही हमारे पास अच्छे हृदय हो सकते हैं जो प्रभु की इच्छानुसार फलदायी फसल पैदा करते हैं। परमेश्वर उन लोगों में अधिक निवेश करता है जो वफादार हैं। तो हम अपने हृदयों को कैसे विकसित कर सकते हैं?

सबसे बढ़कर, परमेश्वर विनम्र हृदयों से प्रसन्न होता हैं। मत्ती 11 में, यीशु कहता है कि परमेश्वर ने अपने कार्यों को “बालकों” पर प्रकट किया है और उन्हें “चतुर

और बुद्धिमानों" से छिपा दिया है (आयतें 25-26)। वह आगे कहता है कि कोई भी पिता या पुत्र को नहीं जानता जब तक कि पुत्र उन्हें प्रकट नहीं करता (आयत 27)। फिर यीशु हमें बताता है कि वह उन्हें बुलाता है "जो परिश्रम करनेवाले और बोझ से दबे हुए हैं" (आयत 28) वे लोग उनके जैसे हैं, क्योंकि वह दिल से विनम्र हैं। ये वे लोग हैं जिन्हें वह विश्राम देगा। वह उन्हें सिखाएगा और उनका बोझ उठाएगा। फिर, पूरी तरह से परमेश्वर को समर्पित जीवन विडम्बनापूर्ण है। अपनी शक्ति से जीना असंभव है, फिर भी परमेश्वर में जीना आसान और हल्का है (आयतें 29-30)।

यह हमेशा से ऐसा ही रहा है। मूसा परमेश्वर का मित्र था (निर्गमन 33:11) और पृथ्वी पर सबसे विनम्र व्यक्ति था (गिनती 12:3)। परमेश्वर ने उसे एक बहुत बड़ा काम दिया और बोझ उठाने में उसकी मदद की (गिनती 11:11-14)। यही प्रतिरूप संपूर्ण पवित्रशास्त्र में सत्य है। जो लोग परमेश्वर को सबसे अच्छे से जानते हैं वे सबसे विनम्र हैं। इन लोगों को अक्सर बड़ा बलिदान देने के लिए बुलाया जाता है, लेकिन इनका उपयोग शक्तिशाली तरीकों से भी किया जाता है।

एक दर्शक वर्ग के लिए जीने का मतलब दुनिया के नजरिए से चरमपंथियों के रूप में जीना है। यह हृदय की प्रवृति है। यह हमारी प्रतिबद्धता के स्तर, एक लक्ष्य को आगे बढ़ाने के हमारे दृढ़ संकल्प को उजागर करता है। यीशु ने कहा, "यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य में बलपूर्वक प्रवेश होता रहा है, और बलवान उसे छीन लेते हैं" (मत्ती 11:12)। हो सकता है कि हम इसे इतने परेशान करने वाले तरीके से न कहें, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम इसे कैसे व्यक्त करते हैं, मसीह के प्रति पूर्ण प्रतिबद्धता दुनिया के लिए अपमानजनक लगती है। हमारी प्रतिबद्धता का स्तर इस बात से प्रदर्शित होता है कि हम उसके लिए कितना त्याग करना चाहते हैं या कितना जोखिम उठाना चाहते हैं।

प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता, हालाँकि मैं आपको नहीं देख सकता, आप और आपके वायदे किसी भी चीज़ से अधिक मजबूत और विश्वसनीय हैं जिसे मैं देख सकता हूँ या छू सकता हूँ या चख सकता हूँ। आप सर्वोच्च वास्तविकता हैं। आपका राज्य जगत में सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है। आपके साथ अनंत काल इस जीवन से बहुत बड़ा और लंबा है। लेकिन मेरे डर और आराम की इच्छा मुझे उस पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित करती है जो मेरे सामने है। मुझे विश्वास का जीवन जीना सिखाएँ। मुझे उस बड़े ईनाम को प्राप्त करने के लिए स्वेच्छा से कष्ट सहना सिखाएँ जिसका आपने मुझसे वायदा किया है। मुझे अपने हाथ से वह अनुशासन स्वीकार करना सिखाएँ जो मुझे वह व्यक्ति बनने के लिए चाहिए जो आपने मुझे बनाया है। मुझे अपने साथ जीवन के लिए तैयार करें। इस अस्थायी दुनिया से मेरे दिल की जड़ों को उखाड़ने और उन्हें अनंत काल में लगा देने के लिए जो आवश्यक है वह करें। मुझसे प्रेम करने, मुझे माफ करने, मुझे अपनाने और मुझे अपने साथ भविष्य देने के लिए धन्यवाद।

प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें, फिर प्रार्थना करें और परमेश्वर से पूछें कि वह आपसे क्या सीखना और कराना चाहता है। शांत होकर सुनें।

अपनी डायरी की समीक्षा करें। क्या आपकी कोई पिछली प्रतिज्ञाएँ हैं जिन्हें आपने पूरा नहीं किया है? यदि आवश्यक हो, तो संशोधित समापन तिथियाँ निर्धारित करें।

1. क्या मैं अपने दैनिक निर्णय मुख्यतः सांसारिक या अनंत वास्तविकताओं के आधार पर लेता हूँ? मेरी दैनिक गतिविधियाँ इसे कैसे प्रदर्शित करती हैं?

2. मैं अपने जीवन में क्या कर रहा हूँ, यह पूरी तरह से मूर्खता भरा होगा यदि यीशु के वायदे सच्चे नहीं होते?

3. इस अध्याय के प्रत्युत्तर में परमेश्वर मुझसे कौन-सी विशिष्ट कार्य करवाना चाहता है? (उन्ह अपने डायरी में लिख ले और अपने कैलेंडर में नियत कर ले।)

4. मैंने जो सीखा है, उसके अनुसार परमेश्वर किसके साथ चाहता है कि उसे (कम से कम एक नाम) साझा करूँ?

प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको इन प्रतिबद्धताओं का पालन करने में सक्षम बनाए और उन लोगों के दिलों को तैयार करे जिनके साथ आप ज्ञान साझा करना चाहते हैं।

5 हमारे शत्रु भय और घमंड हैं

भय परमेश्वर का अपमान है; अभिमान परमेश्वर को चुनौती है।

> "क्या मैं ने तुझे आज्ञा नहीं दी? हियाव बाँधकर दृढ़ हो जा! भय न खा, और तेरा मन कच्चा न हो; क्योंकि जहाँ जहाँ तू जाएगा वहाँ वहाँ तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा"
>
> -यहोशू 1:9

> "परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है।" इसलिये परमेश्वर के अधीन हो जाओ। शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा। परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा।
>
> -याकूब 4:6-8

भय और अभिमान दो प्रमुख मुद्दे हैं जो धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास वाले के जीवन में बाधा डालते हैं। अधिकांश लोग किसी न किसी से अत्याधिक प्रभावित होते हैं। व्यक्तिगत रूप से, मैं डर की तुलना में गर्व के प्रति कहीं अधिक संवेदनशील हूँ।

भय और अभिमान दोनों ही वास्तव में पापों का समूह या परिवार हैं। उदाहरण के लिए, मिशन मंडलियों में, हम अक्सर अपराध-आधारित संस्कृतियों और शर्म-आधारित संस्कृतियों का उल्लेख करते हैं। अपराधबोध भय की अभिव्यक्ति है। अपराधबोध में निंदा और सजा का डर रहता है। शर्म गर्व की अभिव्यक्ति है। यह व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों ही स्तर पर अपने लिए सम्मान और गौरव चाहता है।

परमेश्वर की सामर्थ्य, उपस्थिति, भलाई, विश्वसनीयता, या चिंता की पर्याप्त उच्च आशंका न होने के कारण डर उत्पन्न होता है। ऐसे में ये परमेश्वर का अपमान है।

बाइबल ऐसे उदाहरणों से भरी पड़ी है जहां लोगों ने परमेश्वर के बजाय पुरुषों, धन या मनुष्य शक्ति पर भरोसा किया। यह व्यवहार डर का प्रत्यक्ष परिणाम है, क्योंकि यह आमतौर पर तब होता है जब हम जिस चीज़ से डरते हैं उससे छुटकारा पाने के लिए हम पुरुषों, धन या शक्ति की ओर रुख करते हैं।

मरकुस 4:35-41 भय पर यीशु के दृष्टिकोण को दर्शाता है। वह और उसके चेले एक नाव में चढ़ गये। यीशु थका हुआ था, इसलिए वह नाव के पिछले हिस्से में गद्दे पर सो गया। जब वह सो रहा था, एक तूफान उठा और लहरें जहाज के किनारों पर बहने लगीं, जिससे जहाज के डूबने का खतरा पैदा हो गया। भयभीत होकर, चेलों ने यीशु को जगाया और मांग की, "गुरु, क्या तुझे चिन्ता नहीं कि हम नष्ट हुए जाते हैं?" यीशु उठा, तूफान को डांटा और सब कुछ शांत हो गया। तब यीशु ने अपने शिष्यों से पूछा: "तुम क्यों डरते हो? क्या तुम्हें अब भी विश्वास नहीं है?"

जाहिरा तौर पर, यीशु ने सोचा कि एक बड़े तूफान और किनारों पर लहरों के बीच एक छोटी सी नाव में सवार लोगों के लिए डर एक उचित प्रतिक्रिया नहीं थी। हममें से बाकी लोगों के लिए, यह प्रतिक्रिया पूरी तरह से सामान्य है, यहाँ तक कि अपरिहार्य भी लगती है। लेकिन क्यों? यीशु यह नहीं कहता, "तुम क्यों डरते हो? तुम सभी अनुभवी मछुआरे हो जो इससे भी बड़े कई तूफानों में रहे हो।" वह कहता है, "तुम क्यों डरते हो? क्या तुम्हें अब भी विश्वास नहीं है?" शब्द *अभी भी* पर ध्यान दें। यीशु इस बात से नाराज प्रतीत होते हैं कि, उन्हें जानने और उन्हें कई आश्चर्यकर्म होते हुए देखने के बाद भी, चेलों में अभी भी विश्वास की कमी है और तूफान आने पर वे डर जाते हैं। डर की दवा परमेश्वर पर विश्वास है, आत्मविश्वास नहीं।

हम इस संदेश को संपूर्ण पवित्रशास्त्र में देखते हैं। जब परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्र से छुड़ाने के लिए मूसा को बुलाया, तो मूसा डर गया। उसने पूछा, "मैं कौन हूँ जो फ़िरौन के पास जाऊँ, और इस्राएलियों को मिस्र से निकाल ले आऊँ?" (निर्गमन 3:11)। परमेश्वर ने उत्तर दिया: "निश्चय मैं तेरे संग रहूँगा" (निर्गमन 3:12)। जब यहोशू को इस्राएल को वायदा किए गए देश में लाने का आदेश दिया गया, तो परमेश्वर ने उसे प्रोत्साहित करते हुए कहा, "मजबूत और साहसी बनो! न काँपना और न निराश होना, क्योंकि जहां कहीं तू जाए वहाँ प्रभु तेरा परमेश्वर तेरे संग रहेगा" (यहोशू 1:9)।

मूसा और यहोशू के पास डरने का पर्याप्त कारण था। मिस्र और कनान के राष्ट्र इस्राएल से कहीं अधिक शक्तिशाली थे। लेकिन वे साहसी हो सके क्योंकि उन्हें परमेश्वर पर भरोसा था जो उनके साथ था। डरने का मतलब परमेश्वर की सामर्थ्य या अच्छाई पर संदेह करना है।

परमेश्वर के बारे में हमारी अवधारणा और उसके प्रति हमारी प्रतिक्रिया हमारे जीवन का वर्णन करती है। जब हम भय में रहते हैं, तो हम परमेश्वर के बारे में अपनी समझ में कमियाँ प्रदर्शित करते हैं।

यदि डर (या परमेश्वर के अलावा किसी और चीज़ पर भरोसा करना) परमेश्वर का *अपमान* है, तो घमंड परमेश्वर के लिए *चुनौती* है। जब हम घमंड दर्शाते हैं, तो हम खुद को विश्वास और सम्मान के स्थान पर रखते हैं। हम स्वयं को प्रभु के साथ प्रतिस्पर्धा में रखते हैं। पवित्रशास्त्र हमें बताता है कि परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है लेकिन विनम्र लोगों पर अनुग्रह करता है (याकूब 4:6; 1 पतरस 5:5)।

*केवल मसीहियत*में, सी. एस. लुईस घमंड को मुख्य पाप के रूप में संदर्भित करता है और कहते हैं कि यह स्वयं शैतान की विशेषता है। वह कहते हैं कि विनम्रता, घमंड के विपरीत, का मतलब अपने बारे में कम सोचना नहीं है, बल्कि अपने आप को कम सोचना है। एक अहंकारी व्यक्ति का निरंतर संदर्भ का संकेत वह स्वयं होता है, न कि परमेश्वर। इसलिए, एक घमंडी व्यक्ति धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास वाला का जीवन नहीं जी सकता।

अपने लेखन में तीन बार, पौलुस मोटे तौर पर खुद की तुलना दूसरों से करता हैं। पहली बार, अपनी सेवकाई के पूर्णतया आरंभ में, उसने खुद को प्रेरितों में सबसे छोटे के रूप में वर्गीकृत किया (1 कुरिन्थियों 15:9)। अपनी सेवकाई के मध्य के आसपास, उसने अपने आप को संतों में सबसे छोटे के रूप में वर्गीकृत किया (इफ़िसियों 3:8)। अंततः, अपने जीवन के अंत में, वह खुद को सबसे बड़ा पापी कहता है (1 तीमुथियुस 1:15)।

अन्य लोगों की तुलना में, ये टिप्पणियाँ बिल्कुल झूठ हैं। पौलुस मानव इतिहास में सबसे समर्पित और फलदायी सेवकों में से एक था। हालाँकि, स्वर्ग के दृष्टिकोण से, ये टिप्पणियाँ बिल्कुल सही अर्थ रखती हैं। पौलुस जितना अधिक परिपक्व होता गया, उतना ही अधिक वह स्वयं को परमेश्वर की तुलना में समझता था और उतना ही अधिक सम्पूर्णता में समझता गया कि इसका अर्थ क्या है। इसलिए जैसे-जैसे वह परमेश्वर से प्रेम करता चला गया, उस पर भरोसा करता चला गया और पूरी तरह से उस पर निर्भर होता चला गया, उसका वैसे-वैसे खुद के प्रति भरोसा और सम्मान कम होता चला गया।

अभिमान हमें महिमा के लिए परमेश्वर के साथ प्रतिस्पर्धा करने की स्थिति में रखता है। यदि हम परमेश्वर के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं तो हम उसके साथ रिश्ते की उम्मीद नहीं कर सकते।

> जो महान और ऊँचे पर विराजमान है, कहता है
> जो सदा जीवित रहता है, जिसका नाम पवित्र है,
> "मैं ऊँचे पर और पवित्रस्थान में निवास करता हूँ,
> और उसके संग भी रहता हूँ, जो खेदित और नम्र है …"
>
> -यशायाह 57:15

अनंत, श्रेष्ठ, महान और पवित्र परमेश्वर दो स्थानों में रहता है: "ऊँचे और पवित्र स्थान पर" और "खेदित और नम्र आत्मा के साथ।" यदि हम आशा करते हैं कि परमेश्वर हमारे साथ मौजूद हैं, तो हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारे मन खेदित और आत्मा से नम्र हों, तभी परमेश्वर हमारे साथ रहेंगे।

इस वाक्य में, और कई अन्य वाक्यों में, बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि परमेश्वर स्वयं को हमारे सामने तभी प्रकट करेगा जब हमारे पास उसके बारे में उच्च विचार होंगे और स्वयं के बारे में तुलनात्मक रूप से कम मान्यता होगी। उदाहरण के लिए:

> यहोवा टूटे मनवालों के समीप रहता है
> और पिसे हुओं का उद्धार करता है।
>
> -भजन संहिता 34:18

> "धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
> धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शांति पाएँगे।"
>
> -मत्ती 5:3-4

> "परन्तु चुँगी लेनेवाले ने दूर खड़े होकर, स्वर्ग की ओर आँखें उठाना भी न चाहा, वरन् अपनी छाती पीट– पीटकर कहा, 'हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर! मैं तुम से कहता हूँ कि वह दूसरा नहीं, परन्तु यही मनुष्य धर्मी ठहराया जाकर अपने घर गया; क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।"
>
> -लूका 18:13-14

आत्म-सम्मान और सकारात्मक सोच के इस वर्तमान युग में अपने बारे में एक उचित दृष्टिकोण विकसित करना एक समस्या है। हम परमेश्वर को जानना चाहते हैं, लेकिन हम अपने बारे में अपनी ऊँची राय पर भी कायम रहना चाहते हैं। यह कोई विकल्प नहीं है। परमेश्वर अहंकारी लोगों से मित्रता नहीं करता। वास्तव में, हम अपने अहंकार से जुड़े रहकर परमेश्वर को अपना प्रतिद्वंद्वी, अपना शत्रु बना लेते हैं।

> "परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है।" इसलिये परमेश्वर के अधीन हो जाओ। शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा। परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा।
>
> -याकूब 4:6-8

यदि हम प्रभु के सामने खुद को नम्र करते हैं, तो वह हमारे पास आ जाएगा। यदि हम यह सोचते रहते हैं कि हम अच्छे हैं, तो परमेश्वर अपनी दूरी बनाए रखेगा।

परमेश्वर इस बात पर इतना अड़ा हुआ क्यों है? वह केवल उन्हीं लोगों से घनिष्ठता क्यों करेगा जो स्वयं को छोटा और अयोग्य समझते हैं? परमेश्वर चाहता है कि

हम नम्र बनें, इसलिए नहीं कि इससे उसका अहंकार बढ़ता है, बल्कि इसलिए कि नम्रता हमारे स्वभाव के अनुरूप है। परमेश्वर पूरी तरह से भला, पूरी तरह से शक्तिशाली और हमारा सृष्टिकर्ता और उद्धारकर्ता है। हम कमजोर और पापी प्राणी हैं जिन्हें उसने अपनी मृत्यु से छुटकारा दिया है। वह इस विनम्र दिखावे के आधार पर रिश्ते में प्रवेश करके हमें अपमानित करने के लिए तैयार नहीं है कि हम अच्छे हैं।

परमेश्वर के दृष्टिकोण से, घमंड पूरी तरह से बेतुका है। यशायाह 10:15, में, प्रभु ने अश्शूर के राजा के गौरव का उपयुक्त वर्णन किया है: "क्या कुल्हाड़ी उस पर घमण्ड करने के लिये है जो उस से काटता है? क्या आरा अपने आप को उस व्यक्ति से ऊँचा उठाता है जो इसे चलाता है? *वह होगा* एक गदा की तरह जो इसे उठाने वालों को चलाती है, *या* उठाने वाली छड़ी की तरह होती है वह जो लकड़ी नहीं है।" प्रभु ने हमें जो दिया है उसके अलावा हमारे पास कोई योग्यता, कोई कौशल, कोई ज्ञान नहीं है। उसके अलावा, हम *कुछ नहीं* (यूहन्ना 15:5)।

कर सकते हैं। अंत में, जब परमेश्वर के बारे में सच्चाई पूरी तरह से सामने आ जाएगी, तो मनुष्य के घमंड के लिए कोई जगह नहीं रहेगी। यशायाह इसे स्पष्ट करता है जब वह अंतिम दिनों में प्रभु के आगमन का वर्णन करता है।

> मनुष्य की घमण्ड भरी आँखें नीची की जाएँगी
> मनुष्यों का घमण्ड दूर किया जाएगा;
> और उस दिन केवल **यहोवा** ही ऊँचे पर विराजमान रहेगा।
> सेनाओं के **यहोवा** के लिए हिसाब का दिन होगा
> उन सभी के विरुद्ध जो घमंडी और ऊँचे हैं
> और जो कोई फूलनेवाला है उसके विरूद्ध,
> कि उसे नीचा किया जा सके।
>
> -यशायाह 2:11-12

फिलहाल, परमेश्वर के बारे में सच्चाई उन लोगों के लिए अदृश्य है जो उसे अस्वीकार करते हैं। इस प्रकार वे इस अहंकारी भ्रम में बने रहते हैं कि वे अच्छे और योग्य हैं। जब परमेश्वर स्वयं को अपनी पवित्रताई, महिमा और सामर्थ्य में प्रकट करता है, तो पहले से घमंडी लोग निराशा में पड़ जाएँगे, उन्हें तुरंत अपने घमण्ड के बेतुकेपन का एहसास होगा। तब घमण्ड करना संभव नहीं होगा। जो लोग अब परमेश्वर को जानना चाहते हैं उन्हें अब विनम्रता अपनानी होगी जो अंततः सभी पर थोपी जाएगी। धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास वाला जीवन जीने के लिए, हमें भय और घमण्ड के साथ युद्ध करना होगा।

मैं एक प्रशिक्षक को जानता था जो अक्सर कहता था, "थकान हम सभी को कायर बना देती है।" वह सही था। गहरी थकान से अधिक कोई चीज़ मेरी कमियों को अधिक स्पष्ट रूप से उजागर नहीं करती। कई अवसरों पर, परमेश्वर ने मुझे अत्याधिक थकान के लंबे समय तक अनुभव करने की अनुमति दी है। वह अनुभव

अयोग्यता की भावना पैदा करता है, जो अहंकार की मेरी प्रवृत्ति को संबोधित करने का परमेश्वर का तरीका हो सकता है। जब मैं थक जाता हूँ, तो मैं स्पष्ट रूप से उसके लिए अपनी पूरी और उग्र आवश्यकता को पहचानता हूँ, और मैं उसके साथ रहने के उसके निमंत्रण को स्वीकार करता हूँ। वह लगातार पुकारता रहता है, "हे सब थके हुए और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ: और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हल्का है" (मत्ती 11:28-30)।

ध्यान दें कि यीशु कहता है *उसका* उद्देश्य, *उसका* जूआ, *उसका* बोझ, हल्का है। वह अपने अलावा हमें अपनी इच्छाओं के लिए शक्ति देने का वायदा नहीं करता है। हमारी कमजोरी और थकान में भी वह जो शक्ति प्रदान करेगा, वह उसकी इच्छा पूरी करने के उद्देश्य से है।

हमारे दैनिक जीवन में विनम्रता विकसित करने और घमंड का सुधार करने के कई व्यावहारिक तरीके हैं। दूसरों से सहायता मांगें या स्वीकार करें। आभारी रहें। और सुनें। दूसरों की प्रशंसा करें। अधिक प्रश्न पूछें। दूसरों की सेवा करें। सलाह लें।

दूसरी ओर, डर को दूर करना काफी हद तक चीजों को शाश्वत दृष्टिकोण में रखने और हम जिस चीज से डरते हैं, के विषयों की तुलना परमेश्वर से करना हमारे सारे डर से बड़ा है।

किसी भी अन्य बात से अधिक, धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास होना-लगातार परमेश्वर और उसके दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करना-भय और घमण्ड दोनों के लिए मौत की घंटी है। जब भी हमें अपने जीवन में इन दो शत्रुओं की उपस्थिति के नए अवसर मिलते हैं, तो हमें उनसे बलपूर्वक और बेरहमी से निपटने की आवश्यकता होती है।

जब मैंने यह पुस्तक लिखना शुरू किया, तब मैंने पूरा पहला दिन धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास से संबंधित हजारों पवित्रशास्त्र के हजारों वचनों को पढ़ने में बिताया। जैसे ही मैंने ऐसा किया, दो व्यापक विषय सशक्त रूप से सामने आए। पहला इसमे कोई आश्चर्य नहीं है कि: हमारा परमेश्वर एकमात्र परमेश्वर है और वह अकेले ही सभी आराधना और आदर और महिमा के योग्य है। लेकिन दूसरा अप्रत्याशित था, कम से कम इसकी आवृत्ति के संदर्भ में। बाइबल में उन लोगों के सैकड़ों संदर्भ हैं जो अपनी हताशा और भय से छुटकारा पाने के लिए गलत स्रोत की ओर देखते थे। परमेश्वर चाहता है कि उसे सभी अच्छे और आवश्यक आशीषों के अनन्य स्रोत, हर आवश्यकता का उत्तर के रूप में पहचाना जाए। जब हम सुरक्षा के लिए उसके पास आते हैं तो उसे बहुत अच्छा लगता है।

यहाँ भजनों से केवल दो उदाहरण दिए गए हैं। दूसरे में, परमेश्वर स्वयं बोल रहा है। हम उसके मन की बात सुन सकते हैं।

परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलनेवाला
सहायक। इस कारण हम को कोई भय नहीं चाहे पृथ्वी उलट जाए, और पहाड़
समुद्र के बीच में डाल दिए जाएँ।

-भजन संहिता 46:1-2

"उसने जो मुझ से स्नेह किया है, इसलिये मैं उसको छुड़ाऊँगा,
मैं उसको ऊँचे स्थान पर रखूँगा, क्योंकि उसने मेरे नाम को जान लिया है।
जब वह मुझ को पुकारे, तब मैं उसकी सुनूँगा,
संकट में मैं उसके संग रहूँगा,
मैं उसको बचाकर उसकी महिमा बढ़ाऊँगा।"

-भजन संहिता 91:14-15

स्पष्ट रूप से, ये दोनों धारणाएँ संबंधित हैं, क्योंकि परमेश्वर ही एकमात्र आराधना के योग्य है और समस्त सृष्टि का स्रोत और पालनकर्ता भी है। मैं इन दोनों मुद्दों और भय और घमंड के पापों के बीच एक दिलचस्प समानता भी देखता हूँ। डर का संबंध किसी अन्य स्रोत से राहत या मुक्ति मांगने से है; गौरव किसी अन्य इकाई का सम्मान करने से मेल खाता है।

परमेश्वर उचित रूप से सृष्टि के केंद्र के रूप में स्वीकार किए जाने की इच्छा और मांग करता है। वह हर मुद्दे या चिंता का केंद्र बिंदु है। वह प्रत्येक गतिविधि की आधार है। वह हर घटना और बातचीत के लिए मापदण्ड तय करता है। जीवन की इस सबसे आवश्यक विशेषता को पहचानने में विफलता एक निंदनीय घृणित कार्य, निंदनीय अत्याचार और परमेश्वर की इच्छित आदेश का उल्लंघन है।

प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता, हमें आपको पिता कहने की अनुमति देने के लिए धन्यवाद। हमारे अंदर ऐसा कुछ भी ऐसा नहीं है, जो हमें आपकी सन्तान होने के योग्य बनाता है। जब हम आपके साथ चलते हैं, तो आप हमें निडर होने के लिए कहते हैं (क्योंकि आप हमारे साथ हैं) और विनम्र होते हैं (क्योंकि आप हमसे बहुत महान हैं)। दोनों मेरे लिए अस्वभाविक हैं। खुद पर नहीं, बल्कि आप पर ध्यान केंद्रित करने और साहसपूर्वक आपकी अगुवाई का पालन करने में मेरी सहायता करें। मुझे यह कहने में भी थोड़ा डर लगता है, लेकिन मैं आप पर निर्भर हूँ। और आप भरोसेमंद हैं। मुझे अपने बारे में और आपके बारे में सच्चाई स्पष्ट रूप से देखने में मदद करें। केवल आप से डरने में मेरी सहायता करें। मुझे आपके सामने विनम्र बनने में मदद करें, क्योंकि मैं आपको उस तरह जानने की लालसा रखता हूँ जैसे केवल विनम्र व्यक्ति ही जान सकता है।

प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें, फिर प्रार्थना करें और परमेश्वर से पूछें कि वह आपसे क्या सीखना और कराना चाहता है। शांत होकर सुनें।

अपनी डायरी की समीक्षा करें। क्या आपकी कोई पिछली प्रतिज्ञाएँ हैं जिन्हें आपने पूरा नहीं किया है? यदि आवश्यक हो, तो संशोधित समापन तिथियाँ निर्धारित करें।

1. कौन मुझे अधिक प्रभावित करता है: भय या अभिमान? क्यों?

2. अगर मैं नहीं डरता तो मैं अलग तरीके से क्या करता?

3. अगर मुझे घमण्ड नहीं होता तो मैं अलग तरीके से क्या करता?

4. इस अध्याय के प्रत्युत्तर में परमेश्वर मुझसे कौन-सी विशिष्ट कार्य करवाना चाहता है? (उन्ह अपने डायरी में लिख ले और अपने कैलेंडर में नियत कर ले।)

5. मैंने जो सीखा है, उसके अनुसार परमेश्वर किसके साथ चाहता है कि उसे (कम से कम एक नाम) साझा करूँ?

प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको इन प्रतिबद्धताओं का पालन करने में सक्षम बनाए और उन लोगों के दिलों को तैयार करे जिनके साथ आप ज्ञान साझा करना चाहते हैं।

6 दुःख हमारा मार्ग है

धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास वाले जीवन जीने के लिए, हमें पूरी तरह से मसीह के साथ पहचान बनानी चाहिए, जिसमें उनकी पीड़ा और मृत्यु के साथ पहचान भी शामिल है।

> मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है; परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है। जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है; और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है, वह अनन्त जीवन के लिये उस की रक्षा करेगा। यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले; और जहाँ मैं हूँ, वहाँ मेरा सेवक भी होगा। यदि कोई मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा।
>
> -यूहन्ना 12:24-26

प्रत्येक सच्चे मसीही के जीवन में दो क्रूस होते हैं: वह क्रूस जिस पर यीशु ने कष्ट सहा और मर गया, और वह क्रूस जिस पर हमें कष्ट सहना होगा और स्वयं के लिए मरना होगा। यीशु को ग्रहण करना मुफ्त में होता है; हमें केवल उसके अनन्त जीवन के मुफ़्त उपहार को स्वीकार करने की आवश्यकता है। हालाँकि, ऐसा करने के लिए, हमें पश्चाताप करना होगा, अपने रास्ते से हटकर उसके रास्ते पर आना होगा और उसका अनुसरण करना होगा। और यीशु के अनुसरण का मार्ग हमेशा इस दुनिया में पीड़ा और मृत्यु से होकर गुजरता है।

राज्य के उलट-पुलट कर देने वाला स्वभाव, अपनी परिभाषा के अनुसार, विश्वास की जाँ है। इसके लिए हमें दृष्टि के बजाय विश्वास से जीने की आवश्यकता है। फिलिप्पियों 3:10 में, पौलुस घोषणा करता है कि एकमात्र तरीका जिससे हम प्रभु को जान सकते हैं, उसके साथ पहचान बना सकते हैं, और उसके जीवन को

साझा कर सकते हैं "उसके कष्टों की संगति" और उसकी मृत्यु में भी हिस्सा ले सकते हैं। 2 तीमुथियुस 3:12, में, पौलुस एक दुर्लभ उद्धृत किए जाने वाला बाइबल वायदा देता है: "जो कोई मसीह यीशु में धार्मिकता के जीवन को जीने की इच्छा रखता है, उसे सताया जाएगा।"

क्रूस पर मरते समय यीशु ने पहले ही हमारे अपराध और शर्म को छुपाने की कीमत चुका दी थी। हालाँकि, धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास वाले जीवन के मार्ग में एक दूसरा क्रूस है: हमारा अपना। शिष्यों ने दो क्रूस को समझने के लिए संघर्ष किया। हम उनके संघर्ष को मरकुस रचित सुसमाचार के अध्याय 8-10 में देख सकते हैं। अपनी सौम्य, सरल शैली में, मरकुस मार्ग को सरल बनाता है।

मरकुस 8:22-26 एक असामान्य, दो चरणों वाले आश्चर्यकर्म का वर्णन करता है। यह ऐसा है मानो यीशु को एक अंधे व्यक्ति को ठीक करने के लिए दो प्रयासों की आवश्यकता थी। पहले प्रयास के बाद, वह व्यक्ति अभी भी केवल अस्पष्ट रूप से देख रहा है; दूसरे प्रयास के बाद वह स्पष्ट रूप से देख सकता है। मैं इस दो-चरणीय चँगाई के आश्चर्यकर्म की सभी तात्पर्यों को नहीं जानता, लेकिन यह एक दिलचस्प उपमा प्रदान करता है जिसके द्वारा शिष्यों को राजा और उसके राज्य की प्रकृति की शुरुआत में अस्पष्ट समझ पर विचार किया जा सकता है।

मरकुस 8:27-30 में, यीशु बारह से प्रश्न करता है। जैसे कि वह मध्यावधि परीक्षा का संचालन कर रहा हो, वह पहले पूछता है, "लोग क्या कहते हैं कि मैं कौन हूँ?" और फिर "लेकिन तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ?" पतरस उसकी प्रतिक्रिया के लिए एक स्वर्ण सितारा मिलता है कि "आप मसीह हैं।" अब तक तो सब ठीक है।

लेकिन आश्चर्य की बात है कि यीशु ने शिष्यों को आदेश दिया कि वे किसी और को यह न बताएँ कि वह मसीहा हैं। मुझे हमेशा बताया गया है कि यीशु ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि अभी उसका क्रूस पर चढ़ने का समय नहीं हुआ था और इसलिए वह इसे छुपा कर रखना चाहता था। इसमें सच्चाई हो सकती है, लेकिन मुझे लगता है कि कहानी में और भी बहुत कुछ है। यीशु ने शिष्यों को यह घोषणा करने से रोक दिया कि वह मसीह है क्योंकि, उनके विकास की इस स्थिति में, उन्हें समझ में नहीं आया कि "मसीह" कौन था। वे एक झूठा संदेश घोषित कर रहे होते। वे इस बात को लेकर अस्पष्ट थे कि मसीहा होने का क्या मतलब है और वे उसके राज्य के बारे में भी अस्पष्ट थे। यह अंधे व्यक्ति की चँगाई के पहले प्रयास के बाद की दृष्टि जैसा था। और यीशु नहीं चाहता था कि वे उसकी झूठी छवि प्रस्तुत करें कि वह कौन हैं।

हम मरकुस 8:31-33 में शिष्यों की विकृत समझ देखते हैं, जब यीशु अपनी आगामी पीड़ा और मृत्यु और पुनरुत्थान का वर्णन करना शुरू करता है। पतरस, जिसने अभी-अभी यीशु को मसीहा के रूप में पहचाना है, तुरंत उसे डाँटता है! यह एक अद्भुत कार्य है, जिसके लिए पतरस को काफी अहंकार की आवश्यकता

थी। प्रत्युत्तर में, यीशु ने पतरस को, जिसकी उसने अभी-अभी प्रशंसा की है, डाँटते हुए कहा, "हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो; क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, परन्तु मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है" (आयत 33)।

तथ्य यह है कि यीशु पतरस को शैतान के रूप में संदर्भित करता है, यह दर्शाता है कि वह मामले को कितनी गंभीरता से लेता है। वह परमेश्वर के और मनुष्य के रुचियों की तुलना करता है। मनुष्य की रुचि सत्ता और वैभव, विश्राम और सहजता में है। यही वह मार्ग है, जिस पर पतरस चाहता था कि यीशु उनकी अगुवाई करे। परमेश्वर की रुचियाँ बिल्कुल अलग हैं-दुख, मृत्यु, पुनरुत्थान और महिमा का मार्ग।

फिर यीशु बारहों और भीड़ को उसके पीछे चलने की कीमत के बारे में सिखाने के लिए आगे बढ़ता है (मरकुस 8:34-38)। "जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आपे से इन्कार करे और अपना क्रूस उठाकर, मेरे पीछे हो ले" (आयत 34) एक व्यक्ति परमेश्वर और संसार की चीजों की भी सेवा नहीं कर सकता। यह वह संदेश था जिसे पतरस सुनने या स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था। यह दूसरे क्रूस का संदेश है-हमारा क्रूस।

रूपान्तर (मरकुस 9:1-13) आगे यीशु की पहचान को मसीह के रूप में पुन: पुष्टि करता है। पतरस, जो हमेशा बात करता रहता है-खासकर जब उसे नहीं पता कि क्या कहना है-सुझाव देता है कि वे तंबू बनाएँ और पहाड़ पर रहें। वह इस पहाड़ की चोटी के अनुभव को बरकरार रखना चाहता है। यीशु उसे पृथ्वी पर वापस लाते हैं, यह दोहराते हुए कि मसीह "बहुत दु:ख उठाएगा, और तुच्छ गिना जाएगा" (आयत 12) और मृतकों में से जी उठेगा (आयत 9)। क्रूस को फिर से सबसे आगे लाया गया है।

मरकुस 9:14-29 एक दुष्टात्माग्रस्त लड़के की चँगाई का वर्णन करता है। चेले बाद में पूछते हैं कि वे दुष्टात्मा को बाहर निकालने में असमर्थ क्यों थे। यीशु ने उत्तर दिया कि यह केवल प्रार्थना और उपवास से ही पूरा किया जा सकता है (यह भी देखें मत्ती 17:21), फिर से आत्म-त्याग की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया। उसका इरादा है कि उनका उद्धार किसी विजयी प्रक्रिया से नहीं, बल्कि पिता पर पूर्ण निर्भरता में प्रार्थना, विनम्रता और बलिदान के माध्यम से हो।

यीशु फिर अपनी कष्ट, मृत्यु और पुनरुत्थान की आवश्यकता को दोहराता है, मानो अपने शिष्यों को उसकी सेवकाई के इस केंद्रीय पहलू को समझने में मदद करने के लिए दृढ़ हों। "मनुष्य का पुत्र, मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा, और वे उसे मार डालेंगे; और वह मरने के तीन दिन बाद जी उठेगा" (मरकुस 9:31)। लेकिन चेले डरे हुए थे और चाहते थे कि वह मृत्यु के बारे में बात करना बंद कर दे (मरकुस 9:32)।

मरकुस 9:33-37 में, चेले तुरंत यीशु के संदेश की समझ की कमी को प्रदर्शित

करते हैं, क्योंकि वे इस बारे में बहस करते हैं कि उनमें से बड़ा कौन सा है। यीशु ने उत्तर दिया, "यदि कोई बड़ा होना चाहे, तो सबसे छोटा और सब का सेवक बने" (आयत 35)।विनम्रता और दासता के बारे में उनसे फिर से बात करते हुए, उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि उनके राज्य में दूसरों की सेवा करना, सेवा न लेना, महानता का प्रतीक है। दूसरे क्रूस का विचार, अनुयायी का क्रूस, शिष्यों के लिए उतना ही घृणित है जितना पहला, यीशु का क्रूस।

एक बार फिर बारह लोग अपनी अज्ञानता का प्रदर्शन करते हैं क्योंकि वे मरकुस 9:38-41 में संप्रदायवाद और विशिष्टता के प्रति अपनी प्रवृत्ति दिखाते हैं। यीशु ने उन्हें चेतावनी दी और एक दास की कृपा और विनम्रता की सराहना की (यानी, जो उन्हें एक प्याला पानी देता है)। फिर वह मरकुस 9:42-50 में एक उपदेश जारी रखता है जो एक बार फिर क्रूस के मार्ग को दर्शाता है। वह सिखाता है कि जीवन का एकमात्र तरीका, खुद को नकारना और अपनी इच्छाओं के लिए मरना है। क्रूस का विचार यहाँ स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। किसी छोटे को ठोकर खिलाने से बेहतर है मर जाना; अनन्त मृत्यु में जाने से बेहतर है कि अपने शरीर के कुछ हिस्सों को काट दिया जाए। मसीह का अनुसरण करने वालों के बीच एकता और शांति को उनकी विनम्रता और इस प्रकार की वास्तविकता के प्रमाण के रूप में रखा जाता है (आयत 50)।

मरकुस 10 विवाह (10:1-12) और बच्चों (10:13-16), जो राज्य के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति के प्रचलित दृष्टिकोण और विनम्र सेवकाई के बीच एक अंतर को प्रकट करता है।

फिर, मरकुस 10:17-31 में, हमारे पास उस अमीर युवा शासक का विवरण है जिसने यीशु से पूछा, "हे भले गुरु, अनन्त जीवन पाने के लिए मैं क्या करूँ?" उन्होंने आगे-पीछे बात की और अंततः "यीशु ने उस पर दृष्टि करके उससे प्रेम किया, और उससे कहा, 'तुझ में एक बात की घटी है। जा, जो कुछ तेरा है उसे बेच कर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले'" (आयत 21)। वह युवक उदास होकर चला गया, क्योंकि वह बहुत अमीर था।

यीशु इस युवक से प्रेम करता था, परन्तु उस युवक की सोच पीछे की ओर थी; वह धन को यीशु से अधिक महत्व देता था। अतः यीशु ने उसे एक विकल्प दिया। वह अपना धन रख सकता था या सब कुछ बेच सकता था, यीशु का अनुसरण कर सकता था और स्वर्ग में खजाना प्राप्त कर सकता था। यीशु ने इस युवक को दूसरे क्रूस की ओर इशारा किया। लेकिन धनी युवक ने इसे नहीं उठाया और इसके बजाय उदास होकर चला गया। जब तक हम दो क्रूस को नहीं समझेंगे, हम गलत चीजों को महत्व देंगे। हम अपने अनंत काल के राजा की चमकती महिमा के बजाय कम इच्छाओं द्वारा डाली गई अस्थायी छाया में रहते हैं।

मरकुस 10:23 में, यीशु बताते हैं कि धनवान के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन होगा। चेले इस युवक के साथ यीशु के आदान-प्रदान से

परेशान प्रतीत होते हैं, इसलिए यीशु स्वयं दोहराते हैं। वे बहुत ही चकित होकर, कहने लगे मरकुस 10:26, "तो फिर किसका उद्धार हो सकता है?" वे अभी भी दो क्रूस को नहीं समझ सकते हैं।

पतरस की टिप्पणी से कोई यह समझ सकता है कि मरकुस 10:28, "देख, हम तो सब कुछ छोड़कर तेरे पीछे हो लिए हैं," कि वह असंतुलित महसूस करता है और यह सुनिश्चित करना चाहता है कि वह इस अजीब दुनिया में सुरक्षित है जिसका वर्णन यीशु कर रहा है। यीशु ने पतरस के बलिदान की पुष्टि की: "मैं तुम से सच कहता हूँ कि ऐसा कोई नहीं, जिसने मेरे और सुसमाचार के लिये घर या भाइयों या बहिनों या माता या पिता या बाल–बच्चों या खेतों को छोड़ दिया हो, और अब इस समय सौ गुणा न पाए" (10:29-30अ)। लेकिन फिर यीशु ने कुछ ऐसा जोड़ा जिसकी पतरस को उम्मीद नहीं थी: "पर सताव के साथ और परलोक में अनन्त जीवन" (10:30आ)। यीशु ने अपने राज्य की उलटी प्रकृति को दोहराते हुए निष्कर्ष निकाला: "बहुत से जो पहले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, वे पहले होंगे" (10:31)। मैं कल्पना करता हूँ कि पतरस को और भी अधिक भटकाव महसूस हुआ क्योंकि यीशु ने अप्रत्याशित रूप से उस गठरी में सताव को शामिल कर लिया जो मसीह का अनुसरण करने के साथ आता है।

मरकुस 10:32-34, में, मरकुस 8 के बाद पाँचवीं बार, यीशु ने शिष्यों को अपने बारे में स्पष्ट रूप से आने वाली पीड़ा, मृत्यु और पुनरुत्थान: के बारे में बताया।

> और वह फिर से बारहों को एक तरफ ले गया और उन्हें बताने लगा कि उसके साथ क्या होने वाला है, और कहा, "देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं, और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा, और वे उसको घात के योग्य ठहराएँगे, और अन्य जातियों के हाथ में सौंपेंगे। वे उसको ठट्ठों में उड़ाएँगे, उस पर थूकेंगे, उसे कोड़े मारेंगे और उसे घात करेंगे, और तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।"

इसके तुरंत बाद, याक़ूब और यूहन्ना उसके पास आते हैं, और आने वाले राज्य में सर्वोत्तम आसनों की मांग करते हैं। यीशु की निराशा उनकी प्रतिक्रिया में स्पष्ट है: "तुम नहीं जानते कि क्या माँगते हो। जो कटोरा मैं पीने पर हूँ, क्या तुम पी सकते हो? और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूँ, क्या तुम ले सकते हो?" (मरकुस 10:38)। लेकिन यह बाकी बारहों को मैदान में कूदने से रोकने के लिए पर्याप्त नहीं है, क्योंकि वे भी सबसे बड़ा बनना चाहते हैं। एक बार फिर, यीशु ने नम्रता, दासत्व और बलिदान के बारे में अपना उपदेश दोहराया जो राज्य में महानता के प्रतीक हैं (मरकुस 10:42-45)।

पुनरुत्थान के बाद तक पतरस और अन्य लोग दोनों क्रूस को समझ नहीं पाते। पतरस पिन्तेकुस्त में पहले क्रूस के बारे में उपदेश देता है (प्रेरितों के काम 3:18) और दूसरे क्रूस के बारे में अर्थपूर्ण ढंग से लिखते हैं 1 पतरस 2:21: "और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुःख उठाकर तुम्हें एक

आदर्श दे गया है कि तुम भी उसके पद–चिह्नों पर चलो" वह उसी क्रम में आगे बढ़ता है 1 पतरस 4:12-13: "हे प्रियो, जो दुःख रूपी अग्नि तुम्हारे परखने के लिये तुम में भड़की है, इस से यह समझकर अचम्भा न करो कि कोई अनोखी बात तुम पर बीत रही है। पर जैसे जैसे मसीह के दुःखों में सहभागी होते हो, आनन्द करो, जिससे उसकी महिमा के प्रगट होते समय भी तुम आनन्दित और मगन हो।"

जब तक हम बोलते समय दोनों क्रूस को नहीं पहचान लेते, तब तक शायद बेहतर होगा कि हम बिल्कुल भी न बोलें। यदि हम या तो उसके क्रूस या हमारे क्रूस को छोड़ देते हैं, तो हम राज्य के सुसमाचार का सटीक प्रतिनिधित्व नहीं कर रहे हैं। हमें कष्ट उठाने के लिए बुलाया गया है, और हम अपने कष्टों के माध्यम से मसीह के साथ पहचान पाते हैं। प्रचुर मात्रा में महिमा और सम्मान हमें अनंत काल तक मिलता रहेगा, लेकिन इसका कोई छोटा रास्ता नहीं है। जबकि रेगिस्तान में यीशु की परीक्षा हो रही थी (मत्ती 4:1-10), शैतान ने उसके सामने छोटे रास्तों की एक श्रृंखला पेश की। यीशु ने उन्हें अस्वीकार कर दिया, इसके बजाय क्रूस के उस मार्ग पर चलने का विकल्प चुना जो पिता ने उसके लिए चिन्हित किया था। हमें भी ऐसा ही करना चाहिए।

जैसा कि मैंने मरकुस 8-10 के दौरान यीशु को बारहों के साथ धैर्य रखते हुए देखा, मैं समझने में उनकी धीमी गति पर आश्चर्य से अपना सिर हिलाता हूँ। फिर मैं अपने आप को मानता हूँ। मुझे प्रारंभिक पाठ सीखने के लिए कई दशक मिले जिन पर मुझे अभी तक महारत हासिल नहीं हुई है। मुझे बहुत सारे लाभ हुए हैं। मेरे पास पवित्रशास्त्र और कई अन्य आत्मिक संसाधनों तक पहुँच है। मैं एक धार्मिक परिवार में पला-बढ़ा हूँ। मैंने कई परिपक्व विश्वासियों से बातचीत की है। और फिर भी मुझे अभी भी बहुत कुछ करना बाकी है। यीशु वास्तव में धैर्यवान है। मुझे दूसरों के साथ समान रूप से धैर्य रखने की आवश्यकता है।

हम एक अस्त-व्यस्त राज्य में रहते हैं। हमें अपनी नजर शाश्वत वास्तविकताओं पर रखनी होगी, न कि सांसारिक अस्थाई या क्षणिक और हल्के कष्टों पर। जब हम आत्मा के अनुसार चल रहे होते हैं तो हम यही उम्मीद कर सकते हैं। यदि अन्य चिंताओं में व्यस्त थे, तो हम गलत रास्ते पर हैं। सही मार्ग महिमा और सहजता के बजाय त्याग और सेवा से चिह्नित होता है।

भारत की एक प्रसिद्ध मिशनरी एमी कारमाइकल ने *कैंडल्स इन द डार्क* में लिखा है कि, "मिठास से भरा एक प्याला कड़वे पानी की एक को भी बाहर नहीं गिरा सकता, चाहे वह अचानक से कितना ही क्यों न छलक जाए।" मुझे उस कथन से नफरत है, इसलिए नहीं कि यह असत्य है, बल्कि इसलिए क्योंकि यह *सत्य* है, और ज्यादा कायल करने वाला है।

कारमाइकल ने अपनी कविता "हस्ट दाओ नो स्कार" में दूसरे क्रूस के विचार को भी अद्भुत ढंग से दर्शाया है:

क्या तुम्हें कोई निशान नहीं मिला?
पैर, या बाजू, या हाथ पर कोई छिपा हुआ निशान नहीं?
मैं तुम्हें भूमि में पराक्रमी के रूप में गाते हुए सुनता हूँ,
मैंने उन्हें तुम्हारे उज्ज्वल सितारे की जयजयकार करते हुए सुना है,
क्या तुम्हें कोई निशान नहीं मिला?
क्या आपको कोई घाव नहीं है?
फिर भी, तीरंदाजों ने मुझे घायल कर दिया, खर्च कर दिया।
मुझे मरने और किराए पर लेने के लिए पेड़ के खिलाफ झुका दिया
मेरे चारों ओर घूमने वाले जानवरों को हिंसक बनाकर, मैं बेहोश हो गया:
क्या आपको कोई घाव नहीं है?
कोई घाव नहीं? कोई निशान नहीं?
फिर भी स्वामी जैसा सेवक होगा,
और वे पाँव जो मेरे पीछे हो लेते हैं, वे छेदे गए हैं;
लेकिन वे संपूर्ण हैं। क्या वह दूर तक पीछा कर सकता है
किसको कोई घाव या निशान नहीं है?

अधिकांश लोगों के लिए, यह स्वाभाविक रवैया नहीं है। हालाँकि, मुझे एक बार एक अपवाद का सामना करना पड़ा। मैं एक युवक के मन परिवर्तन के तुरंत बाद उसके साथ यात्रा पर था। वह उन पहले लोगों में से एक थी, जो पहले से अविवाहित लोगों के समूह से प्रभु के पास आए थे, जिनके साथ मैं और मेरी पत्नी मिशनरी के रूप में रह रहे थे। हमारी बातचीत के दौरान, मैंने उनसे पूछा कि किस चीज़ ने उन्हें प्रभु का अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया। उनके जवाब ने मुझे चौंका दिया: "मैंने चारों ओर दुनिया के सभी दर्द, पीड़ा, दुख और बुराई को देखा और यह निर्धारित किया कि केवल एक पूरी तरह से अनंत और बुद्धिमान परमेश्वर ही इन सबका अर्थ समझ सकता है। आपने मुझे उस परमेश्वर के बारे में बताया।" वह कष्ट से भाग नहीं रहा था; वह परमेश्वर के पास भाग रहा था और पीड़ा सहने की बुलाहट को स्वीकार कर रहा था। वह प्रकाशन केवल प्रभु द्वारा ही उस पर प्रकट की जा सकता था। यह मान्यता धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास वाले के जीवन का एक दैनिक हिस्सा है।

यदि हम एक वफादार निर्माता के रूप में प्रभु पर भरोसा करते हैं और वही करते हैं जो सही है (1 पतरस 4:19); यदि हम इस जीवन की परेशानियों से गुजरते समय अनंत काल को ध्यान में रखते हैं (2 कुरिन्थियों 4:17); अगर हमें भरोसा है कि वह अपनी महिमा और हमारी भलाई के लिए सब कुछ करेगा (रोमियों 8:28)-तो ये दृढ़ विश्वास हमारी भावनाओं और हमारी प्रतिक्रियाओं को प्रभावित करेगा, क्योंकि हमें (या जिनसे हम प्रेम रखते हैं) कठिनाई का सामना करना पड़ता है। हम संबंधित समानता के साथ प्रतिक्रिया दे सकते हैं क्योंकि हम चीजों को अनंत दृष्टिकोण से देख रहे हैं।

यीशु लाज़र की मृत्यु पर रोया (यूहन्ना 11:35), लेकिन यह आशा रहित दुःख नहीं था। जब पौलुस ने मृत्यु पर विचार किया, तब वह आत्मविश्वास के साथ कह सका, "मेरे लिए, जीना मसीह है और मरना लाभ है" (फिलिप्पियों 1:21)। हम जानते हैं कि कहानी कैसे समाप्त होती है, उसकी कोई भी कमजोरी या दुःख उस ज्ञान से रंगीं हुई होती है। वह आश्वासन हमें सांसारिक परेशानियों के सामने अपने मूल में स्थिर रहने में सक्षम बनाता है। *ऐसा नहीं है कि हम कम गहराई से महसूस करते हैं, बल्कि हम अधिक गहराई से महसूस करते हैं। हमने शाश्वत भावनाओं पर विचार किया है जो तुलनात्मक रूप से सांसारिक भावनाओं को फीका कर देती हैं।*

भावनात्मक खाते के दूसरे पक्ष के लिए भी यही सच है। निश्चित रूप से स्वाभाविक रूप से खुशमिजाज या तुच्छ व्यक्तित्व वाला व्यक्ति नहीं हूँ। जन्म से ही मेरा झुकाव निराशावाद की ओर रहा है। खुशी की बात है कि प्रभु ने मुझे गंभीर दृष्टिकोण वाले स्वभाव से सम्भाला है। जैसे-जैसे मैंने धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास वाले जीवन में रहना सीखा है, वैसे-वैसे मेरी खुशी बढ़ती जा रही है।

हाल ही के वर्षों में, जिन लोगों को मैं सलाह दे रहा हूँ उनसे पूछताछ करते समय मैं शायद सबसे अक्सर पूछे जाने वाला प्रश्न पूछता हूँ, "क्या आप आनंद ले रहे हैं?" *मैंने पाया है कि "मज़ेदार कारक" इस बात का सबसे अच्छा संकेत हो सकता है कि एक व्यक्ति धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास वाला जीवन जी रहा है या नहीं। यह बताता है कि क्या एक व्यक्ति अपने प्रयासों के बजाय पवित्र आत्मा द्वारा सशक्त है।*

मज़ेदार कारक यह दर्शाता है कि क्या कोई व्यक्ति परमेश्वर पर भरोसा कर रहा है और उसे इस बात पर भरोसा है कि चीजें कैसे होंगी, या यहाँ तक कि इस बारे में रुचि रखने वाली जिज्ञासा या हास्यपूर्ण जिज्ञासा भी है कि परमेश्वर अपनी महिमा और अनंत काल में हमारी भलाई के लिए कुछ विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों का उपयोग कैसे करेगा। मनोरंजन, इस अर्थ में, प्रचुर जीवन जीने का एक प्रमाण है जो यीशु हमें देने के लिए आया था (यूहन्ना 10:10)।

बेशक, धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास वाला जीवन केवल मनोरंजन और खेल नहीं है। पवित्रशास्त्र में, परमेश्वर स्वयं क्रोध, निराशा, लालसा, ईर्ष्या, आक्रोश और जलन सहित भावनाओं की एक श्रृंखला व्यक्त करता है। यदि हम उसके विचारों और भावनाओं के अनुरूप हैं, तो हम इन्हें उसके साथ महसूस करेंगे, लेकिन यह धार्मिक तरीके से और सही कारणों से होगा-क्योंकि हम परेशान होते हैं जब लोग परमेश्वर की रचना और इरादों को विकृत करते हैं और उनकी महिमा की उपेक्षा करते हैं।

लेकिन यीशु कोई उदास व्यक्ति नहीं था। वास्तव में, उसे एक जश्न मानेवाले व्यक्ति के रूप में जाना जाता था (लूका 7:34)। लोगों (यहूदी धार्मिक अगुओं को

छोड़कर) ने उनके आसपास रहने का आनंद लिया। पुराने नियम में भी, परमेश्वर ने जश्न मनाने, दावतें आयोजित करने और अच्छा समय बिताने के बारे में विस्तृत निर्देश दिए थे। वह प्रेम, खुशी और हास्य की भावना व्यक्त करता है। पूछना "क्या आप आनंद ले रहे हैं?" यह मुझे ईश्वर के हृदय और स्वभाव के उस पहलू के अनुरूप बने रहने की याद दिलाता है।

परमेश्वर के पास एक न-समाप्त होने वाला जुनून है: उसकी महिमा। वह चाहता है कि उसकी महिमा उसकी रचना द्वारा, और विशेष रूप से मानव जाति द्वारा अनुभव, प्रतिबिंबित और घोषित की जाए। उसकी अन्य सभी भावनाएँ इस प्रबल जुनून की अभिव्यक्ति या अमौलिक हैं। इस सत्य को याद रखने से मुझे मेरे सामने आने वाली स्थितियों के प्रति अपनी भावनात्मक प्रतिक्रियाओं का मूल्यांकन करने के लिए एक विश्वसनीय मार्गदर्शन मिलता है। यहाँ तक कि उनके आश्चर्यजनक उतार-चढ़ाव में भी, मैं चीजों को सबसे अच्छी तरह तब समझ सकता हूँ जब मैं उनकी महिमा के संदर्भ में स्थिति का मूल्यांकन करता हूँ।

प्रार्थना

हे परमेश्वर, मैं जानता हूँ कि आप मुझसे प्रेम करते हैं। लेकिन मेरा विश्राम आपकी सर्वोच्च प्राथमिकता नहीं है। आपके लिए, मेरी भलाई, आपका राज्य और आपकी महिमा अधिक महत्वपूर्ण है। सच तो यह है, मुझे आराम पसंद है; लेकिन मैं आपसे अधिक प्रेम करता हूँ (कम से कम, मैं आपसे और अधिक प्रेम करना चाहता हूँ)। मुझे अपना दृष्टिकोण साझा करना सिखाएँ। जीवन छोटा है और अनंत काल लंबा है। आपको जानने की खुशी और हमेशा आपके साथ रहने की महिमा की तुलना में सांसारिक कठिनाइयाँ हल्की और क्षण भर की हैं। मुझे स्वेच्छा से अपना क्रूस उठाना और विनम्रता, त्याग और पीड़ा के मार्ग पर आपका अनुसरण करना सिखाएँ-ताकि मैं आपके साथ चल सकूँ, अपने जीवन में आपके पुनरुत्थान की सामर्थ्य का अनुभव कर सकूँ, और आपको अभी और हमेशा के लिए जानूँ।

प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें, फिर प्रार्थना करें और परमेश्वर से पूछें कि वह आपसे क्या सीखना और कराना चाहता है। शांत होकर सुनें।

अपनी डायरी की समीक्षा करें। क्या आपकी कोई पिछली प्रतिज्ञाएँ हैं जिन्हें आपने पूरा नहीं किया है? यदि आवश्यक हो, तो संशोधित समापन तिथियाँ निर्धारित करें।

1. क्या मैंने न केवल यीशु के क्रूस की आवश्यकता को, बल्कि अपनी आवश्यकता को भी पूरी तरह से पहचान लिया है? यदि नहीं, तो यह मान्यता पीड़ा के प्रति मेरे दृष्टिकोण और प्रतिक्रिया को कैसे बदल सकती है?

2. क्या कोई कीमत या बलिदान है जिससे मैं (धनी युवा शासक की तरह) कतरा रहा हूँ?

3. जब मैं सुसमाचार समझाता हूँ, तो क्या मैं दोनों क्रूस साझा करता हूँ?

4. इस अध्याय के प्रत्युत्तर में परमेश्वर मुझसे कौन-सी विशिष्ट कार्य करवाना चाहता है? (उन्ह अपने डायरी में लिख ले और अपने कैलेंडर में नियत कर ले।)

5. मैंने जो सीखा है, उसके अनुसार परमेश्वर किसके साथ चाहता है कि उसे (कम से कम एक नाम) साझा करूँ?

प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको इन प्रतिबद्धताओं का पालन करने में सक्षम बनाए और उन लोगों के दिलों को तैयार करे जिनके साथ आप ज्ञान साझा करना चाहते हैं।

भाग 2

सामूहिक धार्मिकता से भरी जीवनशैली के अभ्यास के पहलु

7 नई वाचा

नई वाचा के परिवार होने के नाते, परमेश्वर का साथ हमारा रिश्ता यीशु की विश्वासयोग्यता और धार्मिकता पर आधारित है। उसे खुश करते हुए हमारी जीवन जीने को क्षमता हमारे अन्दर उसके दयालुता भरे कार्य पर आधारित है।

> "फिर यहोवा की यह वाणी है", सुन, ऐसे दिन आने वाले हैं "जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा के समान ना होगी जो मैंने उनके पुरखाओं से बांधी थी जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया, क्योकि यद्यपि मैं उनका पति था, तौभी उन्होंने मेरी वाचा तोड़ डाली"। "परन्तु जो वाचा मैंने उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने से बाँधूँगा, वह यह है: मैं अपनी व्यवस्था उनके हृदय में समवाऊँगा, और उसे उनके ह्रदय पर लिखूँगा, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यह वाणी है। तब उन्हें फिर एक दुसरे से यह न कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो, क्योकि, यहोवा की यह वाणी है, छोटे से लेकर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे, क्योकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूँगा, औए उनका पाप फिर स्मरण न करूँगा।"
>
> - यिर्मयाह 31:31-34

वाचा दो पक्षों के बीच एक समझौता होता है, जो उनके रिश्ते को परिभाषित करता है। बाइबल को देखने का एक तरीका परमेश्वर और मनुष्य के बीच वाचा की एक श्रंखला के रूप में है। परमेश्वर ने नूह के साथ वाचा बाँधी (उत्पत्ति 6:18; 9:9-17: अब्राहम/अब्राम) (उत्पत्ति 15:18; 17:1-21); फिर इसहाक और और याकूब (अब्राहम की वाचा के नवीनीकरण के रूप में उत्पत्ति 26:2-5 और उत्पत्ति 35:11-12); मूसा (निर्गमन 24:7-8); दाऊद (2 शमुएल 7:8-17); उसके बाद सुलेमान (दाऊद की वाचा के नवीनीकरण के रूप में 1 राजा 9:1-5)। कुछ

अवसरों पर, परमेश्वर के लोगों ने वाचा का नवीनीकरण तब किया जब उन्हें ये महसूस हुआ कि उन्होंने वाचा को तोड़ दिया है। उदाहरण के लिए, योशिय्याह (2 राजा 23:1-3; 2 इतिहास 34:31-32) और यहोयादा (2 इतिहास 23:16) दोनों ने परमेश्वर और इस्राएल के बीच वाचा को नवीकृत किया।

परमेश्वर और उसके लोगों के बीच रिश्ता पुराने नियम में (मूसा की वाचा के तहत) और नए नियम (नई वाचा के तहत) से बिल्कुल अलग है। पुराने नियम में, परमेश्वर का नाम इतना पवित्र माना जाता था कि उसके नाम का उच्चारण भी नहीं किया जा सकता था। परमेश्वर और सिर्फ एक बार मनुष्य के बीच अलगाव की भावना बहुत गहरी है। इस विचार को महा-पवित्रस्थान की पहुँच न होने के माध्यम से तम्बू और बाद में मंदिर में चित्रित किया गया था, जहाँ महायाजक को वर्ष में सिर्फ एक बार परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश की अनुमति थी(इब्रानियों 9:6-7)।

मूसा की वाचा इस्राएल के जातीय लोगों पर केन्द्रित थी। मूसा की वाचा के तहत, इस्राएली परमेश्वर की वाचा की आशीषों को पाते यदि वे परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते। "फिर अपने परमेश्वर यहोवा की सुनाने के कारण ये सब आशीर्वाद तुझ पर पूरे होंगे" (व्यवस्थाविवरण 28:2) इसके विपरीत, यदि इस्राएल परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं करते है, तो परमेश्वर ने शाप देने का वायदा किया। "परन्तु यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की बात न सुने। और उसकी सारी आज्ञाओं और विधियों के पालने में जो मैं आज सुनाता हूँ चौकसी नहीं करेगा, तो ये सब शाप तुझ पर आ पड़ेगा।" (व्यवस्थाविवरण 28:15)।

पुराने नियम के अंत के समय में, प्रभु ने, अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा एक नई वाचा की भविष्यद्वाणी की। ये नई वाचा परमेश्वर की मूसा के साथ वाचा से अलग होगी। नई वाचा अनंतकाल तक की है (यशायाह 59:21; यिर्मयाह 32:40; 50:5; यहेजकेल 16:60; 37:26)। नई वाचा के तहत, परमेश्वर अपने लोगो को अन्दर से बदलने का वायदा करता है, ताकी वे सब उसके और करीब आ सकें।

> "परन्तु जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने से बाँधूँगा, वह यह है: मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊँगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की वह वाणी है।" (यिर्मयाह 31:33)
>
> "मैं तुम को नया मन दूँगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूँगा, और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुम को मांस का हृदय दूँगा।" (यहेजकेल 36:26; यहेजकेल 11:19 भी देखे)
>
> "मैं उन से यह वाचा बाँधूँगा, कि मैं कभी उनका संग छोड़कर उनका भला करना न छोड़ूँगा; और अपना भय में उन के मन से ऐसा उपजाऊँगा कि वे कभी मुझ से

अलग होना न चाहेंगे।" (यिर्मयाह 32:40)

और परमेश्वर स्वयं पाप से एक बार और हमेशा के लिए पाप से निपटने का वायदा करता है। "तब उन्हें फिर एक दूसरे से यह न कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो, क्योकि, यहोवा की यह वाणी है, छोटे से लेकर बड़े तक, सब मेरा ज्ञान रखेंगे; क्योकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूँगा, और उनका पा फिर स्मरण न करूँगा।" (यिर्मयाह 31:34)

नई वाचा की ज़रूरत क्यों है? संक्षेप में, पुरानी वाचा के दायरे और आधार दोनों को मजबूत करने की ज़रूरत है। अब्राहम और मूसा की वाचा दो प्रमुख वाचाएँ है जो पुराने नियम को आकार देती है (यदि हम दाऊद की वाचा को अब्राहम की वाचा की निरंतरता के रूप में देखते हैं)। मूसा की वाचा इस्राएल पर केन्द्रित थी। परमेश्वर के दृष्टिकोण से, पूरी दुनिया को ध्यान में रखते हुए (गलातियों 3:16-18), अब्राहम की वाचा अभी भी प्रभावी है। परमेश्वर ने अब्राहम से वायदा किया उत्पत्ति 12:1-3 उसमें ये वायदा भी शामिल था कि उसके द्वारा "पृथ्वी के सब कुल आशीष पाएँगे।" इसे सम्पूर्ण रीति से गलातियों 3:6-14 में समझाया गया है। मनुष्य के दृष्टिकोण से, हालाँकि, अब्राहम की वाचा शारीरिक वंशजो तक ही सीमित थी (रोमियों 9:3-8)। दायरे की यह सीमित समझ समस्या से भरी हुई है। इस समस्या की नई वाचा में सुधारा गया है (रोमियों 4:1-25; गलातियों 3:26-29), जो स्पष्ट रूप से सार्वभौमिक है।

मूसा की वाचा आधार के कारण अधूरी है। यह, आंशिक रूप से, परमेश्वर के लोगो की आज्ञाकारिता पर आधारित है। समय-समय पर, उन्होंने साबित किया कि वे परमेश्वर की व्यवस्था की आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ हैं। पशुबलि के माध्यम से इस अविश्वास से निपटने का प्रावधान किया गया। यह समाधान, हालाँकि, अस्थायी और अंततः अप्रभावी था (इब्रानियों 9:6-14)। नई वाचा मसीह की विश्वासयोग्यता और धार्मिकता पर आधारित है। यह उसके लहू से मुहरबन्द की गई है (मत्ती 26:28; मरकुस 14:24; लूका 22:20; 1 कुरिन्थियों 11:25)। इसके अलावा, वायदा की गई नई वाचा के तहत, परमेश्वर अपने लोगो के अन्दर से, बाहर तक बदलने, उन्हें नया हृदय देने की प्रतिज्ञा करता है।

हमारे स्वाभाव की पापपूर्णता के कारण, पुरानी वाचा कभी भी काफी नहीं है। बाहरी व्यवस्था, मायने नहीं रखता कि कितना सच्चा और अच्छा है, हमें कभी भी आज्ञाकारिता की और नहीं ले जा सकता। यह कभी भी हमारे आतंरिक स्वाभाव को बदल नहीं सकता। परमेश्वर, कोई संदेह नहीं, यह जानता है। उसने मूसा की वाचा को व्यर्थ आशा में स्थापित नहीं किया कि हम, उचित मार्गदर्शन के साथ, स्वयं को बदल सकते हैं। मूसा की वाचा को स्थापित करने का परमेश्वर का उद्देश्य हमें अनुग्रह की हमारी आवश्यकता को समझाना था, हमें अपने कार्यों के माध्यम से उद्धार कमाने की बजाय विश्वास पर आधारित एक नई वाचा की ज़रूरत है (गलातियों 3:19-29)। "इसलिए व्यवस्था मसीह तक पहुँचाने के लिए हमारी शिक्षक हुई है कि हम विश्वास से धर्मी ठहरे" (गलातियों 3:24)।

नई वाचा में, परमेश्वर ने हमारे लिए वो किया जो हम कभी नहीं कर सकते थे:

> क्योकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर नहीं कर सकी, उसको परमेश्वर ने किया, अर्थात अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में और पापबलि होने के लिए भेजकर,शरीर में पाप पर दंड की आज्ञा दी। इसलिए व्यवस्था की विधि हममे जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते है, पूरी की जाये। (रोमियों 8:3-4)

अब्राहम की वाचा के साथ एक चिन्ह भी था: खतना। नई वाचा का अनुरूप बपतिस्मा है (कुलुस्सियों 2:9-12)। बपतिस्मा मसीह के माध्यम से परमेश्वर के वायदे और उसके प्रावधान की हमारी औपचारिक स्वीकृति है। जिस प्रकार, खतना परमेश्वर की आज्ञा के प्रति अब्राहम की आज्ञाकारिता का उदाहरण है (उत्पत्ति 17:1-14, 23-27), उसी प्रकार बपतिस्मा हमारे लिए भी एक उदाहरण है (मत्ती 28:18-20)।

मूसा की वाचा की विशेषता बार-बार बलिदान देने की थी। नई वाचा की विशेषता सभी समय के लिए एक बलिदान है, लेकिन एक बलिदान जिसे हम हर बार प्रभु भोज लेते समय याद करते हैं (लूका 22:19-20; 1 कुरिन्थियों 11:23-26)। यह हमारे जीवन के स्रोत की याद दिलाता है, भौतिक और सामूहिक रूप से।

नए नियम के विश्वासी होने के रूप में, परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध पुराने नियम में परमेश्वर के लोगो के मामलें में बहुत अलग है। हमें प्रभु का मित्र कहा जाता है (यूहन्ना 15:15), और हम इस जानकारी के साथ पिता को "पापा" कह सकते हैं (रोमियों 8:15; गलातियों 4:6)। यीशु हमें अपने भाई बहन कहने में कोई शर्म नहीं करता (इब्रानियों 2:11)। जब यीशु की मृत्यु हुई तब परमपवित्र स्थान से हमें बाहर करने वाला पर्दा सचमुच फट गया था (मत्ती 27:51)। नई वाचा केवल जातीय इस्राएल तक ही सीमित नहीं थी, लेकिन इसका उद्देश्य "सभी राष्ट्रों से" था (मत्ती 28:19)। और नई वाचा की आशीषें आज्ञाकारिता से अर्जित नहीं की जाती है, परन्तु स्वतंत्र रूप से दी जाती हैं, हमारी योग्यता की कमी के बावजूद, "अनुग्रह के द्वारा... विश्वास से... कर्मों के परिणामस्वरूप नहीं" (इफ़िसियों 2:8-9)। नई वाचा व्यवस्था पर नहीं बल्कि आत्मा पर आधारित है (2 कुरिन्थियों 3:4-6)। हम नियमों द्वारा बंधे नहीं है, परन्तु हम आत्मा के द्वारा प्रभु की समानता में रूपांतरित होने के लिए स्वतंत्र किये गए हैं क्योंकि हम उसे स्पष्ट रूप से देखते हैं (2 कुरिन्थियों 3:17-18)। यह धार्मिकता से भरी जीवन शैली के अभ्यास के जीवन का अदभुत वर्णन है।

सभी वाचएं प्रकृति में समविष्ट है। उन्होंने परमेश्वर और एक व्यक्ति के बीच के सम्बन्ध को परिभाषित नहीं किया, बल्कि परमेश्वर और उसके लोगों के बीच के सम्बन्ध को परिभाषित किया। नयी वाचा भी प्रकृति में समविष्ट है (इफिसियों 2:11-22)। हम "अब विदेशी और मुसाफिर नहीं, परन्तु... पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी" और "परमेश्वर के घराने" के सदस्य है (इफ़िसियों 2:19)। हर जनजाति,

भाषा, और राष्ट्र के चेले अब यहूदी लोगों के साथ मिलकर प्रभु के लिए एक जीवित मंदिर बना रहे हैं। "क्योंकि तुम पहले लोग नहीं थे, लेकिन अब तुम परमेश्वर के लोग हो" (1 पतरस 2:10)। जैसे ही हम मसीह में हमारी सामान्य पहचान और महत्व पाते है, सब सांसारिक भेद मिट जाते हैं (गलातियों 3:26-29)। उसकी पहचान और महत्व केन्द्रीय है। सामूहिक रूप से हम उसकी महिमा को व्यक्त करते हैं।

इब्रानियों की पुस्तक पुरानी और नई वाचा के बीच विरोधाभास को दिखाता है। लेखक उस विरोधाभास का वर्णन करता है और हमें बताता है कि परिणामस्वरूप हमें कैसे जीना चाहिए। इब्रानियों 8:1-10:18, यह विरोधाभास अपने चरम पर पहुँच जाता है। नई वाचा मध्यस्थता की बजाय व्यक्तिगत है, बाहरी के बजाय आत्मिक है और परिवर्तनीय (हमारे प्रदर्शन के आधार पर) के बजाय निश्चित (यीशु के प्रदर्शन के आधार पर) है।

इसके बाद लेखक संक्षेप में बताता है कि हमारी उचित प्रतिक्रिया क्या होना चाहिए: पवित्रता में अपने विश्वास को दृढ़ता से पकड़ना और उस विश्वास में एक दूसरे को प्रोत्साहित करना (इब्रानियों 10:19-25)। हमें कष्ट भी सहना चाहिए (10:32-39)।

अध्याय 11 में, लेखक हमें विश्वास के इस जीवन के पुराने नियम के उदाहरण देता है। फिर वह यीशु को इब्रानियों 12:1-3में अंतिम उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करता है:

> इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है धीरज से दौड़े, और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर तकते रहें, जिसने उस आनंद के लिए जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिंता न करके क्रूस का दुःख सहा, और परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनी ओर जा बैठा।
>
> इसलिए उस पर ध्यान करो, जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना विरोध सह लिया कि तुम निराश होकर साहस न छोड़ दे।

बाकी शेष अध्याय कठिनाईयों के बावजूद विश्वास में दृढ़ बने रहने के विषय पर विस्तार करता है। यह अनुशासन के प्रति हमारी प्रतिक्रिया की बात करता है (इब्रानियों 12:4-11), कमजोरों को सहायता देना और मजबूत करना (12:12-13), और कडवाहट या अनैतिकता के बजाय शांति से चुनौतियों का जवाब (12:14-17)। अंत में, अध्याय सबसे अशांत परिस्थितियों में आज्ञाकारिता में बने रहने के प्रोत्साहन के साथ समाप्त होता है (12:18-29)।

अध्याय 13 उन संबंधों और चरित्र पर केन्द्रित है जो प्रभु के साथ हमारी नई वाचा के सम्बन्ध की प्रकृति को देखते हुए उचित है। हम अपने साथ विश्वासियों से प्रेम रखते हैं (इब्रानियों 13:1), अजनबियों का आतिथ्य सत्कार करना है (13:2),

कैदियों और सताए हुओं की सहायता करना है (13:3), अपने जीवनसाथी के प्रति विश्वासयोग्य और सम्मान करें (13:4), पैसों के प्रेम से मुक्त रहें (13:5-6)। हमें प्रभु के अगुवों का अनुकरण करना है (13:7), प्रभु के लिए कष्ट सहना है, और उसके साथ अपने भविष्य के लिए जीना है (13:12-14)। हमें आभारी बनना है (13:15) और हमें बलिदानपूर्वक दूसरों के साथ साझा करना है (13:16)। यह सब मसीह में बने रहने, आत्मा में चल ने या इनके समकक्ष शब्दों के वर्णन से समान लगता है।

नई और पुरानी वाचा के बीच का अंतर परमेश्वर के लोगों की इच्छित जीवनशैली या चरित्र नहीं है, बल्कि उस जीवन की स्रोत और प्रेरणा है। नई वाचा हमारे प्रदर्शन के द्वारा नहीं, बल्कि यीशु के प्रदर्शन के द्वारा कायम होती है। यह हमारी सामर्थ्य और क्षमता से नहीं, बल्कि वास करने वाले पवित्र आत्मा द्वारा जीता जाता है। यह परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध को खोने के डर से प्रेरित नहीं है, बल्कि उसने हमें जो अनुग्रह दिया है, उसके प्रति हमारी अभारिता से प्रेरित है। यह ऐसा कुछ नहीं है, जिसे हम खोने से बचने की कोशिश कर रहे हैं, बल्कि कुछ ऐसा है जिसे हम उत्सुकता से विकसित कर रहें हैं क्योंकि प्रभु हमें अपने हृदय के करीब लाता है।

यहेजकेल ने आने वाली नई वाचा को पत्थर के हृदय औए मांस के हृदय के बीच अंतर के रूप में वर्णित करता किया (यहेजकेल 11:19; 36:26)। परमेश्वर का यह नया हृदय का उपहार नई वाचा के मूल में है। दोनों ही वाचाएँ एक सामूहिक पृष्ठभूमि में दी गई है। यह सम्बन्ध जो हम साझा करते हैं, मसीह में हमारे सामूहिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यदि परमेश्वर हमारा पिता है, तो हमारे साथी चेले हमारे भाई और बहन हैं। यह पारिवारिक सम्बन्ध हमारे हमारी बातचीत को परिभाषित करता है। हमारी पारिवारिक विरासत हमें परिभाषित करती है।

प्रार्थना

परमेश्वर जो स्वर्ग में है। मुझे ये दोबारा कहने दो- मेरा पिता जो स्वर्ग में है। नई वाचा के लिए धन्यवाद। आपने हमारें पापों का एक बार, और हमेशा के लिए निपटारा कर दिया। मुझे डरने की ज़रूरत नहीं है। आपने अपनी आत्मा को हमारे अन्दर जीने के लिए और नया बनाने के लिए भेजा। हम पाप और मृत्यु की व्यवस्था से मुक्त हो हो गए हैं और आपकी आत्मा द्वारा आपका अनुसरण करने के लिए स्वतंत्र हो गए हैं। आपने हमेशा के लिए हमें अपने लोग बना लिया है। हम वो लोग नहीं थे; जो अब है। हम आपके लोग है। आप हमारे पिता हैं, और अब हम आपमें भाई बहन है। आपने जो किया उसमें हमें कदम बढ़ाने में हमारी सहायता करें।

प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें, फिर प्रार्थना करें और परमेश्वर से पूछें कि वह आपसे क्या सीखना और कराना चाहता है। शांत होकर सुनें।

अपनी डायरी की समीक्षा करें। क्या आपकी कोई पिछली प्रतिज्ञाएँ हैं जिन्हें आपने पूरा नहीं किया है? यदि आवश्यक हो, तो संशोधित समापन तिथियाँ निर्धारित करें।

1. क्या मैं अभी भी ऐसे जी रहा हूँ और सोच रहा हूँ, मानों मैं अभी भी पुरानी वाचा में जी रहा हूँ? यदि हाँ, तो किस सन्दर्भ में?

2. मैं नई वाचा को अद्‌भुत सच्चाइयों को बेहतर तरीके से समझने में कैसे मदद कर सकता हूँ?

3. जीवन जीने की मेरी सामर्थ्य का स्रोत मेरे प्रदर्शन की बजाय परमेश्वर की कृपा में कितना निहित है?

4. मेरे आत्मिक जीवन की प्रेरणा कितनी लगातार माप न लेने के दर की बजाय कृतज्ञता पर आधारित है?

5. इस अध्याय के प्रत्युत्तर में परमेश्वर मुझसे कौन-सी विशिष्ट कार्य करवाना चाहता है? (उन्ह अपने डायरी में लिख ले और अपने कैलेंडर में नियत कर ले।)

6. मैंने जो सीखा है, उसके अनुसार परमेश्वर किसके साथ चाहता है कि उसे (कम से कम एक नाम) साझा करूँ?

प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको इन प्रतिबद्धताओं का पालन करने में सक्षम बनाए और उन लोगों के दिलों को तैयार करे जिनके साथ आप ज्ञान साझा करना चाहते हैं।

8 नई आज्ञा

प्रेम धार्मिकता से भरी जीवन शैली के अभ्यास की परिभाषित विशेषता है।

> मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ कि एक दूसरे से प्रेम रखो; जैसा मैंने तुमसे प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे, तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो।
>
> - यूहन्ना 13:34-35

प्रेम एक ऐसे विशेषता है जो प्रेम धार्मिकता से भरी जीवन शैली के अभ्यास के जीवन को सबसे अधिक परिभाषित करती है: परमेश्वर के लिए, लोगों के लिए प्रेम, विशेष रूप से विश्वास का परिवार। यीशु ने परमेश्वर के सभी पुराने नियम की आज्ञाओं को इन दो में संक्षेप किया: परमेश्वर से प्रेम करो और दूसरों से प्रेम करो (मत्ती 22:34-40)। इसके अलावा, उसके पकड़वाए जाने की रात, जब उसने नई वाचा की स्थापना की, (मत्ती 26:28; मरकुस 14:24; लूका 22:20), उसने अपने अनुयायिओं को नई आज्ञा भी दी (यूहन्ना 13:34): "... एक दूसरे से प्रेम रखो जैसे मैंने तुमसे प्रेम किया है, जैसा मैंने तुमसे प्रेम रखा है।" लोग कभी कभी इस सम्बन्ध को भूल जाते हैं, क्योंकि नई वाचा का उल्लेख केवल समदर्शी सुसमाचारों (यानी, मत्ती, मरकुस, लूका) में किया गया है और नई आज्ञा का उल्लेख केवल यूहन्ना में किया गया है। यूहन्ना ने इस सन्देश को अपने बाद के लेखों में भी अपनाया है (1 यूहन्ना 2:7-8; 2 यूहन्ना 5)।

यूहन्ना 13, में यीशु ने अपने चेलों के प्रति अपना प्रेम प्रगट किया है, फिर उन्हें एक दूसरे के लिए भी ऐसा ही प्रेम करने का आदेश दिया है। कहानी इस समझ के साथ से शुरू होती है कि यीशु के मन में क्या चल रहा है: "यीशु ने जान लिया कि मेरी वह घड़ी आ पहुंची है कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊँ, तो अपने लोगों से जो जगत में थे जैसा प्रेम वह रखता था, अंत तक वैसा ही प्रेम रखता रहा "(13:1)।

यीशु जानता था कि पृथ्वी पर उनका समय समाप्त हो रहा है, इसलिए उसने अपने बाकी बचे समय को अपने चेलों से प्रेम करते हुए बिताया। फिर, उसने उन्हें एक उदाहरण दिया। उसने अपने कपडे उतर दिए, अपने चारों ओर एक तौलिया लपेट लिया, और उनके पैर धोए (13:4-11)। बाद में, उसने समझाया: "क्या तुम नहीं समझते कि मैंने तुम्हारे साथ क्या किया? तुम मुझे गुरू और प्रभु कहते हो; और ठीक कहते हो, *क्योंकि मैं वही हूँ।* यदि मैंने प्रभु और गुरू होकर तुम्हारे पैर धोए, तो तुम्हे भी एक दूसरे के पाँव धोना चाहिए। कि जैसा मैंने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो" (13:12ब-15)। यीशु उन्हें न केवल यह दिखा रहा था कि वह उनसे कितना प्रेम करता है, बल्कि यह भी दिखा रहा था कि उन्हें एक-दूसरे से कैसे प्रेम करना चाहिए।

जब उन्होंने भोजन करना जारी रखा, तो यीशु ने समझाया कि उनमें से एक जो उसी मेज पर बैठा था, उसे धोखा देगा और वह (यीशु) उन्हें बहुत जल्दी छोड़ देगा। तब उसने उन्हें आज्ञा दी: "मैं तुम्हे एक नई आज्ञा देता हूँ कि एक दूसरे से प्रेम रखो; जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे, तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो।" (यूहन्ना 13:34-35)।

ये नई आज्ञा पुराने नियम की व्याख्या के सामान है, लेकिन अत्याधिक महत्व के साथ। यह "एक दूसरे" – परमेश्वर के परिवार के अन्य सदस्यों से प्रेम करने पर केन्द्रित है। यह एक उदहारण या मानक देता है: हमें एक दूसरे से प्रेम करने है जैसा यीशु ने हमसे किया। औए नई आज्ञा परिणाम की व्याख्या करती है: यीशु आयत 35 में कहता है, यह प्रेम, इस बात का प्रमाण है कि हम उसके चेले हैं। हमारे एक दूसरे के प्रति प्रेम इस बात को पूरे संसार के सामने दर्शाता है कि हम यीशु का अनुसरण करते हैं।

यह आश्चर्यजनक और भयावह दोनों ही है। आश्चर्यजनक क्योंकि, आज हम कलीसिया को देखकर इसका अनुमान नहीं लगा सकते; भयावह क्योंकि अक्सर हम यीशु के समान प्रेम करने से चूक जाते हैं। हाँ, मैं उन लोगों से प्रेम करता हूँ जो आसानी से प्रेमी बन जाते हैं। लेकिन यहाँ तक कि मूर्तिपूजक भी ऐसा करते हैं (मत्ती 5:43-48)। फिर भी, एक दूसरे के प्रति हमारा प्रेम यह प्रदर्शित करने वाला संकेतक है कि हम सच में यीशु के चेले हैं। यह हमारे सम्पूर्ण ध्यान की मांग करता है। इसका कलीसिया के अन्दर हमारे कामकाज और सुसमाचार प्रचार पर बड़े पैमाने पर प्रभाव पड़ता है। प्रेम वह है, जहाँ धार्मिकता से भरी जीवन शैली के अभ्यास का सम्पूर्ण अनुभव तीव्र केंद्र में आता है।

केवल पवित्र आत्मा की सक्षमता से ही हम एक दूसरे से वैसे ही प्रेम कर सकते हैं जैसे यीशु हमसे प्रेम करते हैं। यह धार्मिकता से भरी जीवन शैली के अभ्यास के पूरे जीवन के बारे में सच है, लेकिन यह यहाँ सम्पूर्ण रूप से सच है। पुराने नियम की आज्ञा परमेश्वर और अपने पडोसी से प्रेम पहले से ही हमारी सामर्थ्य से परे हैं। नई आज्ञा आगे बढती है, हमें एक दूसरे से वैसे ही प्रेम करने की ज़रूरत है, जैसे यीशु

हमसे प्रेम करता हैं। जिस दिन उसने यह आज्ञा दी, यीशु को उन चेलों में से एक ने धोखा दिया जिनके पैर उसने धोए थे। अगले दिन उसे सूली पर चढ़ा दिया गया, यह दर्शाता है कि किस हद तक वह प्रेम करने की आज्ञा दे रहा थे।

बाद में यीशु ने जब अपनी नई आज्ञा दी, तो उन्होंने अपनी महायाजकीय प्रार्थना में प्रेम और एकता के बारे में और अधिक समझाया, जो यूहन्ना 17:1-26 में दर्ज है। आयत 26 उसने बताया कि उसके चेलों के रूप में परमेश्वर का प्रेम हममें रहेगा। "मैं ने तेरा नाम उनको बताया और बताता रहूँगा कि जो प्रेम तुझ को मुझसे था वह उनमें रहे, और मैं उनमें रहूँ।" यीशु ने अपने चेलों के बीच एकता के लिए प्रार्थना करते हुए उस प्रेम के व्यवहारिक प्रदर्शन की बुलाहट दी।

> मैं केवल इन्हीं के लिए विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिए भी जो इनके वचन के द्वरा मुझ पर विश्वास करेंगे; कि सब एक हों, जैसा तू है पिता मुझमें है, और मैं तुझ में हूँ, वैसे ही वे भी हम में हो, जिससे संसार विश्वास करे कि तू ही ने मुझे भेजा है।
>
> वह महिमा जो तू ने मुझे दी है मैं ने उन्हें दी है, कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं, मैं उन में औरतू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएँ, और संसार जानें कि टू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा वैसा ही उनसे प्रेम रखा।
>
> - यूहन्ना 17:20-23

वह हम सभी जो यीशु के पीछे चलते हैं, उनमें त्रिएक सदस्यों के समान ही एकता होनी चाहिए! इस वाक्यांश में जोर देने के लिए यह तुलना दोहराई गई है। और एक दूसरे के लिए हमारा प्रेम अविश्वासी दुनिया के लिए एक गवाही के रूप में काम करेगा- इस मामले में, "और संसार जानें कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा वैसा ही उनसे प्रेम रख" (यूहन्ना 17:23)।

शायद हमारा हिंसा के बिना समाचार प्रचार का एक कारण यह भी है कि मसीह की देह के अन्दर हम प्रेम और एकता दर्शाने में हम असफल हुए हैं। आखिरकार, हमारे पास सबसे अच्छी खबर है, जिसकी शायद ही कल्पना की जा सकती है कि इस सृष्टि के तेजस्वी प्रभु को अनंत काल तक जानना, प्रेम करना और उसकी सेवा करना संभव है। दुर्भाग्यवश, एक दूसरे के प्रति अपने कार्यों में, हम अक्सर ऐसा व्यवहार नहीं करते जैसा कि सच में हो। पूरी तरह से धार्मिकता से भरी जीवनशैली के अभ्यास का जीवन जीने में हमारी असफलता दूसरों को मसीह के पीछे चलने से निराश करने में एक बाधा है।

यीशु ने उसी भोजन में नई आज्ञा और नई वाचा दी-अंतिम भोज, जहाँ उसने अपने विश्वासघात और पकड़वाए जाने से पहले फसह मनाया। भोज से पहले, यीशु ने उनके प्रति अपने प्रेम और सेवा की अभिव्यक्ति के रूप में चेलों के पैर धोए, और उन्होंने उन्हें उसी तरह एक दूसरे की सेवा करने का निर्देश दिया जैसे उसने उनकी सेवा की थी। उसी भोज में, उसी मेज के आसपास, चेले इस बात पर बहस करने लगे कि उनमें से सबसे बड़ा कौन है, जिससे यीशु ने उन्हें याद दिलाया कि उसके

राज्य में सबसे बड़ा वह होगा जो सभी की सेवा करेगा (लूका 22:24-27)।

गलातियों की अपनी टीका में, चौथी शताब्दी के कलीसियाई धर्माचार्य जेरोम ने प्रेरित यूहन्ना के बारे में एक कहानी बताई थी, जो मौखिक अगली पीढ़ी तक पहुँची। जब यूहन्ना बहुत वृद्ध और कमज़ोर हो गया था, तो उसे उपदेश देने के लिए एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जाता था। उन सन्देश हमेशा एक जैसा होता था: "बच्चों, एक दूसरे से प्रेम रखो।" जब उनसे यह पुछा गया कि उनका सन्देश कभी बदलता क्यूँ नहीं है, तो उन्होंने उत्तर दिया, "यह प्रभु की आज्ञा है, और यदि यह किया जाता है, तो यह काफी है।"

यूहन्ना के लेख हमें लगातार एक दूसरे से प्रेम करने की बात याद दिलाते हैं (यूहन्ना 13:34-35; 15:12, 17; 1 यूहन्ना 3:11, 23; 4:7, 11-12; 2 यूहन्ना 5)। पौलुस भी अक्सर इस आज्ञा का उल्लेख करता है (रोमियों 12:10; 13:8; गलातियों 5:13; इफ़िसियों 4:2; 1 थिस्सलुनीकियों 3:12; 4:9; 2 थिस्सलुनीकियों 1:3), जैसा कि पतरस करता है (1 पतरस 1:22; 4:8; 5:14)।

शायद हमारे आपसी प्रेम की सबसे अच्छा व्यवहारिक जाँच हमारा वित्त है। यह आशचर्यजनक है कि हम कितनी जल्दी हम अपने पैसों का त्याग करने की बजाय ईश्वरीय राज्य से परे की फिसल सकते हैं। यह न केवल लोगों के साथ, बल्कि कई सभाओं और उनकी बजट प्राथमिकताओं के लिए भी सच है। अमीर युवा शासक की तरह, कई लोग दुखी होकर चले जाते हैं, जब वो प्रभु को पैसे देने के बारे में उनसे बात करते हुए सुनते हैं (लूका 18:18-27)। फरीसियों की तरह, वे इस बात की हंसी उड़ाते हैं कि वास्तविक विश्वास से उदारता प्राप्त होनी चाहिए (लूका 16:10-15)।

इसके विपरीत, मैंने कुछ लोगों की अदभुत स्वार्थ रहित उदारता देखी है, जो स्पष्ट रुप से प्रमाणित करता है कि प्रभु के प्रति उनका वायदा केवल मानसिक रूप से उनकी सहमति नहीं है। वे अपने बटुए समेत पूर्ण रूप से पवित्र है।

इस उदारता की एक दिलचस्प अभिव्यक्ति एक ऐसे घटना है जो दुनिया भर के कुछ हिस्सों में सहज रूप से अधिक से अधिक बार प्रकट होती लगाती है। कुछ लोग इसे आधार शिविर भी कहते हैं। विभिन्न प्रकार की अभिव्यक्तियाँ हैं, लेकिन मुख्य विशेषताओं में आरम्भिक कलीसिया के साझा संसाधनों के सामान कुछ हद तक संयुक्त वित्त और आर्थिक गतिविधि शामिल है प्रेरितों के काम 2:44-45 और प्रेरितों के काम 4:32।

ये शिविर चेले बनाने और भौतिक आशीषों को उत्पन्न करने के लिए सेवकाई और उपकरण केन्द्रों के रूप में कार्य करते हैं। वे उन समुदायों या क्षेत्रों के लिए संयुक्त सेवा का आदर्श तैयार करते हैं जहाँ वे स्थित हैं। ऐसा करके, वह एक दूसरे और अपने आस पास के समुदायों के लिए नि: स्वार्थ बलिदान और प्रेम के सामुहिक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। अपनी पुस्तक *राइजिंग टाइड्स*, में नील कोल ने इन

आधार शिविरों का अधिक विस्तार से वर्णन किया है, जिन्हें वह "राज्य की चौकियों" के रूप में संदर्भित करता है। मैं इस बात के लिए सचेत हूँ कि शुरूआती उदाहरणों में से कई अगले अध्याय में चर्चा किये गए "श्रवण समूह" से आएयें हैं। नील और मैं उस समूह के बारह सहभागियों में से दो थे।

प्रेम मसीह में हमारे जीवन का केन्द्रीय विषय है। यह वह स्वाद या सुगंध है जो हमें परिभाषित करती है। प्रेम के बारे में बात करना आसान है लेकिन उसे व्यवहार में लाना उतना ही कठिन है। दयालु सामरी का दृष्टांत शिक्षाप्रद है। और देखो, एक व्यवस्थापक उठा और यीशु से पूछा है, "हे गुरू, अनंत जीवन का वारिस होने के लिए मैं क्या करूँ?" (लूका 10:25)।

यीशु ने एक प्रश्न के साथ प्रतिक्रिया दी: "व्यवस्था में क्या लिखा है? तू क्या पढता है?" (10:26)।

व्यवस्थापक ने पुराने नियम की आज्ञा को बताते हुए परमेश्वर से प्रेम करने और अपने पडोसी से प्रेम करने का उत्तर दिया (10:27)। यीशु ने कहा, "तूने ठीक उत्तर दिया, यही कर तो तू जीवित रहेगा"(10:28)।

लेकिन व्यवस्थापक यीशु की पुष्टि से संतुष्ट नहीं हुआ। इसके बजाय, "उसने अपने आपको धर्मी ठहराने की इच्छा से यीशु से पूछा, तो मेरा पडोसी कौन है?" (10:29)। वह धार्मिक व्यवस्थापक व्यवस्था की परिभाषा चाहता था। दुसरें शब्दों में, वह पूछ रहा है कि, "मुझे किससे प्रेम करना चाहिए और किससे प्रेम न करने के लिए स्वतंत्र हूँ?"

यीशु उस दयालु सामरी की परिचित कहानी द्वारा जवाब देता हैं जो नफरत, जाति, और धर्म की सीमाओं को पार करके लूटे गए और पीटे गए यहूदी व्यक्ति की मदद करता है (10:30-37)।

दृष्टान्त में, जो याजक लूट के शिकार व्यक्ति के पास गुजर रहा था वह काम में व्यस्त था। किसी घायल व्यक्ति की देखभाल के लिए रुकने से उनके लिए कई असुविधाएँ उत्पन्न हो सकती थी। लेकिन यह विवरण उल्लेखनीय रूप से मत्ती 25:31-46 में भेड़ और बकरियों की यीशु की कहानी के सामान लगता है। वहाँ यीशु ने घोषणा कि, न्याय के दिन, वह कुछ लोगों का अपने राज्य में स्वागत करते हुए, कहेगा, "आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिए तैयार किया गया है। क्योंकि मैं भूखा था, और और तुमने मुझे *खाने को दिया; मैं प्यासा था, और तुमनें मुझे पानी पिलाया, मैं परदेशी था, और तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया;* मैं नंगा था, और तुमनें मुझे कपड़े पहिनाए; मैं बीमार था, और तुमनें मेरी सुधि ली मैं बंदीगृह में था, और तुम मुझसे मिलाने आए" (25:34-36)।

लोगों ने आश्चर्य में उत्तर दिया, "हे प्रभु, हमने आपको कब देखा" और उनमें से कोई भी काम करेंगे (25:37-39)? यीशु उत्तर देंगे, "तुमने जो मेरे इन छोटे से छोटे

भाइयों में से किसी एक के साथ किया, *वहमेरे* ही साथ किया" (25:40)।

इसके विपरीत, यीशु दूसरों से कहेंगे, "तब वह बाईं और वालों से कहेगा, हे शापित लोगों, मेरी सामने चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है; क्योंकि मैं भूखा था, और तुमनें मुझे खाने को *नहीं दिया; मैं प्यासा था और तुमनें मुझे पानी नहीं पिलाया;* मैं परदेशी था, और तुमनें मुझे अपने घर में नहीं ठहराया; मैं नंगा था, और तुमने मुझे कपडे नहीं पहिनाए; मैं बीमार और बंदीगृह में था, और तुमने मेरी सुधि न ली" (मत्ती 25:41-43)।

दोबारा, वे आश्चर्य में पूछेंगे, "हम कब आपको देखेंगे... ?" (25:44)। और यीशु उत्तर देगा कि, "तुमने जो इन छोटे में से छोटों में से भाइयों में से किसी के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया।" (25:45)।

इस अंश से, दो बातें बिना किसिस कारण रूप से स्पष्ट हो जाती हैं। सबसे पहले, जब हम "अपने इन भाइयों में से किसी एक पर" दया दिखाते हैं (या दिखाने में असफल होते हैं) तो यीशु इसे बहुत व्यक्तिगत रूप से लेता है (25:40)। वह इसे ऐसे देखता है कि मानो जैसे हमने स्वयं यीशु के साथ वैसा ही व्यवहार किया हो। दूसरा, जिस तरह से हम दूसरों के साथ व्यवहार करते हैं वह इस बात से जुड़ा है कि परमेश्वर हमारे साथ कैसा व्यवहार करेगा। यीशु में मत्ती 6:14-15 में इसी तरह की टिप्पणी की: " इसलिए यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारा अपराध क्षमा न करेगा।"

जो लोग भूखे, प्यासे, और ज़रूरतमंदों या जेल में बंद लोगों के प्रति व्यवहारिक तरीके से प्रेम प्रदर्शित करते हैं, वही परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं। कई लोगों ने दयालु सामरी की तरह जीवन जीया है; कई अन्य लोग बहाने बनाने में लग गए हैं, जैसे कि व्यवस्थापक जिसने यीशु के दृष्टान्त का हवाला देकर खुद को सही ठहराने की कोशिश की।

जैसे यूहन्ना, प्रिय चेला, इसे व्यक्त करता है: "हे प्रियों, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि प्रेम परमेश्वर है। जो कोई प्रेम करता है वह परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर को जानता है। जो प्रेम नहीं रखता वह परमेश्वर को नहीं जानता। क्योंकि परमेश्वर प्रेम है" (1 यूहन्ना 4:7-8)।

बेशक, हम दूसरों के प्रति दयालु होकर उद्धार अर्जित नहीं करते हैं। लकिन दूसरों के प्रति हमारी दयालुता – विशेषकर हमारे मसीही भाई बहनों के प्रति- इस बात का प्रमाण है कि हम बचाए गए हैं। दूसरों के प्रति हमारा प्रेम यह साबित करता है कि हम यीशु के चेले हैं (यूहन्ना 13:35)। हमारी एकता साबित करती है कि पिता ने यीशु को भेजा (यूहन्ना 17:21, 23) और वह हमसे प्रेम करता है (यूहन्ना 17:23)।

कुरिन्थियों के समान, हम मजबूत आत्मिक वरदान पाए हुए लोगों से प्रभावित हो

सकता हैं। हम वाक्पटु वक्ताओं, बड़े विश्वास या अद्भुत गूढ़ ज्ञान पाए लोगों की प्रशंसा करते हैं, जिन्होनें बड़े कार्य किए हैं या अपनी सेवकाई में अद्भुत फल लाए हैं। हमारे यहाँ प्रसिद्ध व्यक्ति की संस्कृति है। ये उपलब्धियाँ अच्छी बातें हैं, लेकिन प्रेम एक बड़ी बात है (1 कुरिन्थियों 12:31)। वास्तव में, प्रेम के बिना, वे पूरी बातें पूरी तरह से निरर्थक है (1 कुरिन्थियों 13:1-3, 8-10)। मदर टेरेसा ने क्या खूब कहा था: "हम सभी महान कार्य नहीं कर सकते हैं। लेकिन हम छोटे छोटे कार्य बड़े प्रेम के साथ कर सकते हैं।"

परमेश्वर को हमारे कार्यों की तुलना में उस प्रेम की अधिक परवाह है जिसके साथ हम उन्हें करते हैं। मैं अक्सर उन लोगों से कहता हूँ जिनका मैं मार्गदर्शन कर रहा हूँ "आप अपनी सेवकाई की गहराई के बारें में चिंतित रहे और परमेश्वर आपकी सेवकाई की व्यापकता का ख्याल रखेगा।" यह मैंने अपने मार्गदर्शकों से से एक, बिल स्मिथ से सीखा। यह मत्ती 10:8 (सेतमेंत में तुमने पाया है; सेतमेंत में दो) और लूका 16:10 की आतमिक अर्थव्यवस्था की अवधारणा को व्यक्त करता है (यदि तुम थोड़े में विश्वासयोग्य हो, तो बहुत में भी विश्वासयोग्य रहोगे)।

यह सत्य सुकून देने वाला है, क्योंकि हमारे पास जो कुछ है उसका उपयोग करने में हमारी निष्ठा से हमारा, मूल्यांकन किया जाएगा, न कि हमारें वरदानों के आकार से। परमेश्वर हमारे ह्रदय के आधार पर हमारा मूल्यांकन करता है, न कि हमारी उपलब्धियों पर। धनी लोगों को आराधनालय में बड़े बड़े दान करते हुए, और एक गरीब विधवा को दो छोटे तांबे के सिक्के डालते हुए देखने के बाद, यीशु ने कहा, "मैं तुम से सच कहता हूं कि इस कंगाल विधवा ने तो *उन सभीसे* बढ़कर डाला है; सब ने ओपनी बढती में से दान में कुछ डाला है, परन्तु इसने अपनी घटी में से अपनी सारी जीविका डाल दी है।" (लूका 21:3-4)। परमेश्वर की दृष्टि में, उसका उपहार उनसे बड़ा था, उसका छोटा उपहार, उसके लिए, एक बड़ा बलिदान था- जो विश्वास और प्रेम के ह्रदय को प्रदर्शित करता था।

यही सिद्धांत जीवन के अनेकों क्षेत्रों में लागू होता है। मैं स्वाभाव से अति-अंतर्मुखी के साथ पारस्परिक कौशल में अपेक्षाकृत कमजोर हूँ। जब मैं किसी उत्कृष्ट कौशल वाले व्यक्ति को देखता हूँ, तो मैं अक्सर सोचता हूँ कि, "लोगों के पास इस तारा का कौशल होना अच्छा होगा।" मेरा अपना व्यक्तित्व मुझे किसी भी प्रकार की सार्वजानिक सेवकाई की भूमिका के लिए उपयुक्त नहीं बनाता है। लेकिन मैं इस बात से तसल्ली कर सकता हूँ कि मेरी सेवकाई के प्रयास – हालाँकि मेरे लिए आरामदायी नहीं हैं और शायद दूसरों द्वारा तुच्छ या यहाँ तक कि दयनीय मानी जाती हैं- पर इस पर परमेश्वर द्वारा ध्यान दिया जाता है और यहाँ तक कि इसे सम्मानित भी किया जाता है। वह उन्हें सेवा और प्रेम के बलिदान के रूप में पहचानता है।

हमारी अपर्याप्तता से हमारे प्रेम को दिखाने के इस तरीके के परिणामस्वरूप परमेश्वर हमारी कमजोरियों के बावजूद हमारे माध्यम से काम करके अपनी सामर्थ्य का प्रदर्शन करता है (1 कुरिन्थियों 1:27; 2 कुरिन्थियों 12:10)। इसका

एक अतिरिक्त लाभ यह भी है इससे हमें घमंड न करने या अपनी ताकत से काम करने में मदद मिलती है।

संक्षेप में, प्रेम धार्मिकता से भरी जीवनशैली के अभ्यास की प्राथमिक विशेषता है: परमेश्वर के प्रति प्रेम और लोगों के प्रति प्रेम। यीशु ने, अपनी नई आज्ञा में, विश्वास वाले परिवार के लोगों से प्रेम करने करने को विशेष प्राथमिकता दी। इस प्रेम की वास्तविकता जरुरतमंद लोगों की मदद करने के लिए व्यवहारिक कार्यवाई द्वारा प्रदर्शित (या अस्वीकृत) की जाती है। जैसे कि पौलुसगलातियों 6:10 में कहता है, "इसलिए जहाँ तक अवसर मिले हम लोगों के साथ भलाई करें, विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ।"

एक दूसरे के प्रति हमारा प्रेम दुनिया को बताता है कि हम यीशु के चेले हैं और यीशु वास्तव में पिता से है। बेशक, हम हर व्यक्ति की हर समस्या का समाधान नहीं कर सकते हैं। लेकिन हम किसी की कुछ मदद कर सकते हैं। परमेश्वर, जो हमें देखता है, हमारा मूल्यांकन हम जो करते हैं उसके आकार के आधार पर नहीं करता, बल्कि हमारे प्रेम और बलिदान वाले ह्रदय के आधार पर करता है।

प्रार्थना

परमेश्वर जो स्वर्ग में है, बाइबल कहती है की आप प्रेम हैं। और आप चाहते हैं कि आपके प्रति और और लोगों के प्रति (विशेषकर मेरे मसीही भाई बहनों के प्रति) समान व्यवहार रखें। इससे मुझे घबराहट होती है। दयालु सामरी की कहानी में व्यवस्थापक की तरह, मैं अपने कर्तव्य को प्रेम तक सीमित रखना चाहता हूँ। लेकिन आप उन सीमाओं को अस्वीकार को अस्वीकार करते हैं। मेरी सहायता करें कि मैं दूसरों के लिए अपना जीवन उंडेल दूँ जैसा आपने मेरे लिए किया। मैं इसे वहाँ कर सकता हूँ क्योंकि आप मेरे साथ हैं। मुझे स्वार्थी से प्रेमी में बदलिए- आपकी तरह। मेरे ह्रदय को बदलो, मेरे कार्यों को बदलो।
मैं यीशु के नाम से प्रार्थना करता हूँ।

प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें, फिर प्रार्थना करें और परमेश्वर से पूछें कि वह आपसे क्या सीखना और कराना चाहता है। शांत होकर सुनें।

अपनी डायरी की समीक्षा करें। क्या आपकी कोई पिछली प्रतिज्ञाएँ हैं जिन्हें आपने पूरा नहीं किया है? यदि आवश्यक हो, तो संशोधित समापन तिथियाँ निर्धारित करें।

1. मैं व्यवहारिक रूप से जरुरतमंदों को प्रेम करने में कितना समय, उर्जा, और पैसा खर्च करता हूँ?

2. क्या मैं अन्य विश्वासियों के साथ ऐसा व्यवहार करता हूँ जिससे लोग सोचे, "वाह यह वास्तव में यीशु का अनुयायी है!" यदि हाँ, तो कैसे? यदि नहीं, तो मैं कहा भूल कर रहा हूँ?

3. क्या अन्य लोग मेरे जीवन का वर्णन 1 कुरिन्थियों 13:4-7?
   में वर्णित विशेषताओं के रूप में करेंगे? क्यों या क्यों नहीं?

4. इस अध्याय के प्रत्युत्तर में परमेश्वर मुझसे कौन-सी विशिष्ट कार्य करवाना चाहता है?
   (उन्ह अपने डायरी में लिख ले और अपने कैलेंडर में नियत कर ले।)

5. परमेश्वर चाहता है कि जो मैंने
   सीखा है उसे किसके साथ (कम से कम एक नाम) साझा करूँ?

प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको इन प्रतिबद्धताओं का पालन करने में सक्षम बनाए और उन लोगों के दिलों को तैयार करे जिनके साथ आप ज्ञान साझा करना चाहते हैं।

9 परमेश्वर को एक साथ सुनना

परमेश्वर को सुनना न केवल व्यक्तिगत दृष्टिकोण से, बल्कि सामूहिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है।

> क्योंकि जैसे हमारी एक देह में बहुत से अंग है, और सब अंगों का एक ही सा काम नहीं, वैसा ही हम जो बहुत है, मसीह मीक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग है।
>
> - रोमियों 12:4-5

> परन्तु ये सब प्रभावशाली कार्य वाही एक आत्मा कराता है, और जिसे जो चाहता है वान बाँट देता है। क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह है, उसी प्रकार मसीह भी है।
>
> -1 कुरिन्थियों 12:11-12

परमेश्वर को सुनना न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि सामूहिक स्तर पर भी महत्वपूर्ण है। क्योंकि प्रभु हममें से प्रत्येक से अलग अलग तरीके से बात करते हैं और उन्होंने हममें से हर एक को अनोखा बनाया है, परिणाम समानता नहीं बल्कि एकता है।

पहला कुरिन्थियों में 2 एकता प्राप्त करने के मामले में काफी प्रासंगिक है। यह उस समस्या का समाधान करता है जो तब उत्पन्न हुई जब विश्वासी परमेश्वर के बजाय अपने पसंदीदा मानव शिक्षक (पौलुस या अपुल्लौस या कैफा) का अनुसारण करना चाहते थे।

1 कुरिन्थियों 2:6 से लेकर अध्याय 2 के अंत तक, पौलुस प्रथम पुरुष बहुवचन में बोलता है। “हम” परमेश्वर से ज्ञान की बात करते हैं (2:6-9) पवित्र आत्मा

द्वारा(2:10-13)। जो लोग आत्मा में नहीं है वे इसे नहीं समझ सकते (2:8, 14-16)। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि "हमारे पास मसीह का मन है।" मेरा विश्वास है कि बहुवचन महत्वपूर्ण है। जिस प्रकार शारीर के अंग एक दूसरे पर निर्भर है, उसी प्रकार यह हमारे सिर, यीशु मसीह, और मसीह का मन होने के सम्बन्ध में भी है। परमेश्वर अपना पूर्ण उद्देश्य किसी एक व्यक्ति के सामने प्रकट नहीं करता है। हमें एक दूसरे की आवश्यकता है।

कम से कम, हमारे मार्गदर्शन का एक सामान्य स्रोत एकता या निरंतरता को दर्शाता है जो एक ही जैसी आवाज सुनने से आती है। इसका तात्पर्य एक स्तर के सामंजस्य या अनुकूलता से भी है। मैं सुझाव देना चाहूँगा कि व्यवहारिक तरीके से इसे पूरी तरह से प्राप्त करने का एक तरीका इसे इच्छा से सामूहिक रूप से सुनना है।

मेरी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और व्यक्तित्व के कारण, यह मेरे लिए सीखना एक कठिन सबक रहा है। मैं परमेश्वर की बात सुनने और स्वयं निर्णय लेने का आदी हूँ। यह मेरेलिए सबसे आरामदायक है। लेकिन जरूरी नहीं कि यह उत्तम हो। कभी कभी इस प्रक्रिया में अन्य भाई बहनों को शामिल करना बेहतर होता है।

एक व्यवहारिक तरीका जिसने मेरी मदद की है वह है "सुनने वाला समूह।" 2000 के दशक में, हममें से लगभग एक दर्जन लोग परमेश्वर से सुनने के उद्देश्य से हर छह महीने में कुछ दिनों के लिए मिलते थे। हम कुछ समय (आधे या एक घंटे) के लिए व्यक्तिगत रूप से सुनेंगें और फिर जो कुछ हमनें सुना था उसे साझा करने के लिए इकठ्ठा होंगें और ये निर्धारित करेंगे कि ये सन्देश कैसे आपस में संबंधित और जुड़े हुए हैं। हम साथ बिताए हुए कुछ दिनों के दौरान उस चक्र से बार-बार गुजरेंगे।

पहले तो हमारे प्रयास थोड़े अजीब थे, लेकिन समय के साथ हम एक दूसरे को बेहतर जानने लगे और एक दूसरे पर और अधिक भरोसा करने लगे। हमारे साथ में समय बिताने के परिणामस्वरुप हमें कुछ सेवकाईयाँ आरम्भ हुई। लेकिन मेरे लिए, बड़ा काम दूसरों के साथ मिलकर परमेश्वर को नियमित रूप से सुनना सिखाना था, फिर परमेश्वर के व्यक्तिगत संदेशों को एक सुसंगत सामूहिक सन्देश में इकठ्ठा करना था।

इस बुनियादी दृष्टिकोण कोण को विभिन्न संदर्भो में लागू किया जा सकता है। इसके लिए बहुदिवसीय आयोजनों का पूर्व नियोजित होना आवश्यक नहीं है। यह दो या दो से अधिक लोगों के साथ "क्षणिक प्रेरणा" वाली घटना हो सकती है। सभी प्रतिभागियों के लिए कुंजी यह है कि वे चेले बनें जो आत्मा में चल रहे हैं और जो ऐसी स्थिति में दिशा या कार्रवाही के सम्बन्ध में प्रभु की इच्छा जानना चाहते हैं जिनमें उनमें से हर एक शामिल है। यह औपचारिक या अनौपचारिक हो सकता है। इसमें संगठनों के लोग या मित्र या परिवार के लोग शामिल हो सकते हैं। हालाँकि, आपसी वायदों और दिशा का एक स्तर होना चाहिए।

यह प्रक्रिया मुझे उन अंधे लोगों की कहानी की याद दिलाती है जिन्होंने पहली बार एक हाथी का सामना किया था। हर एक को हाथी का एक हिस्सा ही महसूस हुआ-सूंड, पूंछ, एक बाजू, या एक पैर। एक ने कहा, "हाथी एक बड़े साँप की तरह होता है।" दुसर ने कहा, "हाथी एक रस्सी की तरह होता है।" किसी और ने कहा, "हाथी एक दीवार की तरह होता है।" और आखिरी वाले ने कहा, "हाथी एक पेड़ के तने की तरह होता है।" वे सभी सटीक रूप से वर्णन कर रहे थे कि उन्होंने क्या महसूस किया है। वे सभी सही थे। लेकिन हर एक का हाथी के स्वाभाव के बारे में अलग और एक अधूरा दृष्टिकोण था। यदि वे सब अपने अवलोकनों को एकत्रित करें, तो वे एक हाथी का अधिक सटीक वर्णन कर सकते हैं।

मैं विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर से सुनना सामान है। क्योंकि परमेश्वर अनंत है और हमारी उसके लिए समझ आंशिक है, और क्योंकि हममें से प्रत्येक के पास एक अनोखी बुलाहट, वरदान, और अनुभवों का समूह है, यदि हम एक दूसरे के साथ वह साझा करते हैं जो हममें से हर एक व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से सुन रहा है तो हमें शरीर के लिए उनके सामूहिक संदेशों की पूरी समझ प्राप्त होती है। ऐसा करने से, हम एक दूसरे के बड़े कार्यों के हिस्सों के लिए अधिक सराहना प्राप्त करते है और यह कि हम कैसे अधिक प्रभावी ढंग से मिलकर काम करने और सहयोग कर सकते हैं।

हर किसी की अनुसूची या स्थिति सुनने वाले समूह के इस विशेष अभ्यास के लिए उपयुक्त नहीं है, लेकिन कोई भी इस तरीके को लागू कर सकता है। विश्वासियों का कोई भी समूह सामूहिक आज्ञाकारिता और उनके द्वारा दिए गए प्रबंधन की खोज में एक साथ प्रभु को सुन सकता है। कोई भी समूह जिसे सामूहिक निर्णय लेने की आवश्यकता है, वह सुनने के लिए समय निकाल सकता है और फिर जो कुछ वे सुन रहें हैं उसे आगे बढ़ने के आधार के रूप में साझा कर सकते हैं, भले ही वे बार बार या नियमित रूप से एक साथं न मिलें।

इस तरह के तरीके का अभ्यास करना कठिन साबित हो सकता है यदि समूह मिश्रित है – यानी, अगर इसमें कुछ समूह शामिल है जो मसीह में बने हुए हैं या कुछ जो या तो विश्वास नहीं करते या सक्रीय रूप से आत्मा में नहीं चल रहे हैं। हमें मसीह की देह के रूप में प्रभावी रूप से कार्य करने हेतु, हर किसी को प्रभु को सुनने के लिए प्रशिक्षित होने और उसकी आज्ञा माननें के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध होने की आवश्यकता है, चाहे इसमें जोखिम या बलिदान कुछ भी क्यों न हो। हमें एक दूसरे पर भरोसा करने की ज़रूरत है।

यही कारण जो लोग मसीह के नहीं हैं, उनके साथ सहयोग करने के विरुद्ध निषेधाज्ञा दी गई है (उदहारण के लिए, 2 कुरिन्थियों 6:14-18) जो बहुत गंभीर है। हम एक विभाजित समूह के रूप में प्रभावी रूप से कार्य नहीं कर सकते हैं। यही कारण है कि मत्ती 18:15-20 में कलीसिया अनुशासन पर यीशु के निर्देश आवश्यक है, चाहे उन्हें अभ्यास में लाना कितना भी असुविधाजनक क्यों न हों।

हमें उन लोगों का न्याय करने की आवश्यकता है जो कलीसिया के अन्दर हैं (1 कुरिन्थियों 5:9-6:11)।

जब मसीह की पूरी देह आत्मा और एकता में चल रही है, तब हम प्रभु को सामूहिक रूप से ऐसे तरीकों से सुन सकते हैं, जो एकांत में कभी नहीं होगा। हम कलीसिया के लिए उनके सन्देश के पहलुओं को सुन सकतें हैं जो तभी स्पष्ट होते हैं जब हम हममें से हर एक को दिए संदेशों को एक साथ जोड़ते हैं। यह वह प्रक्रिया है, जिसका वर्णन मैंने सुननें वाले समूह के साथ किया। एक साथ, मसीह की देह के रूप में, हम दुनिया की तुलना के रूप में टेबल बजाने वाले एक व्यक्ति की धुन पर आगे बढ़ते हैं। हममें से हर एक व्यक्ति ऑर्केस्ट्रा में वाद्ययंत्र बजा रहा है, भले ही हम एक ही ड्रमर की सुनते हैं। यह परमेश्वर को सुनने का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

यीशु ने स्वयं को, और यूहन्ना बप्तिस्मा देने वाले कको एक उदाहारह के रूप में इस्तेमाल करते हुए इसे चित्रित किया:

> मैं इस समय के लोगों की उपमा किससे दूँ? वे उन बालकों के सामान है, जो बाजारों में बैठे हुए *एक दुसरें* से पुकार कर कहते हैं, "हम ने तेरे लिए बांसली बजाई, और तुम न नाचें हम ने विलाप किया, और तुम ने छाती नहीं पीटी" क्योंकि यूहन्ना ना खता आया न पीता, और वे कहते है, "उसमें दुष्टात्मा हैं!" मनुष्य का पुत्र खता-पीता आया, और वे कहते हैं "देखो, पेटू और पियक्कड़ मनुष्य, महसूल लेनेवाले और पापियों का मित्र!" पर ज्ञान अपने कामों से सच्चा ठहराया गया है।
>
> - मत्ती 11:16-19

दोनों यीशु और यूहन्ना प्रभु की आवाज़ को सुन रहे थे और उनके लिए परमेश्वर की योजना को पूरा कर रहे थे। हालाँकि, सेवकाई के प्रति उनका दृष्टिकोण और व्यवहार बिल्कुल अलग थे, यीशु और स्वर्ग राज्य पर ध्यान केन्द्रित करने में दोनों "एक ही स्तर पर" थे। उनका काम पूरक था, और वे दोनों एक दूसरे के योगदान को समझाते थे और उसकी सराहना करते थे।

हमें संवेदनशील लेकिन स्पष्ट रूप से यह भी समझने की ज़रूरत है कि वास्तव में राज्य में कौन नहीं है। हम उन लोगों के साथ एकता में रहकर प्रभु की बात नहीं सुन सकते जो उन्हें नहीं जानते और नहीं सुनते। यह "अविश्वासियों के साथ असमान जुए में न जुतने" की आज्ञा का व्यवहारिक अनुप्रयोग है (2 कुरिन्थियों 6:14-18)। यीशु ने अपने सबसे कठोर शब्द और सबसे तीव्र आलोचना उन लोगों के लिए सुरक्षित रखी जो सोचते थे कि वे परमेश्वर के अनुयायी थे, लेकिन वे नहीं थे (मत्ती 23:1-39)। उसने उनके मुँह पर कहा कि वे परमेश्वर की आज्ञा नहीं मान रहे हैं, और साबुत के तौर पर उसने परमेश्वर को सुनने में उनकी असमर्थता का हवाला दिया (यूहन्ना 8:47)।

यह हमारे लिए असहजनीय है, या कम से कम मुझे पता थे कि यह मेरे लिए है। मुझे स्वयं को याद दिलाने की जरूरत है कि मैं किसी को झूठी सुरक्षा की स्थिति में बने रहने की अनुमति देकर कोई एहसान नहीं कर रहा हूँ। इसके लिए प्रभु की ओर

स्पष्टता और विवेक की आवश्यकता होती है, विशेषकर उन लोगों के साथ व्यवहार करते समय जो कलिसिया का हिस्सा है लेकिन वास्तव में राज्य में नहीं है।

आज हमारी सभाओं में कलीसिया अनुशासन का पालन शायद ही कभी किया जाता है। जब इसका अभ्यास किया जाता है तो ऐसा लगता है कि इसका अभ्यास केवल कलीसिया के कर्मचारियों और यौन पाप के क्षेत्र में किया जाता है। ऐसा आंशिक रूप से इसलिए है, क्योंकि कलीसिया के सदस्यों के साथ वास्तव में कोई जवाबदेही नहीं है, इसलिए हमारे पास प्रभु जो हमसे बात कर रहे हैं उसका पालन करने और दूसरों को बताने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने का कोई विश्वसनीय तरीका नहीं है। लोग प्रचार सुनते हैं और फिर जो कुछ उन्होंने सुना होता है उसे तुरंत भूल जाते हैं। किसी ने भी प्रभु से उनके द्वारा सुने गए सिद्धांतों को अपना बनाने के लिए नहीं कहा है। कोई भी उनसे दोबारा नहीं पूछता कि उन्होंने कैसा काम किया है। संचार दो-तरफ़ा बातचीत के बजाय एक-से-अनेक होता है। परिणामस्वरूप हमारे पास यह जानने का कोई तरीका नहीं है कि कलीसिया के साथी सदस्य कोई पाप कर रहे हैं या नहीं।

इसके अलावा, कुछ मामलों में कलीसिया में अनुशासन का अभ्यास किया जाता है, यीशु द्वारा वर्णित तरीके, यदि आवश्यक हो तो अपमानजनक सदस्य के बहिष्कार में जाकर समाप्त होता है (मत्ती 18:15-17), पालन नहीं किया गया, न ही गलातियों 6:1 में पौलुस के उपदेश के साथ कार्य करने के बारे में बताया गया है कि बहाली का अंतिम लक्ष्य मन में रखते हुए होता है। हमें हर एक विश्वासी को पूरी तरह से जीवन जीने में मदद करने के बारें में चिंतित होना चाहिए और उस पर काम करना चाहिए। यह सबसे प्रेमपूर्ण बात है, जो हमें एक दूसरे के लिए कर सकते हैं। इसलिए हमें एक दूसरे को जवाबदेह ठहराने की ज़रूरत है।

जहाँ तक उन लोगों की बात है, जो राज्य में हैं, हमें एक दूसरे पर अधिक अनुग्रह दिखने की आवश्यकता है। परमेश्वर एकता की मांग करता है, एकरूपता की नहीं। उन्होंने अपनी स्वयं की योजना और इच्छा से, हमें अलग-अलग भूमिकाएँ, अलग अलग कार्य, अलग अलग संचालन वातावरण, अलग अलग संस्कृतियाँ, और अलग-अलग बुलाहट दी है। वह हममें से हर एक से अलग-अलग तरीके से बात करता है और हमें अपनी सच्चाई और इच्छा के अलग अलग हिस्से देता है। यह आवश्यक है ताकि हम सभी प्रकार के लोगों तक पहुँच सकें। हमें किसी दूसरे के सेवक का न्याय नहीं करना चाहिए, विशेष रूप से परमेश्वर के दासों का तो बिल्कुल तो नहीं (देखें रोमियों 14:1-23, विशेष रूप से आयत 4)।

बेबीलोन की मीनार पर (उत्पत्ति 11:1-9), भाषाओं का भ्रम पृथ्वी को भरने के लिए अपने निर्देशों का पालन करने को मजबूर करने का परमेश्वर का एक तरीका था (उत्पत्ति 1:28; 9:1)। हमेशा की तरह, मनुष्य ने जो बुराई के लिए चाहा, परमेश्वर ने उसे भलाई के लिए उपयोग किया। अंत में परिणाम विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों का निर्माण था, जिनमे से प्रत्येक परमेश्वर की महिमा की विविध बारीकियों को प्रकट करता है।

यही सिद्धांत परमेश्वर द्वारा देह को दिये गए आत्मिक वरदानों में भी प्रतिबिंबित होते हैं। यही तरीका सुनाने वाले समूह में भी प्रतिबिंबित होता है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी अनोखी बुलाहट के द्वारा उस बड़े उद्देश्य में अपना योगदान देता है। हममें से हर एक को उस बड़ी तस्वीर को समझने की जरूरत है, ताकि हम परमेश्वर को और अधिक अच्छी तरह से जान सकें।

लोग अक्सर यह सोचते हैं कि सुनाने वाले समूह का लक्ष्य सभी को एक ही बात सुनाना है, और यही सर्वसम्मति से सन्देश की पुष्टि करता है। कभी कभी ऐसा ही होता है, विशेष रूप से जब किसी विशिष्ट निर्णय की आवश्यकता होती है, जैसे कि यरूशलेम की धर्म परिषद् में (प्रेरितों के काम 15)। लेकिन यही वह एकमात्र समय नहीं होना चाहिए जब हम एक साथ सुन रहे हैं।

जब हम लगातार परमेश्वर से दृढ विश्वास के रूप में उसके द्वारा लगाईं गई सामर्थ्य को देखते हैं, हम पहेली के टुकड़ों को एक साथ रखना सीखते हैं, क्योंकि वह हर व्यक्ति को उसके सन्देश का एक भाग देता है। हम यह नहीं चाह रहे हैं कि हर व्यक्ति एक ही बात को सुने; बल्कि हम इस बात की तलाश कर रहे हैं कि प्रभु अपने सन्देश को सुनने और उसका जवाब देने में हर एक व्यक्ति को कैसे शामिल करेगा। वह चाहता है कि हम मिलकर उसको खोजें और उसकी सेवा करें। वह चाहता है कि हमें एक दूसरे की जरूरत हो क्योंकि हम उस पर निर्भर होकर उसकी और ताकते हैं।

मूल वायदा और नैतिकता के कुछ मुद्दे सभी विश्वासियों के बीच स्थिरता की मांग करते हैं, लेकिन कई मुद्दों के लिए बहुसँख्यक, पूरक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। इससे परमश्वर के सत्य को उसकी बहुमुखी परिपूर्णता से अवगत कराने में मदद मिलती है। यह हमें परमेश्वर की इच्छा को अधिक प्रभावी ढंग से और अधिक समन्वय के साथ पूरा करने में अपनी व्यक्तिगत भूमिका निभाने में सक्षम बनाता है। यह हमें एक दूसरे के योगदान की सराहना करने में मदद करता है।

मसीह के मन को सामूहिक रूप से खोजने के सम्बन्ध में निचली पंक्ति यरीहो की लड़ाई से पहले यहोशु के अनुभव से चित्रित होती है, जैसा कि यहोशू 5:13-14 मे दर्ज है:

> जब यहोशू यरीहो के पास था तब उसने अपनी आँखे उठाई, और क्या देखा, कि हाथ में नंगी तलवार लिये हुए एक पुरुष सामने खड़ा है; और यहोशू ने उसके पास जाकर पूछा, "क्या तू हमारी और का है, या हमारे बैरियों की ओर का?" तब उसने उत्तर दिया, "नहीं; वरन मैं यहोवा की सेना का प्रधान होकर अभी आया हूँ।" तब यहोशू ने पृथ्वी पर मुँह के बल गिरकर दण्डवत् किया, और उससे कहा, "अपने दास के लिए मेरे प्रभु की क्या आज्ञा है?"

यही सही उद्देश्य है। प्रश्न यह नहीं है कि क्या अन्य लोग "हमारे पक्ष" में हैं, बल्कि प्रश्न यह है कि क्या वे परमेश्वर के पक्ष में हैं। यदि हम सभी सच में परमेश्वर की और हैं, तो हम सभी गहरे स्तर पर पूर्ण एकता में होंगे। हम सभी आत्मा के फल

दिखाएँगे। हम परमेश्वर की प्राथमिकताओं को जानेंगे और विनम्रता सेवकपन के साथ उसके चरित्र को प्रदर्शित करेंगे। हम सच्चे पारस्परिक समर्पण का अनुभव करेंगे। हम सभी परमेश्वर को सुनेंगे और जो कुछ भी सुनेंगे उसे उसकी इच्छा की सुसंगत, व्यापक समझ में बदल देंगे। इस तरह, हम यूहन्ना 17 में यीशु की प्रार्थना के उत्तर का अनुभव करेंगे, उस ज्ञान को प्राप्त करेंगे जो केवल परमेश्वर के दृष्टिकोण से आता है (यशायाह 55:9)।

प्रार्थना

प्रभु, मुझे आपके साथ और मसीह में मेरे भाइयों और बहनों के साथ एक सही तालमेल बैठाने में सक्षम करें कि हम आपको अकेले की तुलना में एक साथ बेहतर ढंग से सुन सकें। आइये फिर हम आपकी इच्छा को एक साथ मिलकर इस हद तक पूरा करने में सक्षम हो कि हम अलग अलग ऐसा न कर सकें। आइये ऐसा करके हम आपके हृदय में ख़ुशी लायें और दुनिया के लिए गवाही दें।

प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें, फिर प्रार्थना करें और परमेश्वर से पूछें कि वह आपसे क्या सीखना और कराना चाहता है। शांत होकर सुनें।

अपनी डायरी की समीक्षा करें। क्या आपकी कोई पिछली प्रतिज्ञाएँ हैं जिन्हें आपने पूरा नहीं किया है? यदि आवश्यक हो, तो संशोधित समापन तिथियाँ निर्धारित करें।

1. क्या मैंने कभी सामूहिक सुनने का अनुभव किया है, न केवल यह देखने के लिए कि क्या समूह के सदस्य एक ही बात सुन रहे हैं, बल्कि व्यक्तियों के लिए परमेश्वर के संदेशों को एक सुसंगत सम्पूर्णता में एकत्रित करने के लिए भी?
   मैं ऐसे प्रयोग में शामिल होने के लिए किसे कह सकता हूँ?

2. इस अध्याय के प्रत्युत्तर में परमेश्वर मुझसे कौन-सी विशिष्ट कार्य करवाना चाहता है? (उन्ह अपने डायरी में लिख ले और अपने कैलेंडर में नियत कर ले।)

3. मैंने जो सीखा है, उसके अनुसार परमेश्वर किसके साथ चाहता है कि उसे (कम से कम एक नाम) साझा करूँ?

प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको इन प्रतिबद्धताओं का पालन करने में सक्षम बनाए और उन लोगों के दिलों को तैयार करे जिनके साथ आप ज्ञान साझा करना चाहते हैं।

10 एकता के लिए त्रिएक हमारा आदर्श है

जैसे त्रिएकता एक है, वैसे ही हमें भी एक होना है (यदि हम धार्मिकता से भरी जीवनशैली के जीवन को जीते हैं)।

> मैं केवल इन्हीं के लिए विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिए भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हो; जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूँ, वैसे ही वे भी हम में हो, जिससे विश्वास करे कि तू ही ने मुझे भेजा है।
>
> वह महिमा जो तू ने मुझे दी है मैं ने उन्हें दी है, कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं, मैं उन में औरतू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएँ, और संसार जानें कि टू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा वैसा ही उनसे प्रेम रखा।
>
> - यूहन्ना 17:20-23

त्रिएकता एक रहस्य है। यह सशब्द अपने आप में ही विरोधाभासी जैसा लगता है: त्रि-एकता। बाइबल की कहानी की शुरुआत में, जब परमेश्वर स्वयं को बहुवचन में संदर्भित करता है (उत्पत्ति 1:26 " हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ"), हमें संदेह होने लगता है कि कुछ अजीब हो रहा है। हमें पुराने नियम में बिखरे हुए और भी संकेत मिलते हैं - "प्रभु के दूत" की विभिन्न प्रगटीकरण के साथ साथ "प्रभु के आत्मा" का सन्दर्भ भी।

नए नियम में, यीशु का बपतिस्मा (मत्ती 3:16-17) और महान आदेश (मत्ती 28:19-20) जैसे वर्णनात्मक वर्णनों से त्रिएकता और अधिक स्पष्ट हो जाती है- जहाँ पिता, पुत्र और आत्मा और पत्रियों की प्रार्थना में सभी का उल्लेख किया गया है (उदहारण के लिए, 2 कुरिन्थियों 13:14)। लेकिन त्रिएकता के अन्दर रिश्तों की सबसे दिलचस्प झलक यूहन्ना 17:20-26 से देखने को मिलती है:

मैं केवल इन्ही के लिए विनती नही करता, परन्तु उनके लिए भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हो; जैसा तू हे पिता *मुझ में है और मैं तुझ में हूँ, वैसे ही वे भी हम में हो, जिससे संसार विश्वास करें कि तू ही ने मुझे भेजा है।*

व महिमा जो तू ने मुझे दी है, कि वे वैसे ही एक हो जैसे कि हम एक है; मैं उनमें और तू मुझ में कि सिद्ध होकर एक हो जाएँ; और संसार जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, जैसा तू ने मुझसे प्रेम रखा वैसा ही उनसे प्रेम रखा। **हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है, जहाँ मैं हूँ वहाँ वे भी मेरे साथ हो, कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तू ने मुझे दी है, क्योंकि तू ने जगत की उत्पत्ति से पहले मुझ से प्रेम रखा।**

हे धार्मिक पिता, संसार ने मुझे नहीं जाना, परन्तु मैं ने तुझे जाना; और इन्होनें भी जाना कि तू ही ने मुझे भेजा है। मैं ने तेरा नाम उनको बताया और बताता रहूँगा कि जो प्रेम तुझ को मुझ से था वह उनमें रहे, और मैं उनमें रहूँ।

वर्णित पारस्परिकता और एकता पारंपरिक तर्क को झुठलाती है। पिता पुत्र में है और पुत्र पिता में है (यूहन्ना 17:21)। पिता और पुत्र एक ही है यूहन्ना (17:22)। पिता पुत्र को महिमा देता है (17:22, 24)। पिता पुत्र को जगत की उत्पत्ति से पहले से ही प्रेम करता है (17:24)। पुत्र पिता का नाम ज्ञात कराता है (17:26)। पिता पुत्र एक है, फिर भी अलग है। वे एकता, आपसी प्रेम, और आपसी सम्मान की अनंत संगति में अस्तित्व में हैं। अद्‌भुत!

इससे भी अधिक, पिता और पुत्र और आत्मा हमें इस रहस्य में शामिल हों के लिए आमंत्रित का हाँ। हमें एक होना हैं, क्योंकि वे एक है (यूहन्ना 17:21)। हमें उनमें वैसे ही रहना है जैसे वे एक दूसरे में है (17:21)। पुत्र ने हमें वह महिमा दी है, जो पिता ने उसे दी थी, ताकि हम एक हो सकें जैसे वे एक है (17:22)। पुत्र हम में है जैसे पिता उनमें है, ताकि हम "एकता में परिपूर्ण" हो सकें (17:23)। कोमलता से, पुत्र चाहता है कि हम उसके साथ रहे, जहाँ वह है, ताकि हम उस महिमा को देख सकें जो पिता ने उसे दी है (17:24)। चौंका देने वाला!

परमेश्वर के व्यक्तियों के बीच उस प्रकार की एकता के बारें में सोचना मेरी कल्पना पर दबाव डालता है। यह कल्पना करना और भी कठिन है कि हम त्रिएकता और एक दूसरे के साथ समान एकता साझा कर रहे हैं। एक एकता आत्मा के कारण ही संभव है। यीशु यूहन्ना 16:13-14, में समझाता है:

> परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी और से न कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।

त्रिएकता के साथ निरंतर बातचीत के लिए आत्मा हमारा अन्तर्निहित अनुवादक और संचार अधिकारी है। यह धार्मिकता से भरी जीवनशैली के अभ्यास का ह्रदय

है। पवित्र आत्मा के माध्यम से परमेश्वर के विचारों और कार्यों और इच्छाओं पर लगातार ध्यान दी बिना हम परमेश्वर और एक दूसरे के साथ तालमेल नहीं रख सकते हैं।

इफ़िसियों 4 हमें इसकी इक झलक देता है कि यह कैसे चलता है। पौलुस अपने पाठकों को यह सलाह देता है "जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो" (इफ़िसियों 4:1)। योग्य रूप से चलने का यह उपदेश "आत्मा में चलना" "मसीह में बने रहना," या "आत्मा से परिपूर्ण रहना" कहने का एक और तरीका है। (ध्यान दें कि आयत 2 में योग्य चाल को आत्मा के फल – नम्रता, दीता, धैर्य, और प्रेम द्वारा दर्शाया गया है)।

फिर पौलुस अपने मुख्य बिंदु पर आता है: एकता। हमें "मेल के बंधन में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो" (4:3)। यह एकता हमारी पहचान से उत्पन्न होती है: "एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाये गए थे अपने बुलाये जाने से एक ही आशा है; एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा, और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर और सब के मध्य में और सब म हैं "(4:4-6)। हमारी साझी विरासत को देखते हुए, हम में फूट पड़ना यीशु मसीह में हमारी मूल पहचान के विपरीत है। यह केवल तभी हो सकता है जब हम आत्मा में चलने, मसीह में बने रहने, या आत्मा और उसके फल से भरे होने में असफल होते हैं – संक्षेप में, यदि हम धार्मिकता से भरी जीवनशैली का जीवन जीने में असमर्थ हो जाते हाँ।

पौलुस यह स्पष्ट करते हैं कि एकता एकरूपता के सामान नहीं है। इसके विपरीत, देह के विभिन्न सदस्यों को अलग अलग वरदान दिए जाते हैं (4:7-16), लेकिन सभी एक देह के निर्माण के लिए। जिस प्रकार, त्रिएकता के हर एक सदस्य की एक अनोखी भूमिका होती है, ठीक उसी प्रकार यह मसीह की देह में भी है। हमें एक दूसरे को तैयार करना है (4:12) ताकि हम सभी राज्य के कार्य को कर सकें, देह का निर्माण कर सकें, विश्वास की एकता और परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान को प्राप्त कर सकें, और परिपक्व बनें और उसके स्वरुप के अनुरूप ढलते चले जाएँ (4:13)। यह आपसी सेवकाई के माध्यम से होता है क्योंकि हम एक दूसरे के प्रेम से सच बोलते हैं (4:14-15)। ऐसा करने से, जब हम एक साथ काम करते हैं तो येशु हमें एक साथ रखते हैं और इस प्रकार प्रेम में निर्मित होते हैं (4:16)।

पौलुस अनुभवहीन नहीं है। वह जानता है कि एकता न तो स्वाभाविक है और न ही आसान। वह स्वीकार करता है कि पाप, स्वार्थ, बेईमानी, क्रोध, नाराजगी, और आलस्य मार्ग में खड़े हैं (4:17-28)। फिर भी, वह हमें "मेल के बंधन में आत्मा की एकता रखने का यत्न करने" करने के लिए उत्साहित करता है (4:3) ।

धार्मिकता से भरी जीवनशैली का अभ्यास एक समूह कार्य है। जब परमेश्वर ने हमें संतान के रूप में गोद लिया, तो हमने एक नए पिता को पा लिया। हमने नए भाई और बहन भी मिले। यदि हम हमारे भाई और बहनों के साथ मेल नहीं रख

पाते तो हम अपने पिता के साथ अच्छे रिश्ते को नहीं रख पाते हैं। यह 1 यूहन्ना के आधारभूत विषयों में से एक है, जिसे "उस चेले ने जिसे यीशु बहुत प्रेम करता था" द्वारा लिखा गया था:

> 1 यूहन्ना 2:9: *जो कोई यह कहता है कि मैं ज्योति में हूँ और अपने भाई से बैर रखता है, वह अब तक अन्धकार ही में हैं।*
>
> 1 यूहन्ना 3:14: *हमें पता है कि हम मृत्यु के पार जीवन में आ पहुँचे हैं, क्योंकि हम अपने भाइयों से प्रेम करते हैं। जो प्रेम नहीं करता वह मृत्यु में स्थित है।*
>
> 1 यूहन्ना 3:17: *पर जिसके पास भौतिक वैभव है, और जो अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम कैसे बना रह सकता है?*
>
> 1 यूहन्ना 4:7-8: *हे प्रियों, हम आपस में प्रेम रखे; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है। जो कोई प्रेम करता है वह परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर को जानता है। प्रेम जो प्रेम नहीं रखता वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर है।*
>
> 1 यूहन्ना 4:11: *हे प्रियों, जब परमेश्वर ने हमसे प्रेम किया, तो हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए।*
>
> 1 यूहन्ना 4:20: *यदि कोई कहे, "मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूँ" और अपने भाई से बैर रखे तो वह झूठा है; क्योंकि जो अपने भाई से जिसे उसने देखा है प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी प्रेम नहीं रख सकता।*
>
> 1 यूहन्ना 4:21: *उससे हमें यह आज्ञा मिली है, कि जो कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है वह अपने भाई से भी प्रेम रखे।*
>
> 1 यूहन्ना 5:1: *जिसका यह विश्वास है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है; और जो कोई उत्पन्न करने वाले से प्रेम रखता है, वह उससे भी प्रेम रखता है जो उससे उत्पन्न हुआ है।*

इन आयतों में, यूहन्ना दो मूल बातों को बताता हैं। पहला, परमेश्वर है, और एक मसीही से यह अपेक्षा करता है कि वे एक दूसरे से घनिष्ठ और व्यवहारिक रूप से प्रेम करें। दूसरा, परमेश्वर से प्रेम करना और उसकी संतानों से प्रेम न करना एक अन्तर्निहित विरोधाभास है। यदि हम सोचते हैं कि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं, और उसकी संतानों से प्रेम नहीं करते, तो हम अपने आप को धोखा दे रहे हैं।

पिता के साथ हमारे रिश्ते की सच्चाई इस बात से प्रदर्शित होती है कि हम उसकी संतानों से कैसा व्यवहार करते हैं। हमें परिपक्व और फलदायी बनाने, परमेश्वर को जानने और मसीह के समान बनाने के लिए मसीह में अपने भाई बहनों के साथ पारस्परिक बातचीत करते रहने की आवश्यकता है। रोमियों 12 और 1 कुरिन्थियों 12 दोनों बड़े पैमाने पर इस बात को संबोधित करते हैं।

पवित्रशास्त्र सेंकडों बार मसीह की देह के रूप में हमारी सामूहिक पहचान पर प्रकाश डालता है। यह मेरे लिए असुविधाजनक है, एक व्यक्तिवादी अमेरिकी के रूप में, और मेरे अंतर्मुखी व्यक्तित्व के कारण भी। मेरा स्वाभाविक झुकाव स्वतंत्र रहना और खुद पर ध्यान केन्द्रित करना है। मुझे इफ़िसियों 1:18 में पौलुस की प्रतिध्वनि करने की आवश्यकता है, जब वह प्रार्थना करता है "कि तुम्हारे मन की आँखे ज्योतिर्मय हों जाएँ, जिससे तुम जान लो कि उसकी बुलाहट की आशा क्या है, और पवित्र लोगों में उसकी मीरास की महिमा का धन कैसा है।" साथी विश्वासियों को उस तरह से देखना मेरी स्वाभाविक प्रवृति नहीं है।

यह और कई वाक्यांशों से स्पष्ट है कि परमेश्वर की संतानों को एकीकृत किया जाना चाहिए। लेकिन वास्तविकता यह है कि हम नहीं है। हमें इस असमानता पर कैसे प्रतिक्रिया देनी चाहिए? बाइबल कुछ व्यवहारिक कदम बताती है जो हममें से हर एक उठा सकता है।

सबसे पहले, हम बस अपने हाथ ऊपर उठाकर समर्पण नहीं करा सकते। हमारा कर्तव्य है कि हम अपने भाइयों और बहनों के साथ एकता कायम रखें। उदहारण के लिए, पौलुस लिखता है:

> हे भाइयों, मैं तुम से हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से विनती करता हूँ कि तुम सब एक ही बात कहो, और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो। (1 कुरिन्थियों1:10 यह भी देखें इफ़िसियों 4:3, कुलुस्सियों 3:14; रोमियों 15:5-6; फिलिप्पियों 1:27; 2:2; 1 पतरस 3:8; 2 कुरिन्थियों 13:11)

पौलुस ने शब्द ऐसी कलीसिया को लिखे थे जो गहराई से विभाजित थी। वे गुटों में विभाजित थे, हर एक अलग अलग अगुओं का अनुसरण कर रहा था "मैं पौलुस का हूँ," "मैं अपुल्लोस का हूँ," "मैं कैफा का हूँ,", और यहाँ तक कि "मैं मसीह का हूँ" (1 कुरिन्थियों 1:12)। वह अच्छी तरह से जानता है कि वे आदर्श के पीछे रह जाते हैं, लेकिन फिर भी वह उन्हें आगे बढ़ने की चुनौती देता है।

दूसरा, हम आत्म बलिदान के माध्यम से एकता का अनुसरण करते हैं फिलिप्पियों 2:1-11 में, पौलुस बताता है कि एकता नि: स्वार्थता के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है। हम सभी एकता के पक्ष में हैं, लेकिन हम दूसरों को अपने तरीके से काम करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। पौलुस एक अलग योजना प्रस्तुत करता है। वह उन आधारशिलाओं पर जोर देकर शुरुआत करता है जिन्हें सभी विश्वासी साझा करते हैं: "मसीह में प्रोत्साहन,... प्रेम की सांत्वना,... आत्मा की संगति,... स्नेह और करुणा" (2:1)। फिर वह लक्ष्य बताता है-एकता: "*समान* मन का होना *समान* प्रेम बनाये रखना, *एकजुट* आत्मा में *एक उद्देश्य पर इरादा रखना, जोर जोड़ा गया*"(2:2)।

लक्ष्य बताने के बाद, पौलुस बताते हैं कि इसे कैसे प्राप्त किया जाए। हम दूसरों को अपने साथ सहमत करने के लिए प्रेरित करने से नहीं, बल्कि नि: स्वार्थता के माध्यम से एकता प्राप्त करते हैं।

> विरोध या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपने ही हित की नहीं, वरन दूसरों के भी हित की चिंता करें। (फिलिप्पियों 2:3-4)

फिर पौलुस एक उदहारण से समझाता है-यीशु का उदहारण। हमें "अपना स्वाभाव ऐसा रखना है... जो यीशु मसीह में भी था" (फिलिप्पियों 2:5)। यीशु अपनी ईश्वरीय महिमा से लिपटे नहीं रहे, "वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरुप धारण कर किया" (फिलिप्पियों 2:7)। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, "और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा की मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली" (फिलिप्पियों 2:8)। उन्होंने हमारे लिए सब कुछ बलिदान कर दिया और अपनी ही इच्छा से कष्ट सहे, हालाँकि, हम इसके लायक नहीं थे। परिणामस्वरूप, "परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है" (फिलिप्पियों 2:9)।

यही नि: स्वार्थता त्रिएक की भी विशेषता है। आत्मा यीशु की महिमा करता है (यूहन्ना 16:13-14); यीशु पिता की महिमा करते हैं (यूहन्ना 17:1); पिता पुत्र की महिमा करता है (यूहन्ना 8:54)। पिता सभी बातों को पुत्र के अधिकार में रखेगा, और फिर पुत्र सब कुछ पिता को दे देगा (1 कुरिन्थियों 15:24-28)। हमें इसका अनुकरण करना चाहिए "आदर में एक दूसरे को प्राथमिकता दो" (रोमियों 12:10)।

तीसरा, हम अपने बीच के मतभेदों का सम्मान करके एकता की ओर बढ़ते हैं। जिन बातों में हम अच्छे हैं उन बातों को महत्व देना मानवीय स्वभाव है। यदि हम खिलाड़ी हैं, तो हमें हृष्ट-पुष्ट रहना महत्वपूर्ण है। यदि हम बुद्धिमान है, तो हम अन्य बुद्धिमान लोगों की प्रशंसा करते हैं (और कम चतुर लोगों का तिरस्कार करते हैं)। यदि हम दिखने में अच्छे, साफ़ बोलने वाले, मेहनती, या संगठित हैं, तो हमारे जैसे लोगों की हम सराहना करते हैं। परमेश्वर इसे अलग तरीके से देखता है। उसने जान-बूझकर लोगों को अलग बनाया। उसने अलग अलग लोगों को अलग अलग उपहार और योग्यताएँ दी ताकि हम साथ मिलकर वह बन सकें औए उसे पूरा करें जो वह चाहता है। उसने हमें एक दूसरे की आवश्यकतानुसार बनाया।

> इसलिए देह में एक ही अंग नहीं परन्तु बहुत से हैं। यदि पाँव कहे, "मैं हाथ नहीं, इसलिए देह का नहीं।" तो क्या वह इस कारण देह का नहीं? और यदि कान कहे, "मैं आँख नहीं, इसलिए देह का नहीं," तो क्या वह इस कारण देह का नहीं? यदि सारी देह आँख ही होती तो सुनना कहाँ होता? यदि सारी देह कान ही होती तो सूंघना कहाँ होता? परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक एक करके देह में रखा है। (1 कुरिन्थियों12:14-18)

उन लोगों से निराश होना आसन है जो अलग हैं। लेकिन परमेश्वर ने उन्हें हमारे लिए वहाँ रखा है।

एकता बनाए रखने के लिए, हमें अपनी जिम्मेदारियों पर ध्यान देना चाहिए, न

कि दूसरों पर दोष लगाने पर। दूसरे लोग जो गलत कर रहे हैं उन्हें पहचानने में मेरी पैनी नज़र है, और मैं उन्हें, या दूसरों, को बताना चाहता हूँ कि मैं क्या देखता हूँ। लेकिन वह मेरा काम नहीं है। रोमियों 14:4 एक उपयोगी सुधारात्मक है:

> तू कौन है जो दूसरों के सेवक पर दोष लगाता है? उसका स्थिर रहना उया गिर जाना उसके स्वामी ही से सम्बन्ध रखता है; क्योंकि प्रभु उसे स्थिर रख सकता है।

मैं न्यायी नहीं हूँ। परमेश्वर है। न्याय के दिन मेरे भाई बहन मेरे सामने प्रकट नहीं होंगे। वे परमेश्वर के सामने खड़े होंगे। और परमेश्वर, अपने अनुग्रह से, उन्हें खड़ा करने में सक्षम है। जब मुझे आलोचना करने की इच्छा महसूस होती है, मैं स्वयं को यह याद दिलाने की कोशिश करता हूँ कि प्रभु के प्रति अपनी जिम्मेदारियाँ मुझे काफी कठिनाई हो रही है। मुझे किसी ओर की ज़िम्मेदारी लेने की ज़रूरत नहीं है। परमेश्वर उनका न्यायी है, मैं नहीं।

इसके अलावा, मुझे यह याद रखने की आवश्यकता है कि, व्यक्तिगत् पसंद के मामलों में, परिपक्व विश्वासी दूसरे व्यक्ति को अपने तरीके से चलने देते हैं। मैंने देखा है कि कलीसिया के अन्दर अधिकाँश झगड़े प्राथमिकता के मामलों को लेकर होते हैं: संगीत बहुत तेज़ है (या पर्याप्त तेज़ नहीं है); प्रचार बहुत लम्बा है (या पर्याप्त लम्बा नहीं है)। हम शनिवार की रात सेवकाई क्यों नहीं कर रहे हैं? हम बुधवार की रात को प्रार्थना सभा, या अवाना, या एमओपीएस क्यों नहीं करते? इनमें से कोई भी बाइबल सिद्धांत का मामला नहीं है। वे धारणा, या परंपरा, या प्राथमिकता के मामले हैं। उन मामलों में, परिपक्व विश्वासी को एकता बनाए रखने के लिए अपनी प्राथमिकता का त्याग करने के लिए तैयार रहना चाहिए। ऐसा करने की इच्छा परिपक्वता का लक्षण है।

यह रोमियों 14 का आधार बिंदु है। पौलुस विवादास्पद मुद्दों पर चर्चा कर रहे हैं। क्या तुम माँस खा सकते हो जो मूर्तियों पर चढ़ाया गया हो, या हो सकता है? हमें किस दिन आराधना करनी चाहिए? यह पौलुस का निष्कर्ष है:

> अतः आगे को हम एक दूसरे पर दोष न लगाएँ, पर तुम यह ठान लो कि कोई अपने भाई के सामने ठेस या ठोकर का कारण न रखे। इसलिए हम उन बातों में लगे रहें जिनसे मेलमिलाप और एक दूसरे का सुधार हो। (रोमियों 14:13, 19)

इसके मूल में, फूट पाप का कार्य है। एकमात्र वास्तविक उपाय धार्मिकता से भरी जीवनशैली के रूप से जीना है- मसीह में बने रहना, आत्मा से परिपूर्ण होना, आत्मा के साथ कदम से मिलाकर चलना। याद रखें, अब हम सामूहिक रूप से त्रिएकता के साथ एक है। हम इस सत्य को न केवल यूहन्ना 15 और 17, में देखते हैं, बल्कि, पौलुस हमें 1 कुरिन्थियों 6:17 में इसकी याद दिलाता है: "जो प्रभु की संगति में रहता है, वह उसके साथ एक आत्मा हो जाता है।" अगर ऐसा होता है, तो हमारे बीच फूट कैसे हो सकती है?

पौलुस इस मुद्दे को 1 कुरिन्थियों 1:10-13 में संबोधित करता है। यह वही

कुरिन्थियों की कलीसिया है जिसमें पौलुस को आत्मिक वरदानों के उचित उपयोग और प्रेम के बारे में लिखने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। वे किस व्यक्ति का अनुसरण करते थे, इसके आधार पर वे गुटों में विभाजित थे। पौलुस उन्हें याद दिलाता है कि मसीह विभाजित नहीं है।

फिर अध्याय 3 में, प्रेरित इस मुद्दे पर अधिक पूरी तरह से चर्चा करता है। देह को विभाजित करने वाली मानवीय निष्ठा रखते हुए, वह कहते हैं कि कुरिन्थवासी "केवल मनुष्यों की तरह चल रहे थे" (1 कुरिन्थियों 3:3)। वह बताते हैं कि वे जिन अगुवों का अनुसरण कर रहे थे, उनमें से हर एक मसीह का सेवक थे। मसीह, मानव अगुवें नहीं, किसी भी अच्छी बात के लिए अंततः ज़िम्मेदार थे। प्रत्येक व्यक्ति मसीह द्वारा बुलाए जाने के अनुसार अपनी भूमिका निभा रहा था, और कोई भी इसका श्रेय नहीं ले सकता था। काम की गुणवत्ता मायने रखती है, और प्रत्येक व्यक्ति उस मानदंड के आधार पर इनाम पाएगा, लेकिन हर किसी को केवल मसीह का अनुसरण करना है।

> इसलिए मनुष्यों पर कोई घमंड न करे। क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है: क्या पौलुस, क्या अपुल्लोस, क्या कैफा, क्या जगत क्या जीवन, क्या मरण, क्या वर्तमान, क्या भविष्य, सब कुछ तुम्हारा है, और तुम मसीह के हो, और मसीह परमेश्वर का है। (1 कुरिन्थियों 3:21-23)

कुरिन्थियों की कलीसिया में अनुभव किए गए विभाजन आज किसी विशेष शिक्षक, लेखक, ईश-शास्त्री, सम्प्रदाय, उद्देश्य सभा, सेवकाई तकनीक के लिए विश्वासियों की प्राथमिकताओं में उनके समक्ष है। बेशक, सरंचनात्मक विभाजनों के व्यवहारिक कारण है, लेकिन उस विभाजन और यहाँ तक कि शत्रुता के लिए नहीं जो मसीह की बड़ी देह के अन्दर इतने सारे रिश्तों का प्रतीक बन गई है। घमंड, इर्ष्या, कड़वाहट, अविश्वास, और तिरस्कार बहुत आम हो गए हैं, खासकर कलीसिया जहाँ बहुत आरामदायक और स्वार्थी हो गई है। ऐसा लगता है कि मानो छोटे छोटे वृतों में विभाजन की रेखाएँ खिची जा रही हैं, जो उस आत्मिक एकता को रोक रही है, जिसे प्रभु चाहते हैं।

मुझे डर है कि यदि यह प्रवृति जारी रही, तो हम पूरी तरह से व्यक्तियों का एक सांसारिक साम्राज्य बन जायेंगे। समस्या सरल है: हम अपनी एकता के स्रोत को भूल गए हैं। यही हम मसीह राजा में बने रहने में असफल हो जाते हैं, तो हमें उस प्रकार की एकता नहीं मिल सकती जिसका अनुभव करने के लिए वह मरा।

यूहन्ना 15 में, यीशु ने यह बहुतायत से स्पष्ट किया है कि उसके राज्य में जीवन केवल उन लोगों के लिए संभव है जो उसमें बने रहते हैं। हम किसी अन्य तरीके से फल नहीं ला सकते। वास्तव में, हम *कुछ भी* उसमें बनें बिना नही कर सकते (यूहन्ना 15:4-5)। यीशु हमारे उसमें बनें रहने से सम्बंधित विभिन्न उल्लेखनीय परिणामों और वायदों का वर्णन करता है। वह यूहन्ना 15:12-17 और फिर यूहन्ना 17:21 में यह स्पष्ट करता है कि एक दूसरे के प्रति हमारा प्रेम उसमें बनें रहने के

साथ अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है।

इसलिए धार्मिकता से बहरी जीवनशैली के अभ्यास करने वाला होना उस एकता को प्राप्त करने के लिए एक शर्त है जिसकी यीशु ने आज्ञा दी थी और जिसके लिए प्रार्थना की थी। लेकिन हमारे मार्ग में बहुत सारी बाधाएँ हैं। मेरे मन में सबसे बड़ी बाधाओं में से एक संगठनात्मक अस्तित्व के लिए व्यापक चिंता से सम्बंधित है। एक कलीसिया या मसीही संगठन जितना बड़ा होता जाता है, यह भटकाव उतना ही अधिक खतरनाक होता है, क्योंकि हम अपने संगठन या कलीसिया की समृद्धि को परमेश्वर के राज्य की समृद्धि के साथ भ्रमित करने के लिए प्रलोभित होते हैं।

एक व्यापक धारणा है कि परमेश्वर के राज्य की प्रगति व्यक्तिगत् कलीसियाओं सहित विभिन्न संस्थानों की प्रगति पर निर्भर करती है इस प्रकार, हम उन निर्णयों या कार्रवाही के तरीकों को ख़ारिज करते हैं जो हमारे संस्थानों को खतरे में डाल सकते हैं। यह व्यवहार परमेश्वर की बात सुननें की बजाय संगठनात्मक व्यवहारिकता की ओर ले जाता है। जब हम अपने स्वयं के संगठनों को हितों को पहले रखते हैं, तो हम मसीही एकता को हासिल नहीं कर सकते हैं, जिसके लिए दूसरों के (और राज्य के) हितों को अपने हितों से आगे रखना आवश्यक है। संगठनात्मक अस्तित्व और समृद्धि की व्यवहारिकता के आधार पर कार्य करना एकता के लिए मौत की घंटी है।

राज्य की उलटी प्रकृति के कारण, प्रभु अक्सर हमें इससे कार्य करने के लिए कहता है जिनका संगठनात्मक लाभ की दृष्टि से कोई मतलब नहीं है। बलिदान को अपनाने की इच्छा, जिसकी हमने पहले व्यक्तिगत् सन्दर्भ में चर्चा की थी, सामूहिक स्तर पर भी उतनी ही आवश्यक है। *बलिदान करना और मरना राज्य में जीने की रोटी और मक्खन है। वे दैनिक घटनाएँ हैं। यह सामिहिक रूप के साथ साथ व्यक्तिगत् रूप से भी सत्य है।*

व्यक्तियों और संगठनों के रूप में हमें मत्ती 6:33 के सिद्धांत का पालन करने की आवश्यकता है। यह आयत ध्यान और चिंता से सम्बंधित यीशु की बातचीत का समापन करती है। उसने उन बातों पर चर्चा की है जिनके बारे में हम चिंता करते हैं- पैसा, भोजन, कपडे, जीवन। तब उसने कहा, "पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएँगी।" यह आयत जिम्मेदारियों का बखान है। यीशु कह रहा है कि यदि हम परमेश्वर की धार्मिकता और परमेश्वर के राज्य के राज्य को बढ़ाने को अपना काम बनाते हैं, तो हमें जो चाहिए वह प्रदान करना परमेश्वर अपना काम बना लेंगे। यह सिद्धांत संगठनों और व्यक्तियों दोनों पर लागू होता है। परमेश्वर के राज्य कप प्रथम सस्थान पर रखने की इच्छा के बिना एकता असंभव है।

सामूहिक बलिदान का एक सकारात्मक उदहारण लास्ट डेज़ मिनिस्ट्रीज़ थी, जिसकी स्थापना मसीही संगीतकार कीथ ग्रीन ने की थी। विद्युत् संगीत वितरण के आने से बहुत पहले, उस समय जब संगीत देना एक महंगा प्रस्ताव था, लास्ट डेज़

ने अपना संगीत उस कीमत पर "बेच" दिया जिसके लिए एक व्यक्ति को लग कि वह ज्ञान देना चाहता है। इसके परिणामस्वरूप बड़ी मात्रा में मुफ्त "बिक्री" हुई, जो 1982 में अट्ठाईस वर्ष की उम्र में ग्रीन की विमान दुर्घटना में असामयिक मृत्यु के बाद भी जारी रही। लास्ट डेज़ वित्तीय मजबूती की स्थिति में नहीं था। वितरण का यह दृष्टिकोण शुरू से ही सेवकाई को ख़त्म करने के लिए नियत था, लेकिन कीथ ने इस मामले में प्रभु के मार्गदर्शन का पालन किया। उनका झुकाव राज्य-प्रथम प्राथमिकताओं का प्रतीक है।

कीथ ग्रीन ने चेलेपन के अपने क्रन्तिकारी बुलाहट से कई लोगों को असहज कर दिया। लेकिन मसीही एकता का मतलब सिर्फ सतही "मिलाने-जुलने" क लिए अपन मतभेदों क दूर करना नहीं है। इसका मतलन है कि हर कोई एक ही लक्ष्य की और बढ़ रहा है, एक तरह से जो मसीह में बढ़ने के लिए एक दूसरे को प्रोत्साहित और चुनौती देता है। वित्तीय लाभ की चिंता किए बिना कीथ की बलिदानपूर्ण सेवा उस भावना का एक बड़ा उदाहरण थी।

यहाँ बहुत सारे नकारात्मक उदहारण है। एक बार मैं अमेरिका के एक बड़े शहर में चेले बनाने का प्रशिक्षण ले रहा था। एक स्थानीय बड़ी कलीसिया की वरिष्ठ समूह के कई सदस्यों ने एक शाम मुझसे कई घंटों तक मुलाक़ात की। हमारे साथ बिताये समय के समापन पर, उन्होंने मुझसे कहा, "हमारा विश्वास है कि जिस तरह से आप चेले बनाने का प्रस्ताव कर रहे हैं उसका परिणाम उन तरीकों से अधिक और बेहतर फल होगा जो हम वर्तमान में उपयोग कर रहे हैं, लेकिन हम उस रास्ते पर नहीं चल सकते।"

मैंने उनसे पूछा क्यों? उन्होंने जवाब दिया कि उन्होंने अपनी इमारत का विस्तार करने के लिए 6 करोड़ डॉलर से अधिक का ऋण लिया था और वे अपने दृष्टिकोण को बदलने का जोखिम नहीं उठा सकते थे, जिसके परिणामस्वरूप देने में कमी हो सकती थी। एक और, मैंने उनकी स्पष्टवादिता की प्रशंसा की। दूसरी और, मैं इस बात से चकित था कि वे अपने संगठन की समृद्धि को परमेश्वर के राज्य के सामने रखने को तैयार थे।

वहाँ दो बहुत बड़े और व्यापक रूप से ज्ञात मसीही सेवकाईयाँ है जिन्होंने दशकों से यह स्पष्ट कर दिया है कि वे उनका कलीसिया रोपण से कोई लेना देना नहीं चाहते है, *क्योंकि उस काम को करने से उन्हें कलीसिया के साथ प्रतिस्पर्धा में खड़ा होना पड़ सकता है, जो उनकी आय का मुख्य स्रोत था।* वे उस हाथ को अलग करने का जोखिम उठाने को तैयार नहीं थे, जिसने उन्हें खाना खिलाया था। मैं उनके निर्णय के बारे में बहुत बेहतर महसूस करता यदि वह प्रभु के स्पष्ट वचन पर आधारित होता, लेकिन उन्होंने कभी ऐसा दावा नहीं किया। पिछले दशक में, इन दोनों संगठनों में से एक अपने पिछले रुख की त्रुटि के प्रति आश्वस्त हो गया है और आक्रामक रूप से कलीसिया रोपण को आगे बढाने की ओर अग्रसर हो गया है। दूसरा अपने दृष्टिकोण में अपरिवर्तित रहता है। कोई राज्य की खातिर अपनी वित्तीय स्थिति को जोखिम में डालने को तैयार है; दूसरा नहीं है।

सामूहिक परिदृश्य में एक और व्यवहारिक मुद्दा तब उठता है जब पवित्रशास्त्र के सिद्धांतों पर एक संयुक्त समझौता होता है लेकिन ये सिद्धांत किसी विशेष स्थिति पर कैसे लागू होते हैं इसकी अलग अलग व्याख्याएँ होती है। ऐसा उन परिवेशों में अक्सर होता है जहाँ पवित्रशास्त्र को जानने पर तो जोर दिया जाता है लेकिन पवित्र आत्मा को सुनने की अपेक्षाकृत उपेक्षा की जाती है। इससे गतिरोध, समझौता, या विभाजन होता है।

दूसरी ओर, ऐसे समुदायों के सदस्य जो पवित्र आत्मा पर जोर देते हैं, लेकिन पवित्रशास्त्र में डूबे नहीं है या इसकी व्याख्या और अनुप्रयोग में कुशल नहीं है, अक्सर मानते हैं कि वे परमेश्वर से ऐसी बातें सुन रहे हैं, जो अपने आप में परस्पर पूर्ण है। इससे भी पक्षाघात या विभाजन होता है।

ऐसी स्थितियाँ और भी जटिल होती है, जैसा कि पिछले अध्याय में बताया गया है, जब इन समुदायों में ऐसे व्यक्ति शामिल होते हैं जो विश्वासी नहीं है या जो आत्मा में नहीं चल रहे हैं, जिससे वास्तविक आत्मिक एकता असंभव हो जाती है। हम एक मन के तभी हो सकते हैं जब हम सभी में मसीह का मन हो।

मुझे गलत मत समझना। जब मैं एकता की बात करता हूँ, तो मैं सबको साथ लेकर चलने की बात नहीं कर रहा हूँ। यह शांति को शत्रुता की अनुपसस्थिति की रूप में परिभाषित करने जैसा होगा। यह एक कमज़ोर और आंशिक विवरण है। मसीह की देह में एकता की आवश्यकता में राज्य की उन्नति के लिए सहयोगात्मक रूप से श्रम करना शामिल होगा। इसका अर्थ है कि सभी स्थानों पर सभी लोगों के समूहों को परमेश्वर के शासन के बारे में अवगत कराने की दिशा में सक्रिय सहयोग। इसका अर्थ है समाज के हर स्तर पर उनके उद्देश्यों और उनकी इच्छा को पूरा होते देखने के लिए तालमेल बिठाकर काम करना।

संयुक्त प्रयास के इस स्तर के लिए, हमें न केवल व्यक्तिगत् स्तर पर बल्कि विभिन्न सामूहिक स्तरों पर भी एकता की तलाश करनी चाहिए। इस कारण से, हमें मसीही विश्वास की विभिन्न धाराओं के बीच संचार में वृद्धि की आवश्यकता है। यह उन धाराओं के साथ संगठनात्मक स्तर पर संभव या व्यवहारिक नहीं हो सकता है जो बड़े पैमाने पर नाममात्र के मसीही है, लेकिन हमें विभिन्न संगठनों में अच्छे विश्वास वाले व्यक्तियों के साथ इसके लिए प्रावधान करने की आवश्यकता है और विश्वासियों के वैश्विक निकाय की अन्दर विभाजन की ऐसी कठोर रेखाएँ बनाना बंद करना होगा। 1970 के दशक में लॉज़ेन आन्दोलन के निर्माण के पीछे यही विचार था, जिसका नारा था "सम्पूर्ण कलीसिया सम्पूर्ण सुसमाचार को सम्पूर्ण दुनिया में ले जा रही है"। इस एकता को पूरा करने के लिए पहले और बाद में अन्य प्रयास भी हुए हैं।

व्यवहारिक दृष्टिकोण से, यह कहना जितना आसान है उतना करना आसान नहीं है। निम्नलिखित चित्र दर्शाता है कि मुझे इस मुद्दे पर सोचने का एक उपयोगी तरीका क्या मिला है। चित्र के केंद्र करीब सेवकाई के पहलू वे हैं, जिनमें साझेदारी

स्तापित करने में अधिक सतर्क और भेदभावपूर्ण होना सहायक होता है। सबसे बाहरी घेरे में उन लोगों के साथ कुछ मुद्दों पर एकजुटता भी हो सकती है जो स्पष्ट रूप से गैर-मसीह है। कभी कभी जो रिश्ते बाहरी घेरे पर ध्यान कन्द्रित करके शुरू होते हैं वे बाद में अधिक घनिष्ठ और भरोसेमंद रिश्तों में विकसित हो सकते हैं। इस दृष्टिकोण का पालन करने से अक्सर रिश्तों और एकता के प्रदर्शनों को उस सीमा से कहीं आगे बढ़ाया जा सकता है, जहाँ वे अन्यथा जा सकते हैं।

सहयोगात्मक कार्य के स्तर

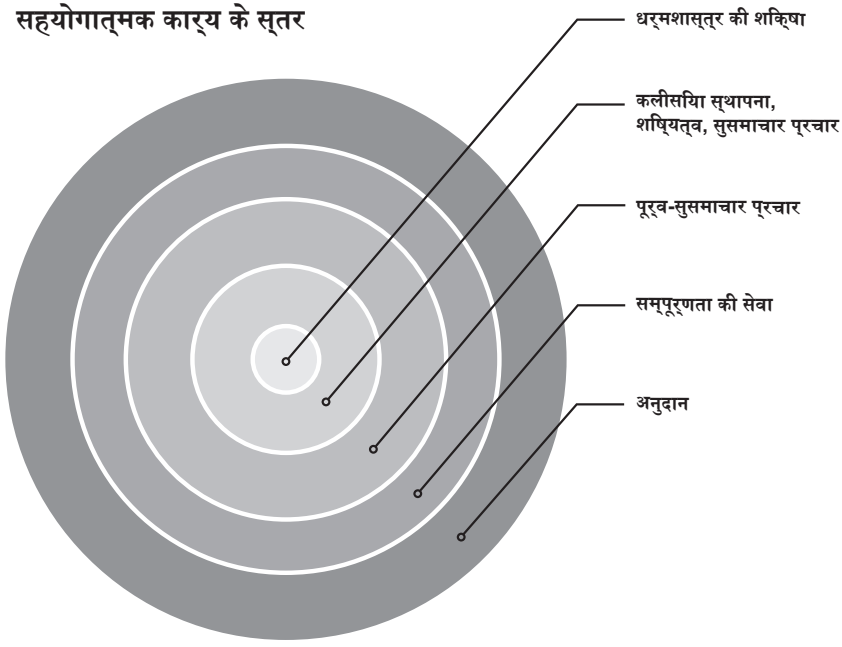

प्रार्थना

प्रभु यीशु, आप आये और मारे गए ताकि हम एक हो जाएँ जैसे आप और पिता एक हैं। ये असंभव लगता है। फिर भी आप मुझे अपने परिवार में एकता कायम करने के लिए ज़िम्मेदार मानते हैं। मेरी सहायता करें। मुझे आपकी संतानों से प्रेम करने में सहायता करें क्योंकि वे आपसे उत्पन्न हुए हैं। दूसरों को स्वयं से अधिक महत्वपूर्ण समझने में मेरी सहायता करें। आपने हममें से हर एक को जो अलग अलग तरीके से बनाया है, उसे महत्व देने में मेरी सहायता करें। मुझे यह पहचानने में मेरी सहायता करें कि मुझे उनकी ज़रूरत है। मेरी प्राथमिकताओं को छोड़ने में मेरी सहायता करें ताकि उनका निर्माण किया जा सके। मेरे मन की उस आवाज़ को शांत करने में सहायता करें जो दूसरों की आलोचना करने में बहुत तेज़ है। मुझे दिखाएँ कि मैं शांति और एकता कैसे हासिल कर सकता हूँ।

प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें, फिर प्रार्थना करें और परमेश्वर से पूछें कि वह आपसे क्या सीखना और कराना चाहता है। शांत होकर सुनें।

अपनी डायरी की समीक्षा करें। क्या आपकी कोई पिछली प्रतिज्ञाएँ हैं जिन्हें आपने पूरा नहीं किया है? यदि आवश्यक हो, तो संशोधित समापन तिथियाँ निर्धारित करें।

1. मैं प्रभु का अनुसरण करने के सामूहिक पहलुओं के बारे में कितना जागरूक हूँ? मैं मसीह की देह के अन्दर अपने रिश्तों में पारस्परिकता और एकता के स्तर को कैसे सुधर सकता हूँ?

2. मैं मसीह की देह में एकता बनाए रखने के लिए क्या कर रहा हूँ? मुझे क्या करना चाहिए? क्या व्यक्तिगत् रूप से या एक संगठन के अगुवे के रूप में मुझे कुछ कदम उठाने की ज़रूरत है?

3. क्या ऐसी कोई बात है जो मैं कर रहा हूँ या कह रहा हूँ जो मसीह की देह में फूट या मतभेद पैदा कर रही है?

4. इस अध्याय के प्रत्युत्तर में परमेश्वर मुझसे कौन-सी विशिष्ट कार्य करवाना चाहता है? (उन्ह अपने डायरी में लिख ले और अपने कैलेंडर में नियत कर ले।)

5. मैंने जो सीखा है, उसके अनुसार परमेश्वर किसके साथ चाहता है कि उसे (कम से कम एक नाम) साझा करूँ?

प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको इन प्रतिबद्धताओं का पालन करने में सक्षम बनाए और उन लोगों के दिलों को तैयार करे जिनके साथ आप ज्ञान साझा करना चाहते हैं।

11 बातचीत के लिए परमेश्वर हमारा आदर्श है

परमेश्वर का द्वारा वार्तालाप व्यक्तिगत्, प्रभावशाली और आधिकारिक है; हमें उचित प्रतिक्रिया देने और दूसरों के लिए उचित प्रतिक्रिया का आदर्श तैयार करने की आवश्यकता है।

मुझे अपनी विधियों का मार्ग दिखा दे;
तब मैं उसे अन्त तक पकड़े रहूँगा।
मुझे समझ दे, तब मैं तेरी व्यवस्था को पकड़े रहूँगा।
और पूर्ण मन से उस पर चलूँगा।
अपनी आज्ञाओं के पथ में मुझ को चला,
क्योंकि मैं उसी से प्रसन्न हूँ।

-भजन संहिता 119:33-35

जब परमेश्वर बोलता है, तो उसका अर्थ वाकई में वही होता है जो वह कहता है, वह वही करता है जो वह कहता है, और वह अपेक्षा करता है कि हम वही करें जो वह कहता है। हमें अपने जीवन में बहाव लाने वाले वार्तालाप के अन्य साधनों की तुलना में परमेश्वर से वार्तालाप करने के अलग तरीके से व्यवहार करना सीखना चाहिए। हम ऐसे युग में रह रहे हैं जहाँ संदेशों की भरमार है-जिनमें से अधिकांश अप्रासंगिक, निरर्थक या गलत हैं। आवश्यकतानुसार, हमने अपने ऊपर निर्देशित अधिकांश संवाद का चुनाव करना और अनदेखा करना सीख लिया है। हम परमेश्वर के साथ ऐसा नहीं कर सकते हैं।

परमेश्वर एक रणनीतिक संवादक है, और उसका शब्द उद्देश्यपूर्ण और शक्तिशाली है। यशायाह 55:10-11 में, प्रभु कहता है,"जिस प्रकार से वर्षा और हिम आकाश से गिरते हैं और वहाँ यों ही लौट नहीं जाते, वरन् भूमि पर पड़कर उपज उपजाते हैं जिस से बोनेवाले को बीज और खानेवाले को रोटी मिलती है, उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न

लौटेगा, परन्तु जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिये मैं ने उसको भेजा है उसे वह सफल करेगा।" अंत में, हम उस ही प्रति समर्पण करेंगे और उसकी इच्छा के अनुरूप होंगे। सवाल सिर्फ यह है कि हम ऐसा स्वेच्छा से करेंगे या मजबूरी में। क्या हम प्रिय बालकों के समान या हारे हुए शत्रु के रूप में ऐसा करेंगे?

संवाद की नई तकनीकों ने जानकारी का चुनाव करना और संसाधित करने के नए तरीका पेश किया है। दुर्भाग्य से, हम अक्सर चुनाव का यही साधन परमेश्वर के संदेशों पर लागू करते हैं। जब अन्य लोगों के संदेशों पर लागू किया जाता है तो ये ढांचा पूरी तरह से उपयुक्त हो सकते है, लेकिन जब वे हमारे लिए परमेश्वर की वार्तालाप पर लागू होते हैं तो वे निश्चित रूप से अनुपयुक्त होते हैं। हमारे लिए उनके संदेश व्यक्तिगत्, आधिकारिक, कार्यवाही योग्य और महत्वपूर्ण हैं। वे हमारा पूरा ध्यान और प्रतिक्रिया चाहते हैं।

पिछले पाँच सौ वर्षों में, गुटेनबर्ग के छापेखाने से लेकर टेलीग्राफ, रेडियो, टेलीविजन और इंटरनेट तक बातचीत करने की तकनीक अद्भुत रीति से विकसित हुई हैं। संवाद के इस विकास के प्रति हमारी धारणाओं और प्रथाओं पर बहुत प्रभाव पड़ा है। निस्संदेह, परमेश्वर के राज्य की ओर से अद्भुत चीजों को पूरा करने के लिए आधुनिक संचार तकनीकों का उपयोग किया गया है। हालाँकि, मैं यह भी मानता हूँ कि उनके कुछ नकारात्मक परिणाम हुए हैं।

छापाखाने के आने से पहले, अधिकांश संचार व्यक्तिगत् होते थे - अर्थात् किसी विशेष व्यक्ति या समूह के लिए निर्देशित। जब पौलुस ने तीमुथियुस को एक पत्र लिखा, तो तीमुथियुस को यह पूछने की ज़रूरत नहीं पड़ी, "क्या यह मुझ पर लागू होता है?" बेशक यह उस पर लागू होता है; यह विशेष रूप से उसके लिए लिखा गया था। छापाखानेके आगमन के साथ ही, संचार काफी हद तक संदर्भ-रहित हो गया। छापेखाने के परिणामस्वरूप लेखनकार्यों की एक पूरी नई श्रेणी सामने आई, जो अधिक सामान्य और सिद्धांत-आधारित और कम व्यक्तिगत् थी। पाठकों के लिए स्वयं से पूछना आवश्यक हो गया, "क्या यह मुझ पर लागू होता है? क्या यह कार्य योग्य है या मेरे जीवन के लिए प्रासंगिक है?" इसलिए पाठकों ने व्यक्तिगत् प्रासंगिकता के लिए संचार का चुनाव करना शुरू कर दिया, उन पर ध्यान न देते हुए, जो उन पर लागू नहीं होते थे।

टेलीग्राफ के आविष्कार ने संचार की व्यक्तिगत् प्रकृति को बहाल कर दिया, क्योंकि टेलीग्राम आमतौर पर एक विशिष्ट व्यक्ति को भेजे जाते थे। लेकिन इसने चुनाव करने का एक नया साधन बनाया, अर्थात् नवीनता का साधन। प्रेषित सूचना तत्काल तात्कालिक थी, लेकिन लंबे समय तक चलने वाले मूल्य की नहीं। नए तथ्यों ने अन्य तथ्यों को तुरंत चेतना से बाहर कर दिया। दैनिक समाचार पत्रों ने इस प्रवृत्ति को आगे बढ़ाया। इसलिए ये कहावत है कि, "कल का अखबार केवल मछली लपेटने के लिए अच्छा होता है।" इस दृष्टिकोण के अनुसार, पूरानी खबरें समाचार नहीं हैं और इन्हें नजरअंदाज किया जाना चाहिए।

रेडियो और फिर टेलीविजन के साथ, लोगों ने संचार के मूल्य का आकलन मुख्य रूप से इसके मनोरंजन मूल्य के आधार पर करना शुरू कर दिया। इस प्रवृत्ति ने धर्म और राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश किया है, और एक ऐसी संस्कृति का निर्माण किया है जिसमें शिक्षण और मनोरंजन अभिन्न हैं।

रेडियो और टेलीविजन में भी लोगों की रुचि कम हो गई। विज्ञापन ने इस प्रभाव में योगदान दिया, सूचना को बड़ी सफ़ाई से तीस सेकंड के प्रारूपों में प्रस्तुत किया। चित्र और संगीत के साथ कहानी सुनाना आवश्यक हो गया। तर्कसंगत तर्क और विचारशील जाँच को एक तरफ रख दिया गया जब तक कि उन्हें एक घंटे के मनोरंजक कार्यक्रम में सँजोया नहीं जा सके। परिणाम मानसिक निष्क्रियता और आलसी सोच रहा है। हमने एक और चुनाव को जोड़ा है, अक्सर पूछते हैं, "क्या यह मेरे लिए दिलचस्प या मनोरंजक है?" यदि नहीं, तो हम इसे अनदेखा कर देते हैं।

इंटरनेट ने इस प्रवृत्ति को बढ़ा दिया है, जिससे लोगों को डेटा के अधिक भार से निपटने के लिए लगातार चुनाव करते रहना, सरसरी नज़र से देखना और संक्षेपित करना पड़ता है। हम डेटा से घिरे हुए हैं, जिसे अक्सर जाँच या मूल्यांकन के लिए आवश्यक समय या जानकारी के बिना, भावनात्मक तरीकों से लपेट दिया जाता है।

ट्विटर ने संक्षिप्तता के सांस्कृतिक प्रतिरुप को और अधिक बढ़ा दिया है, जिससे ध्यान के विस्तार में अतिरिक्त गिरावट आई है और लोक-प्रसिद्धि विज्ञापन संस्कृति का प्रसार हुआ है। फेसबुक ने चित्र-चेतना को और अधिक बढ़ा दिया। चित्र को सामग्री से अधिक महत्व दिया जाता है, प्रतिष्ठा को चरित्र से अधिक महत्व दिया जाता है, छाप को वास्तविकता से अधिक महत्व दिया जाता है। उस अनुप्रयोग का उपयोग करके संचार चित्र प्रबंधन के बारे में हो गया।

डेटा की प्रचुरता इसे उपयोग करने वाले लोगों को वे चुनाव करने के लिए मजबूर करती है। महज़ आवश्यकता के कारण, हम अपने पास आने वाली अधिकांश सूचनाओं को तुरंत नज़रअंदाज करने के लिए मजबूर हो जाते हैं। हम इसे व्यावहरिकता के लिए चुनाव करते हैं (क्या यह मुझ पर और मेरी स्थिति पर लागू होता है?), नवीनता के लिए (क्या यह आज की खबर है?), मनोरंजन मूल्य के लिए (क्या मुझे इसका आनंद मिलता है?), क्रियाशीलता के लिए (क्या मेरे लिए कुछ है इसके बारे में क्या करें?), और अधिकार के लिए (क्या मैं वास्तव में इस आदमी पर विश्वास करता हूँ?)।

उदाहरण के लिए, मुझे हाल ही में अपने सेल फ़ोन पर एक रिकॉर्ड किया हुआ संदेश प्राप्त हुआ, जिसमें कहा गया था (थोड़े विदेशी लहजे में): "यह सामाजिक सुरक्षा प्रशासन है। कृपया कानूनी कार्यवाही शुरू करने से पहले तुरंत हमसे संपर्क करें।" मुझे नहीं पता कि उसके बाद रिकॉर्डिंग में क्या कहा गया, क्योंकि मैंने फोन काट दिया, संदेश हटा दिया और नंबर बंद कर दिया। क्यों? क्योंकि कुछ

ही सेकंड में मैंने तय कर लिया कि यह वास्तव में सामाजिक सुरक्षा प्रशासन नहीं है (वास्तविक सरकारी कार्यालय आमतौर पर कागजी कार्यों को संरक्षित करने के लिए पत्र लिखते हैं), और मुझे पता है कि बहुत से लोग मेरी व्यक्तिगत् खाता जानकारी के लिए "जालसाज़ी" कर रहे हैं। बीस साल पहले मैंने ऐसा नहीं किया होता। मैंने पूरा संदेश सुना होता। लेकिन मुझे कुछ बेचने, मेरी जानकारी चुराने, या मुझे अपने ट्विटर फ़ीड देखने की कोशिश करने वाले लोगों के प्रसार ने मुझे आने वाली सूचनाओं को तुरंत चुनाव करने और उनमें से अधिकांश को अनदेखा करने के लिए मजबूर किया है।

लेकिन जैसे ही हम चुनाव करते हैं, तो हम स्वाभाविक रूप से उस जानकारी पर ध्यान देते हैं जो हमारे पहले से मौजूद पूर्वाग्रहों की पुष्टि करती है। यह प्रवृत्ति, कई स्पष्ट रूप से परिभाषित दर्शकों की ओर ले जाती है, जिनमें से प्रत्येक एक स्व-को महत्व देने वाले कक्ष में मौजूद होता है। इसके परिणामस्वरूप, संचार के पहले वर्णित एकीकृत कार्य के बजाय बड़े पैमाने पर विखंडन हुआ है।

नतीजा यह है कि हम अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करते हैं और कम से कम सुनते हैं (बाइबल के अर्थ में "सुनें और मानें")। समाचार कार्यात्मक और क्रियाशील होने से अप्रासंगिक तथ्यों के संग्रह में बदल गया है। सूचना और कार्यवाही का अनुपात लगातार घट रहा है। (खुद से पूछें कि टीवी की कितनी खबरें मनोरंजन के लिए बनाई गई हैं और उनमें से कितनी कम का आपके जीवन पर सीधा, व्यावहारिक प्रभाव पड़ता है।)

ये प्रचलन बड़े डेटा और कृत्रिम बुद्धि के साथ अपने तार्किक निष्कर्ष पर पहुँच रहे हैं। इनके साथ, हम पूर्व निर्धारित सामान्य सिद्धांतों के आधार पर मूल्यांकन और निर्णय लेने की जिम्मेदारी एक कंप्यूटर कलन विधि अर्थात् हल करने वाली नियम प्रद्धति म को सौंपते हैं। सोच-विचार के ढाँचे, विश्लेषणात्मक क्षमता, नैतिकता और जीवन के अन्य क्षेत्रों पर प्रभाव गहरा होगा। ऐसा नहीं है कि मैं बड़े डेटा या कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विरोध करता हूँ; वे बड़े संभावित लाभ प्रदान करते हैं। लेकिन हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि हम मार्ग में क्या खो सकते हैं।

हम एक ऐसी दुनिया बना रहे हैं जिसमें हम डेटा और आंकड़ों पर अपना निर्णय लेने का भरोसा रखते हैं। यह मानते हुए भी कि डेटा सटीक और उचित है, और यह मानते हुए कि हम डेटा की सही व्याख्या करते हैं, एक बड़ी समस्या बनी हुई है, क्योंकि हम एक उलटे राज्य में रहते हैं जहाँ अक्सर "चतुर" निर्णय होता है सही निर्णय नहीं। यहोशू के बारे में सोचें जो तुरहियाँ बजाते हुए यरीहो के चारों ओर चक्कर लगा रहा है (यहोशू 6), या गिदोन अपने अधिकांश सैनिकों को भेज रहा है (न्यायियों 7)। डेटा-संचालित निर्णय लेना हमें परमेश्वर के बजाय अपने डेटा पर भरोसा करना सिखा सकता है। डेटा के आधार पर बहुत सारे निर्णय पहले से लिए जाने से, हम परमेश्वर के लिए अपनी आवश्यकता को इतनी उत्सुकता से महसूस नहीं करेंगे और परमेश्वर को कम सुनने के लिए प्रलोभित होंगे। क्या हम अपने सॉफ्टवेयर पर अधिक भरोसा करेंगे और परमेश्वर की कम सुनेंगे? क्या हम अपने

कई निर्णय बाह्य स्रोत करेंगे या पूर्व निर्धारित करना शुरू करेंगे?

मैं डेटा या शोध के मूल्य पर छूट नहीं दे रहा हूँ। परमेश्वर हमारा मार्गदर्शन करने के लिए अनुसंधान का उपयोग कर सकता है। 1990 के दशक में, मैंने चीनी गृह-कलीसिया आंदोलन के कई अगुओं को एक मिशन रणनीति विकसित करने में मदद करने के लिए सलाह दी। आंदोलन में वरिष्ठ नेता मिशन अनुसंधान को खारिज कर रहे थे। वे बताते थे कि घमण्ड ने दाऊद डेविड को जनगणना करने के लिए प्रेरित किया (2 शमूएल 24:1-25; 1 इतिहास 21:1-30)। मैं उन अवसरों की ओर इशारा करके जवाब दूँगा जब परमेश्वर ने जनगणना को मंजूरी दी थी (निर्गमन 30:11-16; गिनती 1:1-46; 4:1-49; 26:1-65; 2 इतिहास 2:17-18; 25:5; नहेम्याह 7:1-68)। तब मैं तर्क दूंगा कि मिशन अनुसंधान का सबसे महत्वपूर्ण कार्य यह पता लगाना है कि काम कहाँ *नहीं* हो रहा है।

मेरा लक्ष्य चीनी अगुओं को चीन में कई वंचित लोगों के समूहों के बारे में जानना था। मिशन रणनीति के प्रति उनका पारंपरिक दृष्टिकोण अगुवाई पाने के लिए परमेश्वर की खोज करनी चाहिए, फिर वहाँ जाना जहाँ परमेश्वर ने उन्हें बताया कि उन्हें जाना चाहिए। लेकिन एक समस्या थी। वे इन पहुँच से बाहर अधिकांश लोगों के समूहों के अस्तित्व से अनभिज्ञ थे। ऐसी जगह पर जाना मुश्किल है जिसके बारे में आप नहीं जानते हों। एक बार जब उन्हें इन अछूते समूहों के बारे में पता चला, तो उन्हें लगने लगा कि परमेश्वर वहाँ उन तक जाने के लिए बुला रहा है। डेटा ने उन्हें परमेश्वर को और अधिक पूरी तरह से सुनने में मदद की।

सवाल यह नहीं है कि हमने परमेश्वर से जो कुछ भी सुना है उसके आधार पर निर्णय लेना चाहिए। बेशक हमें क ऐसा करना चाहिए। लेकिन परमेश्वर अनुसंधान और बुद्धिमान योजना सहित कई माध्यमों से संचार करता है। जिस तरह वह उन लोगों को अधिक ज्ञान देता है, जो उसके वचन का परिश्रमपूर्वक अध्ययन करते हैं, वह उन लोगों को ज्ञान का संचार करता है, जो अपने निर्णयों के लिए प्रार्थना और सावधानीपूर्वक शोध दोनों को समर्पित करते हैं। योजना बनाना कोई बुरी बात नहीं है। सवाल यह है कि क्या हम अपनी योजना पर भरोसा करेंगे या भरोसे की योजना बनाएँगे। हमें परमेश्वर पर भरोसा है, अपनी योजना पर नहीं।

हम ऐसे समय में रहते हैं जो हमें निर्देशित अधिकांश संचारों में से तुरंत चुनाव करने और उनकी अनादर करने के लिए प्रेरित करता है। जब मैं अपना मेल देखता हूँ, तो लिफाफे के बाहरी भाग के शीघ्र अध्ययन के आधार पर, मैं इसे खोले बिना ही उसमें से अधिकांश को कूड़ेदान में फेंक देता हूँ। मैं अपने ईमेल के साथ भी ऐसा ही करता हूँ, भेजनेवाले और विषय पंक्ति के स्कैन के आधार पर इसका अधिकांश भाग हटा देता हूँ। मेरे पास यह सब पढ़ने का समय नहीं है। यह अच्छा है, आवश्यक भी है। लेकिन मुझे परमेश्वर के संचार के साथ उसी तरह व्यवहार करने की प्रवृत्ति के खिलाफ लड़ना चाहिए। जब परमेश्वर बोलता है- अर्थात चाहे बाइबल में या अपने आत्मा के व्यक्तिगत् उकसाने के द्वारा तो-मुझे चुनने को रोकने और वह जो कुछ भी कहता है उस पर पूरी तरह से ध्यान देने की आवश्यकता

है। मुझे अपने आप धीमा करने के लिए, एक साथ अनेक काम बंद करने और उसे अपना पूरा ध्यान देने की जरूरत है।

शिष्यत्व में, हमारे पास आने वाली जानकारी चुनाव करने के लिए सांस्कृतिक पद्धतियों को सुधारने की आवश्यकता है। हमें सोचने और संवाद करने के उन तरीकों को बहाल करना चाहिए जो हमें परमेश्वर से सुनने के लिए तैयार करते हैं क्योंकि वह हमसे व्यक्तिगत्, समय पर, आधिकारिक और प्रभावशाली तरीकों से बात करता है। हम पवित्रशास्त्र के साथ, एक दूसरे के साथ और प्रार्थना में बातचीत के तरीके स्थापित करके ऐसा कर सकते हैं जो परमेश्वर के संचार के इन पहलुओं को उजागर करते हैं। इस पुस्तक के शेष भाग में उस लक्ष्य को पूरा करने में हमारी मदद करने के लिए छोटे समूहों, व्यक्तिगत् शिष्यत्व और व्यक्तिगत् मनन की आदतों के बारे में सुझाव शामिल हैं।

लेकिन प्रचार करते समय, हमें इस तरह से वार्तालाप करने की ज़रूरत है जो मौजूदा संस्कृति में प्रभावी ढंग से संचार करे। *हमें सुसमाचार प्रचार में समायोजन करने और शिष्य बनाने में सुधार करने की आवश्यकता है।* हमें ऐसे तरीके से प्रचार करने की ज़रूरत है जो उन लोगों के लिए समझ में आए जिनसे हम बात कर रहे हैं - जो उनके आयु समूह और संस्कृति के अनुकूल हो। हम लोगों से उन तरीकों से संवाद नहीं कर सकते हैं जो वे प्राप्त करने में सक्षम या इच्छुक नहीं हैं। इसमें निहिति संदेश नहीं बदलता है, लेकिन इसे संप्रेषित करने के साधनों को लगातार समकालीन संस्कृति के अनुकूल बनाया जाना चाहिए। देहधारी होने का तात्पर्य यही था।

प्रेरितों के काम 17 एक उदाहरण प्रदान करता है, जैसे पौलुस दो अलग-अलग सुसमाचारवादी उपदेश देता है। पहला (प्रेरितों के काम 17:1-4) थिस्सलुनीके में यहूदियों को संबोधित है। इस संदेश में उसका तर्क है कि यीशु मसीहा के संबंध में पुराने नियम के वायदों को पूरा करता है। अपने दूसरे सुसमाचार संदेश में (प्रेरितों के काम 17:22-32), पौलुस यूनानी दार्शनिकों की एक सभा से बात कर रहे हैं। वहाँ उसने मसीहा या पुराने नियम का उल्लेख नहीं किया है। इसके बजाय, वह एथेंस में देखी गई एक वेदी के बारे में बात करके शुरुआत करते हैं - परमेश्वर की एक अज्ञात् वेदी। फिर उसने एक यूनानी कवि को उद्धृत करते हुए तर्क दिया कि एक परमेश्वर है, सभी का निर्माता, जिस पर हम सभी निर्भर हैं। वह यीशु के सामने आने वाले न्याय के साथ समापन करता है, जो मृतकों में से जी उठा था।

पौलुस दो अलग-अलग सुसमाचार संदेश देता है क्योंकि वह दो अलग-अलग दर्शकों से बात कर रहा है। वह अपने संदेश को उस संस्कृति के अनुरूप ढालता है जिसमें वह बात कर रहा है। सुसमाचार प्रस्तुत करने में, हमें भी ऐसा ही करना चाहिए। मूलतः, हमें संस्कृति की शैली में सुसमाचार का प्रस्तुत करना चाहिए।

हालाँकि, एक बार जब लोग शिष्यों के रूप में राज्य में प्रवेश कर लेते हैं, तो हमें उन्हें सुधारने की आवश्यकता होती है। हमें उन्हें परमेश्वर के बातों का जवाब

देने के लिए प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है, न कि संस्कृति के अनुसार, बल्कि उस शैली में जिसमें परमेश्वर बात करना चुनते हैं। हमें उन्हें सुनने के नए तरीके में प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है ताकि वे परमेश्वर की बातों को उस तरीके से प्राप्त कर सकें जिस तरह से वह चाहते हैं: अर्थात् व्यक्तिगत्, आधिकारिक और आज्ञाकारी कार्यवाही की प्रतिक्रिया के लिए। निम्नलिखित अध्यायों में हम इस बारे में बात करेंगे कि यह कैसे करना है - कैसे प्रशिक्षित करना और शिष्य बनाना है जो लोगों को परमेश्वर के वचन को सीखने, करने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए बनाया गया है।

क्योंकि लोग उन पर निर्देशित अधिकांश बातों को का चुनाव करने और अनदेखा करने के आदी हैं, ऐसे किसी व्यक्ति को शिष्य बनाना लगभग असंभव है जिसने मसीह की प्रभुता को स्वीकार नहीं किया है। हम उन्हें परमेश्वर के वचन से कुछ सिखाते हैं, और वे वही चुनते हैं जिसे वे लागू करेंगे। यह बाइबल का शिष्यत्व नहीं है।

उन्हें सूचना देने और कार्यवाही के बीच संबंध बहाल करने की आवश्यकता है। उन्हें परमेश्वर जो कहते हैं उसे करना सीखना होगा। उन्हें परमेश्वर की बातों की व्यक्तिगत् और संबंधपरक और आधिकारिक प्रकृति को समझने की आवश्यकता है। उन्हें अपनी व्यक्तिगत् छवि और केन्द्र को प्रबंधित करने के तरीके के रूप में अपने स्वयं की बातों के बारे में सोचना बंद करना होगा, और इसके बजाय यह सोचना होगा कि वे परमेश्वर के लिए सम्मान और महिमा कैसे ला सकते हैं। इनमें से कुछ भी पूर्व निर्णय के बिना नहीं हो सकता कि यीशु प्रभु हैं और हमारी आज्ञाकारिता के योग्य हैं।

प्रसिद्ध शिक्षक जॉन डेवे ने कहा है कि, "किसी पाठ की सामग्री सीखने के बारे में सबसे कम महत्वपूर्ण चीज़ है।" दूसरे शब्दों में, कोई कैसे सीखता है, यह महत्वपूर्ण है। तकनीक विचारधारा और दर्शन और व्यवहार को प्रभावित करती है। हम बाद के अध्यायों में इन आवश्यक अनुकूलन को बनाने में मदद करने वाले साधनों के बारे में अधिक जानेंगे।

प्रार्थना

हे प्रभु, आप मेरी तत्काल, पूर्ण और संपूर्ण हृदय से आज्ञाकारिता के योग्य हैं। आपका वचन ही मेरा आदेश है। मुझे उस तरह से जीने में मदद करें। मुझे आने वाले बातों का चुनाव करने, मूल्यांकन करने, अनदेखा करने और ख़ारिज करने की आदत है। मेरी मदद करें कि मैं आपके साथ ऐसा कभी न करूँ। जिस संस्कृति में मैं रहता हूँ उसे समझने के लिए मुझे बुद्धि दीजिए। मुझे दिखाओ कि मैं अपने सुसमाचार को ऐसे तरीके से कैसे साझा करूँ जो सत्य, समझने योग्य और प्रेरक हो। फिर, उन शिष्यों को प्रशिक्षित करने में मेरी सहायता करें जो आपके वचन को वैसा मानते हैं, जैसा उन्हें करना चाहिए।

प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें, फिर प्रार्थना करें और परमेश्वर से पूछें कि वह आपसे क्या सीखना और कराना चाहता है। शांत होकर सुनें।

अपनी डायरी की समीक्षा करें। क्या आपकी कोई पिछली प्रतिज्ञाएँ हैं जिन्हें आपने पूरा नहीं किया है? यदि आवश्यक हो, तो संशोधित समापन तिथियाँ निर्धारित करें।

1. मैं परमेश्वर की बातों पर कैसे प्रतिक्रिया दूँ - चाहे वह लिखित वचन हो या व्यक्तिगत् संकेत? क्या मैं चुनाव करता हूँ, मूल्यांकन करता हूँ और चुनता हूँ कि क्या लागू करना है, या क्या मैं तुरंत, पूरी तरह से और पूरे मन से इसका पालन करता हूँ?

2. क्या मैं यीशु के अन्य अनुयायियों को परमेश्वर से बातों को छानने के उनके सांस्कृतिक रूप से सीखे गए तरीके को सुधारने में मदद करता हूँ?

3. क्या मैं सुसमाचार प्रचार में लोगों के पसंदीदा बात करने के तरीके को समायोजित करता हूँ?

4. मैं उन दो क्षेत्रों में कैसे सुधार कर सकता हूँ?

5. इस अध्याय के प्रत्युत्तर में परमेश्वर मुझसे कौन-सी विशिष्ट कार्य करवाना चाहता है? (उन्ह अपने डायरी में लिख ले और अपने कैलेंडर में नियत कर ले।)

6. परमेश्वर चाहता है कि जो मैंने सीखा है उसे किसके साथ (कम से कम एक नाम) साझा करूँ?

प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको इन प्रतिबद्धताओं का पालन करने में सक्षम बनाए और उन लोगों के दिलों को तैयार करे जिनके साथ आप ज्ञान साझा करना चाहते हैं।

भाग 3

व्यावहारिक अवधारणाएँ और धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास वाले जीवन में विकास के लिए साधन

12 मसीह उद्धारकर्ता और प्रभु दोनों हैं

उद्धार के लिए परमेश्वर की बुलाहट, कीमत की परवाह किए बिना उसका अनुसरण करने की बुलाहट है और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से रूपांतरित और सक्षम होने की बुलाहट है।

> अब बड़ी भीड़ उसके साथ चल रही थी; और उस ने घूम कर उन से कहा, "यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चों और भाइयों और बहिनों वरन् अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता। और जो कोई अपना क्रूस न उठाए, और मेरे पीछे न आए, वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता।"
>
> -लूका 14:25-27

मत्ती 28:18-20 में महान आदर्श के तीन मुख्य भाग हैं। पहला यीशु की सामर्थ्य और अधिकार का वर्णन है: "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।" दूसरा हमारा सेवकाई या पेशे का विवरण है: "इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ।" तीसरा भाग यीशु की उपस्थिति का वायदा है: "और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ।"

हमें पहला और आखिरी भाग बहुत पसंद है। हमें यीशु की सामर्थ्य, यीशु के अधिकार और उस वायदे के बारे में सुनना अच्छा लगता है कि यीशु हमारे साथ है। मध्य भाग-सेवकाई-कम लोकप्रिय है। यह बहुत काम और जिम्मेदारी जैसा लगता है। लेकिन हम पहले और आखिरी हिस्से का अनुभव नहीं कर सकते-हम यीशु की सामर्थ्य और उपस्थिति का अनुभव *कभी नहीं* कर पाएँगे-जब तक कि हम दूसरा हिस्सा नहीं कर रहे हैं, वह काम जो यीशु ने हमें दिया था।

आधुनिक मिशनरी आंदोलन के जनक विलियम कैरी ने कहा कि महान आदेश का

वायदा आज्ञा के साथ व्यापक है। दूसरे शब्दों में, यदि यीशु का वायदा उसके सभी अनुयायियों के लिए था, तो उसकी आज्ञा भी थी। आज, कई मसीह लोग मसीह जीवन को यीशु के साथ शांत सम्मिलित जीवन के रूप में देखते हैं। वे यीशु के निकट कैसे आना है यह जानने के लिए मरियम और मार्था की कहानी देखते हैं (लूका 10:38-42)। वे यीशु के चरणों में बैठकर और उनकी शिक्षाएँ सुनकर उनके साथ घनिष्ठता का अनुभव करना चाहते हैं।

ये सच है, लेकिन अधूरा है। यह सच है कि सेवा से हमारा उद्धार नहीं हो सकता और हमें प्रभु जो कहते हैं उसे लगातार और ध्यान से सुनना चाहिए। परन्तु यदि यीशु कहता है, "जाओ! चेले बनाओ!" तब बैठे रहना सुनना नहीं है-बाइबल के अर्थ में नहीं। यीशु के वचन केवल हमारे मनोरंजन और आराम के लिए नहीं हैं, बल्कि हमारी दिशा और कार्यवाही के लिए भी हैं। इस तरह हम उसके प्रति अपना प्रेम दिखाते हैं।

पुस्तक के इस भाग में, मैं धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास वाले जीवन का समर्थन करने वाले तरीके विकसित करने में मदद करने के लिए कुछ साधन और अभ्यास प्रस्तुत करूँगा। कुछ लोग शिकायत करते हैं कि ऐसे तरीके, आदतें या अनुशासन घातक और बेजान हैं, और वे परमेश्वर और दूसरों के साथ जीवंत और महत्वपूर्ण रिश्ते में हस्तक्षेप करते हैं। वह आपत्ति तर्कहीन है, और यह मेरा अनुभव नहीं है। बल्कि, ये तरीके या अनुशासन एक नींव रखते हैं जिस पर परमेश्वर वह बनाता है जो वह हमारे जीवन के लिए चुनता है। जैसे ही हम उसके वचन सीखते हैं, आज्ञाकारिता की आदतें बनाते हैं, प्रार्थना में उसे खोजना सीखते हैं, और जो हम सीखते हैं उसे दूसरों के साथ साझा करते हैं, हम उसकी आवाज सुनने और उसका काम करने के लिए खुद को तैयार कर रहे हैं।

इसे चांदी के बर्तनों के साथ और निर्धारित भोजन समय पर खाने के बारे में सोचें। क्या खाना उबाऊ और नीरस है क्योंकि हम हमेशा चाकू, काँटे और चम्मच से खाते हैं? क्या भोजन निरर्थक हो जाता है क्योंकि हम एक ही पात्रों का बार-बार उपयोग करते हैं? क्या नाश्ते, दोपहर के भोजन और रात के खाने के अंतहीन चक्र की जीवन-खत्म करने वाली पुनरावृत्ति के कारण हम खाने में रुचि खो देते हैं? क्या हम इन खोखली आदतों के कारण भोजन का आनंद लेना बंद कर देते हैं? नहीं, चाँदी के बर्तन और भोजन का समय केवल भोजन को हमारे मुँह तक पहुँचाता है।

इस खंड में पेश किए गए साधन और अवधारणाएँ जीवन से उत्साह को खत्म नहीं करती हैं; बल्कि, वे व्यक्तिगत्-जीवन अनुशासन की नींव प्रदान करते हैं, जो हमें परमेश्वर की बुलाहट को सुनने और उसका जवाब देने के लिए तैयार करते हैं। वे हमें परमेश्वर को सुनने, उस जीवन का अनुसरण करने, जो वह हमारे लिए चाहता है कि, उसे और अधिक गहराई से जानने, उसे अधिक प्रभावी ढंग से जानने, और उसे अधिक जुनून से प्रेम करने में अधिक इरादे रखने में मदद करते हैं। आइए हम संत जेरोम की तरह वैचारिक रूप से अपना जीवन जीने का प्रयास करें, ताकि हम जिसे प्रेम करते हैं उसे प्रसन्न कर सकें।

हमें सुसमाचार को सही ढंग से समझने से शुरुआत करनी चाहिए। अक्सर इसका प्रचार इस तरह से किया जाता है जिससे हमें अधिकतम लाभ होता है और आवश्यक प्रतिबद्धता कम हो जाती है। इस पद्धति में गिरना आसान है। हम पापों की क्षमा, परमेश्वर के साथ शांति, अनन्त जीवन की आशा और आशीष के बारे में बात करते हैं। वे सभी बातें सच हैं। लेकिन हमारा सुसमाचार तब तक पूरा नहीं होता जब तक हम प्रतिबद्धता, बलिदान और यीशु को अन्य सभी से आगे रखने की बात नहीं करते।

जब यीशु ने उपदेश दिया, तो वह इन चीज़ों के बारे में बहुत स्पष्ट था। यीशु के विचार में, स्वर्ग का राज्य पहली प्राथमिकता की मांग करता है:

> स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए धन के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पाया और छिपा दिया, और मारे आनन्द के जाकर अपना सब कुछ बेच दिया और उस खेत को मोल ले लिया।
>
> फिर स्वर्ग का राज्य एक व्यापारी के समान है जो अच्छे मोतियों की खोज में था। जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला तो उसने जाकर अपना सब कुछ बेच डाला और उसे मोल ले लिया। (मत्ती 13:44-46)

लूका 14:25-35 हमें यीशु की सोच का एक उल्लेखनीय उदाहरण देता है। यीशु ने अपने अनुयायियों की एक बड़ी भीड़ को आकर्षित किया था क्योंकि उसने शिक्षा दी थी, चँगा किया था और अन्य आश्चर्यकर्म किए थे। यीशु फिर उनकी ओर मुड़ा और कुछ चौंकाने वाली बात कही, मानो वह भीड़ को वहाँ से चले जाने की कोशिश कर रहा हो:

> यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चों और भाइयों और बहिनों वरन् अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता; और जो कोई अपना क्रूस न उठाए, और मेरे पीछे न आए, वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता। (लूका 14:26-27)

संक्षेप में, यीशु उनसे कह रहा है, "मेरे पीछे चलने का निर्णय लेने से पहले, मोल पर ध्यान से विचार करें।" उसने अपने श्रोताओं से कहा, उसका अनुसरण करने का अर्थ है कि, माता-पिता, पति, पत्नी और बच्चों सहित उनके सबसे घनिष्ठ मानवीय रिश्तों की तुलना में उसके साथ संबंध बनाए रखना कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। इसका अर्थ है कि हर दिन उसके लिए मरने के लिए तैयार रहना, या किसी भी समय अपनी सभी सांसारिक संपत्ति को त्याग देना (14:33)। अन्यथा, यीशु ने सुझाव दिया, वे उसके अनुयायियों के रूप में बिल्कुल बेकार थे - कूड़े के ढेर जीतने भी योग्य नहीं थे पर्याप्त नहीं थे (14:35)।

वाह! यह अनुयायियों को भर्ती करने का एक गंभीर तरीका लगता है। लेकिन यीशु एक विशेष प्रकार के अनुयायी की तलाश में है - जो उसे जगत में सबसे महत्वपूर्ण जन के रूप में पहचानते हैं। यहाँ, यीशु उन लोगों के इरादों की जाँच कर रहा था

जो उसका अनुसरण कर रहे थे। क्या वे मनोरंजन चाह रहे थे? शिक्षा? चँगाई? मुफ़्त भोजन? या, जो वह कह रहा था और कर रहा था, उसके कारण क्या उन्होंने पहचान लिया था कि वह कौन था: हर चीज़ का निर्माता और परमेश्वर? यदि बाद वाला मकसद मौजूद था, तो उनकी मांगें पूरी तरह से उचित थीं, यहाँ तक कि स्पष्ट भी।

मसीही विश्वासी आज अक्सर सुसमाचार प्रचार के कार्य को बिगाड़ देते हैं। हम कहते हैं कि सुसमाचार की अच्छी खबर यह है कि हम अपनी जरूरतों को पूरा कर सकते हैं और धन्य हो सकते हैं। यह सच है, लेकिन यह दूसरे स्थान पर मिलने वाला लाभ है। वास्तविक अच्छी खबर यह है कि हम सारी सृष्टि के अवर्णनीय परमेश्वर - अच्छे, परिपूर्ण, दयालु और प्रेम करने वाले परमेश्वर को जान सकते हैं, उसकी सेवा कर सकते हैं और उसके साथ घनिष्ठ संबंध बना सकते हैं।

क्योंकि हम अक्सर निम्न-स्तर वाले सुसमाचार का प्रचार करते हैं, इसलिए परमेश्वर के पास आने वाले कई लोग सोचते हैं कि परमेश्वर के लिए वे जो कुछ भी करता है हैं बलिदान करता है वह उल्लेखनीय है या विशेष प्रशंसा या श्रेय के योग्य है। वे अपने जीवन का मूल्यांकन अपनी खुशी या आराम के आधार पर करते हैं। वे चेले होने की बात को पूरी तरह से भूल जाते हैं। एक सच्चे शिष्य के लिए, जीवन का हर पहलू उसे जानने और उसे ज्ञात कराने के अवसर पर केंद्रित होता है - उसका आदर करना, महिमा करना, प्रसन्न करना, सेवा करना और उसमें प्रसन्न होना।

एक सामान्य तरीका यह है कि लोगों को जितनी जल्दी हो सके "मसीह के लिए निर्णय लेने" के लिए आमंत्रित किया जाए, और उसके बाद, हल्के से और धीरे-धीरे, समय के साथ उस निर्णय के निहितार्थ को प्रकट किया जाए। हम चेले होने के मूल्य को धीरे-धीरे सामने लाते हैं ताकि लोग डरें नहीं। अंततः, जैसे ही नए विश्वासी मसीह को जानने के सौभाग्य की सराहना करने लगते हैं, हम उन्हें बाकी की बची कहानी बताते हैं।

कभी-कभी यह काम करता है, लेकिन कई मामलों में नए विश्वासी या तो उपभोग-प्रेरित मसीही विश्वासी बन जाते हैं या चर्च छोड़ देते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है, जैसे उन्हें "प्रलोभन-से-भरी" रणनीति के अधीन किया गया है। परिणामस्वरूप, हमारी कलीसियाएँ उपभोग-प्रेरित मसीही विश्वासियों से भरी हुईं हैं, जिनके लिए व्यक्तिगत् प्राथमिकता – परमेश्वर का राज्य नहीं - अपितु निर्णायक मूल्य है। या तो उन्होंने वास्तव में कभी भी अपना जीवन परमेश्वर को नहीं दिया है या उन्होंने स्वार्थ और आलस्य की अपरिपक्व स्थिति में रहना चुना है।

परिणामस्वरूप, हमारी कलीसियाएँ भले ही भरी हुईं हों, लेकिन लेकिन वे गुनगुनी, असर्मपित विश्वासियों से भरे हुए हैं। यह हमारी कलीसियओं और दुनिया हमें कैसे देखती है, दोनों को नुकसान पहुँचाता है। यह एक प्रवृत्ति को भी प्रोत्साहित करता है, यहाँ तक कि उन लोगों में भी जो विकास करना चाहते हैं,

पवित्र आत्मा के सशक्तिकरण के बजाय अपनी ताकत से ऐसा करने के लिए - क्योंकि क्रमिक परिवर्तन और सुधार मानवीय प्रयास की पकड़ में प्रतीत होते हैं।

मैं इस दृष्टिकोण को निम्नलिखित तरीके से रेखांकित कर सकता हूँ:

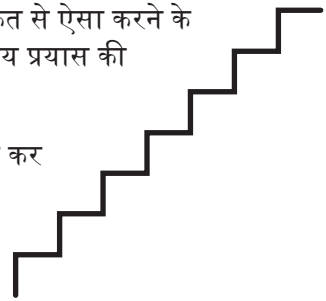

इस दृष्टिकोण की विशेषता प्रवेश की कम बाधा और फिर विकास का एक लंबा, क्रमिक तरीका है। इस जीवन और अगले जीवन के लिए मसीही होने के लाभों पर जोर दिया गया है; व्यक्तिगत् त्याग और प्रतिबद्धता के संदर्भ में मूल्य को कम करके आंका गया है, कम से कम शुरुआत में।

इसके विपरीत, लूका 14 में यीशु का दृष्टिकोण इस तरह दिखता है:

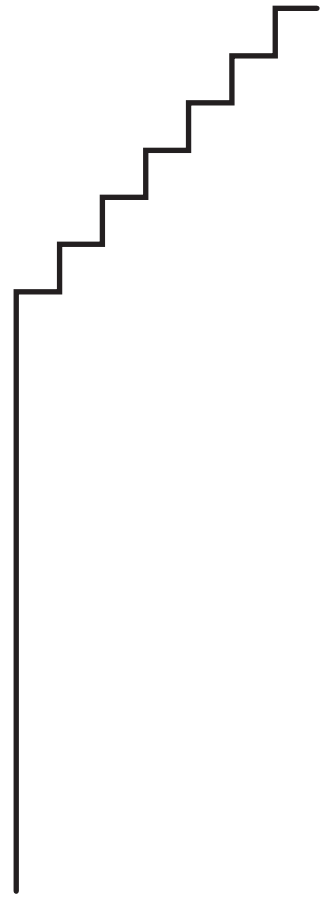

यीशु ने प्रवेश के लिए एक उच्च, मानवीय रूप से असंभव बाधा प्रस्तुत किया जिसके बाद विकास का एक लंबा, क्रमिक तरीका आया। उसने आवश्यक अप्रतिबंधित प्रतिबद्धता पर ध्यान केंद्रित करके उच्च-प्रवेश बाधा को समझाया। वह वस्तुतः अप्रतिबद्ध लोगों को दूर भगाना चाहता था। उसकी "कलीसियी" अपेक्षाकृत खाली थी (जिन हजारों लोगों को उसने उपदेश दिया, उनमें से केवल 120 ऊपरी कोठरी में इंतजार कर रहे थे प्रेरितों के काम 1:15), लेकिन जो कुछ बचे थे, वे मूल्य चुकाने को तैयार थे।

जब उच्च-प्रवेश बाधा स्पष्ट हो जाती है, तो परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने या यीशु के अनुयायी के रूप में जीने की सामर्थ्य के स्रोत के बारे में शुरू से ही कोई सवाल नहीं उठता है। कोई भी, अपनी ताकत से, आवश्यक स्तर का बलिदान नहीं दे सकता। इसके विपरीत, राज्य के अनुसार जीवन केवल पवित्र आत्मा की सक्षमता से ही संभव है।

इसके अलावा, शुरू से ही स्पष्ट है कि किसी एक व्यक्ति के जीवन में सब कुछ राजा और उसके राज्य पर केंद्रित होना चाहिए और उसे समर्पित होना चाहिए। परमेश्वर की सारी दयालुता, अनुग्रह और महानता के लिए कृतज्ञता, प्रेम और बलिदान के साथ प्रतिक्रिया देने पर जोर दिया गया है। एक व्यक्ति को बाद में

आश्वस्त होने की आवश्यकता नहीं है कि उनके जीवन के कुछ ऐसे अतिरिक्त पहलू हैं जिन्हें परमेश्वर को समर्पित कर देना चाहिए। उन्होंने शुरुआत में ही यह निर्णय ले लिया। उन्होंने पहले ही निर्णय ले लिया है कि जब भी वे परमेश्वर की इच्छा को समझेंगे, तो पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से उसका पालन करेंगे।

इन दोनों तरीकों के बीच का अंतर भजन संहिता 32:8-9 में वर्णित है:

> मैं तुझे बुद्धि दूँगा, और जिस मार्ग में तुझे चलना होगा उस में तेरी अगुवाई करूँगा; मैं तुझ पर कृपादृष्टि रखूँगा और सम्मति दिया करूँगा।
> तुम घोड़े और खच्चर के समान न बनो जो समझ नहीं रखते,
> उनकी उमंग लगाम और रास से रोकनी पड़ती है।
> *अन्यथा* वे आपके निकट नहीं आएँगे।

अपनी आँखों से मार्गदर्शन करने वाले परमेश्वर की तस्वीर एक अच्छी तरह से प्रशिक्षित कुत्ते के मालिक के समान है - जो अपने मालिक की इच्छा के प्रति इतना अभ्यस्त हो जाता है कि केवल एक नज़र या इशारा कुत्ते को कार्यवाही में भेजने के लिए पर्याप्त है। यह घोड़े या खच्चर के विपरीत है, जो अच्छी तरह से प्रशिक्षित नहीं है और केवल बल के प्रति प्रतिक्रिया करता है। जिन लोगों ने अपने जीवन में परमेश्वर के अधिकार की पूर्णता को स्वीकार नहीं किया है वे अप्रशिक्षित खच्चर के समान हैं। उन्हें अनुपालन के लिए बाध्य या आश्वस्त किया जाना चाहिए। उन्हें मार्गदर्शन के लिए दाम और दंड वाले दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। एक व्यक्ति जो पूरे जीवन पर प्रभु के पूर्ण अधिकार क्षेत्र को पहचानता है, वह बस दिशा की प्रतीक्षा कर रहा है, और स्वामी के थोड़े से संकेत पर ध्यान दे रहा है।

लूका 14 और हमारे सामान्य तरीकों के बीच एक और विरोधाभास नीचे दिए गए चित्र द्वारा दर्शाया गया है। दोनों बाएँ से दाएँ जाने वाली समय रेखाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। क्रूस उस पड़ाव को दर्शाता है जिस पर एक व्यक्ति खुद को मसीह के साथ पहचानता है। वह पड़ाव जहाँ दो रेखाएँ एक में विलीन हो जाती हैं, यह वह क्षण होता है जब एक व्यक्ति मसीह के अधिकार और पूरे जीवन पर शासन को पहचानता है।

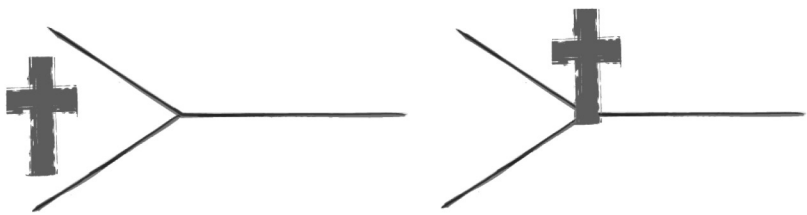

बाईं ओर के चित्र में, व्यक्ति को परमेश्वर द्वारा अपेक्षित किसी भी बदलाव या बलिदान के प्रति आश्वस्त होना चाहिए। दाईं ओर के चित्र में, विश्वासी ने पहले ही तय कर लिया है कि परमेश्वर जहाँ भी ले जाएँ, उसका अनुसरण करेगा।

व्यावहारिक परिणाम गहरे होते हैं और व्यवहार और दृष्टिकोण में लगातार प्रकट होते हैं। यही मुख्य कारण है कि दुनिया लगातार कलीसिया पर पाखंड का आरोप लगा रही है - क्योंकि यह सच है।

हाल के दशकों में, "प्रभुत्व वाले उद्धार" के संबंध में सुसमाचारवादी विश्वासियों की मण्डलियों में एक बहस छिड़ गई है। सवाल यह है कि क्या यीशु को प्रभु या स्वामी के रूप में मानने का निर्णय लिए बिना किसी एक व्यक्ति को बचाया जाना संभव है। मैं यहाँ उस बहस को सुलझाने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। यह वह प्रश्न नहीं है जो हम इस पुस्तक में पूछ रहे हैं। "प्रभुत्व वाले उद्धार" संबंधी बहस में भाग लेने वाले संक्षेप में पूछ रहे हैं, "एक व्यक्ति कम से कम क्या कर सकता है और फिर भी बचाया जा सकता है?" या "क्या यह पर्याप्त है, यदि वे यीशु का अनुसरण करने के लिए प्रतिबद्ध हुए बिना, उसके ईश्वरत्व, मृत्यु और पुनरुत्थान में विश्वास करते हैं?" मेरे लिए, यह गलत प्रश्न प्रतीत होता है। हमें यह नहीं पूछना चाहिए, "हम कम से कम क्या कर सकते हैं?" लेकिन "मैं सबसे अधिक कैसे कर सकता हूँ? मैं यीशु की सर्वोत्तम सेवा कैसे कर सकता हूँ? मैं एक चेला कैसे बन सकता हूँ, और उस प्रकार के चेले कैसे बना सकता हूँ, जिस प्रकार यीशु चाहता है?"

पवित्रशास्त्र से यह बहुत स्पष्ट है कि हमारे लिए यीशु का लक्ष्य कम से कम कुछ करना और फिर भी स्वर्ग तक पहुँचना नहीं है। वह हमारे जीवन में क्रांति लाना चाहता है। वास्तव में, वह यह बदलने के लिए मर गया कि हम कैसे और क्यों जीते हैं: "और वह इस निमित्त सब के लिये मरा कि जो जीवित हैं, वे आगे को अपने लिये न जीएँ परन्तु उसके लिये जो उनके लिये मरा और फिर जी उठा" (2 कुरिन्थियों 5:15)। और जैसे ही हम शिष्य बनाते हैं, हमारा लक्ष्य उन्हें गहराई से परिवर्तित, आज्ञाकारी जीवन में मार्गदर्शन करना है: "सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ,... और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ" (मत्ती 28:19-20)।

उच्च-प्रवेश बाधा और निम्न-प्रवेश बाधा के तरीके के बीच एक व्यावहारिक अंतर इस बात में प्रकट होता है कि हम नए विश्वासियों के साथ कैसे अनुसरण करते हैं। निम्न- प्रवेश बाधा दृष्टिकोण में, नए विश्वासियों से लंबे समय तक बैठकर सीखने की अपेक्षा की जाती है। हम मानते हैं कि राज्य के सक्रिय राजदूत बनने से पहले उन्हें कुछ समय के लिए शिक्षण प्राप्त करने की आवश्यकता है। बाइबल पढ़ने, प्रार्थना करने और चर्च में जाने के माध्यम से आत्मिक ज्ञान लेने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। निष्क्रियता और उपभोग के एक तरीके के अनुरूप हैं।

उच्च- प्रवेश बाधा प्रतिमान में, अनुवर्ती कार्यवाही बहुत अलग है। तत्काल ध्यान नए विश्वासियों को उनके विश्वास के सक्रिय प्रचारक बनने के लिए तैयार करने पर है। उन्हें प्रचारक और कलीसियाई संस्थापक बनने के लिए तुरंत चुनौती दे दी जाती है। उनसे उन सौ लोगों की सूची बनाने के लिए कहा जा सकता है जिन्हें वे जानते हैं और फिर उनमें से पाँच लोगों का चयन करें, जिनके साथ वे तुरंत यीशु का अनुसरण करने के अपने निर्णय को साझा करेंगे। उन्हें सुसमाचार और एक

साधारण गवाही साझा करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है और फिर, शायद कुछ भूमिका-निभाने के अभ्यास के बाद, उनके द्वारा चुने गए पाँच लोगों के साथ बात करने के लिए बाहर जाने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। यदि उन पाँचों में से कोई भी विश्वास में आता है, तो उनके साथ भी वही अनुवर्ती तरीका लागू किया जाता है। यह सब हो सकता है *पहले दिन* एक नया विश्वासी मसीह का अनुसरण करने के लिए प्रतिबद्धता बनाता है! इस प्रतिमान में उनकी प्रगति का अनुवर्ती और मूल्यांकन आमतौर पर अड़तालीस घंटों के भीतर होता है।

हम निम्न- प्रवेश बाधा प्रतिमान के इतने आदी हो गए हैं कि इस प्रकार की तत्काल कार्यवाही असंभव लगती है। फिर भी हम बिल्कुल यही देखते हैं नए नियम के उदाहरण जैसे गिरासेनी में दुष्टात्मा (मरकुस 5:19-20), चुँगी लेने वाला लेवी (लूका 5:27-30), और कुएँ पर सामरी स्त्री (यूहन्ना 4:28-30)।

उच्च-बाधा दृष्टिकोण द्वारा स्थापित पद्धति यह है कि जो कुछ भी परमेश्वर एक विश्वासी को प्रकट करता है उसे तुरंत लागू किया जाना चाहिए और दूसरों के साथ साझा किया जाना चाहिए। यह तरीके लोगों के राज्य में प्रवेश करने के क्षण से ही अंकित हो जाता है और उसके बाद उनके जीवन को चित्रित करता है। वे एक अप्रशिक्षित खच्चर के बजाय एक अच्छी तरह से प्रशिक्षित कुत्ते की तरह रहना सीखते हैं। वे मानते हैं कि, राज्य के राजदूत के रूप में, उन्हें जीवन भर लोगों के लिए परमेश्वर की कृपा और प्रेम का वाहक बनने का सौभाग्य प्राप्त होगा। जीवन आशा से जिया जाता है, क्योंकि वे कभी नहीं जानते कि अगले मोड़ पर कौन सी नई चुनौती या रोमांच है। प्रभु में भरोसा प्रतिदिन निर्मित होता है, क्योंकि वे उसकी दैनिक दिशा को सुनते हैं और उसका जवाब देते हैं और लगातार नए तरीकों से उनके लिए उसकी पर्याप्तता का अनुभव करते हैं।

प्रार्थना

हे परमेश्वर, मैं उस प्रशिक्षित कुत्ते की तरह बनना चाहता हूँ जो उत्सुकता से आपकी नज़र का इंतजार कर रहा है, ताकि मैं पूंछ हिलाते हुए आज्ञाकारिता में तेजी से आगे बढ़ सकूँ। लेकिन मैं कभी-कभी खच्चर जैसा भी हो सकता हूँ। मेरा मन बदल। आप मेरी आज्ञाकारिता के पात्र हैं, और देरी या विरोध करने से मुझे कुछ हासिल नहीं होता। आज्ञाकारिता का मार्ग सच्चे आशीर्वाद का मार्ग है। जिद और अनिच्छा आपको न तो खुशी देगी, न फल्वंत्ता और न ही महिमा। मुझे खेद है। अपनी आत्मा से, मुझे सुनने के लिए कान और आज्ञा मानने के लिए एक हृदय दो।

प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें, फिर प्रार्थना करें और परमेश्वर से पूछें कि वह आपसे क्या सीखना और कराना चाहता है। शांत होकर सुनें।

अपनी डायरी की समीक्षा करें। क्या आपकी कोई पिछली प्रतिज्ञाएँ हैं जिन्हें आपने पूरा नहीं किया है? यदि आवश्यक हो, तो संशोधित समापन तिथियाँ निर्धारित करें।

1. क्या मैं परमेश्वर से सुनता हूँ और फिर निर्णय लेता हूँ कि आज्ञापालन करना है या नहीं, या क्या आज्ञाकारिता के प्रति मेरी प्रतिबद्धता पहले से ही मेरे मन और हृदय में तय हो गई है? मैं अपने जीवन में और अपने जानने वाले अन्य विश्वासियों के जीवन में बाद वाले दृष्टिकोण को कैसे बढ़ावा दे सकता हूँ?

2. क्या मैं "निम्न-प्रवेश बाधा" सुसमाचार या लूका 14 "उच्च-प्रवेश बाधा" सुसमाचार की घोषणा कर रहा हूँ? यीशु का बेहतर अनुकरण करने के लिए मुझे सुसमाचार को साझा करने के लिए कैसे समायोजित करना चाहिए?

3. जब मैं नए विश्वासियों से संपर्क करता हूँ, तो क्या मैं उन्हें तुरंत आज्ञा मानने और साझा करने के लिए उन्हें प्रशिक्षित कर रहा हूँ, या क्या मैं उन्हें धीमी रिति से सीखने के लिए प्रोत्साहित कर रहा हूँ?

4. इस अध्याय के प्रत्युत्तर में परमेश्वर मुझसे कौन-सी विशिष्ट कार्य करवाना चाहता है? (उन्ह अपने डायरी में लिख ले और अपने कैलेंडर में नियत कर ले।)

5. परमेश्वर चाहता है कि जो मैंने सीखा है उसे किसके साथ (कम से कम एक नाम) साझा करूँ?

प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको इन प्रतिबद्धताओं का पालन करने में सक्षम बनाए और उन लोगों के दिलों को तैयार करे जिनके साथ आप ज्ञान साझा करना चाहते हैं।

13 मसीह में ही हमारी विशेष निष्ठा है

प्रभु हमारे जीवन के प्रतिस्पर्धी पहलुओं में केवल सबसे बड़े नहीं होने चाहिए, बल्कि हमारे जीवन के हर क्षेत्र का परिभाषित विषय होने चाहिए।

> क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिये सब कुछ है। उसकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।
>
> -रोमियों 11:36

सँख्या *एक* सार्थक है। इसका तात्पर्य विशिष्टता, एकजुट होने और सर्वोच्चता से है। केवल एक ही सच्चा उत्तर है।

जब मैं बच्चा था, मैं दक्षिण कोरिया में रहता था। कोरिया के लोग बहुत प्रतिस्पर्धी लोग हैं और खेल के प्रति जुनूनी हैं। उस समय, जब आप कोई खेल देखते थे, तो आपको तुरंत पता चल जाता था कि प्रत्येक टोली में कौन सा खिलाड़ी सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि वह खिलाड़ी नंबर 1 रखता था। उस संदर्भ में, एक का मतलब था *सर्वश्रेष्ठ*। परमेश्वर के संदर्भ में, एक का अर्थ है *एक मात्र*। यह विशिष्ट है।

जब पवित्रशास्त्र के लेखक हमें बताते हैं कि परमेश्वर जलन रखने वाला है, जैसा कि वे कई बार करते हैं, तो उनके मन में विशिष्टता की भावना होती है। निर्गमन 34:14 में परमेश्वर यहाँ तक कहता है कि उसका नाम जलन रखने वाला है। जिस प्रकार विवाह का उद्देश्य अनन्य होना है, उसी प्रकार हमें भी विशेष रूप से उसी का होना है। किसी और की उपासना, भरोसा, विश्वास, प्रेम, सेवा, या महिमा नहीं की जानी चाहिए। परमेश्वर दूसरों के साथ भलाई नहीं करते, क्योंकि कोई पराया है ही नहीं। किसी भी मायने में उसकी तुलना किसी अन्य से नहीं की जा सकती। परमेश्वर सोचता है कि वह हमारी उपासना के 100 प्रतिशत योग्य है, और वह साझा करने को तैयार नहीं है।

> मैं यहोवा हूँ, मेरा नाम यही है;
> अपनी महिमा मैं दूसरे को न दूँगा और जो
> स्तुति मेरे योग्य है वह खुदी हुई मूरतों को न दूँगा। (यशायाह 42:8)

सिर्फ परमेश्वर पर भरोसा रखना उसे उतना ही प्रसन्न करता है जितना कि सिर्फ उसकी आराधना करना। जो कुछ भी हम चाहते हैं, प्रशंसा करते हैं, सेवा करते हैं, सराहना करते हैं, या उससे प्रेम करते हैं जो उसके अलावा अन्य बातें है, तो वह पश्चाताप करने योग्य बात है। यदि वह हमारे जीवन का एकमात्र उद्देश्य नहीं है तो हमारी सोच विकृत या अंधी हो जाती है।

भौतिकी में, वैज्ञानिक ईमानदारी से एक ग्रैंड यूनिफाइड थ्योरी अर्थात् महा-एकीकृत सिद्धांत की तलाश कर रहे हैं जो भौतिकी की सभी शाखाओं को एक सुसंगत और जुड़े हुए पूरे में बांध देगा। परमेश्वर ने पहले ही स्वयं को महा-एकीकृत वास्तविकता के रूप में प्रकट कर दिया है। कुलुस्सियों 1:15-20 में, यीशु को समस्त सृष्टि में दृश्य और अदृश्य दोनों के स्रोत, पालनकर्ता और उद्धारकर्ता के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

> क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएँ, क्या प्रधानताएँ, क्या अधिकार, सारी वस्तुएँ उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएँ उसी में स्थिर रहती हैं। (कुलुस्सियों 1:1617-)

ध्यान दें कि यह अनुच्छेद क्या कहता है: सभी चीजें मसीह के द्वारा, उसी से और उस ही के लिए बनाई गई थीं। वस्तुतः वह हर चीज़ का स्रोत और उद्देश्य है।

व्यवस्थाविवरणमें, उस अनुच्छेद में जिसे यहूदी *शेमा*कहते हैं, परमेश्वर अपने लोगों से कहता है कि केवल वह ही परमेश्वर है और उन्हें सभी से प्रेम करने का आदेश देता है उनका अस्तित्व (व्यवस्थाविवरण 6:4-9)। उनसे कहा जाता है कि वे परमेश्वर को अपने दिमाग में सबसे आगे रखने के लिए शरीरिक अनुस्मारक का उपयोग करें - जब वे घर पर हों या घर से दूर हों, अपने लिए और दूसरों के लिए, सार्वजनिक और निजी तौर पर, उठते समय और जब सोने के लिए जा रहे हैं। उसकी योग्यता और महानता उनका निरंतर ध्यान होना चाहिए, जिस समुद्र में वे गोते लगाते हैं।

1600 के दशक में, भिक्षु भाई लॉरेंस ने "परमेश्वर की उपस्थिति का अभ्यास करने" की बात की, जिसका अर्थ था परमेश्वर की उपस्थिति और उसके साथ बातचीत के बारे में निरंतर जागरूकता का होना। मेरे लिए, इस निरंतर संबंध का अर्थ जीवन को उसके दृष्टिकोण से देखना है। अपने आप को उसके सामने बैठे हुए कल्पना करने के बजाय, मैं उसकी गोद में बाहर की ओर मुख करके बैठने की कल्पना करता हूँ। मैं उसकी आवाज को मेरे ध्यान में वह सब लाते हुए सुनता हूँ, जिसे वह लाना चाहता है।

परमेश्वर पर यह विशेष ध्यान अन्य लोगों के साथ मेरे संबंधों को प्रभावित करता है। मैं इसे दो शीशे वाले चश्मे की एक जोड़ी की तरह देखता हूँ। पहला लेंस उन लोगों पर केंद्रित है, जिनके साथ मेरे संबंध चल रहे हैं (परिवार, दोस्त, पड़ोसी, सहकर्मी, सहपाठी)। दूसरा उन लोगों से संबंधित है जो मेरी नियमित संबंधपरक पद्धतियों से बाहर हैं।

इस पहले शीशे के साथ, परमेश्वर मुझे मेरे करीबी रिश्तों पर केंद्रित करता है। परमेश्वर ने हममें से प्रत्येक को अपने परिवार, मित्रता और सामाजिक दायरे में एक कारण से स्थान दिया है। वह हमारा उपयोग उसके सामने अपनी महिमा करने के लिए करना चाहता है। इन लोगों के साथ हमारी लंबी बातचीत को हमारे पैसे, समय, ऊर्जा या किसी अन्य संसाधन के बराबर ही खर्च किया जाना चाहिए। इनमें से बहुत से लोग अब परमेश्वर के प्रति खुले मन वाले नहीं दिखाते हैं। लेकिन क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें मेरे करीब रखा है, मेरा काम उनके साथ प्रार्थना करना, उनके प्रति परमेश्वर का प्रेम प्रदर्शित करना और परमेश्वर के बारे में सच्चाई बाँटना है। उनके साथ, मैं कभी हार नहीं मान सकता हूँ।

मेरी सामान्य पहुँच से परे वाले लोगों के लिए, मैं परमेश्वर के मार्गदर्शन पर बहुत अधिक भरोसा करता हूँ कि कहाँ और कब ध्यान केंद्रित करना है। यह शीशा अंतिम, सबसे कम और खोए हुए को उजागर करने के लिए रंगा हुआ है। आख़िरकार, वे परमेश्वर के पसंदीदा हैं। पवित्रशास्त्र तिरस्कृत, त्यागे हुए, दलित, भूले हुए, वंचित और निर्बल लोगों के लिए परमेश्वर की विशेष चिंता के प्रमाण से भरा हुआ है। लेकिन परमेश्वर अक्सर अप्रत्याशित है, इसलिए मुझे किसी के साथ बातचीत करने के लिए उसकी प्रेरणा के प्रति संवेदनशील होने की आवश्यकता है।

इस क्षेत्र में, मैं आम तौर पर पाता हूँ कि परमेश्वर मुझे उन लोगों की ओर निर्देशित करता है, जिनमें वह पहले से ही उन्हें अपनी ओर आकर्षित करने के लिए काम कर रहा है। इसलिए अपने करीबी रिश्तों के दायरे से बाहर, मैं परमेश्वर की आवाज को ध्यान से सुन रहा हूँ कि कैसे वह मुझे वंचितों की मदद करने के लिए निर्देशित करेगा और मुझे उन लोगों को दिखाएगा जिनमें वह पहले से ही काम कर रहा है।

अपने रिश्तों के प्रबंधन के प्रति लोगों की संवेदनशीलता बढ़ाने के लिए, मैं उन विश्वासियों से पूछता हूँ जिन्हें मैं उन सौ लोगों की सूची बनाने के लिए अनुशासित कर रहा हूँ जिन्हें वे जानते हैं। फिर वे उन्हें तीन श्रेणियों में विभाजित करते हैं: मसीही, अन्य-जाति और अज्ञात। उनके अगले चरण अलग-अलग होंगे, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि प्रत्येक व्यक्ति किस श्रेणी में आता है। अज्ञात लोगों के लिए, पहला काम यह पता लगाना है कि वे आत्मिक रूप से कहाँ हैं; अन्य-जातियों के लिए, प्रचार करना; मसीही विश्वासियों के लिए, प्रशिक्षित करने और प्रोत्साहित करने के लिए।

कई लोग आत्मिकता के बारे में दो अलग-अलग समूहों के संदर्भ में सोचते हैं। उनके लिए, प्रत्येक व्यक्ति या तो परमेश्वर के राज्य में है या उसके बाहर है। पहला

चित्र इस सीमित-निर्धारित सोच को दर्शाता है; दूसरा केन्द्रित-निर्धारित सोच को दर्शाता है।

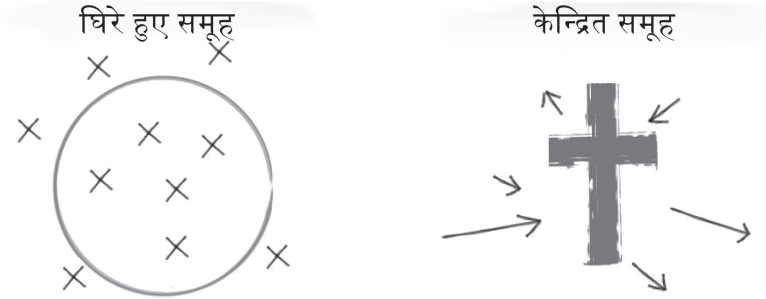

सीमाबद्ध सोच में कुछ भी गलत नहीं है। यह सहायक और प्रासंगिक है। यह वास्तव में सत्य है कि प्रत्येक व्यक्ति या तो परमेश्वर के राज्य में है या उसके बाहर है। सीमाबद्ध सोच यह सुनिश्चित करने की प्राथमिकता पर जोर देने में मदद करती है कि लोग राज्य में प्रवेश करें। यह महत्व यीशु द्वारा चरवाहे की उस कहानी से दर्शाया गया है जो एक खोई हुई भेड़ की तलाश में निन्यानवे भेड़ों को छोड़ देता है (लूका 15:4-7)।

फिर भी, केंद्रित सोच एक सहायक पूरक है। केन्द्रित सोच के चित्र में, एक व्यक्ति विशेष की निष्ठा को तीर की दिशा से दर्शाया जाता है। क्रूस की ओर इशारा करने वाले तीर उन लोगों को दर्शाते हैं जिन्होंने अपना जीवन यीशु को समर्पित कर दिया है। लेकिन तीरों की लंबाई अलग-अलग होती है, और तीर की लंबाई उनके जुनून की डिग्री को इंगित करता है। कुछ लोग मौलिक रूप से जीवन में एक अलग लक्ष्य का पीछा कर रहे हैं, जबकि अन्य ऐसा केवल हल्के तरीके से कर रहे हैं। कुछ लोग जो मसीह का अनुसरण करते हैं वे ऐसा उत्साहपूर्वक करते हैं, अन्य केवल धीमी गति से करते हैं।

परमेश्वर की इच्छा (और उम्मीद है कि हमारी भी) सभी तीरों को पुनर्निर्देशित करना है ताकि वे क्रूस की ओर इंगित करें। परमेश्वर किसी भी व्यक्ति की मृत्यु से प्रसन्न नहीं होता (यहेजकेल 18:23, 32; 33:11)। वह नहीं चाहता कि कोई भी नष्ट हो (2 पतरस 3:9), और वह चाहता है कि सभी विश्वास में आएँ (1 तीमुथियुस 2:3-4)। इन सच्चाइयों को उन सभी के साथ हमारी बातचीत का मार्गदर्शन करना चाहिए जो अभी तक परमेश्वर को नहीं जानते हैं।

परमेश्वर उन तीरों को भी लंबा करना चाहता है, जो पहले से ही क्रूस की ओर इशारा करते हैं। जो लोग पहले से ही मसीह के प्रति प्रतिबद्ध हैं, उन्हें अपनी प्रतिबद्धता के स्तर को बढ़ाने की आवश्यकता है। यह हम सभी के लिए सच है। हममें से कोई भी परमेश्वर को अपने पूरे दिल, दिमाग, आत्मा और शक्ति से, प्रति दिन चौबीस घंटे, प्रति वर्ष 365 दिन प्रेम नहीं करता। उम्मीद है कि हम उस लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रहे हैं, हालाँकि कई विश्वासियों के लिए प्रवृत्ति विपरीत दिशा में है।

इसका मतलब यह है कि जब भी हम उन लोगों के साथ बातचीत करते हैं जो पहले से ही परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसकी सेवा करते हैं, इसलिए हमारा इरादा उनके प्रति उनके प्रेम को बढ़ाना होना चाहिए। हमें इस बारे में सावधानीपूर्वक और कर्तव्यनिष्ठा से सोचना चाहिए कि इसे सर्वोत्तम तरीके से कैसे किया जाए। "और प्रेम, और भले कामों में उस्काने के लिये हम एक दूसरे की चिन्ता किया करें" (इब्रानियों 10:24)। हम सभी को दूसरों से उस प्रकार के प्रोत्साहन की आवश्यकता है, चाहे वे अन्य लोग अपनी प्रतिबद्धता में हमसे आगे हों या हमसे पीछे हों।

उन लोगों के संबंध में जो परमेश्वर को नहीं जानते, केन्द्रित सोच अभी भी सहायक है। यह हमें यह समझने में मदद करता है कि तीर को धीरे-धीरे, कदम-दर-कदम घुमाया जा सकता है, जब तक कि यह क्रूस की ओर इशारा न कर दे, और यह कि अलग-अलग व्यक्तियों में परमेश्वर के प्रति प्रतिरोध या प्रतिक्रिया का स्तर अलग-अलग होता है।

निम्नलिखित चार्ट इस सिद्धांत को चित्रित करने में मदद करता है। दृष्टिकोण को ऊर्ध्वाधर-अक्ष द्वारा दर्शाया गया है, ज्ञान को क्षैतिज-अक्ष के रूप में दर्शाया गया है। इसलिए, उदाहरण रूप में, शैतान सही (उच्च ज्ञान) से बहुत दूर और बहुत कम (बुरा रवैया, परमेश्वर के बेहद विपरीत) होगा। आम तौर पर, एक अविश्वासी बहुत कम ज्ञान और परमेश्वर के प्रति नकारात्मक व्यवहार या दृष्टिकोण के साथ शुरुआत करता है। लेकिन चार्ट में दर्शाए गए कई संपर्क ज्ञान और दृष्टिकोण में क्रमिक परिवर्तन उत्पन्न करते हैं, जिससे व्यक्ति क्रूस की ओर बढ़ता है। केंद्रित-सोच में, बढ़ती तीव्रता (लंबाई) के साथ, इसे क्रूस की ओर इंगित करने के लिए तीर के क्रमिक घुमाव द्वारा दिखाया जाएगा।

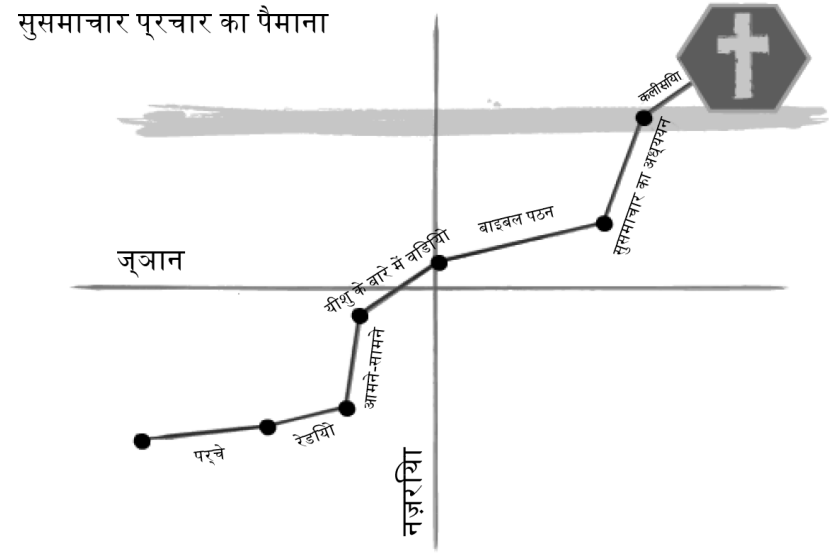

जिन व्यक्तियों के साथ आपका बार-बार संपर्क होता है, यह उन्हें परमेश्वर की ओर आकर्षित करने की प्रक्रिया की कल्पना करने का एक सहायक तरीका है। आमतौर पर, लोगों की मसीहियों के साथ कई मुलाकातें होती हैं, जो उन्हें और करीब ले जाती हैं, इससे पहले कि वे अंततः मसीह का अनुसरण करने का निर्णय लें।

जिन व्यक्तियों के साथ आपका बार-बार संपर्क नहीं होता है, यह उन लोगों के लिए सतर्क रहने के लिए एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है जो परमेश्वर के प्रति समर्पण के करीब हैं और उन्हें उस पड़ाव के करीब लाने के अवसरों के लिए हैं यह हर एक बातचीत में प्रत्येक व्यक्ति को उस स्थिति में लाने के दबाव की भावना को भी कम करता है। यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि उनके साथ आपकी बातचीत संभवतः घटनाओं की श्रृंखला में से एक है जिसका उपयोग परमेश्वर उन्हें अपनी ओर आकर्षित करने के लिए करेगा।

हालाँकि, परमेश्वर का दृष्टिकोण लोगों के साथ व्यक्तिगत् बातचीत से कहीं अधिक है। इसमें सारा जीवन शामिल है। सृष्टिकर्ता के रूप में, परमेश्वर उन सभी चीज़ों की चिंता करता है और उनसे जुड़ा रहता है जो अस्तित्व में हैं। वह न केवल मनुष्यों को बल्कि समस्त सृष्टि को छुटकारा दिला रहा है (रोमियों 8:18-23)। वह हमें सृष्टि के संचालन और उचित, रचनात्मक उपयोग में मार्गदर्शन कर सकता है। वह स्वयं को प्रकृति की पद्धतियों में भी प्रकट करता है। यदि हम परमेश्वर की बात सुनें, तो हम उसकी बनाई सभी चीज़ों से उसके बारे में सीख सकते हैं और सीखने की हर शाखा में योगदान दे सकते हैं।

हमें जिज्ञासु जीवन जीने का सौभाग्य प्राप्त है, हम जो देखते हैं, हम उसके बारे में लगातार प्रश्न पूछते रहते हैं। मैं अक्सर प्रभु से पूछता हूँ कि मैं किसी न किसी चीज़ से क्या सीख सकता हूँ। इनमें से कुछ प्रश्नों ने मेरी सोच में विशिष्ट गूढ़ ज्ञान और सफलताएँ पैदा की हैं। मैंने कोका-कोला कंपनी, यू.एस. मरीन कॉर्प्स, साइकिल, खेती, फोटोग्राफी, लहरें, रैपलिंग, कयाक, संगीत वाद्ययंत्र और स्कूबा डाइविंग के बारे में पूछताछ की है। हाथियों, खरगोशों, घोड़ों, खच्चरों, छिपकलियों, मेंढकों, तारामछली, ऑक्टोपस, डॉल्फ़िन, हंस, बत्तखों और अन्य जानवरों के बारे में प्रश्न पूछता हूँ। मैं संचार तकनीकों, व्यावसायिक प्रथाओं के बारे में पूछता हूँ।, अर्थशास्त्र, सरकार, परिवहन, शैक्षिक सिद्धांत, और भी बहुत कुछ।

कई शिष्य निर्माण, कलीसिया रोपण, और सेवकाई के विषय में गूढ़ ज्ञान जो मैंने पिछले कुछ वर्षों में प्राप्त की हैं, जो मेरे पास सेमनरी की कक्षाओं या धार्मिक ईश-वैज्ञानिक पुस्तकों के बजाय इन अलग-अलग स्रोतों से आई हैं। हर विषय के बारे में परमेश्वर के ज्ञान की कोई सीमा नहीं है। उससे क्यों नहीं पूछा?

परमेश्वर हमें जो गूढ़ ज्ञान प्रदान करता है, उससे हम सीखने के सभी क्षेत्रों में योगदान कर सकते हैं। जॉर्ज वॉशिंगटन कार्वर को चीजों के बारे में परमेश्वर से पूछने की आदत थी। उन्होंने अलबामा में काम किया, जहाँ मैं वर्तमान में रहता हूँ। यीशु मसीह के अनुयायी, एक वैज्ञानिक और एक शिक्षक के रूप में उनका जीवन

और विरासत उल्लेखनीय है। टस्केगी इंस्टीट्यूट के अध्यक्ष रहते हुए, उन्होंने सबसे अप्रत्याशित परिदृश्य में दुनिया बदलने वाली खोज की। अपनी पुस्तक में *सैंक्चुअरी ऑफ द सोल: मनन से भरी हुई प्रार्थना में यात्रा करना*, रिचर्ड फोस्टर कहानी बताते हैं:

> जॉर्ज वॉशिंगटन कार्वर हमारे बड़े वैज्ञानिकों में से एक थे, और वह अक्सर परमेश्वर को "श्रीमान सृष्टिकर्ता" कहकर प्रार्थना करते थे। एक रात वह जंगल में गया और प्रार्थना की, "श्रीमान सृष्टिकर्ता आपने सृष्टि क्यों बनाई?" उसने सुना, और उसने यह सुना: "हे छोटे आदमी, यह सवाल तुम्हारे लिए बहुत बड़ा है एक बार और प्रयास कर!" अगली रात वह जंगल में गया और प्रार्थना की, "श्रीमान सृष्टिकर्ता आपने मनुष्य को [अर्थात, मानव जाति] क्यों बनाया?" उसने सुना और उसने यह सुना: "हे छोटे आदमी, यह सवाल अभी भी तुम्हारे लिए बहुत बड़ा है। एक बार और प्रयास कर!" तीसरी रात वह जंगल में गया और प्रार्थना की, "श्रीमान सृष्टिकर्ता आपने मूँगफली क्यों बनायी?" उसने यही सुना: "हे छोटे आदमी, यह सवाल सिर्फ तेरे आकार का है। सुन और मैं तुझे सिखाऊँगा।"

बाकी बातें इतिहास में दिखती हैं, क्योंकि कार्वर ने मूंगफली के सैकड़ों उपयोग विकसित किए और अमेरिकी दक्षिण की अर्थव्यवस्था को बदल दिया।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किस क्षेत्र में कार्यरत हैं, परमेश्वर इसके बारे में आपसे या किसी अन्य से कहीं अधिक जानता है। यदि आप उससे पूछें तो वह आपको गूढ़ ज्ञान दे सकता है। जैसा कि संत ऑगस्टीन ने कहा, "सभी सत्य परमेश्वर का सत्य है।"

जीवन के सभी पहलुओं के प्रति परमेश्वर की चिंता और भागीदारी को पहचानना आत्मिक संवेदनशीलता विकसित करने का हिस्सा है। सपन्याह 1:12 उन लोगों के बारे में बात करता है जो दुनिया में परमेश्वर की गतिविधि को "आत्मा में स्थिर" नहीं समझते हैं। यह स्पष्ट रूप से कुछ ऐसा है जो परमेश्वर को अप्रसन्न करता है।

प्रत्येक व्यक्ति का एक विश्वदृष्टिकोण होता है - हमारी दुनिया की व्याख्या करने का एक तरीका – हालाँकि कई लोगों ने कभी भी अपने वैश्विक-दृष्टिकोण पर सचेत रूप से प्रतिबिंबित नहीं किया है या किसी औपचारिक तरीके से इसका मूल्यांकन नहीं किया है। वैश्विक-दृष्टिकोण के सात मुख्य पहलू हैं:

1. ज्ञान संबंधी मीमांसा शास्त्र: सत्य क्या है?
2. तत्व संबंधी विज्ञान: वास्तविक क्या है?
3. जगत संबंधी विज्ञान: सृष्टि की प्रकृति और उद्देश्य क्या है?
4. उद्देश्यवाद: हर चीज़ का उद्देश्य और नियति क्या है?
5. धर्मशास्त्र: परमेश्वर (या देवताओं) की प्रकृति और उद्देश्य क्या है?
6. मानव विज्ञान: मानव जाति की प्रकृति और उद्देश्य क्या है?
7. मूल्य संबंधी विज्ञान: सार्थक, मूल्यवान और सुंदर क्या है?

जाहिर है, इस पुस्तक में मैं सामान्य रूप से वैश्विक-दृष्टिकोण या विशेष रूप से मसीही वैश्विक-दृष्टिकोण के आयामों का गहराई से पता लगाना शुरू नहीं कर सकता। लेकिन मसीही विश्वासियों के लिए, परमेश्वर को हमारे वैश्विक-दृष्टिकोण के सभी पहलुओं के संबंध में सत्य का केंद्र और स्रोत होना चाहिए। वह अकेला ही सत्य का मध्यस्थ है। उसने वही बनाया और निर्धारित किया है, जो वास्तविक है। जगत उसकी खुशी और उद्देश्य के लिए मौजूद है। वह असीम रूप से अच्छा और महान है। उसने हमें बनाया और उद्देश्य दिया। वह अकेले ही अर्थ, मूल्य और सौंदर्य निर्धारित करता है।

इस कारण से, उसे अपनी सर्वोत्तम क्षमता से जानना और समझना बहुत मायने रखता है। दुनिया या मौजूद किसी भी चीज़ को सही ढंग से समझने का यही एकमात्र तरीका है। नतीजतन, धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास वाला जीवन-परमेश्वर पर केंद्रित और आधारित जीवन जीना-मसीही वैश्विकदृष्टिकोण का सार है।

यदि आप इस विषय को गहराई से आगे बढ़ाना चाहते हैं, तो मसीही वैश्विक-दृष्टिकोण और इसके निहितार्थों की गहन समझ हासिल करने के लिए कई किताबें और यहाँ तक कि कई पेशे भी समर्पित किए गए हैं। उन लोगों की सूची देखने के लिए एक अच्छी जगह है, जिन्होंने विभिन्न दृष्टिकोणों से मसीही वैश्विक-दृष्टिकोण के बारे में अध्ययन और लेखन किया है christianworldview.net। फिर आप उनके विचारों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए अन्य संसाधनों पर जा सकते हैं। मेरा मानना है कि फ्रांसिस शेफ़र्स का लेखन एक उत्कृष्ट प्रारंभिक बिंदु प्रदान करता है। उनका दृष्टिकोण सुलभ है लेकिन कमज़ोर नहीं है, और वह धारणाओं के एक ठोस सोच के साथ काम करते हैं।

इब्रानियों 11 का लेख मसीही वैश्विक-दृष्टिकोण का एक उदाहरण है। सबसे आम प्रश्नों में से एक जो संशयवादी मसीहियों से पूछते हैं वह है "यदि परमेश्वर इतना अच्छा और शक्तिशाली है, अच्छे लोगों के साथ बुरा क्यों होता है?" इब्रानियों 11 उस प्रश्न का उत्तर देता है। यह अध्याय विश्वास के विषय पर प्रकाश डालता है। प्रारंभ में, यह मसीहियत के प्रसिद्ध नायकों के जीवन का वर्णन करता है: हाबिल, हनोक, नूह, अब्राहम, इसहाक, याक़ूब, यूसफ़, मूसा, राहाब, गिदोन, बराक, शिमशोन, यिप्तह, दाऊद, शमूएल, और भविष्यद्वक्ता (इब्रानियों 11:4-35)। ये विश्वास के जीवन के प्रसिद्ध "नायक" हैं, वे लोग जिन्हें परमेश्वर ने विजय और प्रसिद्धि प्रदान की। लेकिन यह अनुच्छेद उन अन्य लोगों का वर्णन करता है जो लगभग इतने प्रसिद्ध या विजयी नहीं थे - कम से कम, सांसारिक दृष्टिकोण से नहीं:

> कितने तो मार खाते खाते मर गए और छुटकारा न चाहा, इसलिये कि उत्तम पुनरुत्थान के भागी हों; कई एक ठट्ठों में उड़ाए जाने; और कोड़े खाने वरन् बाँधे जाने, और कैद में पड़ने के द्वारा परखे गए। पथराव किए गए; आरे से चीरे गए; उनकी परीक्षा की गई; तलवार से मारे गए; वे कंगाली में, और क्लेश में, और दुःख

> भोगते हुए भेड़ों और बकरियों की खालें ओढ़े हुए, इधर–उधर मारे मारे फिरे; और जंगलों, और पहाड़ों, और गुफाओं में, और पृथ्वी की दरारों में भटकते फिरे (संसार उनके योग्य न था)। (इब्रानियों 11:35ब-38)

ये कौन लोग थे जिन्हें इतना कष्ट सहना पड़ा? मुझे नहीं पता। मैं उन कहानियों को नहीं पहचानता। लेकिन परमेश्वर जानता है। और परमेश्वर उन सभी के बारे में कहते हैं, प्रसिद्ध और अस्पष्ट, जीवन में नायक और जीवन से हारे हुए:

> विश्वास ही के द्वारा इन सब के विषय में अच्छी गवाही दी गई, तौभी उन्हें प्रतिज्ञा की हुई वस्तु न मिली। क्योंकि परमेश्वर ने हमारे लिये पहले से एक उत्तम बात ठहराई, कि वे हमारे बिना सिद्धता को न पहुँचें। (इब्रानियों 11:3940-)

आयत 32-35अ में, "अच्छे लोग" संघर्ष के बाद जीतते हैं। लेकिन आयत 35ब-38में, अच्छे लोग हार जाते हैं और यातना और हिंसक मौत सहते हैं। इन लोगों को विश्वास के आदर्श के रूप में क्यों उद्धृत किया जाता है?

जाहिर है, स्वर्गीय दृष्टिकोण से, विश्वास के सांसारिक निष्कर्ष या परिणाम का इस बात से कोई लेना-देना नहीं है कि वफादार व्यक्ति के लिए चीजें कैसे होती हैं। बल्कि, वफादार लोगों की पहचान की विशेषता परमेश्वर पर पूरी तरह भरोसा करने की उनकी तत्परता से है, ताकि उसे महिमा मिल सके। कभी-कभी नाटकीय बचाव के माध्यम से उसकी महिमा की जाती है; कभी-कभी वह अपने लोगों की उसके लिए पीड़ा सहने और गुमनामी में मरने की वफादार इच्छा से महिमा मिलती है। परमेश्वर की महिमा तब होती है जब उसके लोग उसकी सेवा करने के सौभाग्य के लिए सब कुछ जोखिम में डालने और कुछ भी बलिदान करने को तैयार होते हैं। इससे अधिक उसकी योग्यता को और क्या प्रदर्शित कर सकता है?

जैसा कि यह अनुच्छेद प्रदर्शित करता है, एक मसीही वैश्विक-दृष्टिकोण यह पहचान कर पीड़ा का हिसाब लगाती है कि यह इस पतित दुनिया की कहानी का अंत नहीं है और विश्वास का जीवन परमेश्वर की महिमा करता है, चाहे सांसारिक परिणाम कुछ भी क्यों न हो। अंतिम विश्लेषण में, हम जो मसीह पर भरोसा करते हैं, विजय पाएँगे और अपना शाश्वत प्रतिफल को प्राप्त करेंगे। कहानी का अंत उन लोगों के लिए अच्छा है जो पृथ्वी पर विश्वास का जीवन जीते हैं।

एक मसीही वैश्विक-दृष्टिकोण वस्तुतः किसी भी प्रतिस्पर्धी वाले वैश्विक -दृष्टिकोण से भिन्न होगा, क्योंकि यह परमेश्वर को अर्थ, सत्य, उद्देश्य, मूल्य या नियति निर्धारित करने का एकमात्र मानदंड बनाता है। हमें इस शाश्वत परिप्रेक्ष्य के लिए प्रयास करने की आवश्यकता है क्योंकि हम पौलुस की सलाह का पालन करना चाहते हैं: "इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो" (रोमियों 12:2)।

प्रार्थना

हे प्रभु, मेरे मन को नया कर। जीवन के हर पहलू को आपके प्रकाश में देखने में मेरी सहायता करें। मुझे दूसरों के साथ हर बातचीत को इस रूप में देखने में मदद करें कि कैसे आप उनके जीवन में अधिक सराहना और स्वीकार किए जा सकते हैं। इस अस्थायी अस्तित्व में मैं जो अनुभव करता हूँ, उससे मुझे शाश्वत सत्य सिखाएँ। मुझे दिखाओ कि मैं जो भी कहता हूँ और करता हूँ उसमें दूसरों को आशीष देने का साधन कैसे बनें।

प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें, फिर प्रार्थना करें और परमेश्वर से पूछें कि वह आपसे क्या सीखना और कराना चाहता है। शांत होकर सुनें।

अपनी डायरी की समीक्षा करें। क्या आपकी कोई पिछली प्रतिज्ञाएँ हैं जिन्हें आपने पूरा नहीं किया है? यदि आवश्यक हो, तो संशोधित समापन तिथियाँ निर्धारित करें।

1. क्या मैं परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते को अपने जीवन के एक पहलू के रूप में देखता हूँ या अपने जीवन के हर पहलू की परिभाषित नींव के रूप में? मैं अपने सामने उनकी उपस्थिति और परिप्रेक्ष्य की दैनिक निरंतर अनुस्मारक कैसे रख सकता हूँ ?
2. क्या मेरे वैश्विक-दृष्टिकोण (ज्ञान संबंधी मीमांसा, तत्व संबंधी मीमांसा, जगत संबंधी विज्ञान, उद्देश्य संबंधी विज्ञान, ईश-विज्ञान, मानव संबंधी विज्ञान, और मूल्य संबंधी मीमांसा) के कुछ विशिष्ट पहलू हैं, जिन्हें मुझे परमेश्वर-केंद्रित होने की आवश्यकता है?
3. मैं अपने जीवन में चल रहे रिश्तों को कितने प्रभावी ढंग से निभा रहा हूँ? मैं उन लोगों की मदद करने में और अधिक इरादतन कैसे हो सकता हूँ जो पहले से ही परमेश्वर से प्रेम करते हैं ताकि उनमें विकास चलता रहे? जो लोग परमेश्वर को नहीं जानते उन्हें उसके साथ प्रेमपूर्ण रिश्ते में लाने में मैं और अधिक जानबूझकर कैसे मदद कर सकता हूँ ?
4. क्या मैं लगातार हर उस व्यक्ति के लिए आशीष बनना चाहता हूँ जिसके साथ मैं संपर्क में आता हूँ ? मैं ऐसा करने की अपनी आवृत्ति कैसे बढ़ा सकता हूँ ?
5. क्या मुझे दिन-ब-दिन सामने आने वाली स्थितियों के लिए परमेश्वर से आत्मिक जानकारी मांगने की आदत है? मैं यह आदत कैसे विकसित कर सकता हूँ ?
6. क्या मैं नियमित रूप से अपने काम और जीवन से संबंधित मामलों में परमेश्वर से ज्ञान मांगता हूँ ? मैं यह आदत कैसे विकसित कर सकता हूँ ?
7. इस अध्याय के प्रत्युत्तर में परमेश्वर मुझसे कौन-सी विशिष्ट कार्य करवाना चाहता है? (उन्ह अपने डायरी में लिख ले और अपने कैलेंडर में नियत कर ले।)
8. परमेश्वर चाहता है कि जो मैंने सीखा है उसे किसके साथ (कम से कम एक नाम) साझा करूँ?

प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको इन प्रतिबद्धताओं का पालन करने में सक्षम बनाए और उन लोगों के दिलों को तैयार करे जिनके साथ आप ज्ञान साझा करना चाहते हैं।

14 3/3: विश्वासयोग्य जीवन जीने की शैली

पुनरुत्पादन योग्य शिष्य सक्रिय रूप से बढ़ता है और दूसरों के साथ सीखने, करने और गूढ़ ज्ञान साझा करने में संतुलन बनाता है।

> जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैं ने तुम से प्रेम रखा; मेरे प्रेम में बने रहो। यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे; जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूँ।
>
> -यूहन्ना 15:9-10

परमेश्वर को सुनने की अपनी क्षमता में सुधार करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि जब आप उसे बोलते हुए पहचान लें तो तुरंत और पूरी तरह से प्रतिक्रिया दें। परमेश्वर हमें इस बात के लिए जवाबदेह बनाता है कि हम उसके द्वारा दिए गए अवसरों और निर्देशों का कैसे जवाब देते हैं। हमारे साथ उनके भविष्य के व्यवहार, साथ ही हमारी भविष्य की वृद्धि और विकास, सीधे तौर पर इस बात से संबंधित हैं कि हम अब कैसे प्रतिक्रिया देते हैं।

परमेश्वर दुनिया की तुलना में बहुत अलग तरीके से मूल्य मापता है। सांसारिक अर्थव्यवस्था आदान-प्रदान पर आधारित है। मेरे पास कुछ है, मेरे पास कुछ है, जो आप चाहते हो (उदाहरण के लिए, एक पास्ट्रामी सैंडविच)। आपके पास कुछ है, मैं (धन) चाहता हूँ। आप मुझे अपने कुछ पैसे दें और बदले में, मैं आपको अपना पास्ट्रामी सैंडविच दूँगा। आप जो चाहते हैं उसके लिए मुझे भुगतान करें। मैं इसे मुफ़्त में नहीं देता।

इसके विपरीत, स्वर्गीय अर्थव्यवस्था में, मुझे देने से लाभ होता है। मैं जो भी मुफ़्त ऑफ़र देता हूँ उससे मुझे लाभ होता है। उदाहरण के रूप में क्षमा के बारे में परमेश्वर के दृष्टिकोण पर विचार करें। दोनों एक दृष्टांत में (मत्ती 18:23-35) और प्रत्यक्ष व्याख्या में (मत्ती 6:14-15), यीशु ने सिखाया कि यदि हम दूसरों

को स्वतंत्र रूप से क्षमा करते हैं, तो परमेश्वर हमें स्वतंत्र रूप से क्षमा करता है। परमेश्वर ने हमें उदारतापूर्वक दिया है। हमें इसे आगे बढ़ाना है। हम धन्य हैं, जब हम स्वतंत्र रूप से देते हैं। हम देकर लाभ प्राप्त करते हैं।

यह प्रति-सहज सिद्धांत नए नियम में बार-बार दोहराया जाता है। यीशु मत्ती 10:8 में कहता है,"तुम ने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो," और लूका 12:48में, "और जिसे बहुत सौंपा गया है, उससे बहुत लिया जाएगा" पौलुस ने तीमुथियुस से कहा कि उसने जो प्राप्त किया है उसे आगे बढ़ाए (2 तीमुथियुस 2:2), और वह यीशु की शिक्षा का सारांश इस प्रकार देता है "लेने से देना अधिक धन्य है" (प्रेरितों के काम 20:35)।

परमेश्वर हमें देता है। और जो कुछ उसने दिया है हम उसके प्रबंधक हैं, उसे स्वतंत्र रूप से दूसरों तक पहुँचाने के लिए जिम्मेदार हैं। तोड़ों के दृष्टांत की मुख्य बात, मत्ती 25:14-30 में, यह है कि हम कैसे प्रबंधन करते हैं इसके लिए परमेश्वर हमें जवाबदेह ठहराएगा कि उसने हमें क्या दिया है।

पुराने नियम में स्वर्गीय अर्थव्यवस्था भी प्रमुख है। अपने लोगों के साथ परमेश्वर के व्यवहार की शुरुआत से, हम देखते हैं कि वह हमें आशीर्वाद देता है ताकि हम दूसरों को आशीर्वाद दे सकें। जब परमेश्वर ने अब्राम को बुलाया (उसका नाम अब्राहम रखने से पहले), उसने कहा:

> अपने देश,
> और अपने कुटुम्बियों,
> और अपने पिता के घर को छोड़कर,
> उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।;
> और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा,
> *और मैं तुम्हें आशीष दूंगा,*
> और तेरा नाम महान् करूँगा;
> और तुझे आशीष दूँगा;
> और *तू आशीष का मूल होगा।*,
> जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा;
> और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूँगा;
> *और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे।*
> (उत्पत्ति 12:1-3, जोर दिया गया है)

परमेश्वर अब्राहम को आशीष देने का वायदा करता है, लेकिन उसका एक स्पष्ट उद्देश्य है: कि अब्राहम दूसरों के लिए - वास्तव में, दुनिया के सभी देशों के लिए एक आशीष होगा। ईश्वरीय अर्थव्यवस्था में, हम देने के लिए प्राप्त करते हैं। अब्राहम को एक आशीष होने की आशीष दी गई थी।

परमेश्वर हमें बताता है कि उसने अब्राहम को अपने लोगों का पिता बनने के लिए चुना क्योंकि अब्राहम ने उसकी आज्ञा मानी थी (उत्पत्ति 22:15-18; 26:2-5)

यह आज्ञाकारिता आत्मिक अर्थव्यवस्था और परमेश्वर के प्रति जवाबदेही के मूल में है। यह बारीकी से जाँच के योग्य है। अब्राहम परिपक्व नहीं था। उदाहरण के लिए, उसने एक बार नहीं बल्कि दो बार सारा को अपनी बहन बताने की कोशिश की। हालाँकि, उन्होंने बार-बार तत्काल, गर्माहट से भरी, आज्ञाकारिता का प्रदर्शन किया।

परमेश्वर ने अब्राहम को अपने देश, अपने पिता के घर, और अपने रिश्तेदारों को छोड़ने और उस स्थान पर जाने के लिए बुलाया जिसे परमेश्वर उसे दिखाएगा। वह चला गया। उसने तुरंत आज्ञा का पालन किया (उत्पत्ति 12:1-4)। यह एक बहुत बड़ा जोखिम था। अब्राहम खतरनाक निवासियों से भरे क्षेत्र के माध्यम से जंगल में भटकने की तुलना में एक सुरक्षित, आबादी वाला, परिचित क्षेत्र छोड़ रहा था।

उत्पत्ति 17 ने एक और जाँच को प्रस्तुत किया। परमेश्वर ने अब्राम का नाम बदलकर अब्राहम रख दिया और उसे वाचा के संकेत के रूप में अपने घर के सभी पुरुषों का खतना करने की आज्ञा दी। स्पष्ट शारीरिक असुविधा के अलावा, विचार करने के लिए एक संभावित सुरक्षा मुद्दा भी था। उत्पत्ति 34:13-31 में, अब्राहम की संतान एक पूरी जनजाति को उसके पुरुषों का खतना करने के बाद मिटा देगी, क्योंकि क्योंकि वे इस प्रक्रिया में से चंगा होने के दौरान अपना बचाव करने में असमर्थ थे। हालाँकि, अब्राहम ने संकोच नहीं किया। जोर देने के लिए, हमें दो बार बताया गया है, कि जिस दिन परमेश्वर ने उसे यह बताया, उसी दिन उसने अपना, अपने बेटे इश्माएल का, अपने घर में पैदा हुए हर पुरुष का, और अपने पैसे से खरीदे गए हर पुरुष का खतना किया (उत्पत्ति 17:23-27)।

उत्पत्ति 21:9-19 में दांव बढ़ता चला जाता है। सारा परेशान थी क्योंकि इश्माएल (सारा की दासी हागार के माध्यम से अब्राहम का बेटा) उसके बेटे इसहाक का मजाक उड़ा रहा था। उसने अब्राहम से इश्माएल और हाजिरा दोनों को वहाँ से भेज देने की मांग की। अब्राहम अपने बेटे को दूर भेजने की संभावना से बहुत परेशान था। हालाँकि, परमेश्वर ने उसे सारा का अनुरोध सुनने का निर्देश दिया। बिना देर किए, वह अगली सुबह जल्दी उठे और उन्हें विदा किया।

उत्पत्ति 22:1-14 में, अब्राहम की आज्ञाकारिता को सबसे बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा। परमेश्वर ने उसे अपने बेटे इसहाक को होमबलि के रूप में बलिदान करने के लिए कहा। इसहाक प्रतिज्ञा का पुत्र था, जिसके लिए अब्राहम ने आशा की थी और उसके सौ वर्ष का होने तक प्रतीक्षा की थी। बिना कोई प्रश्न किए या रुके, अब्राहम ने आज्ञा का पालन किया। वह अगली सुबह जल्दी उठा और उस पहाड़ के लिए निकल पड़ा जहाँ परमेश्वर ने उसे यह अकल्पनीय कार्य करने का निर्देश दिया था। जैसे ही वह इसहाक को मारने के लिए चाकू उठा रहा था, परमेश्वर ने उसे रोक दिया और एक मेढ़े के रूप में एक वैकल्पिक बलिदान प्रदान किया।

अब्राहम परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए तैयार था, चाहे इसके लिए उसे कोई भी कीमत चुकानी पड़े। इब्रानियों 11:17-19 हमें बताता है कि उसकी इच्छा

उसके विश्वास से आई है कि परमेश्वर उसके बेटे को मृतकों में से जीवित कर सकता है और उसे उठा कर खड़ा कर देगा। इस कहानी में दो बातें निश्चित हैं: अब्राहम परमेश्वर से प्रेम करता था और उस पर पूरा भरोसा रखता था, और परमेश्वर उससे प्रसन्न हुआ। वास्तव में, परमेश्वर ने वायदा किया था कि उसकी संतान एक बड़ी भीड़ होगी, जैसे आकाश में तारों की सँख्या या समुद्र तट पर रेत के कण (उत्पत्ति 22:15-17)।

अब्राहम की निःसंकोच आज्ञाकारिता परमेश्वर के लिए इतनी महत्वपूर्ण क्यों है? परमेश्वर के दृष्टिकोण से, परमेश्वर के प्रति प्रेम एक व्यक्ति के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है (मत्ती 22:34-38), और हमारा प्रेम हमारी आज्ञाकारिता द्वारा मापा जाता है (यूहन्ना 14:15; 1 यूहन्ना 5:3)। दूसरे शब्दों में, तत्काल, मौलिक, महँगी आज्ञाकारिता सभी के हृदय, मन, आत्मा और सामर्थ्य से परमेश्वर से प्रेम करने का प्रदर्शन और आवश्यक परिणाम दोनों है। इस प्रकार के व्यक्ति से परमेश्वर मित्रता करता है। यही कारण है कि अब्राहम को परमेश्वर के लोगों के आत्मिक माता-पिता के रूप में चुना गया था।

अब्राहम को हमारे विश्वास के पिता के रूप में वर्णित किया गया है, और हमें उसका अनुकरण करने के लिए कहा गया है। हम भी अपनी तत्काल, मौलिक, बड़ी आज्ञाकारिता द्वारा परमेश्वर के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करते हैं। हम उम्मीद कर सकते हैं कि वह हमसे बात करेगा। हमें अनंत मृत्यु से बचाने और हमें अपने प्यारे बच्चे और सहकर्मी बनाने के लिए उसने हमारे लिए जो कुछ किया है, उसके कारण हमें उससे प्रेम करने और उस पर पूरा भरोसा करने का अवसर मिला है। यह उसके प्रति हमारे प्रेम का परमेश्वर का प्राथमिक माप है।

लेकिन वास्तविक रूप से, हम अक्सर इस प्रकार की तत्काल, मौलिक, बड़ी आज्ञाकारिता से चूक जाते हैं। हम अक्सर झिझकते हैं, बहाने बनाते हैं, या बात मानने से इनकार कर देते हैं। फिर भी, हमारा लक्ष्य, परमेश्वर की मदद से, पूर्ण आज्ञाकारिता की दिशा में आगे बढ़ना है।

लेकिन कैसे? ऐसा चाहने से नहीं होता। एक प्रमुख सहायता हमारे मसीह भाइयों और बहनों के साथ पारस्परिक जवाबदेही है। हम एक-दूसरे को वह करने के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं जो हम जानते हैं कि परमेश्वर हमसे करवाना चाहता है। इस तरह, हम एक-दूसरे को आज्ञाकारिता में बढ़ने में मदद करते हैं, परमेश्वर ने हमें जो आशीर्वाद दिया है, उसके बेहतर प्रबंधक बन जाते हैं, और परमेश्वर ने अपने आज्ञाकारी बच्चों के लिए जो आशीर्वाद दिया है, उसका पूरी तरह से अनुभव करते हैं।

जवाबदेही को अक्सर कुछ अप्रिय बातों के रूप में देखा जाता है, खासकर रोजगार के संदर्भ में जहाँ इसमें निम्न प्रदर्शन के लिए अनुशासन शामिल हो सकता है। लेकिन मसीही संदर्भ में, एक दूसरे को जवाबदेह ठहराना सबसे प्रेमपूर्ण चीजों में से एक है जो हम एक दूसरे के लिए कर सकते हैं। हम इसे एक वास्तविक इच्छा

से करते हैं ताकि अन्य लोग प्रभु को अधिक गहराई से जान सकें और प्रचुर जीवन जीने की खुशी और पूर्णता का अनुभव कर सकें जो वह हमारे लिए चाहता है। हम चाहते हैं कि वे परमेश्वर को अधिक स्पष्ट रूप से सुनें और जिस नियति के लिए परमेश्वर ने उन्हें बनाया है, उसे पूरा करने की खुशी का अनुभव करें। हम चाहते हैं कि वे प्रभु से जो कुछ भी सुनते हैं उसका ईमानदारी से पालन करके और जो वे उनसे सीख रहे हैं उसे दूसरों तक पहुँचाकर आत्मिक अर्थव्यवस्था से लाभान्वित हों। सबसे अच्छी बात जो मैं दूसरों के लिए कर सकता हूँ वह है उन्हें सीखने, करने और परमेश्वर जो कहता है उसे साझा करने का जीवन पद्धति स्थापित करने में मदद करना। हम आपसी जवाबदेही के माध्यम से ऐसा करते हैं।

हम इस तरह कैसे जी सकते हैं कि यह हमारी स्वाभाविक और नियमित क्रिया बन जाए? मेरा प्रस्ताव है कि हम अपने जीवन को तीन पैरों वाली एक मेज की तरह देखें: *जानना, करना*(आज्ञाकारिता), और *दूसरों के साथ साझा करना*। जिस प्रकार बहुत असमान पैरों वाला एक तीन पैरों वाला मेज़ बेकार है, उसी प्रकार असंतुलित शिष्यत्व बेकार है। हमारे ज्ञान को जीवन में लागू करने और साझा करने के साथ संतुलित होना चाहिए। अन्यथा, हमारा शिष्यत्व अधूरा और छोटा है, यहाँ तक कि परमेश्वर के दृष्टिकोण से भी बेकार है।

कलीसिया अक्सर बाइबल ज्ञान पर बहुत जोर देता है और इसे परिपक्वता के साथ जोड़ती है। वह दुर्भाग्यपूर्ण है। आज्ञाकारिता के बिना ज्ञान बेकार है। वास्तव में, यह बेकार से भी बदतर है, क्योंकि इसमें अतिरिक्त निर्णय लेना पड़ता है। यीशु ने कहा "वह दास जो अपने स्वामी की इच्छा जानता था, और तैयार न रहा और न उसकी इच्छा के अनुसार चला, बहुत मार खाएगा। परन्तु जो *नहीं* जानकर मार खाने के योग्य काम करे वह थोड़ी मार खाएग" (लूका 12:47-48)। बिना किये जानने से अतिरिक्त दण्ड मिलता है। याकूब कहता है "इसलिये जो कोई *भलाई* करना जानता है और नहीं करता, उसके लिये यह पाप है" (याकूब 4:17)।

परिपक्वता का एकमात्र उचित माप किसी व्यक्ति की मसीह की स्वरूप के अनुरूप होना है (इफ़िसियों 4:13)। यह परमेश्वर की इच्छा है कि हम इतने अनुरूप बनें (रोमियों 8:29)। *अगर हम अपनी तुलना परमेश्वर की इच्छा के अलावा किसी अन्य चीज़ से करते हैं या यदि हम उसक् आत्मा के अलावा किसी अन्य तरीके से उसकी इच्छा का अनुसरण करते हैं तो हम गलती करते हैं।*

परिपक्वता में समय लगता है। हालाँकि, समय परिपक्वता की गारंटी नहीं देता है। कई लोग अभी भी आत्मिक शिशु हैं, भले ही वे कई वर्षों से मसीही विश्वासी हैं। परिपक्वता के बजाय, हमें *विश्वासयोग्यता* पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। यह कुछ ऐसा है जिसे एक नया मसीही भी दर्शा सकता है। मसीह का एक नया अनुयायी उस समय जो कुछ भी जानता है उसके प्रति पूरी तरह से विश्वासयोग्य हो सकता है। यदि हम हर दिन परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहें, तो समय के साथ परमेश्वर हमें परिपक्व बना देगा। यह आत्मिक अर्थव्यवस्था का परिणाम है। परमेश्वर एक बुद्धिमान निवेशक है। वह उन लोगों में निवेश करता है जो

विश्वासयोग्य हैं। यह मत्ती 25:14-30 में तोड़ों के दृष्टांत से एक महत्वपूर्ण सबक है।

विश्वासयोग्यता का आकलन करने का सबसे व्यावहारिक तरीका मेज़ के तीन पैरों के अनुपात की जाँच करना है, जिसका मैंने ऊपर वर्णन किया है - जानना, करना और साझा करना। निम्नलिखित चित्र पर विचार करें। सादगी के लिए, यह समान आत्मिक ज्ञान वाले तीन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है। वे सभी समान मात्रा में जानते हैं, लेकिन उनका जीवन परमेश्वर को समान रूप से प्रसन्न करने वाला नहीं है।

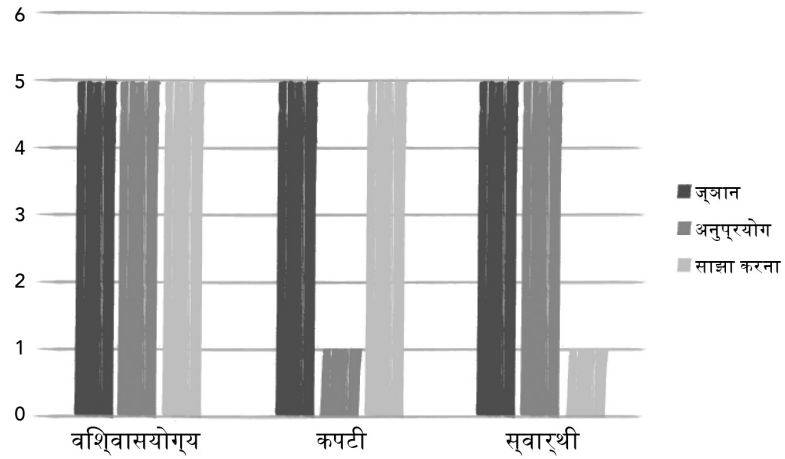

इस रेखांकन में पहला व्यक्ति विश्वासयोग्य है। वह जो जानती है, वह करती है और दूसरों के साथ साझा करती है। दूसरा पाखंडी है। वह जानता है कि उसे क्या करना चाहिए, और वह दूसरों को इसका उपदेश देता है, लेकिन वह इसे अपने जीवन में अभ्यास में नहीं लाता है। तीसरा स्वार्थी है। वह सीख रहा है और ज्ञान को अपने जीवन में व्यवहार में ला रहा है, लेकिन दूसरों के साथ साझा नहीं कर रहा है।

जिस प्रकार तीन पैरों वाला मेज़ बेकार है यदि पैर समान लंबाई के नहीं हैं, एक शिष्य जो इन तीन पहलुओं को संतुलित नहीं करता है वह परमेश्वर की बुलाहट के प्रति विश्वासयोग्य नहीं है। भौतिक क्षेत्र में, यदि हम साँस लेते हैं लेकिन कभी बाहर नहीं छोड़ते हैं, तो हम दस मिनट के भीतर मर जाएंगे। लेकिन हम आत्मिक क्षेत्र में भी यही काम करते हैं जब हम लगातार नए ज्ञान को अपने जीवन में लागू किए बिना या दूसरों के साथ साझा किए बिना लेते हैं जो इससे लाभ उठा सकते हैं।

जवाबदेही के साथ, कई व्यावहारिक दृष्टिकोण हैं जिन्हें आप अपनी आत्मिक श्वास में संतुलन और निरंतरता को बढ़ावा देने के लिए अपनी दैनिक दिनचर्या में शामिल कर सकते हैं। उनमें से एक वह है जिसे मैं तीन-तिहाई (या 3/3) कहता हूँ।

तीन तिहाई इस प्रकार हैं:

1.) पीछे देखें 2.) ऊपर देखें 3.) आगे देखें

ये मेज़ के तीन पैरों के अनुरूप हैं। "ऊपर देखें" वाला भाग मेज़ के ज्ञान संबंधी पैर का प्रतिनिधित्व करता है। "पीछे देखें" और "आगे देखें" वाले भाग "करें" और "दूसरों के साथ साझा करें" चरणों के मूल्यांकन और योजना पर केंद्रित हैं। दूसरे शब्दों में, आप करने और साझा करने में अपनी पूर्व गतिविधियों का मूल्यांकन करने के लिए पीछे मुड़कर देखते हैं, और आप यह निर्धारित करने के लिए तत्पर रहते हैं कि प्रभु आपसे कैसे करने और साझा करने में संलग्न होने और उनके निर्देश को कैसे पूरा करने की योजना बनाने के लिए कह रहा है।

हम इस संरचना का उपयोग अपने घरेलू कलीसिया में करते हैं। मैं इसका उपयोग अपने दैनिक बाइबल अध्ययन, प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बाद अनुवर्ती कार्यवाही और नेतृत्व और परामर्श संबंधी बैठकों में भी करता हूँ। मैं उपलब्ध समय का एक-तिहाई हिस्सा यह देखने में खर्च करता हूँ कि पिछली बैठक के बाद से क्या हुआ है, खासकर पिछले सत्र से क्या करने या साझा करने की हमारी प्रतिबद्धताएँ। दो-तिहाई ईश-विज्ञान या पवित्र आत्मा से मिला नया गूढ़ ज्ञान और छाप पवित्रशास्त्र में से खोज करने के द्वारा परमेश्वर की ओर देखने पर केंद्रित है। अंत में, हम आगे देखते हैं और हमने जो सीखा है उसे व्यवहार में लाने और इसे दूसरों के साथ साझा करने के लिए विशिष्ट योजनाएँ बनाते हैं। "आगे देखें" घटक यह सुनिश्चित करता है कि हम कभी भी ज्ञान प्राप्त करना बंद न करें, बल्कि जो हमने सीखा है, उसे हमेशा करें और साझा करें।

क्योंकि 3/3 प्रारूप एक आदत बन गया है, हर बार जब मैं अपनी बाइबल खोलता हूँ, प्रार्थना करता हूँ, या किसी के साथ बातचीत करता हूँ, तो मैं इस बारे में सोचता हूँ कि क्या कुछ ऐसा है जो प्रभु मुझे सिखाना चाहता है (ज्ञान) और मुझसे ऐसा करने या साझा करने को कहें। यह मुझे दाता के बजाय प्राप्तकर्ता बनने से रोकने में मदद करता है। यह मुझे चीजों को सीखकर और उनके बारे में दूसरों से बात करके पाखंडी बनने और खुद पर निर्णय लेने से रोकता है, लेकिन कभी भी उन्हें अपने जीवन में अभ्यास में नहीं लाता है।

जैसे ही मैं 3/3 प्रक्रिया समझाता हूँ, मुझे अक्सर दो सरोकार सुनाई देते हैं: (1) कि विश्वासी झूठी शिक्षा में पड़ जाएँगे, क्योंकि हम औपचारिक ईश-वैज्ञानिक प्रशिक्षण के बिना लोगों को पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने और लागू करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं, और (2) लोगों को विशिष्ट लक्ष्य बनाने और साझा करने के लिए कहना और उन्हें उन लक्ष्यों के प्रति जवाबदेह ठहराना कार्य-आधारित विधिवाद है। मैं इन दोनों आपत्तियों का बारी-बारी से समाधान करूँगा।

झूठी शिक्षा संबंधी ईश-विज्ञान के संबंध में सरोकार इतनी गहराई से और व्यापक रूप से व्यक्त किया गया है कि मैं इसकी कुछ विस्तार से जाँच करना चाहता हूँ।

इस सरोकार का मूल्यांकन करते समय, हमें पहले यह पूछना चाहिए कि क्या ईश-विज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित नेतृत्व झूठी शिक्षा वाली मान्यताओं को प्रभावी ढंग से रोकता है। 2018 में, लाइफवे मिनिस्ट्रीज़ और लिगोनियर मिनिस्ट्रीज़ ने ईश-विज्ञानिक ज्ञान पर बड़े पैमाने पर अध्ययन के परिणाम प्रकाशित किए। आप इसके बारे में thestateoftheology.com.पर अधिक पढ़ सकते हैं। वैबसाइट के नीचे एक लिंक है, जहाँ आप जाकर अध्ययन के सभी डेटा देख सकते हैं।

अध्ययन का एक हिस्सा सुसमाचारवादी मसीहियों की मान्यताओं पर केंद्रित है - उन लोगों के रूप में परिभाषित किया गया है जो दृढ़ता से सहमत हैं कि बाइबल सर्वोच्च अधिकार है, सुसमाचार बहुत महत्वपूर्ण है, पाप केवल यीशु की मृत्यु से दूर किया जा सकता है, और मुक्ति केवल यीशु पर उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करने से आती है।

अध्ययन में पाया गया कि सुसमाचारवादी मसीही कम से कम एक दर्जन प्रमुख सिद्धांतों के संबंध में झूठी शिक्षा में विश्वास रखते हैं। उदाहरण के लिए, एक-चौथाई से भी कम लोग मानते हैं कि यीशु शाश्वत हैं, यह मानते हुए कि उन्हें बनाया नहीं गया था। एक तिहाई से भी कम लोग मानते हैं कि पवित्र आत्मा एक व्यक्तिगत् प्राणी है। केवल 30 प्रतिशत का मानना है कि पवित्र आत्मा एक व्यक्ति को यीशु मसीह में विश्वास होने के बाद ही नया जीवन देता है। केवल 41 प्रतिशत का मानना है कि लोग स्वभाव से अच्छे नहीं हैं। केवल 40 प्रतिशत मानते हैं कि सबसे छोटा पाप भी शाश्वत दंड के योग्य है। ये सतही मुद्दे नहीं हैं; वे मूल धर्म-सिद्धांत हैं। आधार रेखा यह है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में सुसमाचारवादी मसीही व्यापक रूप से ईश-विज्ञान के प्राथमिक पहलुओं को लेकर झूठी शिक्षा विश्वास रखते हैं।

यह उस पद्धति का वास्तविक परिणाम है, जहाँ ईश-वैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित कलीसियाके अगुवे धर्म-सिद्धांत के प्राथमिक शिक्षक हैं। उम्मीद यह है कि ईश-वैज्ञानिक प्रशिक्षण के परिणामस्वरूप प्रचार मंच से अच्छे सिद्धांत सिखाए जाएँगे, और इसके परिणामस्वरूप कुर्सियों में रूढ़िवादी मान्यताओं को बढ़ावा मिलेगा। अध्ययन से पता चलता है कि इस दृष्टिकोण ने जैसा इरादा था, वैसा काम नहीं किया गया। वास्तव में, ऐसा प्रतीत होता है कि अधिकांश सुसमाचारवादी मसीही के पास गंभीरता के साथ झूठा ईश-विज्ञान है। यह समस्या अब तक काफी हद तक अज्ञात् रही है, मुख्यतः क्योंकि कलीसिया के परिदृश्य में लोगों को यह कहने के लिए नहीं बुलाया जाता है कि वे वास्तव में क्या विश्वास करते हैं। यह केवल यह माना जाता है कि उन्हें जो सिखाया गया है, वे उसे समझते हैं और उस पर विश्वास करते हैं। जाहिर तौर पर ऐसा नहीं है।

हम आत्मिक मामलों में कलीसिया के सदस्यों को निष्क्रिय प्राप्तकर्ता के रूप में मान रहे हैं। उन्हें न तो प्रशिक्षित किया गया है और न ही उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे अपनी वृद्धि और विकास या दूसरों की सेवा के लिए जिम्मेदार हों। अधिकांश भाग के लिए, सेवकाई को पेशेवर सेवकों की जिम्मेदारी के रूप में देखा जाता है।

अधिकांश मसीहियों को उनके विश्वास के अनुयायी और सक्रिय प्रचारक होने के लिए चुनौती नहीं दी जाती है *और जवाबदेह नहीं ठहराया जाता है*, बल्कि उन्हें केवल आत्मिक उपभोक्ता बनने की अनुमति दी जाती है।

जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि निष्क्रिय सदस्यों को ईश-विज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित नेतृत्व का उपदेश देना झूठी शिक्षा से बचने का एक प्रभावी तरीका नहीं है। साधारण-विश्वासियों द्वारा 3/3 समूहों के बारे में क्या? क्या इनका परिणाम भी विकृत ईश-विज्ञान है? यदि आप पवित्रशास्त्र की व्याख्या और उसे लागू करने के लिए 3/3 तरीके का उपयोग करने वाले नए विश्वासियों के समूह में शामिल हैं, तो आप संभवतः कुछ झूठी शिक्षा वाली या संदिग्ध बातें सुनेंगे। आप उन बातों को सुनेंगे क्योंकि सदस्यों को बोलने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। उन्हें पवित्रशास्त्र की व्याख्या करना और अपने लिए उसे लागू करना सिखाया जा रहा है।

समय के साथ, वे जो विश्वास करते हैं और कहते हैं कि उसकी सटीकता में सुधार होगा, क्योंकि वे पवित्रशास्त्र की अधिक मात्रा से परिचित हो जाएंगे और इसकी व्याख्या करने और इसे लागू करने में सुविधा प्राप्त करेंगे। यह अगले अध्याय में परिचित कराई गई प्रथाओं के साथ मिलकर होता है, जिसके परिणामस्वरूप प्रत्येक सदस्य साप्ताहिक रूप से पच्चीस या अधिक अध्याय पढ़ता है। इसके परिणामी तरीके नीचे दिए गए रेखांकन के समान है, जो बाएँ से दाएँ जाने वाली समय रेखा का प्रतिनिधित्व करता है। क्षैतिज रेखा सटीक शिक्षण या विश्वास का प्रतिनिधित्व करती है। घुमावदार रेखा उस सटीक समझ से भिन्नता का प्रतिनिधित्व करती है।

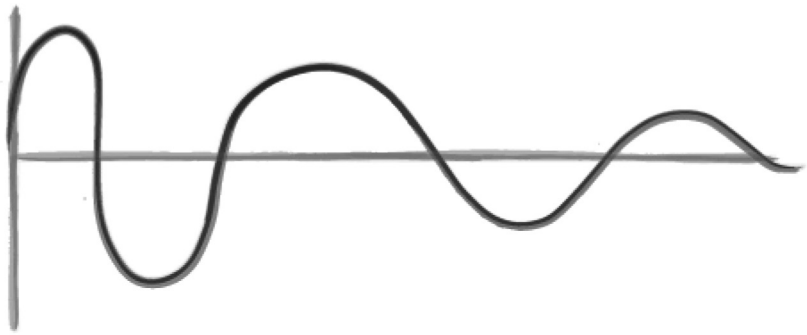

सहभागी 3/3 समूहों के साथ, हम समय के साथ रूढ़िवादी मसीही सत्य की समझ और उसके पालन में सुधार को देखते हैं। हम उन लोगों के बीच समय के साथ उसी प्रकार का सुधार नहीं देखते हैं जो निष्क्रिय आत्मिक उपभोक्ताओं के रूप में सप्ताह दर सप्ताह कुर्सियों में बैठे हैं। हमें अपनी कुछ परिचित कलीसियाई आदतों पर सवाल उठाने की जरूरत है।

जब मैं दक्षिणी बैपटिस्ट इंटरनेशनल मिशन बोर्ड के साथ वैश्विक रणनीति के

लिए उपाध्यक्ष के रूप में कार्यरत था, तब मेरे दायरे में आने वाले विभागों में से एक वैश्विक अनुसंधान विभाग (जीआरडी) था। जीआरडी ने एक दर्जन बड़े पैमाने पर, औपचारिक अध्ययन, आधारित किया। आंदोलनों को किया, जिसमें बड़े पैमाने पर पवित्रशास्त्र पठ्न के साथ-साथ 3/3 दृष्टिकोण का उपयोग किया गया था। परिदृश्य उन लोगों के समूह थे, जिन तक हमारी पहुँच नहीं थी, जिन्होंने बाद में बड़े कलीसिया-रोपण आंदोलनों का अनुभव किया, जो तेजी से बढ़े। इस परिस्थिति में, कोई भी परिपक्व विश्वासी उपलब्ध नहीं था क्योंकि यीशु मसीह के सभी अनुयायी अपने विश्वास में नए थे। चिंता यह थी कि परिणामस्वरूप झूठी शिक्षा की पद्धतियाँ विकसित हो सकति थीं। पूर्वाग्रह को कम करने के लिए, ये अध्ययन विभिन्न संगठनों के शोधकर्ताओं की टीमों द्वारा आयोजित किए गए थे। उनमें विभिन्न भूमिकाओं और पृष्ठभूमियों के लोगों के गहन साक्षात्कार शामिल थे और – जहाँ तक संभव हो, 360-डिग्री मूल्यांकन प्राप्त करने के लिए - अर्थात् पड़ोस के समूहों के मसीहियों और यहाँ तक कि क्षेत्र के अन्य-जातियों से भी।

उन दर्जनों आंदोलनों में विधर्म का कोई महत्वपूर्ण पैटर्न नहीं पाया गया। सबसे करीबी बात भारत के उड़ीसा के कुई जनजाति लोगों में थी, जिन्होंने बपतिस्मा में देरी करने का एक तरीका अपनाया था, जब तक कि नए विश्वासियों ने समय के साथ अपने मन-परिवर्तन की वैधता का प्रदर्शन नहीं किया था। यह दृष्टिकोण बाइबल आधारित नहीं है, लेकिन यह प्राथमिक मुद्दे के बजाय तृतीयक मुद्दा है। निश्चित रूप से बपतिस्मा का समय ऊपर उद्धृत अध्ययन में अमेरिकी सुसमाचारवादियों द्वारा रखी गई झूठी शिक्षा की तुलना में कम केंद्रीय है। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि इस दृष्टिकोण का उपयोग करते समय झूठी शिक्षा असंभव है; लेकिन इन दर्जनों अध्ययनों के आधार पर, मैं सुरक्षित रूप से कह सकता हूँ कि यह सामान्य या अपेक्षित नहीं है।

एक व्यावहारिक उदाहरण के रूप में, जब मैं चीन में काम कर रहा था, तो एक विश्वविद्यालय में लगभग एक दर्जन छात्र सर्दियों वाले सेमेस्टर में विश्वास में आए। वे सभी पूरी तरह से नास्तिक पृष्ठभूमि से आए थे और उनका मसीही विश्वास धर्म से कोई पूर्व संपर्क नहीं था। वसंत सेमेस्टर के मध्य में, हमने इन युवा विश्वासियों के लिए एक शिविर-सभा का आयोजन किया था। एक मनोरंजक गतिविधि के रूप में, हमने बाइबल सामान्य ज्ञान खेल से कार्ड लिए और समूह से बाइबल के कुल 700 सामान्य ज्ञान प्रश्न पूछे। हमने उन्हें एक साथ काम करने की अनुमति दी। सामूहिक रूप से, उन्होंने 700 प्रश्नों में से 698 (या 99.7 प्रतिशत) का सही उत्तर दिया।

संयुक्त राज्य अमेरिका में विश्वासियों के साथ कई बार बाइबल सामान्य ज्ञान पहेली खेलने के बाद, मैं आपको बता सकता हूँ कि यह यहाँ लंबे समय से विश्वास में बने रहने मसीहियों के लिए भी विशिष्ट नहीं होगा। जब आप अगला अध्याय पढ़ें तो इस उदाहरण को भी ध्यान में रखें, क्योंकि यह परिणाम उनके द्वारा पवित्रशास्त्र की बड़ी दैनिक पठ्न के साथ-साथ बाइबल के अंशों की उनकी गहन

जांच के कारण था। मुद्दा यह है कि उन्हें केवल सिखाया नहीं जा रहा था; बल्कि, उन्हें खुद को सिखाने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा था। परिणामस्वरूप, उन्होंने जल्दी ही बाइबल ज्ञान का एक स्तर प्राप्त कर लिया जिसे हम अपने अमेरिकी कलीसियाओं में बहुत ही असामान्य और ऐसे नए विश्वासियों के बीच लगभग अकल्पनीय मानेंगे।

यह शिक्षा सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य से समझ में आता है। सीखने के सबसे प्रभावी तरीकों में आत्म-खोज, अर्थात् जो सीखा है उसका अभ्यास करना, दूसरों को सिखाना और दोहराव शामिल है। 3/3 दृष्टिकोण में वे सभी तकनीकें शामिल हैं। पुनरावृत्ति तब प्राप्त होती है जब कोई दूसरों को सिखा रहा होता है और उन्हें अपने गूढ़ ज्ञान और निर्देश के साथ प्रतिक्रिया करते हुए सुनता है।

कल्पना कीजिए कि जिसने कभी साइकिल नहीं चलाई हो, उसे इक्कीस दिनों तक सोफे पर बैठकर फ्रांस की यात्रा वाले नाटक को देखने के लिए कहा जाए। आपके छात्र के पास अनुकरण के लिए आदर्श के रूप में दुनिया के सर्वश्रेष्ठ सवार होंगे आदर्श। दौड़ के अंत में, उस व्यक्ति को बाहर ले जाने और उसे साइकिल चलाने के लिए कहने की कल्पना करें। यह बहुत अच्छी तरह से काम नहीं करेगा! फिर, हम कलीसिया के सदस्यों से यह अपेक्षा क्यों करते हैं कि वे अपने पास्टर को ऐसा करते देखकर पवित्रशास्त्र की व्याख्या करना सीखेंगे? साइकिल चलाना सीखने के लिए, आपको साइकिल पर चढ़ना होगा, कई बार दुर्घटनाग्रस्त होना होगा और बहुत अधिक अभ्यास करना होगा। इसी तरह हम कोई भी कौशल सीखते हैं। इसी तरह, पवित्रशास्त्र की व्याख्या और उसे लागू करने का तरीका सीखने के लिए, आपको केवल दूसरों को ऐसा करते देखने के बजाय इसे स्वयं करने का अभ्यास करना होगा (शायद पहले खराब तरीके से)।

साइकिल चलाना सीखने में आमतौर पर बार-बार गिरना शामिल होता है। पवित्रशास्त्र की व्याख्या करना और उसे लागू करना सीखने के बारे में भी यही सच होगा। गलतियाँ तो होंगी। लेकिन लोगों को ऐसा करना सिखाने से बचने का यह पर्याप्त कारण नहीं है। अभ्यास से उनमें सुधार होगा।

इसलिए, मजबूत शिष्य बनाने के लिए, हमें उन्हें छोटे समूहों में रखना होगा जहाँ वे स्वयं परमेश्वर की सच्चाई की खोज करना, उसे लागू करना और दूसरों के साथ साझा करना सीखें। शिष्य बनाना शिष्य होने का एक अनिवार्य हिस्सा है, इसलिए हर किसी को मेज़ के तीनों पैरों में लगे रहने की जरूरत है (मत्ती 28:18-20)।

"विधिवाद!" की पुकार करने और साझा करने की विशिष्ट प्रतिबद्धताओं को बनाने और उनके प्रति जवाबदेह होने के 3/3 तरीके पर दूसरी बार होने वाली आपत्ति है। लेकिन विधिवाद तब प्रगट होता है, जब व्यक्ति क व्यक्ति ख को बताता है कि उन्हें क्या करना चाहिए, और यदि वे ऐसा नहीं करते हैं, तो उनकी आलोचना करते हैं (जैसा कि फरीसियों ने सब्त के दिन के संबंध में यीशु की आलोचना की थी)। 3/3 समूह में ऐसा नहीं होता है। 3/3 समूह में, प्रत्येक व्यक्ति प्रार्थना करता है और

परमेश्वर से पूछता है कि वह अनुच्छेद के जवाब में उनसे क्या करना चाहता है। फिर, प्रत्येक व्यक्ति समूह के साथ अपनी व्यक्तिगत् योजना साझा करता है।

निम्नलिखित बैठक में, समूह जाँच करता है कि उसके प्रत्येक सदस्य ने अपनी संबंधित योजनाओं को कैसे लागू किया। यह व्यक्ति ए नहीं है जो व्यक्ति बी को इस बात के लिए जिम्मेदार ठहराता है कि ए व्यक्ति क्या सोचता है कि परमेश्वर क्या चाहता है। व्यक्ति ख को उस बात के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है जो उसने परमेश्वर को उनसे कहते हुए सुनी है और अपने आत्मिक समुदाय के साथ साझा किया है। व्यवहार के किसी बाहरी मानक पर जोर नहीं दिया गया है, बल्कि प्रभु के सामने प्रत्येक व्यक्ति के हृदय पर दिया गया है। अपने सदस्यों को जवाबदेह ठहराकर, समूह प्रत्येक व्यक्ति से प्रेम करने की पूरी कोशिश कर रहा है, क्योंकि वे जानते हैं कि खुशी का एकमात्र रास्ता परमेश्वर जो कहता है, उसे करना और साझा करना है।

प्रार्थना

हे परमेश्वर, सबसे बढ़कर आप मौलिक, तत्काल, महँगी आज्ञाकारिता को महत्व देते हैं। उस दिशा में आगे बढ़ने में मेरी सहायता करें। और दूसरों को भी उस दिशा में आगे बढ़ने में मेरी मदद करें। केवल अगर मैं आपकी आज्ञाओं का पालन करूंगा तो मैं आपके प्रेम में बना रह सकता हूँ। और मैं वहीं रहना चाहता हूँ। उन चीजों को जड़ से उखाड़ फेंको जो मुझे रोकती हैं। यीशु के नाम में, आमीन।

प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें, फिर प्रार्थना करें और परमेश्वर से पूछें कि वह आपसे क्या सीखना और कराना चाहता है। शांत होकर सुनें।

अपनी डायरी की समीक्षा करें। क्या आपकी कोई पिछली प्रतिज्ञाएँ हैं जिन्हें आपने पूरा नहीं किया है? यदि आवश्यक हो, तो संशोधित समापन तिथियाँ निर्धारित करें।

1. क्या मैं जानने, करने या साझा करने में सबसे कमजोर हूँ? मैं अपनी कमज़ोरी वाले क्षेत्रों को कैसे मजबूत कर सकता हूँ?

2. क्या मैं नए विश्वासियों को बता रहा हूँ कि क्या विश्वास करना चाहिए, या उन्हें स्वयं सीखने के लिए प्रशिक्षित कर रहा हूँ? मैं पहले का कम और दूसरे का अधिक कैसे कर सकता हूँ?

3. मैं 3/3 तरीके को अपने जीवन में कैसे एकीकृत कर सकता हूँ?

4. इस अध्याय के प्रत्युत्तर में परमेश्वर मुझसे कौन-सी विशिष्ट कार्य करवाना चाहता है? (उन्ह अपने डायरी में लिख ले और अपने कैलेंडर में नियत कर ले।)

5. परमेश्वर चाहता है कि जो मैंने सीखा है उसे किसके साथ (कम से कम एक नाम) साझा करूँ?

प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको इन प्रतिबद्धताओं का पालन करने में सक्षम बनाए और उन लोगों के दिलों को तैयार करे जिनके साथ आप ज्ञान साझा करना चाहते हैं।

15 उत्तरदायी जीवन जीनान

प्रभु को जानने और उसका अनुसरण करने के आपके दैनिक अनुभव में निरंतर उत्तरदायी होना महत्वपूर्ण है।

जो थोड़े से थोड़े में सच्चा है, वह बहुत में भी सच्चा है: और जो थोड़े से थोड़े में अधर्मी है, वह बहुत में भी अधर्मी है।

-लूका 16:10

मसीही जीवन एक खुराक लेने या स्वास्थ्य कार्यक्रम के जैसा है। एक हैमबर्गर खाने का निर्णय लेने से शायद ही मेरा वज़न बढेगा। मेरा अच्छा स्वास्थ्य (या उसकी कमी) हजारों छोटे छोटे निर्णयों का परिणाम है। उसी तरह, आत्मिक बढ़ोतरी (या इसकी कमी) सिखाने, करने और साझा करने (या नहीं) के दोहराए गए चक्र से उत्पन्न होता है। दैनिक आदतें वे ईंट है, जो आपके जीवनरूपी घर को बनाती है। मैं उन आदतों को साझा करना चाहता हूँ, जो मैंने जो मुझे और कई अन्य लोगों को धार्मिकता से भरी जीवनशैली के अभ्यास का जीवन बनाने में मददगार लगती है। दो सहायक आदतें हैं दैनिक वचन पढ़ना और अपनी डायरी में लिखना और एक उत्तरदायी भागीदार के साथ साप्ताहिक बातचीत करना।

बाइबल में अपने दैनिक व्यक्तिगत् समय में, मैं चार से पाँच अध्याय पढ़ता हूँ- अर्थात् हर सप्ताह कम से कम पच्चीस अध्याय। हर दिन पढ़ने से, मैं एक से चार आयतों को चयन करता हूँ, जिनका प्रभु मुझ पर विशेष रूप से प्रभाव डालता हैं। फिर मैं अक्षरबद्ध कविताओं **एसओएपीएस** का उपयोग करते हुए उन कुछ आयतों के सम्बन्ध में अपनी डायरी में अपना दृष्टिकोण लिखता हूँ।

पवित्रशास्त्र (आयत लिखें)

अवलोकन (मुख्य विचार लिखें या आयतों की संक्षिप्त व्याख्या करें)

अनुप्रयोग (निर्धारित करें कि परमेश्वर मुझसे क्या करवाना या बनाना या बदलवाना चाहते हैं)

प्रार्थना (अनुप्रयोग के सम्बन्ध में एक प्रार्थना लिखें)

साझा करें (किसी भी व्यक्ति या व्यक्तियों को लिखे जिनके साथ मैं अपना दृष्टिकोण साझा करूँगा)

इसके अलावा, मैं एक उत्तरदायी भागीदार के साथ (आमतौर पर, साप्ताहिक, फ़ोन पर या विडियो कॉल पर) नियमित बात करता हूँ। हम विचार करते हैं कि प्रभु हमें क्या दिखा रहा है, इसका हम पर क्या प्रभाव पड़ा है, हम किसके साथ साझा कर रहे हैं, और सामान्य जीवन उत्तरदायी प्रश्नों की सम्पूर्ण श्रृंखला।

उत्तरदायी प्रश्न पवित्र जीवन जीने से संबंधित व्यापक, और चल रही समस्या को ढांक लेते हैं। वे मुझे उन क्षेत्रों के प्रति सचेत करने के लिए एक प्रारम्भिक चेतावनी प्रणाली के रूप में काम करते हैं जहाँ मैं आत्मा के बजाय शरीर में चलना शुरू कर रहा हूँ। वे मुझे चिंता की समस्याओं को आदतन या जड़ पकड़ने से पहले पहचाननें में मदद करते हैं। जब समस्याएँ उठती है, तो मैं उन्हें परमेश्वर और अपने उत्तरदायी भागीदार के सामने स्वीकार कर सकता हूँ और बड़ी समस्याए बनने से पहले उनसे निपट सकता हूँ (याकूब 5:16)।

एक उत्तरदायी भागीदार आपके समान लिंग के साथ होनी चाहिए और परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते को आगे बढ़ाने के लिए समर्पित होनी चाहिए। गोपनीयता की आपसी समझ भी होनी चाहिए। आप इस बात पर एक साथ सहमत हो सकते हैं कि प्रत्येक सप्ताह बाइबल के कौन से अंश पढ़े जाएँ। अपनी मुलाक़ात के दौरान, आप अपनी पिछली मुलाकात के बाद से अपने जीवन के बारे में कई सवालों पर चर्चा करेंगे।

मेरे द्वारा उपयोग किए जाने वाले प्रश्न मेथोडिस्टवाद के संसथापक, जॉन वेस्ले द्वारा अपने प्रसिद्ध उत्तरदायी समूहों में और मेरे अच्छे दोस्त नील कोल द्वारा अपने जीवन परिवर्तन समूहों (**एलटीजी**) में उपयोग किए गए प्रश्नों के समान है।

यहाँ वे प्रश्न मिलते हैं, जिनका मैं उपयोग करता हूँ:

1. पिछले सप्ताह के आपके पढ़ने से आपके दृष्टिकोण ने आपके सोचने और जीने के तरीके को कैसे आकार दिया है?
2. आपने पिछले सप्ताह अपने दृष्टिकोण किसके साथ साझा किए और इसे कैसे ग्रहण किया गया?
3. आपने परमेश्वर को कार्य करते हुए कैसे देखा है?
4. क्या आप इस सप्ताह अपने शब्दों और कार्यों से यीशु मसीह की महानता के गवाह रहें हैं?
5. क्या आप यौन रूप से आकर्षक सामग्री के संपर्क में आये हैं? क्या आपने अपने दिमाग में अनुचित यौन विचार आने दिए हैं?
6. क्या आपने धन के उपयोग में परमेश्वर के स्वामित्व को स्वीकार किया है?
7. क्या आपने किसी बात का लालच किया है?
8. क्या आपने अपने शब्दों से किसी की प्रतिष्ठा या भावनाओं को ठेस पहुँचाई है?
9. क्या आपने अपने शब्दों या कार्यों में बेईमानी की है या कुछ बढ़ा चढ़ा कहा है?
10. क्या आपने व्यसनी (या आलसी या अनुशासनहीन) व्यवहार अपना लिया है?
11. क्या आप अपने कपड़ों, दोस्तों, काम, या संपत्ति के गुलाम रहे हैं?

12. क्या आप किसी को माफ़ करने में असफल रहे हैं?
13. आप किन चिंताओं या बोझों का सामना कर रहे हैं? क्या आपने शिकायत की या बड़बड़ाए? क्या आपने धन्यवादी हृदय बनाए रखा है?
14. क्या आपने अपने महत्वपूर्ण रिश्तों में सम्मान, समझ, और उदार रहे हैं?
15. आपने विचार, शब्द या कार्यों में किन परीक्षाओं का सामना किया और आपने कैसे प्रतिक्रिया दी?
16. आपने दूसरों, विशेषकर विश्वासियों की सेवा करने और उन्हें आशीषित करने के अवसरों का कैसे लाभ उठाया?
17. क्या आपने अपनी प्रार्थना के विशिष्ट उत्तर देखें हैं?
18. क्या आपने अपने सप्ताह भर की पढाई पूरी कर ली है?

कभी कभी कम साक्षरता वाले स्तर के क्षेत्रों में, इन दैनिक और साप्ताहिक तरीकों में समायोजन करना आवश्यक होगा। प्रश्नों की सूची के बजाय, मैं लोगों से बाइबल के कुछ अंश याद करने के लिए कहता हूँ (जैसे कि गलातियों 5:19-23; 1 यूहन्ना 2:15-16; 1 कुरिन्थियों 13:4-7; 2 तीमुथियुस 3:16-17) और उन्हें आत्मिक उत्तरदायी समस्याआ पर चर्चा के आधार के रूप में उपयोग करता हूँ। हर सप्ताह बाइबल के पच्चीस अध्याय पढ़ने की बजाय, वे अपने फोन या ऑडियो बाइबल पर वचन सुनतें हैं।

जैसे कि हमने पिछले अध्याय में चर्चा की थी, व्यवहारिक व्याख्याशास्त्र (यानी की बाइबल व्याख्या और अनुप्रयोग कौशल) सीखने के लिए एक बड़ी मात्रा में बाइबल पढ़ना आवश्यक है। प्रभु के हर एक चेले के लिए एक लक्ष्य अपने लिए बाइबल की व्याख्या करना और उसे लागू करना सीखना है। समग्र रूप से बाइबल के व्यापक प्रदर्शन के बिना यह असंभव है।

यदि आप अपनी कलीसिया की व्यापक सभाओं में 3/3 का तरीका उपयोग करते हैं, तो आपको छोटे अंशों की विस्तृत परीक्षा की नियमित खुराक प्राप्त हो रही है। आठ लोगों के समूह के साथ 3/3 दृष्टिकोण का उपयोग करने में लगभग बीस आयतों को पढ़ने में आमतौर पर तीन घंटे लगते हैं। बहु-अध्याय सत्र व्यवहारिक नहीं है।

संक्षिप्त अंशो में गहराई से खुदाई करने से कभी भी बाइबल की व्याख्या करने के लिए सर्वांगींण संसाधन नहीं मिल पाएगा। शैली के प्रभाव, मूल रूप से सुनने वालों के बारे में सुराग, सन्दर्भ का प्रभाव, और अंशों की तुलना करने में कौशल जैसे महत्वपूर्ण संकेतों को लेने के लिए, बाइबल के बड़े हिस्से को लेना आवश्यक है। आप प्रचार सुनकर या किताबें पढ़कर बाइबल की व्याख्या के इन पहलुओं के बारे में सीख सकते हैं, लेकिन अपने लिए बाइबल की अच्छी तरह से व्याख्या करना सीखने के लिए लम्बे अंशों को अपने जीवन में उतार लेने की आवश्यकता है। मैं आपको सुनिश्चित कर सकता हूँ कि जो लोग प्रमुख गूढ़ ज्ञान के बारे में लिखते या बोलते हैं, उन्होंने ऐसा किया है। विशेष रूप से, कोई भी अन्य व्यक्ति आपको नहीं बता सकता कि प्रभु कैसे चाहता है कि आप बाइबल को लागू करें। यह केवल सीधे उससे ही आ सकता है। बाइबल से परिपूर्ण होने से उसे सुनने के लिए आपको एक बेहतर आधार मिलता है।

बिना सोचे समझे बाइबल के बड़े हिस्से का उपभोग करना निश्चित रूप से संभव

है, यही कारण है कि **एसओएपीएस** दृष्टिकोण सहायक है। जब आप अपना दैनिक पढ़ना पूरा करते हैं तो यह ध्यान केंद्र के स्तर और अनुप्रयोग के प्रति नज़र बनाए रखने में मदद करता है। यह प्रत्येक दिन एक संक्षिप्त "गहरा गोता लगाने" का अवसर भी प्रदान करता है।

मैं एक डायरी रखने का आग्रह करता हूँ, ताकि आप प्रभु द्वारा सिखाए गए शब्दों को सुन सकें और आपको इसे लागू करने और दूसरों के साथ साझा करने के लिए प्रोत्साहित कर सकें। लिखने का कार्य इसे आपके दिमाग में बैठाने में मदद करेगा। यह आपको किसी अधूरे वायदे की जाँच के लिए समय-समय पर डायरी की समीक्षा करने की भी अनुमति देगा। यदि आपकी याददाश्त अच्छी है, तो आपको इस उद्देश्य के लिए किसी डायरी की आवश्यकता नहीं है। यदि आप हममे से बाकी लोगों की तरह है और प्रभु ने जो आप पर जो प्रभाव डाला है उसे गंभीरता से लेना चाहते हैं, तो आपको एक डायरी की आवश्यकता है। एक बार जब आपने वह कर लिया जो उसने आपसे करने के लिए कहा था, तो आपको इसे दोबारा देखने की आवश्यकता नहीं है। जब तक आप नहीं करते जो उसने कहा है, आपको एक अनुस्मारक की ज़रूरत है।

याद रखें, उत्तरदायी सभाओं में चल रही समस्याओं और सामान्य सिद्धांतों से निपटा जाएगा। डायरी उन विशिष्ट अनुप्रयोगों पर केन्द्रित है जिन्हें आप पवित्र आत्मा से 3/3 सभाओं और **एसओएपीएस** पढ़ने में उजागर करने के लिए कहते हैं।

जितना संभव है, 3/3 प्रक्रिया और **एसओएपीएस** डायरी में आवेदन सामान को विशिष्ट और अवलोकन योग्य अनुप्रयोगों के रूप में तैयार किया जाना चाहिए, न कि सिद्धांत आधारित अवधारणाओं के रूप में। हम एक कार्य योजना बनाना चाहते हैं, कोई इच्छा व्यक्त नहीं करना चाहते। स्पष्ट वायदा करना अधिक सामर्थी है, जैसे "मैं आज रात अपनी पत्नी को बर्तन धोने में मदद करूँगा," यह कहने की तुलना में, "मुझे दूसरों के प्रति अधि विचारशील होना चाहिए"।

शुरुआत में, यह कठिन लग सकता है, विशेषकर उन लोगों के लिए जो कुछ समय से मसीही हैं। हम प्रचारों और शिक्षण से सिद्धांत-आधारित अनुप्रयोगों को सुनने के आदी हैं। यह आवश्यक है, क्योंकि पास्टरों और शिक्षकों को ऐसे सामान्य अनुप्रयोग बनाने की आवश्यकता है जो सभी पर लागू हों। हम जो खोज रहे हैं वह प्रभु से निर्देशित है कि वह कैसे व्यक्तिगत् रूप से चाहता है कि हम उस सामान्य सिद्धांत या अवधारणाओं को अपने जीवन में लागू करें। यह उसकी आवाज़ सुनना सीखने और उन कार्यों की पहचान करने के सन्दर्भ में एक आवश्यक कदम है जिनके लिए हम हमें उत्तरदायी ठहराया जा सकता है।

प्रार्थना

प्रभु, मुझे छोटी-छोटी बातों में भी विश्वासयोग्य रहना सिखा। मेरे जीवन में सीखने, करने, साझा करने और दोहराने का एक अच्छा चक्र स्थापित करने के लिए आदतें बनाने में मेरी मदद करें। मुझे विशेष रूप से दिखाएँ, कि आप मुझसे अपनी दैनिक साप्ताहिक दिनचर्या में क्या परिवर्तन करवाना चाहते हैं।

प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें, फिर प्रार्थना करें और परमेश्वर से पूछें कि वह आपसे क्या सीखना और कराना चाहता है। शांत होकर सुनें।

अपनी डायरी की समीक्षा करें। क्या आपकी कोई पिछली प्रतिज्ञाएँ हैं जिन्हें आपने पूरा नहीं किया है? यदि आवश्यक हो, तो संशोधित समापन तिथियाँ निर्धारित करें।

1. क्या मेरी दैनिक और साप्ताहिक आदतें मुझे विश्वासयोग्यता में बढ़ने के लिए उत्तरदायी बनाती है? इस अध्याय में कौन सा संसाधन मेरे लिए सहायक हो सकता है?

2. इस अध्याय के प्रत्युत्तर में परमेश्वर मुझसे कौन-सी विशिष्ट कार्य करवाना चाहता है? (उन्ह अपने डायरी में लिख ले और अपने कैलेंडर में नियत कर ले।)

3. परमेश्वर चाहता है कि जो मैंने सीखा है उसे किसके साथ (कम से कम एक नाम) साझा करूँ?

प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको इन प्रतिबद्धताओं का पालन करने में सक्षम बनाए और उन लोगों के दिलों को तैयार करे जिनके साथ आप ज्ञान साझा करना चाहते हैं।

16 प्रार्थना में बढ़ना

हमें निरंतर प्रार्थना के जीवन की ओर बढ़ने की आवश्यकता है।

> और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने, और रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।
>
> -प्रेरितों के काम 2:42

प्रार्थना परमेश्वर के साथ बातचीत है। यह उन्हें और अधिक जानने का एक अनिवार्य पहलू है। हमारी उनके साथ बातचीत से उनके साथ हमारे रिश्ते की प्रकृति के बारे में बहुत कुछ पता चलता है। परमेश्वर के साथ एक अच्छी बातचीत में बहुत कुछ सुनना शामिल होता है। मुझे ज़रूर सुनना चाहिए ताकि मैं समझ सकूँ और उनकी इच्छा पूरी कर सकूँ। यह मसीह में जीवन का ताना-बाना है। इस अध्याय में, मैं आपके प्रार्थना जीवन को और बेहतर बनाने के लिए तीन संसाधनों पर चर्चा करूँगा।

चलकर प्रार्थना करना हमें बातों को परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखना सिखाता है। यह उस क्षमता को विकसित करने का सबसे बेहतर तरीका है जिसे मैं जानता हूँ। यह हमें पवित्र आत्मा की आवाज़ को पहचानने का अभ्यास करने और प्रार्थना करने के लिए यीशु की आज्ञा का पालन करने की भी अनुमति देता है कि परमेश्वर पृथ्वी पर वैसा ही करेंगे जैसा स्वर्ग में होता है (मत्ती 6:10)।

चलकर प्रार्थना करने का मतलब है कि चलते समय प्रार्थना करना, आमतौर पर उन बातों के लिए प्रार्थना करना जो आप चलते समय देखते हैं। अपने साथी के साथ प्रार्थना करना सबसे अच्छा है। यह आपके, आपके दोस्त, और परमेश्वर के बीच तीन-तरफ़ा बातचीत है। इस तरह, आपको दोहरा लाभ मिलता है- सीधे प्रभु से सुनना और यह भी सुनना कि प्रभु दूसरे व्यक्ति से कैसे बात कर रहे हैं। अक्सर, परिणामस्वरूप, आपकी प्रार्थनाएँ एक दूसरे की प्रार्थनाओं पर आधारित होती है और उन दिशाओं में जाएँ जिनके बारे में आप दोनों में से किसी ने भी विचार नहीं किया होता अगर आपने अलग प्रार्थना की होती।

आमतौर पर यह निर्धारित करने के चार तरीके हैं कि प्रार्थना करते समय क्या प्रार्थना करनी चाहिए:

1. अवलोकन
2. प्रकाशन
3. शोध करना
4. बाइबल के एक अंश पर आधारित प्रार्थना करना

अवलोकन का अर्थ है कि आप चलते समय जो देखते हैं, सुनते हैं, या सूंघते हैं उसके बारे में प्रार्थना करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप एक आवासीय पड़ोस में हैं और आँगन में एक तिपहिया साइकिल देखते हैं, तो यह आपको उस घर में पारिवारिक जीवन के लिए, या पड़ोस में बच्चों के लिए, या यहाँ तक कि लोगों की परिवहन आवश्यकताओं के लिए प्रेरित कर सकता है।

प्रकाशन का तात्पर्य परमेश्वर द्वारा आपके दिमाग में कुछ डालने से है- कुछ ऐसा जो आप देख रहें हैं उससे स्पष्ट रूप से असंबंधित है। कभी कभी यह एक चित्र के रूप में हो सकता है, लेकिन अक्सर केवल यह एक विषय या विचार होता है।

हम उन समस्याओं के बारे में भी प्रार्थना कर सकते हैं जिनके बारे में हमने शोध करके सीखा है। उदाहरण के लिए, आपने बेरोज़गारी, किशोर गर्भावस्था, या नशीली दवाओं के दुरुपयोग की समस्याओं के बारे में पढ़ा होगा। फिर, जब आप अपने आस-पड़ोस में घूमें, तो आप इन समस्याओं के बारे में प्रार्थना कर सकते हैं। शोध करने के लिए, जाहिर है, पहले योजना बनाना और इरादों की आवश्यकता है।

बाइबल के एक अंश के आधार पर पहले से ही प्रार्थना की योजना बनाई जा सकती है, या फिर आपको प्रार्थना के दौरान किसी विशेष मार्ग पर ले जाया जा सकता है। यदि आप बाइबल से गहराई से परिचित है तो ऐसा होने की अधिक संभावना होती है।

व्यवहारिक रूप से, हम परमेश्वर की इच्छा और पृथ्वी की स्थिति के बीच अंतराल की तलाश कर रहे हैं। प्रभु की प्रार्थना में, यीशु ने हमें प्रार्थना करना सिखाया, "तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो" (मत्ती 6:10)। जैसे जैसे हम चलते हैं, हम उन विशिष्ट क्षेत्रों पर ध्यान दे रहे हैं जहाँ परमेश्वर की इच्छा पूरी *नहीं* हो रही है और हम परमेश्वर से ऐसा करने के लिए कह रहे हैं, प्रार्थना के उत्तर में उपयोग करने के लिए खुद को उपलब्ध करा रहे हैं। जब हम प्रार्थना करते है, तो हम परमेश्वर के साथ बातचीत में व्यस्त रहते हैं उनसे पूछते है कि जो हम अवलोकन कर रहे है, उसके बारे में वह क्या सोचते हैं| चलकर प्रार्थना करते हुए आप जो देख रहे हैं उसके लिए परमेश्वर से प्रश्न पूछ सकते हैं, और वह आपको उन लोगों के साथ बातचीत करने और प्रार्थना करने में मार्गदर्शन कर सकता है, जिनसे आपका सामना होता है। यह सारे अनुभव हमारी परमेश्वर से सुनने और परिस्थति को परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखने की क्षमता को बढ़ा सकते हैं।

अभ्यास के साथ, यह आदत बन सकता है, और हम केवल विशेष समय और स्थानों पर प्रार्थना करने के बजाय *प्रार्थना जीवन* का अनुभव करना शुरू कर देते हैं। पौलुस का यही मतलब था जब उसने हमें "निरंतर प्रार्थना करने" के लिए आज्ञा दी (1 थिस्सलुनिकियों 5:17)। चलते हुए प्रार्थना करना हमें संसार को वैसे ही देखना सिखाती है जैसे परमेश्वर देखता है। यह धार्मिकता से भरी जीवन शैली के अभ्यास का केंद्र है।

प्रार्थना के प्रति हमारा दृष्टिकोण हवा या पानी या भोजन के प्रति हमारे दृष्टिकोण जैसा होना चाहिए। हम इसके बिना नहीं कर सकते हैं। यीशु के पास निश्चय ही यह दृष्टिकोण था। उसने कहा कि उनका भोजन पिता की इच्छा को और उसके कार्य को पूरा करना ही है (यूहन्ना 4:34)। उसने कहा कि मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा(मत्ती 4:4)। यदि हम लगातार नहीं सुन रहे हैं, तो हम हर वचन कैसे सुन सकते हैं? प्रार्थना कोई आकस्मिक अभ्यास नहीं है, बल्कि जीवन जीने का एक निरंतर तरीका है।

ऐसे तरीकों से प्रार्थना करना संभव है, जिनका कोई मूल्य नहीं है। यीशु ने चेतावनी दी कि जो लोग सार्वजनिक रूप से प्रार्थना करते हैं, "ताकि वे लोगों को दिखाई दें", उन्हें पिता से कोई प्रतिफल नहीं मिलेगा(मत्ती 6:5-6)। प्रार्थना का उद्देश्य सार्वजानिक प्रदर्शन नहीं है, बल्कि परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत बातचीत करना है। यदि हमें उसकी उपस्थिति के बारे में पता चलता है, तो उसे अनदेखा करना कठिन है। एक सांसारिक राजा के सामने खड़े होने की कल्पना करें। क्या आप उसे पूरी तरह से अनदेखा कर पायेंगे? नहीं, आप जो कुछ भी कर रहे थे या कह रहे थे, उसके प्रति उसके व्यवहार पर आप बारीकी से ध्यान देंगे। जब हम परमेश्वर की उपस्थिति में हो (जो कि सदैव होता है) तो हमें भी ऐसा ही करना चाहिए। हम यह जानने की प्रबल इच्छा रखते हैं कि वह हमारे कार्यों, वाणी और दृष्टिकोण के बारे में क्या सोचते हैं।

अक्सर, हम नहीं जानते कि क्या प्रार्थना करनी चाहिए। जब मुझे ऐसा महसूस होता है, तो मैं मान लेता हूँ कि चुप रहना और सुनना बेहतर है। कभी कभी इस भावना का अर्थ यह होता है कि अब प्रश्न पूछने का समय आ गया है। यदि हमें प्रार्थना में परमेश्वर से कुछ कहना है, हमें पवित्र आत्मा द्वारा आहें भर के हस्तक्षेप करने का अकल्पनीय लाभ है जो शब्दों से परे हैं, और पिता उसे पूरी तरह से सुनता और समझता है (रोमियों 8:26)।

अक्सर, इस अत्याधिक व्यस्त संसार में, जब हम प्रार्थना करते हैं तो ध्यान केन्द्रित करना बहुत कठिन होता है। ध्यान भटकना आसान है। मैं एक अन्य व्यवहारिक संसाधन का उल्लेख करना चाहूँगा: प्रार्थना चक्र, जिसे डिक ईस्टमैन ने एवरी होम फॉर क्राइस्ट ने विकसित किया है। (अनुमति द्वारा उपयोग किया गया है। डिक ईस्टमैन, *वह घड़ी जो संसार को बदल देती है*, ग्रैंड रैपिड्स एमआई: चुनी हुई पुस्तकें, 2002)। यह प्रार्थना में बिना ध्यान भटकाए हुए एक घड़ी बिताने का एक सरल तरीका है। इसे बारह खण्डों में विभाजित किया गया है, प्रत्येक एक अलग प्रकार की प्रार्थना के लिए (जैसा कि नीचे सूचीबद्ध है)। प्रत्येक खंड को पाँच मिनट की प्रार्थना के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में उपयोग करना ही लक्ष्य है। एक साथ, बारह खण्डों के परिणामस्वरूप प्रार्थना के एक घंटे के लिए एक उपयोगी मार्गदर्शिका मिलती है।

प्रार्थना चक्र का उपयोग करके एक घंटे तक प्रार्थना कैसे करें:

1. **स्तुति:** अपनी प्रार्थना की शुरुआत प्रभु की स्तुति करते हुए करें। उन बातों के लिए उसकी स्तुति करें जो अभी आपके मन में हैं। पिछले सप्ताह में किए गए किसी विशेष कार्य के लिए उसकी स्तुति करें। अपने परिवार के प्रति उसकी भलाई के लिए उसकी स्तुति करें। (भजन संहिता 34:1)

2. **प्रतीक्षा:** इस समय को प्रभु की प्रतीक्षा में बिताएँ। उसे आपके लिए एक साथ प्रतिबिम्ब खींचने दें। आने वाले समय और उन बातों के बारे में सोचे जो आप चाहते हैं कि प्रभु आपके लिए करे। (भजन संहिता 27:14)

3. **अंगीकार करना:** पवित्र आत्मा से कुछ भी अपने जीवन में दिखाने के लिए कहें, जो उसे अप्रसन्न करता है। उससे उन दृष्टिकोणों की ओर इशारा करने के लिए कहे जो गलत है, साथ ही उन विशिष्ट कार्यों के बारे में भी बताएं जिनके लिए आपने कभी अंगीकार की प्रार्थना नहीं की है। अब इसे प्रभु के सामने अंगीकार करें और घोषणा करें 1 यूहन्ना 1:9 ताकि आप अपने बचे हुए घंटे के लिए प्रार्थना कर सकें, और फिर वचन उठायें और पढ़ें। (भजन संहिता 51:1-19)

4. **प्रार्थना के साथ वचन पढ़ें:** भजन संहिता, भविष्यद्वाताओं, और नए नियम में

स्थित प्रार्थना के अंशो में परमेश्वर के वायदों को पढ़ने में समय बिताएं। अपनी सहमति की जाँच करें। (भजन संहिता 119:97)

5. **अनुरोध:** यह दूसरों के लिए सामान्य अनुरोध है, प्रार्थना सूची, प्रार्थना कार्ड, या अपनी या दूसरों की ओर से व्यक्तिगत् प्रार्थना रूचि के माध्यम से प्रार्थना करना। (इब्रानियों 4:16)

6. **मध्यस्तता:** दूसरों की ओर से विशिष्ट प्रार्थना करना। उन विषयों के लिए विशेष रूप प्रार्थना करना जिन्हें आप जानते हैं। (रोमियों 15:30-33)

7. **वचन के लिए प्रार्थना करें:** अब बाइबल लें और बाइबल से प्रार्थना करें। भजन संहिता 119 प्रार्थना की अभिव्यक्ति के लिए कुछ अंश स्वयं को खूबसूरती से प्रस्तुत करते हैं। (भजन संहिता 119:38-46)

8. **धन्यवाद देना:** इन मिनटों को अपने जीवन की बातों, कलीसिया, अपने विस्तारित परिवार, अपने कार्यस्थल और अपने समुदाय की ओर से होने वाली बातों के लिए प्रभु का धन्यवाद देने में बिताएँ। (फिलिप्पियों 4:6)

9. **गीत गाना:** अपना भजन लें और एक प्रार्थना गीत गाएँ, एक स्तुति गीत गाएँ, आत्मा को जीतने या गवाही देने के संबंध में एक गीत गाएं। इसे स्तुति का समय होने दे। (भजन संहिता 59:17)

10. **वचन पर ध्यान करें:** प्रभु को आपसे बात करने के लिए कहें। अपने पास एक कागज और एक पेन रखें, उन प्रभावों को बताने के लिए तैयार रहें जो वह आपके जीवन पर डालता है। (भजन संहिता 63)

11. **सुनना:** जो कुछ आपने वचन से पढ़ा है, जो कुछ आपने प्रार्थना की है, जिन बातों के लिए आपने परमेश्वर का धन्यवाद दिया है, और जो गीत आप गाते रहे हैं, उन्हें आपस में मिलाने में समय व्यतीत करें, और देखें कि कैसे परमेश्वर उन सभी को आपसे बात करने के लिए एक साथ लाते हैं। (1 शमूएल 3:9-10)

12. **स्तुति के साथ समाप्त करें:** प्रभु के साथ बिताए गए समय में उसकी स्तुति करें। उस प्रभाव के लिए उसकी स्तुति करें जो उसने आपको दिया है। आपके मन में उसके द्वारा दिए गए प्रार्थना निवेदनों के लिए उसकी स्तुति करें। (भजन संहिता 145:1-13)

लोगों, विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका में, ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता सीमित है और इसलिए, प्रार्थना करने की क्षमता भी सीमित है। प्रार्थना चक्र कई लोगों को अपनी क्षमता बढ़ाने का एक प्रभावी तरीका प्रदान करता है। यह लोगों को उनके प्रार्थना जीवन के प्रति अधिक संतुलित दृष्टिकोण रखने में भीमदद करता है-विशेष कर अधिक सुनने के संबंध में, जो कि परमेश्वर का अनुसरण करने का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

एक अतिरिक्त प्रार्थना अभ्यास जिसे मैंने आश्चर्यजनक रूप से फलदायी पाया है वह है अपने शत्रुओं के लिए प्रार्थना करना। हाँ, सभी जानते हैं कि परमेश्वर के उल्ट-पुलट राज्य का हिस्सा हमारे शत्रुओं से प्रेम करने और उन लोगों के लिए प्रार्थना करने की आज्ञा है जो हमें सताते हैं। मेरी जीवन में तीन बार, लोगों ने

मेरे साथ गंभीर रूप से अन्याय किया है जिससे मेरा जीवन अस्त-व्यस्त हो गया। सौभाग्य से, पीछे मुड़कर देखने पर मैं स्पष्ट रूप से समझ सकता हूँ कि परमेश्वर ने उनमें से प्रत्येक स्थिति का उपयोग मेरी भलाई के लिए कैसे किया। इस जीवन में हमेशा ऐसा नहीं होता है। ऐसी कई दर्दनाक घटनाओं को अनंत काल में ही ठीक से समझा जा सकता है।

किसी भी स्थिति में, प्रत्येक दिन उन तीन लोगों में से प्रत्येक के लिए प्रार्थना करने के लिए अनुशासन बनाता हूँ। मैं उस दिन के **एसओएपीएस** डायरी प्रविष्टि के लिए अपने "अनुप्रयोग" मद से संबंधित एक बात के लिए प्रार्थना करता है। (संयोग से, मैं कई अन्य लोगों के लिए ऐसा ही करता हूँ, जो मेरी दैनिक प्रार्थना सूची में हैं।) उदाहरण के लिए, मैंने हाल ही में लूका 21:34-36 पढ़ा, जहाँ यीशु ने कहा,

> इसलिए सावधान रहो, ऐसा न हो कि तुम्हारे मन खुमार, और मतवालेपन, और इस जीवन की चिंताओं से सुस्त हो जाएँ, और वह दिन तुम पर फंदे के समान अचानक आ पड़े। क्योंकि वह सारी पृथ्वी के सब रहनेवालों पर इसी प्रकार आ पड़ेगा। इसलिए जागते रहो और हर समय प्रार्थना करते रहो की तुम इन सब आनेवाली घटनाओं से बचने और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े होने के योग्य बनों।

सामान्य अनुप्रयोग यह है कि हमें ऐसी किसी भी बात से बचना है, जो हमें मसीह की वापसी से सतर्क रहने या उनकी वापसी से पहले आने वाली कठिनाइयों के लिए तैयार होने में कमज़ोर में या हमारे ध्यान को भटका देगी। हमें उन कठिनाइयों को सहन करने की सामर्थ्य के लिए भी प्रार्थना करनी चाहिए। जैसे ही मैंने अपनी प्रार्थना सूची में शामिल लोगों के लिए प्रार्थना की, मैंने प्रभु से पूछा कि उस अनुप्रयोग के कौन से विशेष पहलू प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रासंगिक और सहायक होंगे, और फिर मैंने उस उद्देश्य के लिए प्रार्थना की।

बार-बार, उस दिन के अनुप्रयोग के सम्बन्ध में उन तीन "शत्रुओं" के लिए मेरी दैनिक प्रार्थनाएँ मुझे अनुप्रयोग की बारीकियों के बारे में अतिरिक्त जानकारी देती है, जिन पर मैंने ध्यान नहीं दिया होता यदि मैं केवल अपने लिए या मेरे करीबी अन्य लोगों के लिए प्रार्थना कर रहा होता। ये प्रार्थनाएँ मुझे सदाचार, भ्रष्टाचार, प्रेरणा, और परीक्षाओं के आयामों के बारे में जागरूकता देती है, जो अन्यथा मेरे मन में कभी नहीं आती। मैं इस साधारण सी आदत का मुझ पर पड़ने वाले प्रभाव से लगातार आशचर्यचकित रहता हूँ। मैं इससे अत्यंत आशीषित हूँ। इससे मुझे उन लोगों को और बेहतर तरीके से समझने में और उन्हें प्रेम करने में सहायता मिलती है जिनके लिए मैं प्रार्थना कर रहा हूँ।

प्रार्थना सुनने और एकता के विषयों को एक साथ लाती है। प्रार्थना का उद्देश्य एक सामूहिक अभ्यास के साथ साथ व्यक्तिगत् अभ्यास भी है। प्रभु की प्रार्थना, मत्ती 6:9-13में, बहुवचन में है: "हमारे पिता... हमारे दिन भर की रोटी... हमारे अपराधों को क्षमा कर... हमें परीक्षा में न ला... हमें बचा।" पत्रियों में प्रार्थना के कई निर्देश बहुवचन में मिलते हैं।

प्रेम, सुनना, और एकता के आधार पर यूहन्ना के महत्व देने के आधार पर, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि वह अपना प्रसिद्ध प्रार्थना का वायदा बहुवचन में देता है 1 यूहन्ना 5:14-15:

> और हमें उसके सामने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उसकी इच्छा

> के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है। तब हम जानते हैं कि जो कुछ *हम मांगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं कि जो कुछ हम ने उससे माँगा, वह पाया है।*

इसका अर्थ यह है कि हमें एक दूसरे के साथ प्रार्थना करने में समय बिताना चाहिए। इसका यह भी अर्थ है कि हमें एक दूसरे के लिए और एक दूसरे के साथ सहमति से प्रार्थना करनी चाहिए। इस तरह से प्रार्थना करने का एक विशेष महत्व है। हम इसका उदाहरण मत्ती 18:19-20, में देखते हैं, जहाँ यीशु कहता है, "फिर मैं तुम से कहता हूँ, यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मन होकर उसे माँगें, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है, उनके लिए हो जाएगी। क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठा होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ।"

जिन मामलों के बारे में हम अपनी व्यक्तिगत् और सामूहिक प्रार्थनाओं में परमेश्वर की इच्छा के बारे में सबसे अधिक आश्वस्त हो सकते हैं, वे सीधे तौर पर परमेश्वर की महिमा और महानता के ज्ञात् होने और उसके राज्य के बढ़ने पर प्रभाव डालते हैं। यह परमेश्वर का एक प्रमुख उद्देश्य है। मूसा (गिनती 14:11-19), दानिय्येल (दानिय्येल 9:1-19), और अन्य विश्वासयोग्य संतों ने प्रार्थना का यह पहलू समझ लिया था। यह अच्छा होगा कि हम इसे अपनी प्रार्थनाओं की प्राथमिक दिशा भी बना ले।

यह प्रार्थना में एक प्रमुख विचार है। परमेश्वर अपने उद्देश्यों के अनुसार कार्य करेगा। जैसा कि ऊपर दिया गया है, यूहन्ना ने इसे 1 यूहन्ना 5:14-15 में स्पष्ट किया है: यदि हम प्रार्थना करते हैं *उसकी इच्छा के अनुसार*, तो हम आश्वस्त हो सकते हैं, हम उससे क्या अनुरोध कर रहे हैं। जितना अधिक हम प्रभु को जानते हैं, और उनकी इच्छा, चरित्र, और तरीकों को समझते हैं, उतना ही अधिक आत्मविश्वास और सामर्थ्य से हम प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रार्थना

प्रभु, मुझे क्षमा करें। मेरी प्रार्थना की कमी मेरे विश्वास की कमी से उत्पन्न होती है। मैं अधिक प्रार्थना नहीं करता, क्योंकि मैं सच में विश्वास नहीं करता कि मैं आपके बिना कुछ नहीं कर सकता हूँ। मैं वास्तव में विश्वास नहीं करता कि आप सुनते हैं और परवाह करते हैं और उत्तर देते हैं। मुझे क्षमा करे। मुझे जीवन भर बिना रुके प्रार्थना करते रहना सिखा। मुझे लगातार आपकी आवाज़ सुनना और मेरे आसपास जो कुछ भी चल रहा है उस पर आपका दृष्टिकोण खोजना सिखा। मुझे ध्यान भटकने से लड़ने और आप पर ध्यान केन्द्रित करने में मेरी सहायता करें। मुझे प्रार्थना करना सिखा।

प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें, फिर प्रार्थना करें और परमेश्वर से पूछें कि वह आपसे क्या सीखना और कराना चाहता है। शांत होकर सुनें।

अपनी डायरी की समीक्षा करें। क्या आपकी कोई पिछली प्रतिज्ञाएँ हैं जिन्हें आपने पूरा नहीं किया है? यदि आवश्यक हो, तो संशोधित समापन तिथियाँ निर्धारित करें।

1. क्या मुझे प्रार्थना करने, प्रार्थना चक्र का अभ्यास करने और अपने शत्रुओं के लिए प्रार्थना करने से लाभ होगा? मैं उन गतिविधियों को अपनी नियमित दिनचर्या में कैसे शामिल करूँगा?

2. इस अध्याय के प्रत्युत्तर में परमेश्वर मुझसे कौन-सी विशिष्ट कार्य करवाना चाहता है? (उन्ह अपने डायरी में लिख ले और अपने कैलेंडर में नियत कर ले।)

3. परमेश्वर चाहता है कि जो मैंने सीखा है उसे किसके साथ (कम से कम एक नाम) साझा करूँ?

प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको इन प्रतिबद्धताओं का पालन करने में सक्षम बनाए और उन लोगों के दिलों को तैयार करे जिनके साथ आप ज्ञान साझा करना चाहते हैं।

17 चेलों को चेले बनाने के लिए प्रशिक्षित करना

हमें जानबूझकर चेले बनाने वाले चेले बनाने की दिशा में काम करने के लिए प्रशिक्षण चक्र का उपयोग करने की आवश्यकता है।

> और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी है, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य है।
>
> -2 तीमुथियुस 2:2

मसीह के पीछे चलने का अर्थ है मसीह के पीछे चलने वालों को बनाना। मत्ती के सुसमाचार का समापन यीशु द्वारा अपने चेलों को दिए गए अंतिम निर्देशों के साथ होता है, जिसे महान आदेश के रूप में जाना जाता है (मत्ती 28:18-20)। उसने उनसे कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो मैं जगत के अंत तक तुम्हारे संग हूँ।"

एक अर्थ में, महान आदेश यीशु की सारांश आज्ञा है। प्राथमिक क्रिया, अनिवार्य क्रिया, "चेले बनाना" है। अन्य क्रियाएँ (जाओ, बपतिस्मा दो, सिखाओ) वास्तव में मूल यूनानी का अंश है, और वे वर्णन करती हैं कि *कैसे* हमें चेले बनाने हैं। उन वर्णनकर्ताओं में से एक है "उन्हें उन सभी बातों का मानना सिखाना जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है।" इसलिए, हम उन्हें यीशु की सभी आज्ञाओं का पालन करना सिखाकर चेले बनाते हैं। चेले बनाने की प्रक्रिया का परिणाम ऐसे चेले होने चाहिए जो यीशु की आज्ञाओं का पालन करें। और, बेशक, यीशु की आज्ञाओं में से एक चेले बनाना है। तो एक आज्ञाकारी चेला, परिभाषा के अनुसार, एक चेला बनाने वाला चेला है।

हम इसे प्रभावी तरीके से कैसे कर सकते हैं? हम ऐसे चेले कैसे बना सकते हैं जो यीशु की आज्ञाओं का पालन करें, जिनमे चेले बनाने की उनकी आज्ञा भी शामिल है? हम यह कैसे सुनिश्चित करें कि हम मसीह की सभी आज्ञाओं का पालन करना सीख रहे हैं और वही अनुशासन औरों को भी सिखा रहे हैं, जो बदले में इसे दूसरों

को भी सिखायेंगे? हम इसे इस प्रकार कैसे कर सकते हैं कि यह प्रक्रिया आत्मिक पीढ़ी दर आत्मिक पीढ़ी तक जारी रहेगी?

इसे पूरा करने के लिए **एमएडब्लूएल** प्रशिक्षण चक्र एक सहायक तरीका है। एमएडब्लूएल प्रशिक्षण चक्र के चार चरणों का वर्णन करने वाली एक अक्षरबद्ध कविता है: **न**मूना, **स**हायता, **दे**खना, **छो**ड़ना।

आइये एक उदाहरण देखे: एक व्यक्ति को साइकिल चलाने का प्रशिक्षण देना। यह **एमएडब्लूएल** के चार चरणों का अनुसरण करता है। नमूना दूर तक नहीं लेकर जाता है, लेकिन यह ज़रूरी है। इससे पहले कि लोग मोटरसाकिल चलाना सीखें, उन्हें किसी और को मोटरसाकिल चलाते हुए देखना होगा। एक नमूने की भूमिका जो पढ़ाया जा रहा है उसकी अवधारणा बनाना है। ऐसा तब होता है, जब एक व्यक्ति किसी ओर को साइकिल चलाते हुए देखता है। नमूने वाले चरण में, प्रशिक्षक कौशल का प्रदर्शन करता है और सीखनेवाला देखता है।

"सहायता" चरण थोड़ा लम्बा होता है। यहाँ, सीखने वाला साइकिल पर है, लेकिन प्रशिक्षक मदद के लिए मौजूद है-शायद एक हाथ हेंडल पर और दूसरा सीट पर रखकर साइकिल चालक के साथ-साथ चल रहा है, यह चरण अपेक्षाकृत छोटा हो सकता है, जिससे सीखने वाले को इस बात की बुनियादी समझ मिलाती है कि सवारी करना कैसा लगता है। हम बहुत लम्बे समय तक सहायता नहीं करना चाहते, ऐसा न हो कि हममें निर्भरता का एक तरीका विकसित हो जाए।

"देखना" चरण बहुत लम्बा होता है। सीखने वाला अब आत्मनिर्भरता विकसित कर रहा है, क्योंकि प्रशिक्षक अतिरिक्त कौशल का परिचय देता है और सवारी के कुछ बारीकी बिंदु: साइकिल कैसे चढाएं, एक जगह खड़े होकर कैसे शुरुआत करें, बाधाओं और मोड़ों के आसपास कैसे चलें, ब्रेक कैसे लगाएँ, ऊपर और नीचे कैसे जाएँ, कहाँ और कब सवारी करना सुरक्षित है, यातायात नियमों का पालन कैसे करें और यातायात के तरीकों का पालन कैसे करें, आदि।

एक बार जब सीखने वाले सभी बुनियादी बातों में कुशलता हासिल कर लेता है, तो प्रशिक्षक उसे *छोड़* सकता है। नव प्रशिक्षित साइकिल सवार स्वतंत्र रूप से साइकिल चला सकता है और यहाँ तक कि दूसरों को साइकिल चलाना सिखाना भी शुरू कर सकता है।

हम प्रशिक्षण चक्र के चार चरणों को विकासात्मक स्तरों के रूप में वर्णित कर सकते हैं। स्तर 1 के लोगों को एक आदर्श की आवश्यकता है। स्तर 2 पर, व्यवहारिक सहायता और मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। स्तर 3 के सीखने वालों को अपने अनुप्रयोगों या समझ में अधिक सुधार की आवश्यकता है। स्तर 4 का मतलब है कि उन्होंने बुनियादी कौशल में कुशलता हासिल कर ली है और दूसरों को सिखाने में सक्षम हैं।

बेशक, जो लोग कुछ भी करते हैं उसमें विकास का स्तर समान नहीं होता-उनका स्तर कौशल के आधार पर अलग होता है। मैं जीन संबंध में स्तर 1, उतार-चढ़ाव के स्तर 2 पर, हारमोनिका बजाने के साथ 3 पर और अलग-अलग स्तर पर गोटा लगाने के स्तर 4 पर हूँ, क्योंकि मैं अन्य गोताखोरों को प्रशिक्षित करने के लिए पेशेवर रूप से प्रमाणित हूँ।

आमतौर पर, लोग किसी ऐसे व्यक्ति को प्रशिक्षित कर सकते हैं जो उस विशेष

कौशल में उनसे कम से कम एक विकासात्मक स्तर पर नीचे हो। क्योंकि किसी कौशल को सिखाना उस कौशल को बेहतर तरीके से सीखने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है, हम लोगों को स्तर 2 पर पहुँचते ही शिक्षण में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

प्रशिक्षण चक्र के दौरान किसी को सलाह देने के लिए सलाहकार की ओर से लचीलेपन की आवश्यकता होती है। स्तर 1 पर, लोगों को स्पष्ट दिशा की आवश्यकता होती है। स्तर 2 पर, उन्हें स्पष्ट दिशा ऊपर प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है। स्तर 3 पर, उन्हें प्रोत्साहन की आवश्यकता है लेकिन दिशा की बहुत कम। विशेष रूप से, उन्हें अपने आगे के विकास के विषयों और गति के सम्बन्ध में पहल करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। स्तर 4 के लोगों की अन्य अभ्यास कर्ताओं की संगति के अलावा कुछ आवश्यकताएँ नहीं होती है।

सुसज्जित भूमिकाओं की समय अवधि अलग-अलग होती है। नमूनापन बहुत छोटा होना चाहिए, सहायता अपेक्षाकृत कम होनी चाहिए, और देखना लम्बा होना चाहिए। पहले दो चरण अधिकाँश मामलों में आमने-सामने और गहरे होते हैं। देखने के चरण को अक्सर दूर से प्रबंधित किया जा सकता है, विशेष रूप से आज उपलब्ध विद्युत शास्त्र संचार उपकरणों के साथ, और तदनुसार यह प्रकृति में अधिक मात्रा में है।

अंत में, यदि मैं किसी को सम्बंधित अवधारणाओं और कौशलों की श्रृंखला में सलाह दे रहा हूँ, तो मैं अनुशिक्षण जाँच सूची उपयोग करता हूँ। एक बार जब मुझे विश्वास हो जाता है कि सीखने वाला सभी कौशलों में स्तर 3 पर पहुँच गया है, तो मैं सीखनेवाले को जाँच सूची देता हूँ, जो फिर प्रत्येक कौशल पर खुद को अंक देता है। इससे मुझे यह सुनिश्चित करने में मदद मिलती है कि सीखने वाला शेष संसाधन प्रक्रिया का प्रभार लेने के लिए तैयार है और यह पुष्टि करता है कि हम इस बात पर सहमत है कि कितनी प्रगति हुई है।

मेरे द्वारा चेले बनाने में उपयोग की जाने वाली अनुशिक्षण जाँच सूची के लिए निम्नलिखित चार्ट देखें: बाएँ कॉलम में विशिष्ट विषयों को लेकर चिंतित न हो। ये केवल उदाहरणनात्मक है और आपके व्यक्तिगत् दृष्टिकोणों के अनुरूप किए जा सकते हैं।

अनुशिक्षण जाँच सूची

	आदर्श **अनजान** नई जानकारी के साथ प्रशिक्षण और समझना सुनिश्चित करें।	**सहायता करें** **अकुशल** बिना रुके उनके साथ रहें जब तक कि उनके पास बुनियादी बातें न आ जाएं।	**देखना** **सक्षमता** लगातार सक्षमता को देखें।	**छोड़ें** **कुशल** आगे बढ़े और उन्हें छोड़े और उन्हें विकसित करने के लिए दूसरों को खोजें।
	मार्गदर्शकों की भूमिका			
	मार्गदर्शक दिशा-निर्देश और जानकारी देता है।	मार्गदर्शक दिशा-निर्देश और सहायता करता है।	मार्गदर्शक सहायता और प्रोत्साहन देता है।	मार्गदर्शक अभी तक की जानकारी लेता है।
	योजनाएँ कैसे बनती हैं			
प्रशिक्षण संसाधन	मार्गदर्शक निर्णय लेता है।	मार्गदर्शक चर्चा करते हैं और मार्गदर्शक निर्णय लेते हैं।	मार्गदर्शक चर्चा करते हैं और मार्गदर्शक निर्णय लेते हैं।	मार्गदर्शक निर्णय लेता है।
शीघ्रता से चेला बनाना।				
अपनी कहानी बताएँ (गवाही)				
रिस्तो की 100 प्रबंध-सूची				
गति				
गैर-अनुक्रमिक सेवकाई				
3/3 समूह प्रारूप				
साधारण कलीसिया-परमेश्वर/ दूसरों से प्रेम करो, चेले बनाओ।				
दो कलीसियाओं का भाग होना।				
प्रशिक्षण चक्र।				
उत्तरदायी समूह।				
स्व-आहार। -प्रतिदिन वचन पढ़ना [आज्ञा मानना] -प्रार्थना-बातचीत करें और सुनें [प्रार्थना चक्र] -शारीरिक जीवन-संगति [एक दूसरे] -सताव और पीड़ा				
यह देखने के लिए कि राज्य कहाँ पर नहीं है।				
शान्ति के व्यक्ति की तलाश [मत्ती 10, लूका 10]				
चलकर प्रार्थना करना				
एक कलीसिया होना: -संगति [एक दूसरे, के साथ मिलकर खाना] -स्तुति और आराधना -बाइबल [आज्ञा मानना, प्रशिक्षण देना] -लोगों को यीशु के बारे में बताना [साझा करना] -बपतिस्मा				

ऐसी स्थितियों में जहाँ कौशल और अवधारणाओं का समूह जटिल है, इस तरह की कार्य-पत्र यह सुनिश्चित करने में मदद करता है कि क्षमताओं का तय करना पूरी तरह से आगे बढ़ता जाता है और आनेवाली पीढ़ियों की कौशल क्षमताएं और दृष्टिकोण सुसंगत बने रहते हैं। इसके अलावा, यदि आप कई लोगों का मार्गदर्शन कर रहे हैं, तो यह आपको यह याद दिलाने में मदद करता है कि आपने उनमें से हर एक के बारे में क्या बताया है और क्या नहीं?

एक बार जब एक व्यक्ति प्रासंगिक कौशल में स्तर 4 हासिल कर लेता है, तो मार्गदर्शन संबंध समाप्त हो जाता है और सहकर्मी से सहकर्मी संबंध शुरू हो जाता है। प्रशिक्षण चक्र में कुशल हो जाना ही लगभग हमेशा वाला अंतिम चरण होता है, जिस पर एक व्यक्ति विकासात्मक स्तर 4 हासिल करता है। लोगों को प्रजनन को चौथी पीढ़ी में "स्नातक" होने की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि उन्होंने प्रशिक्षक होने की हर एक भूमिका को सफलतापूर्वक पूरा करने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया है। पीढ़ी 1 के पीढ़ी 2 को देखने के बाद उन्हें उचित रूप से पीढ़ी 1 को छोड़ने की आवशयकता है; इस बीच पीढ़ी 2 पीढ़ी 3 की सहायता कर रही है और पीढ़ी 3 पीढ़ी 4 के लिए नमूना बन रही है। इसमे कुछ समय लगता है, विशेष कर कौशल और अवधारणाओं के जटिल समूहों के साथ। ज्यादातर लोग इसे पहली बार अच्छे से नहीं कर पाते हैं, और प्रशिक्षण सभी 4 पीढ़ियों तक प्रभावी तरीके से किया जाना चाहिए।

प्रशिक्षण चक्र को लागू करना न केवल चेले बनाने में बल्कि किसी भी प्रशिक्षण या संसाधन में एक महत्वपूर्ण कौशल महारत करना है, जिसे हम कई पीढ़ियों तक पुनरुत्पादित होते हुए देखना चाहते हैं। इसे अच्छे से करने के लिए अनुशासन की आवश्यकता होती है। यदि आप जिस किसी का मार्गदर्शन कर रहे हैं, और यदि वह इस प्रक्रिया के प्रति प्रेरणाहीन और अविश्वासयोग्य साबित होता है, तो आपको उस व्यक्ति में अधिक निवेश नहीं करना चाहिए। इसके बजाय उन लोगों में निवेश करें, जो आप द्वारा दिए हुए को लागू करने और आगे बढ़ने में विश्वासयोग्य है। *कुछ में इस तरह गहराई के साथ निवेश करें कि वे दूसरों के साथ भी ऐसा ही करें।* इस तरह के दृष्टिकोण से काटी गई फसल कुछ पीढ़ियों के में प्रचुर मात्रा में होगी।

मैं दृढ़ता से सुझाव देता हूँ कि आप प्रशिक्षण चक्र और मेरे द्वारा प्रस्तुत किए गए अन्य संसाधनों में अनुभव प्राप्त करने के लिए ज़ुमें प्रशिक्षण से ऑन-लाइन गुजरें। यूनानी में ज़ुमें का अर्थ खमीर होता है। मत्ती 13:33 में, यीशु ने कहा, "स्वर्ग का राज्य खमीर के समान है जिसको किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिला दिया और होते होते वह सब खमीर हो गया।" यह उदाहरण दर्शाता है कि सामान्य लोग, सामान्य संसाधनों का उपयोग करके, परमेश्वर के राज्य पर असाधारण प्रभाव डालता है।

जुमें चेलों को और कलीसियाओं को कैसे बढ़ाया जाए, इस पर एक नि: शुल्क ऑन-लाइन परिचायानात्मक प्रशिक्षण है। यह zumeproject.comपर मिल सकता है। इसे चालीस भाषाओँ में अनुवाद किया जा रहा है ताकि संसार के ज्यादातर हिस्सों में इसका उपयोग किया जा सके। जूमें में भाग लेने के द्वारा, आपकी एक प्रशिक्षक तक पहुँच हो जाएगी जो आपका मार्गदर्शन कर सकता है उसे लागू करने में जो आपने सीखा है और आपके किसी भी प्रश्न का उत्तर दे सकता है।

एक बार जब आप इन तरीकों का अभ्यास करना शुरू कर देते हैं तो आप 24:14

(2414now.net)का हिस्सा बनना चाहते हैं, एक गठबंधन जिसका नाम इससे लिया गया हैमत्ती 24:14: “और राज्य का वह सुसमाचार सरे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अंत आ जाएगा।” 24:14 अभ्यासकर्ता एक साथ आये हैं और यह सुनिश्चित करने के लिए सहयोगात्मक रूप से काम कर रहे हैं कि 2025 के अंत तक वैश्विक स्तर पर हर जगह और हर व्यक्ति समूह के बीच चेलों के निर्माण के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण लागू किया जा रहा है। जैसे-जैसे आप अपने चेले निर्माण की यात्रा में आगे बढ़ते हैं, 24:14 परस्पर सहयोग अधिक उन्नत प्रशिक्षण और शिक्षा प्राप्त करने के लिए एक अच्छी जगह है।

अंततः क्योंकि यह चेले बनाने का एक अभिन्न अंग है, इस पर विस्तृत विचार करना सहायक है कि मसीह द्वारा दी गई सभी आज्ञाएँ क्या है। मैं आपको “मसीह की आज्ञाएँ” ब्लॉग श्रृंखला पढने के लिए प्रोत्साहित करूँगा जो कि obeygc2.com। पर मुफ्त डाउनलोड के लिए उपलब्ध दस्तावेजों में से एक है। इसमें जीवन के अनेक विशिष्ट व्यवहारिक क्षेत्रों को शामिल किया गया है। उन विशिष्ट आज्ञाओं के प्रकाश में अपने स्वयं के जीवन की जाँच करना एक सहायक अभ्यास है।

प्रार्थना

स्वर्गीय पिता, आपने मुझे ऐसे चेले बनाने की आज्ञा दी जो आपकी आज्ञा माने और जो और अधिक चेले बना। इसे अच्छे से करने में मेरी सहायता कर। मुझे विश्वासयोग्य लोगों तक ले जा। जिस प्रकार यीशु ने उन बारहों को प्रशिक्षित किया, उसी प्रकार आप उन्हें प्रशिक्षित करने में मेरी सहायता कर। मुझे धैर्य दो, पर बहुत अधिक धैर्य नहीं, क्योंकि मैं एक पवित्र असंतोष बनाए रखना चाहता हूँ। मुझे विश्वासयोग्यता, बलिदान, और अनुशासन दे। आपके राज्य के विस्तार के लिए और आपकी महिमा की स्तुति के लिए, उन्हें दूसरों को सिखाने हेतु मुझे सिखा।

प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें, फिर प्रार्थना करें और परमेश्वर से पूछें कि वह आपसे क्या सीखना और कराना चाहता है। शांत होकर सुनें।

अपनी डायरी की समीक्षा करें। क्या आपकी कोई पिछली प्रतिज्ञाएँ हैं जिन्हें आपने पूरा नहीं किया है? यदि आवश्यक हो, तो संशोधित समापन तिथियाँ निर्धारित करें।

1. क्या मैं जान-बूझकर चेले बना रहा हूँ? यदि नहीं, तो मुझे यह किसके साथ करना शुरू करना चाहिए? यदि हाँ, तो प्रशिक्षण चक्र के किन पहलुओं में मैं कमज़ोर हूँ? मैं इस चरण में कैसे सुधार कर सकता हूँ?

2. इस अध्याय के प्रत्युत्तर में परमेश्वर मुझसे कौन-सी विशिष्ट कार्य करवाना चाहता है? (उन्ह अपने डायरी में लिख ले और अपने कैलेंडर में नियत कर ले।)

3. परमेश्वर चाहता है कि जो मैंने सीखा है उसे किसके साथ (कम से कम एक नाम) साझा करूँ?

प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको इन प्रतिबद्धताओं का पालन करने में सक्षम बनाए और उन लोगों के दिलों को तैयार करे जिनके साथ आप ज्ञान साझा करना चाहते हैं।

अतिरिक्त संसाधन

वेबसाइटें

zumeproject.com-ज़ुमें चेलों और साधारण कलीसियाओं की सँख्या बढ़ाने के लिए एक नि: शुल्क परिचयात्मक ऑनलाइन प्रशिक्षण के दो घंटे के दस सत्र है। छोटे-समूह की रूपरेखा। वीडियो-आधारित। प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। कई भाषाओं में उपलब्ध है। वेबसाइटें जल्दी आ रही है: ज़ुमें प्रशिक्षण और ज़ुमें दर्शन।

metacamp.org-डेडविले, अलबामा में हमारे मिशन और चेले निर्माण प्रशिक्षण केंद्र के लिए वेबसाइट। इस वेबसाईट पर मेरा ब्लॉग भी दिखता है। उपयुक्त अवसर के लिए प्रशिक्षण कैलेंडर की जाँच करें या अपने क्षेत्र में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का विनती करें।

2414now.net-2025 तक संसार के हर हिस्से में और हर लोगों के समूह के साथ काम करने वाले गुणात्मक चेले-निर्माण दृष्टिकोणों का उपयोग करने वाले समूहों को देखने के लिए प्रतिबद्ध अभ्यास्कर्ताओं का एक गठबंधन।

multiplyingdisciples.learnnn.com-कुछ अतिरिक्त चेले-निर्माण प्रशिक्षण विषय। वीडियो में डिज़ाइन की गुणवत्ता उच्च नहीं है, लेकिन सामग्री उपयोगी है।

obeygc2.com-मेरी व्यक्तिगत् वेबसाईट। इस पुस्तक और अन्य डाउनलोड के बारे में जानकारी यहाँ उपलब्ध है। *आप इस साइट पर ईबुक और ऑडियो बुक के मुफ्त संस्करण के लिए कूपन प्राप्त कर सकते हैं।*

डाउनलोड्स

4 संबंधात्मक विडियो (**https://www.youtube.com/watch?v=dvIvArV_Zf0**) मानव जाति के निर्माण से लेकर मसीह में नई रचना तक के इतिहास को बताता है और आगे बढ़ने की विधि के रूप में ज़ुमें को बढ़ावा देना।

लेखकों की गवाही (**https://zume.life/testimony-1/**) इस पुस्तक में कुछ समस्याओं के बारे में।

आशीष पुस्तिका (**https://zume.life/wp-content/uploads/2019/02/Blessing-booklet.pdf**)- यह एक संसाधन है जिसका उपयोग हमने अपने बच्चों के साथ उन्हें धार्मिकता से भरी जीवन शैली के अभ्यास का जीवन विकसित करने में सहायता करने के लिए किया। (31.9 MB)

दर्शनीय भजन संहिता (https://zume.life/wp-content/uploads/2019/02/Scenic-Psalms-2-page-view.pdf)- यह भजन संहिता के कुछ आयातों का सचित्र प्रतिनिधित्व है। (24.3 एमबी) इसे ठीक से देखने के लिए, एडोब रीडर में "देखें" फिर "पेज डिस्प्ले" फिर "टू-अप" चुनें। यह पूरी तरह से आनंद और प्रोत्साहन के लिए है।

अधिक चेले (अमेज़ॅन पर पाया गया) इस सूची में एकमात्र संसाधन है, जो नि: शुल्क है। डौग लुकास द्वारा लिखित यह पुस्तक, इस पुस्तक के तीसरे खंड में उल्लिखित संसाधनों पर अधिक विस्तार से बताती है। एक संबंधित वेबसाइट (**moredisciples.com**) भी है। बिक्री से प्राप्त सारी आय ज़ुमें परियोजना को जाती है।

लेखक के बारे में।

डा. कर्टिस सार्जेंट ने चीन में सुसमाचार से वंचित लोगों के समूह के बीच में एक अग्रणी कलीसियाई-रोपण मिशनरी के रूप में अंतर्राष्ट्रीय मिशन बोर्ड (**आईएमबी**) के साथ काम किया। जब तेजी से बढती हुई कलीसिया का निर्माण कार्य शुरू हुआ और अब उसकी वहाँ आवश्यकता नहीं रही, तो कर्टिस ने उसी प्रकार की सेवकाई करने के लिए दूसरों को प्रशिक्षित करने वाली सेवकाई में परिवर्तन किया। उस भूमिका में, उन्होंने विभिन्न देशों, सम्प्रदायों और एजेंसियों के सैंकड़ों लोगों को गहनता से प्रशिक्षित किया, जिन्होंने सामूहिक रूप से उन आन्दोलनों को प्रेरित किया है, जिन्होंने लाखों घरेलू कलीसियाएँ स्थापित की है।

कुछ साल बाद, कर्टिस ने एक प्रशिक्षक और सलाहकार के रूप में चीन के घरेलू कलीसियाई संघ के साथ संम्पर्क करना शुरू किया। बाद में, उन्होंने वैश्विक रणनीति के लिए **आईएमबी** के उपाध्यक्ष के रूप में कार्य किया, जहाँ उन्होंने अनुसंधान विभाग की देखरेख की और साथ ही प्रशिक्षण भूमिका भी निभाई।

वहाँ से, कर्टिस कलीसिया रोपण के निदेशक के रूप में सैडलबैक चर्च गए। सैडलबैक में रहते हुए, उन्होंने मिशनों के लिए एक ऑनलाइन प्रशिक्षण प्रणाली विकसित करने में मदद की और विशेष रूप से भारत में कुछ बेहद बड़े पैमाने पर कलीसियाई-रोपण का नेतृत्व किया। उस अवधि के दौरान, उन्होंने लगभग सौ पहले से सुसमाचार से वंचित लोगों के समूहों के बीच कलीसियाई-रोपण सेवकाई शुरू करने में भी महतवपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसके बाद कर्टिस ने ई3 पार्टनर्स के अंतर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के रूप में कार्य किया।

कर्टिस वर्तमान में डैडविले, अलबामा में स्थित एक चेले-निर्माण और मिशन प्रशिक्षण केंद्र, मैटाकैंप संचालित करते हैं। वह ज़ुमें और 24:14 के साथ नेतृत्व में भी काम करते हैं। कर्टिस और उनकी पत्नी डेबी के दो बड़े और विवाहित बच्चे है, नातान और मेगन।

परिशिष्ट 1: राज्य की विनतिया

पुस्तक के इस भाग में वे विनतियाँ शामिल हैं, जो मैंने अपने मनन के समय के दौरान लिखी हैं, जिसमें धार्मिकता से भरी-जीवनशैली के अभ्यास वाले जीवन को जीने से संबंधित आत्मिक सरोकारों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। मैंने उन्हें तीस दैनिक पाठों के एक समूह में व्यवस्थित किया है ताकि तुझ एक महीने में इस पूरे संग्रह के माध्यम से प्रार्थना कर सकें।

मैं संक्षेप में संग्रह का शीर्षक समझाता हूँ। मैं उन्हें *राज्य* की विनतियाँ कहता हूँ, क्योंकि वे मुख्य रूप से स्वर्ग के राज्य और हमारे राजा के रूप में परमेश्वर पर केंद्रित हैं। निस्संदेह, यह प्रार्थना करने का एकमात्र विषय नहीं है। हमारे जीवन को प्रभावित करने वाले सभी विषय, महत्वपूर्ण से लेकर मामूली से लगने वाले तक, प्रार्थना के योग्य हो सकते हैं। हमारा सृष्टिकर्ता हमारे जीवन के हर क्षेत्र के विषय में सरोकार रखता है, यहाँ तक कि हमारे सिर पर बालों की सँख्या का भी। हालाँकि, ये विनतियाँ राज्य और उसमें बसने वाले नागरिकों के रूप में हमारे स्थान को समझने और हमारे राजा की पूरी तरह से सराहना करने पर ध्यान केंद्रित करती हैं। कुछ लोगों के लिए, यह प्रार्थना का पूर्णतया अनदेखा किया हुआ पहलू है।

शब्द *विनतियाँ* बस "प्रार्थना" का एक पर्याय है। यह बेशक प्राचीन है, लेकिन यह रूपरेखा के अनुसार है। यीशु मसीह में हमारे साथ परमेश्वर की नई वाचा के माध्यम से, हम समझते हैं कि हम परमेश्वर की संतान हैं और यहाँ तक कि परमेश्वर के मित्र भी हैं। प्रार्थना इस प्रकार एक घनिष्ठ अनुभव बन जाती है। हम इस सृष्टि के स्वामी के साथ निरंतर बातचीत कर सकते हैं और हमें करनी भी चाहिए! हालाँकि, कुछ लोग समय के साथ प्रार्थना के प्रति एक अस्थिर या यहाँ तक कि घमंडी रवैया विकसित कर लेते हैं।

मैंने पाठकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए *विनतियाँ* शब्द का उपयोग किया है, क्योंकि यह अपरिचित जैसा शब्द है। विनतियाँ स्वयं में कुछ हद तक औपचारिक होती हैं - मेरी सामान्य दैनिक प्रार्थनाओं से कहीं अधिक क्योंकि मैं आश्चर्य और आदर की भावना को बढ़ावा देना चाहता हूँ। हालाँकि परमेश्वर वास्तव में हमारे साथ नज़दीकी में है, वह पूरी तरह से अलग और वर्णन से परे है। इन प्रार्थनाओं का उद्देश्य हमें उसके अस्तित्व के उस पहलू की याद दिलाना है।

मेरी आशा है कि मेरे मन से ये विनतियाँ तेरे मन को ताज़ा कर सकती हैं, आपको हमारे अनंत काल के राजा और उसके राज्य के करीब ला सकती हैं, और उसके प्रति अपना प्रेम और हर पल, हर मुलाकात, हर अवसर का उपयोग उसे और अधिक अर्थात् पूरी तरह से जानने और उसकी महिमा लाने के लिए अपनी इच्छा को तीव्र करें। मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर तेरे जीवन का उपयोग तेरे आस-पास के लोगों को आत्मिक यात्रा पर अपना अगला कदम उठाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए करें जो प्रभु की महिमा करेगा और उसके मन में आनन्द को लाएगा।

मैं किसी और से बेहतर प्रार्थना करने का दावा नहीं करता, लेकिन ये विनतियाँ आपको मसीह समर्पण के अलग-अलग पहलुओं को ध्यान में लाने में सहायक हो सकती हैं, या एक शुरुआती स्तर के रूप में ताकि तुझ अपने जीवन में लोगों या स्थितियों के लिए अधिक विशिष्ट विनतियाँ कर सकें।

दिन 1

सारी दया के परमेश्वर, मेरे भीतर तेरे लिए जीने का विश्वास उत्पन्न कर, बिना कुछ चाहे - मेरी सारी आशा, मेरा सारा उद्देश्य, मेरी सारी महिमा तेरे साथ हो। प्रार्थना है कि तू तुझ ही मेरा मार्ग और मार्गदर्शक बन, अनुकरण के लिए मेरा आदर्श और मुझे आकार देने वाला कुम्हार दोनों बन।

तू मेरी नींव और शरणस्थान है। तू वह भविष्यवद्रक्ता है जो मुझे निर्देश देता है, ऐसा याजक है, जो मेरे लिए मध्यस्थता करता है, और वह ऐसा राजा है, जो मुझ पर शासन करता है। मैं पूरी तरह से तुझ पर भरोसा कर सकूँ, और मैं तुझे अपने पूरे मन, बुद्धि, प्राण और सामर्थ्य से प्रेम और सेवा कर सकूँ।

मुझे तुझ से या तेरे वचनों से कभी शर्म नहीं आनी चाहिए, बल्कि विश्वासयोग्यता से तेरा अनुसरण करने के परिणामस्वरूप आने वाले किसी भी विरोध या बलिदान को खुशी से सहन करना चाहिए; और मैं तेरे साथ इस तरह पहचाने जाने के सौभाग्य और महिमा को अपना मानूँ।

मुझे भूल और चूक के माध्यम से किसी विफलता के कारण तेरे मन को दुःख देने से बचा। होने दे कि जब तू मुझे आगे बढ़ने के लिए कहे तो मैं कभी भी पीछे न हटूँ या देरी न करूँ। होने दे कि मुझे तेरी इच्छाओं और दिशा के प्रति इतना चौकस रहने दे ताकि तेरी एक ही झलक मुझे पूर्ण और संपूर्ण प्रतिक्रिया दे दे।

मुझे इस वर्तमान बुरी दुनिया और उसके प्रभावों से दूर रख। मुझे इसके आकर्षण, अनुचित प्रभावों, बुराइयों और त्रुटियों से बचा। मेरे मन में अपने लिए इतना प्रेम भर द कि आँखों की लालसा, शरीर की लालसा और जीवन के घमण्ड सहित किसी भी वस्तु के प्रेम के लिए कोई जगह न बचे।

मुझे लगातार याद दिला कि मैं तेरे राज्य का नागरिक हूँ और इस दुनिया से गुजरने वाला सिर्फ एक अजनबी हूँ। होने दे कि मैं उस देश और तेरे तेरे शासनकाल की तलाश करूँ, जो लगातार तेरी इच्छा और तेरे तरीकों को वचन और कर्म में पूरी तरह से व्यक्त कर रहा हो और एक वफादार राजदूत के रूप में सेवा कर रहा हो, और दूसरों को तेरे प्रति जो सर्व-बुद्धिमान और सर्वगुण संपन्न राजा है, को समर्पण करने के लिए बुला रहा हो।

विश्वास से मैं अपने जीवन और संसार में तेरी आवाज और तेरी गतिविधि को अधिक स्पष्ट रूप से समझ सकूँ। हर दिन मैं पृथ्वी पर तेरी इच्छा को और अधिक स्पष्ट रूप से समझ सकूँ ताकि मैं उस दिन तक इसका पालन कर सकूँ, जब यह स्वर्ग की तरह यहाँ भी पूरी हो जाए। मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू मुझमें और मेरे माध्यम से महिमा पाए।

प्रारंभिक कलीसिया के धर्माचार्यों से प्रेरित अंगीकार की प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता, तूने मेरे शरीर को तेरी सेवा करने के लिए और मेरी आत्मा को तेरा अनुसरण करने के लिए कड़ी मेहनत करने के लिए बनाया है। दुःख और हृदय के पश्चाताप के साथ, मैं तेरे सामने अपने दोषों और अपनी असफलताओं को स्वीकार करता हूँ।

अपने स्वयं के स्वीकृत मानकों के प्रति भी अपनी विफलता;
प्रलोभन के सामने अपने आत्म-धोखे को स्वीकार करता हूँ;
जब मैं बेहतर जानता हूँ, तो बदतर को चुनना;
हे परमेश्वर, मुझे क्षमा कर!

जब तू मुझे बोलने के लिए कहता है तो मेरी चुप्पी और जब तू मुझे चुप रहने के लिए कहता है तो मेरा बोलना;
मेरे कुछ काम करना जब तू चाहता है कि मैं तेरी प्रतीक्षा करूँ और मेरी झिझक जब तू मुझे कार्य करने के लिए कहता है;
जो गलतियाँ मुझे प्रभावित नहीं करतीं उनके प्रति मेरी आत्म-संतुष्टि और जो गलतियाँ करती हैं, उनके प्रति मेरी अतिसंवेदनशीलता को स्वीकार करता हूँ;
हे परमेश्वर, मुझे क्षमा कर!

दीन-दुखियों और खोए हुए लोगों के प्रति दया दिखाने में तेरी दी हुई करुणा की कमी;
अपने आराम और सुविधा को दूसरों की जरूरतों से ज्यादा समझने के लिए मेरा अहंकार;
पीड़ा के प्रति दूसरों के बारे में मेरा अंधापन और अपने ही द्वारा सीखे जाने में मेरी सुस्ती को स्वीकार करता हूँ;
हे परमेश्वर, मुझे क्षमा कर!

आचरण के उस मापदंड को अपने ऊपर लागू करने में मेरी विफलता जो मैं दूसरों से माँगता हूँ;
दूसरों में अच्छाई और खुद में बुराई देखने में मेरी सुस्ती;
मेरे पड़ोसियों की गलतियों के प्रति मेरे हृदय की कठोरता और मेरी गलतियों के प्रति क्षमा करने लिए मेरी तत्परता को स्वीकार करता हूँ;
हे प्रभु, मुझे क्षमा कर!

यह पहचानने में मेरी अनिच्छा कि तूने मुझे एक छोटे से काम के लिए बुलाया है और मेरे भाई को एक बड़े काम के लिए;
जब तू अपनी दया को दर्शाने के लिए मेरे सामने एक बड़ा अवसर रखता है, तो मेरी कृतघ्नता और बड़बड़ाहट;
जो कुछ भी मुझे छूता है उसमें तेरे प्रेमी हाथ को पहचानने में मेरी विफलता को स्वीकार करता हूँ;
हे परमेश्वर, मुझे क्षमा कर!

दिन 2

हे पवित्र प्रभु, मुझे क्षमा कर। मुझे लगता है कि मेरा पूरा जीवन घमण्ड और अविश्वास से कलंकित है। मैं तुझे तेरी पवित्रता, सामर्थ्य, प्रेम और भलाई में देखने, या उस समझ के प्रकाश में जीने में विफल रहा हूँ, जैसा कि मुझे होना चाहिए। परिणामस्वरूप, मैं स्वयं को ग़लत समझता हूँ। मैं अपनी तुलना अन्य अभागे प्राणियों से करता हूँ, तुझ से या उस सुंदरता और पूर्णता से नहीं करता, जिसके लिए केवल तू ही हकदार हैं। परिणामस्वरूप, मैं अपनी इच्छाओं, अपने लक्ष्यों, अपने मापदंडों, अपनी व्यक्तिगत-धारणा और अपने दैनिक जीवन में गलतियाँ करता हूँ।

कृपया तूने मुझमें जो भला काम शुरू किया है उसे पूरा कर। मेरी बुद्धि को बदल और नया कर, ताकि मैं तुझे तेरी सारी महिमा में देख सकूँ और फिर अपने और दूसरों के बारे में सही ढंग से सोच सकूँ। मुझे तेरी धार्मिकता पर भरोसा करने और उसके प्रति समर्पित होने दें, ताकि मैं मसीह के स्वरूप में ढलता चला जाऊँ। मेरी बुद्धि, मेरी देह, मेरे प्राण और मेरी आत्मा पर पूरी तरह से राज्य कर, और अन्य चीजों के आकर्षण को मुझसे दूर कर जो मुझे तेरे अलावा किसी भी चीज़ के लिए जीने के लिए प्रेरित करते हैं।

मुझ में तेरे प्रेमी कार्य के लिए धन्यवाद, चाहे प्रार्थना, वचन और तेरी देह के माध्यम से तेरे साथ संगति की खुशी के माध्यम से, या पीड़ा की शुद्ध करने वाली आग के माध्यम से जो तू मुझे तेरी उपस्थिति में पूर्ण आनंद के लिए, मुझे आशीष देने और तैयार करने के लिए भेजता है। मुझे किसी भी जाँच से न बचा जो मुझे तेरे लिए अधिक प्रसन्नता लाने का काम करेगी या तुझे अधिक महिमा देगी। मुझसे ऐसी कोई भी चीज़ दूर करो जो तेरी दया की ज्योति को कम कर दे या मुझे तुझ में आनन्दित होने से रोक दे।

सात घातक पापों के "आत्मिक" रूपों से सुरक्षा के लिए प्रार्थना

हे परमेश्वर, मुझे एहसास है कि भले ही मैं तेरी दया से उन परीक्षाओं से पूर्णतया बचा हुआ हूँ, जो मेरे लिए बड़ी कठिनाई का कारण बनती हैं, तौभी मैं उसी प्रकार की परीक्षाओं के "आत्मिक" रूपों के अधीन हूँ। मुझे पता है कि ये नए रूप सौम्य नहीं हैं, लेकिन अगर मुझे इन क्षेत्रों में पाप से बचना है तो मेरी ओर से निरंतर सतर्कता की आवश्यकता है।

घमंड: हे प्रभु, मुझे एहसास है कि आत्मिक घमंड, यदि कुछ भी हो, शारीरिक घमंड से भी अधिक गंभीर है, क्योंकि यह तुझे और भी अधिक महिमा देने से वंचित करता है। मेरे मन को यह सोचने के किसी भी प्रलोभन से बचा कि मेरे माध्यम से तेरे काम के अलावा कुछ भी भला नहीं निकलता है। मैं जानता हूँ कि हर एक गुण या धार्मिकता तुझ से ही आती है। मैं जानता हूँ कि हर एक आत्मिक वरदान तेरी ही ओर से है। मैं जानता हूँ कि सेवकाई में कोई भी फल तुझ से गी मिलता है। मैं जानता हूँ कि यदि किसी भी तरह से दूसरों को मेरे द्वारा आशीष मिलती है, तो वह तेरी ओर से ही है। मुझे तेरे बारे में नहीं, बल्कि तेरे और दूसरों

के बारे में सोचने दें। मैं अपने तुझ को दूसरों से बेहतर न समझूँ। तू दाखलता है। मैं तो बस एक डाली हूँ। मैं तुझ से अलग होकर कुछ भी नहीं कर सकता।

लोभ: हे प्रभु, आत्मिक लोभ से मेरी रक्षा कर। जिस प्रकार अस्थायी चीज़ों का लालच व्यक्ति को उसकी ज़रूरतों से अधिक चीज़ों की खोज की ओर ले जाता है, ठीक उसी प्रकार आत्मिक लालच मुझे आत्मिक बातों में तेरे द्वारा निर्धारित की गई चीज़ों से अधिक की खोज करने के लिए प्रेरित कर सकता है। मैं सेवकाई के लिए अधिक सहयोग, अधिक आत्मिक वरदानों की इच्छा कर सकता हूँ, जिनका मैं अच्छी तरह से प्रबंधन कर सकता हूँ, और दूसरों की भलाई के लिए और तेरी महिमा के लिए उपयोग करने के लिए मेरे पास जो ज्ञान है, उससे अधिक प्रभाव की इच्छा कर सकता हूँ। मुझे तेरे द्वारा दिए गए वरदानों और प्रभाव का बुद्धिमानी से प्रबंधन करने का सरोकार दें। मेरी मदद कर ताकि मैं अपनी सेवकाई की गहनता के के बारे में चिंतित रहूँ, और होने दे कि इसकी व्यापकता के बारे में चिंतित रहूँ।

वासना: हे प्रभु, मुझे आत्मिक वासना से बचा, जो तूने चुना है, उसकी इच्छा करने से जो मुझे नहीं करना चाहिए थी। मुझे श्रेय लेने या महिमा की लालसा से प्रलोभित न होने दे। मुझे तेरे राज्य के मामलों में दूसरों पर शासन या अधिकार जताने की लालसा न करने दें। तूने मुझे जो आशीष दी हैं या जो लाभ दिए हैं, उससे अधिक होने दे कि मैं तुझे प्रेम कर सकूँ।

ईर्ष्या: हे प्रभु, आत्मिक ईर्ष्या से मेरी रक्षा कर। मुझे दूसरों से अपनी तुलना करने से बचा। मुझे तेरे द्वारा मिले भले वरदानों के प्रति असंतुष्टि होने से बचा। मुझे दूसरों के पास जो कुछ है उसकी इच्छा करने से बचाएँ, चाहे वह उनकी प्रतिष्ठा हो, उनकी सेवकाई का प्रभाव हो, तेरे साथ उनका रिश्ता हो, या कोई अन्य अच्छी चीज हो जो तूने उन्हें दी हो। मुझे इस बात से संतुष्ट होने दें कि तूने मुझे कैसे बनाया है और मैं जितना हो सके उतने प्रेम और समर्पण के साथ तेरी सेवा करने के लिए दृढ़ रहूँ, जो मेरे पास नहीं है, उसकी इच्छा करने के बजाय मैं तुझे अपना सर्वश्रेष्ठ दूँ।

पेटूपन: हे प्रभु, आत्मिक लोलुपता से मेरी रक्षा कर। मुझे आवश्यकता से अधिक उपभोग करने से और दूसरों को उनकी आवश्यकता की पूर्ति करने में सक्षम बनाने की चिंता करने से बचा। मुझे आत्मिक स्वार्थ से बचा- अर्थात् योगदान देने के बजाय उपभोग करने का प्रलोभन, सेवा करने के बजाय सेवा पाने का प्रलोभन, दूसरों के लिए आशीष बनने के बजाय धन्य होने का प्रलोभन।

क्रोध: हे प्रभु, मुझे आत्मिक क्रोध से बचा। दूसरों के प्रति मेरी निराशा या जलन या अधीरता की भावनाओं को मुझे उनके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से न रोक। मुझे मेरे प्रति तेरी क्षमा, मेरे प्रति तेरे धैर्य और मेरे अपरिपक्व उद्देश्यों के प्रति तेरी सहनशीलता की याद दिला। मुझे याद दिला कि तूने मुझे कितने लाभ और सौभाग्य और अवसर दिए हैं और इस तथ्य को भी कि मैं अभी भी मेरे लिए तेरे इरादों से बहुत पीछे हूँ। मुझे उन लोगों से प्रेम करने में मदद कर जो प्रेम करने में रह जाते हैं, जैसे मैं खुद से प्रेम करता हूँ, उनके लिए मैं सर्वश्रेष्ठ की इच्छा रख सकूँ।

आलस: हे प्रभु, आत्मिक आलस्य से मेरी रक्षा करें। मुझे अवसरों, आत्मिक वरदानों, प्रभाव, रिश्तों, संसाधनों, ज्ञान और अन्य सभी आशीषों का एक अच्छा प्रबंधक बनने में मदद कर जो तूने मुझे इतनी उदारता से दिए हैं। मैं जानता हूँ कि मैं उनमें से किसी के भी लायक नहीं हूँ। तेरी सेवा में, तेरी महिमा के लिए, और तेरे राज्य को आगे बढ़ाने के लिए उन सभी को लगन से लागू करने में मेरी सहायता करें। मुझे मेरे लिए आराम, सहजता, सुविधा और आनंद की चिंता नहीं करनी चाहिए, बल्कि तुझे प्रसन्न करने और दूसरों की सेवा करने की चिंता करनी चाहिए।

मैं जानता हूँ कि ये सभी "आत्मिक" पाप तुझे और दूसरों को अपर्याप्त और गलत तरीके से प्रेम करने की अभिव्यक्ति हैं। मुझे अपने पूरे मन, बुद्धि, प्राण और सामर्थ्य से तूझे प्रेम करने और दूसरों से वैसे ही प्रेम करना सिखा जैसे मैं खुद से प्रेम करता हूँ।

दिन 3

हे पिता, मसीह में मेरी धार्मिकता के लिए धन्यवाद। इस दिन और हर दिन मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू मुझे मसीह के स्वरूप के अनुसार ढल जाने के लिए कार्य करें। मेरा मार्गदर्शन कर और मुझे उस तरह जीने में सक्षम बना जैसे वह रहता था, जैसा वह देखता था, वैसा ही मैं देखूँ, जैसा उसने महसूस किया, और जैसा उसने अपने सांसारिक वर्षों में सेवा की, वैसे ही सेवा कर सकूँ। मुझे यह याद रखने में मदद कर कि मैं पाप के लिए मर गया हूँ, ताकि मैं इसके विकर्षणों के प्रति अंधा हो जाऊँ और इसकी आवाज के प्रति बहरा हो जाऊँ। मुझे हमेशा और केवल तेरे लिए जीने दे।

मुझे विश्वास, आशा और प्रेम का जीवन जीने के लिए मेरे आंतरिक मनुष्यत्व अर्थात् - पवित्रता के जीवन में दृढ़ कर। तेरे प्रति प्रेम और तेरे प्रति कृतज्ञता में, मुझे आलस्य और घमण्ड की अपनी स्वार्थी इच्छाओं के लिए प्रतिदिन मरने दें। तेरे राज्य की अनंतकाल की वास्तविकताओं को देखने के लिए मेरी आंखें उठाने दे और उन छोटी चीजों को दूर करें जो मुझे तेरी इच्छा और तेरे तरीकों की खोज में विचलित या बाधित करेंगी। तेरे सिद्ध ऐसा होने दे कि प्रेम मेरे भीतर के सारे भय को दूर कर दे।

मैं अपने जीवन में तेरी कई आशीषों, परिवार, दोस्तों, धन और सम्मान के लिए बहुत आभारी हूँ। मेरे मन की रक्षा कर ताकि मैं कभी भी इन आशीषों की उपासना न करूँ या उन्हें अपने स्नेह या ध्यान या निष्ठा में तेरे सही स्थान को न हड़पूँ। होने दे कि मैं केवल तेरे लिए ही जीवन जीऊँ। होने दे कि मैं तुझे अपने पूरे मन, बुद्धि, आत्मा और सामर्थ्य से प्रेम करूँ और दूसरों को अपने समान प्रेम करने दूँ। मुझे बच्चों के समान विश्वास के साथ सदैव अपने प्रति समर्पित रख।

ऐसा होने दे कि मैं अपने सभी तरीकों से तेरी इच्छा की जीवंत अभिव्यक्ति बन जाऊँ। होने दे कि मैं उन सभी के लिए आशीष बनूँ, जिनके साथ मैं संपर्क में आता हूँ, चाहे मसीह में मेरे भाइयों और बहनों के लिए प्रोत्साहन के रूप में या उन लोगों के लिए तेरी महानता और महिमा की गवाही के रूप में जो तुझे नहीं जानते हैं। मुझे पल-पल तेरी आत्मा और अनुग्रह से भर, ताकि मैं मीठे पानी का एक फव्वारा बन जाऊँ, जिसमें से कभी भी कड़वा पानी नहीं निकलता, चाहे मुझे इसके लिए कितना भी संघर्ष क्यों न करना पड़े।

जलयात्रा

हे प्रभु, जैसे-जैसे मैं इस जीवन में आगे बढ़ रहा हूँ, मेरे जीवन के कप्तान के रूप में कार्य करता रह, मुझे पथहीन गहराई से मेरे अंतिम बंदरगाह तक निर्देशित करें। हालाँकि मैं क्षितिज से परे नहीं देख सकता, पर मुझे तेरे संचालन पर भरोसा है। हालाँकि अशांत और तूफानी समुद्र ने मुझे घेर रखा है, तौभी मैं जानता हूँ कि तूने उन्हें तुझ पर मेरी निर्भरता को बढ़ाने के लिए ठहराया है, और तू प्रत्येक लहर और प्रत्येक हवा को नियंत्रित करता है। मुझे अंत तक सहने की कृपा प्रदान कर, और यात्रा में तेरी महिमा हो, चाहे शांत पानी हो या अशांति। तेरा प्रेम हवा है, विश्वास मेरी पाल है, और आशा मेरा लंगर है। मुझे बस तेरी ही जरूरत है।

दिन 4

हे प्रभु, तेरे बिना मैं कुछ भी नहीं हूँ - कुछ भी नहीं से कम अर्थात्: मरा हुआ। मैं अंधा हूँ; मेरी रोशनी और मेरी दृष्टि बन। मैं अज्ञानी हूँ; मेरी बुद्धि और मेरा ज्ञान बन। मैं खोया हुआ हूँ और भटक रहा हूँ; मेरा मार्ग और मेरा मार्गदर्शक बन। मैं मर गया हूँ; मेरी जिंदगी बन। मुझे पाप, बुराई और स्वयं के लिए मरने दे, लेकिन किसी भी तरह से तेरे लिए जीवित रहने दे। मेरा जीवन तेरी इच्छा की अभिव्यक्ति हो और मेरी गतिविधियाँ तेरे तरीकों की अभिव्यक्ति हों।

मुझे अपने ध्यान में दृढ़ और स्थिर बना, चाहे मेरे चारों ओर कितना भी भयंकर तूफान क्यों न आए। मुझे तेरी आवाज़ सुनने और पहचानने दे, चाहे मेरी स्थिति और परिवेश कितनी भी अराजक क्यों न हो। मुझे अपने आस-पास की स्थितियों और दुनिया भर में बड़े और छोटे तरीकों से तेरे कार्यों को समझने दें, ताकि मैं तेरे चरित्र और इरादों को समझ सकूँ। मुझे तुरंत तेरी सबसे तेज नज़रों से निर्देशित होने दे।

तू मुझे अपने हृदय का आनंद बना। मुझे प्रेम करने और सेवा करने दे और इस तरह से जीने दे जिससे तुझे खुशी और महिमा मिले। मुझे अपने आस-पास के लोगों को अपनी सुंदरता दिखाने और प्रतिबिंबित करने दे। मुझे अपने लोगों को अधिक से अधिक प्रेम और अच्छे कार्यों के लिए प्रेरित करने में मदद कर। मुझे दिखा कि तू मुझे पृथ्वी पर जो समय देता है उसका उपयोग मैं कैसे करूँ। दूसरों को अपनी ओर इंगित करने के लिए मेरा उपयोग करें और उन्हें तुझे पूरी तरह से जानने और प्रेम करने के लिए प्रोत्साहित कर, ताकि तू ही उस सारे सम्मान को प्राप्त करे जिसके लिए तू योग्य हैं।

यात्रा

हे प्रभु, तू मेरी यात्रा की मंजिल और पथ दोनों है। तू मार्गदर्शक है। तूने ही संदर्भ बनाया और तुझ बाधाओं को निर्धारित करता है। तूने अपनी महिमा और मेरी भलाई के लिए सब कुछ तैयार किया है। मुझे उद्देश्यपूर्ण और समझ के साथ चलने में सक्षम बना। यात्रा में दूसरों की सहायता करने में मेरी सहायता कर और जो भटक जाते हैं, उन्हें रास्ते पर लौटने के लिए बुला। दूसरों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में विशिष्टता के साथ मुझे विजयी अंत तक ले आ।

दिन 5

हे प्रभु, मेरी ताकत बन। जब मैं थकान, या बोझ, या दु:खों से उबर जाता हूँ या भर जाता हूँ, तो मुझे स्थिर रहने की कृपा दे - गंभीर त्याग में नहीं, लेकिन उन तरीकों के लिए कृतज्ञता और खुशी में जिनसे तू इस स्थिति का उपयोग मेरी भलाई और अपनी महिमा के लिए कर सकता है। मुझे उन सुखद और आसान चीजों का विरोध करने की सामर्थ्य दे, जो मेरे लिए तेरी इच्छा के अनुरूप नहीं है। तू जो मेरे लिए चाहता है, उसके अलावा किसी अन्य चीज़ की खोज में मुझे विचलित या अलग न होने दे।

मेरे विचारों और इरादों का मार्गदर्शन कर, ताकि मैं अच्छे और बुरे के बीच ही नहीं, बल्कि अच्छे और सर्वोत्तम के बीच चयन करके भी संतुष्ट हो सकूँ। मुझे मेरी संतुष्टि आराम और सहजता और खुशी में नहीं, बल्कि तेरे उद्देश्य और इरादे के अलावा और कुछ नहीं करने और कहने के द्वारा तुझे प्रसन्न करने में मिलनी चाहिए। मुझे मेरी खुशी और प्रतिष्ठा के बजाय तेरी खुशी और प्रतिष्ठा के लिए जीने दे। अपने जीवन को मुझमें और मेरे माध्यम से स्पष्ट होने दे।

जब मैं तेरी इच्छा और तेरे तरीकों से भटक जाता हूँ, जब शब्द या कर्म या विचार से मैं तेरी इच्छाओं से ऊपर अपनी इच्छाओं के पीछे चलता हूँ, तो मुझे माफ कर। मुझे खुद को नकारने और खुद के लिए मरने का साहस दे।

इस प्रक्रिया में मेरे मन को तेरी प्रशंसा करने और धन्यवाद देना सिखा, क्योंकि मेरे लिए तेरे प्रेम में मेरा विश्वास है, यह प्रेम मेरे स्वयं के प्रेम से भी बड़ा है; इस संसार की किसी भी वस्तु से बेहतर प्रतिफल की मेरी आशा के कारण; और तेरे प्रति मेरे प्रेम के कारण, कि तू कौन हैं, और यह कि तू योग्य है।

मुझे तेरे अलावा किसी भी खुशी या आनंद को पाने से बचा। मुझे मेरी प्रतिष्ठा या शक्ति को आगे बढ़ाने से मिलने वाली किसी भी संतुष्टि या संपूर्णता से रक्षा कर। मुझे उसका अनुसरण करने दे जिसने स्वयं को दूसरों की सेवा के लिए दे दिया और जिसने उनके और तेरे लिए स्वयं को बलिदान कर दिया। मुझे उसे विनम्रता और पूर्ण आज्ञाकारिता को दे जो तेरे प्रति शुद्ध प्रेम से उत्पन्न होती है और जिसके परिणामस्वरूप दूसरों के लिए आत्म-समर्पण प्रेम का जीवन बनता है।

हालाँकि मैं तेरा शत्रु था, फिर भी तूने मुझे आशीष दी इसलियें तेरा धन्यवाद। तूने मुझसे प्रेम किया। तू मेरे साथ दास जैसा व्यवहार नहीं करता, भले ही मैं एक दास हूँ, और वास्तव में एक अयोग्य हूँ। तू मेरे साथ एक दोस्त और अपनी सन्तान की तरह व्यवहार करता है। मुझे बढ़ा और मुझे तब तक आकार दे जब तक मैं एक ऐसा बालक न बन जाऊँ जिस पर तुझे घमण्ड हो, ताकि मैं यीशु के स्वरूप अनुसार ढलता चला जाऊँ। मुझे अपने अनंतकाल के राज्य की खुशी में सुरक्षित रूप से ले चल। होने दे कि मुझे इस बात की चिंता न हो कि सड़क उबड़-खाबड़ है या चिकनी है, लेकिन केवल तेरे मुख को और अधिक स्पष्ट रूप से देखने के बारे में उस दिन तक जब कि मैं तुझे आमने-सामने देखूं।

सुगंध

सभी चीजों के निर्माता, तूने हर मोड़ पर सृष्टि को आनंदमय आश्चर्य से भर दिया है। सुगंध तेरी सुंदरता का एक अप्रत्याशित प्रदर्शन है। तेरी अवर्णनीय परिपूर्णता शायद मीठे, फूलों वाले पेड़ों और झाड़ियों की नाजुक, अवर्णनीय सुगंध में सबसे स्पष्ट रूप से महसूस की जाती है जो वसंत ऋतु में हमें घेर लेती है। एमिली डिकिंसन ने यह अनुभूति तब व्यक्त की जब उसने कहा कि, "मैं हवा के कारण मतवाली हूँ।" तेरी आत्मा हमारे अस्तित्व को इस अनुभव से संपन्न करता है। जब तू एक मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर था, तो तेरे जीवन से यह झलकता था। मैं तेरे प्रेम से इतना प्रभावित हो जाऊँ कि मैं उसी अवर्णनीय वैभव को प्रदर्शित कर सकूँ।

दिन 6

हे अनंत त्रिएकत्व परमेश्वर, मैं तेरी महानता को नहीं समझ सकता हूँ। दिन-प्रतिदिन मैं तुझ से प्रार्थना करता हूँ कि तू मेरी बुद्धि और मेरी कल्पना को बढ़ाए ताकि मैं तेरी महिमा की पूरी तरह से सराहना कर सकूँ और तेरी योग्यता की प्रशंसा कर सकूँ।

मैं कल्पना नहीं कर सकता कि तू समय से परे हैं, तू आरम्भ से अंत देखने की क्षमता रखता है। मैं कल्पना ही नहीं कर सकता हूँ कि तेरे साथ एक हजार वर्ष एक दिन के समान है और एक दिन एक हजार वर्ष के समान है।

मुझे इस विचार पर आश्चर्य होता है कि संपूर्ण आकाशगंगाओं, साम्राज्यों, व्यक्तियों और एकल-कोशिकाओं वाले जीवों का आरम्भ और पतन सभी तेरे पूर्ण नियंत्रण, जागरूकता और चिंता के अधीन हैं। ये अनंत सामर्थ्य, ज्ञान और उपस्थिति मेरे लिए समझ से परे है।

मैं उस विशाल प्रेम की थाह नहीं पा सकता हूँ, जो तूने मसीह को मरने के लिए भेजकर प्रदर्शित की थी, ताकि विद्रोही मनुष्य तुझे जान सके और एक बार फिर से तेरे स्वरूप में परिवर्तित और निर्मित हो सके, जैसा कि सृष्टि के समय हुआ था। ऐसा त्याग और आत्म-समर्पण मेरी बुद्धि और मेरी भावना में मेरी समझ से परे है।

होने दे कि ऐसी ज़बरदस्त हकीकतें मेरे दिल और दिमाग को छोटी बातों से दूर कर दें। मुझे याद दिला कि तेरे असाधारण वरदानों का जवाब देने के लिए मेरे अवसर इस दुनिया में सीमित हैं, ताकि मैं तुझे सम्मान देने वाला जीवन जीने के हर अवसर का लाभ उठा सकूँ।

मुझे दूसरों की भलाई के लिए उनकी सेवा करने में समय का उपयोग करना सिखाएँ, ताकि वे तेरी स्तुति और आराधना कर सकें। मुझे निर्देश दें कि कैसे मैं तुझे अधिक से अधिक उच्च स्तर तक महिमा दे सकूँ। मुझे एक ऐसा जीवन जीने दे जो पूरी तरह से तुझ पर निर्भर होकर तेरी इच्छा और तेरे तरीकों को प्रदर्शित करे।

संगीत

हे सभी रहस्यों के प्रभु, मैं उन अप्रत्याशित तरीकों को नहीं समझ सकता जिनसे संगीत हमें छू सकता है। धुन हमारी आत्मा को प्रभावित कर सकती है; सुर की लय हमें ऊपर उठा सकती है या हमें शोक में डाल सकती है। मेरे हृदय को उन तरीकों से तेरी आराधना करना सिखा जिन्हें यह केवल संगीत के माध्यम से ही खोज सकता है। मुझे स्वर्गीय धुनों के माध्यम से तेरी महिमा और प्रशंसा करने की अनुमति दे। मुझे दिखा कि नए गीतों में मैं तेरे साथ गहराई से कैसे संवाद कर सकता हूँ, जिन्हें तू मेरे मन में डालता है।

तू ही मेरा परिचालक है। तू मुझे ऐसे जीवन से संगीत बजाने में सक्षम बना जो उस संगीत को जीता है, जो तूने मेरे भीतर रखा है। यह एक ऐसी ध्वनि हो जो तेरे कानों को भाती हो, और यह दूसरों को गायन मंडली और सृष्टि के वादक समूह के परमेश्वर के रूप में तेरी ओर आकर्षित करे।

दिन 7

हे प्रभु, मुझे मेरे जीवन में एकता प्रदान अर्थात् - विचार, इच्छा, भावना, वचन और कर्म की एकता प्रदान कर। उस एकीकृत अस्तित्व को पूरी तरह से तेरी सेवा करने और प्रसन्न करने पर केंद्रित होने दें। मुझे उस समय के लिए क्षमा करें जब मेरे अंदर का कलह मुझे वह बनने से रोकता है, जो तू मुझे बनाना चाहता है। यीशु मसीह का जीवन मुझमें पूरी तरह से तालमेल के साथ व्यक्त हो कि मैं तेरे इरादों के साथ पूरी तरह से मेल खाऊँ।

मुझे अपनी इच्छा के अनुरूप प्राण और आत्मा दो। होने दे कि मेरा एकमात्र भय तुझे निराश न करने का हो। होने दे कि मेरी एकमात्र आशा अनंत काल तक तेरी अनंत उपस्थिति में सभी चीजों के छुटकारे की हो। होने दे कि मेरा एकमात्र विचार तेरी इच्छा पूरी करने का हो। होने दे कि मेरा प्रेम केवल तेरे लिए हो, और दूसरों के लिए तुझ से हो। होने दे कि मेरी एकमात्र इच्छा तुझे पूरी तरह से जानने की हो ताकि मैं तुझे पूरी तरह से जान सकूँ और मैं तुझे पूरी तरह से प्रेम कर सकूँ।

होने दे कि मेरी बुद्धि तुझ से हो, मेरा धन तुझ से हो, मेरी शक्ति तुझ से हो। होने दे कि मैं दुनिया द्वारा दिए गए झूठे ज्ञान, धन और शक्ति की शून्यता को देख सकूँ। होने दे कि मेरी सारी खुशियाँ तेरे स्वरूप, उपस्थिति, सेवा और कृपा से हों। तू ही मेरी बुद्धि, मेरा खजाना और मेरी ताकत है।

कृषि

हे प्रभु, जब तूने आदम को बनाया, तो तूने उसे वाटिका की देखभाल और देखरेख करने के लिए वाटिका में रखा। खेतों में उस उच्च मांग के अवशेष को संरक्षित करने के लिए तेरा धन्यवाद। होने दे कि खेत से मिलने वाले सबक मुझे दुनिया में तेरे तरीके सिखाएँ। होने दे कि मुझे तेरी सुव्यवस्था, तेरी सुंदरता और अमिश्रित जीवन के अनुशासन की पहचान होने दे। जब मैं तेरे खेतों, लताओं और पेड़ों की खेती को देखता हूँ, तब मैं दूसरों को आशीष देकर और तेरी महिमा करके तेरी सेवा करने

में निरंतर विकास के लिए जुनून को प्राप्त कर सकूँ। मुझे वजन ढोने वाले जानवरों के आश्चर्य में उद्देश्य की शक्ति और पूर्ति दिखा जब वे अपने स्वामी के प्रति समर्पण से कार्य करते हैं। मुझे दूसरों को आशीष देने और सामान्य भलाई से सेवा करने की गरिमा सिखा जब मैं किसान की कड़ी मेहनत और दृढ़ता को देखूँ। होने दे कि मैं इन्हीं गुणों के साथ तेरी सेवा करूँ, क्योंकि तेरे उद्देश्यों को प्राप्त करने और अधिक फल उत्पन्न करने के लिए तेरे द्वारा मेरी कटनी की है, ताकि तू महिमा पा सके।

दिन 8

हे प्रिय पिता, मेरे दिन व्यर्थ और खाली हैं, जब तक कि वे तेरी उपस्थिति में व्यतीत न हों, तेरी सेवा में खर्च न हों, और तेरी महिमा के लिए उपयोग न किए जाएँ। केवल तेरी कृपा, सामर्थ्य, बुद्धि और सक्षमता से ही मैं कुछ भी कर सकता हूँ, जिसमें मेरी अगली साँस लेना भी शामिल है। ऐसा अनुग्रह दे कि मैं तुझ पर पूरी तरह भरोसा कर सकूँ और तेरे प्रावधानों को बर्बाद न करूँ। मुझे निर्देशित कर और हर पल, हर शब्द, हर कदम, हर विचार में तुझ पर भरोसा करने के लिए धीरे से मार्गदर्शन कर।

मुझे तुझे जानने और तुझे अवगत कराने, तेरी प्रशंसा करने, तेरे प्रेम को प्रदर्शित करने और तेरे राज्य को आगे बढ़ाने की निरंतर इच्छा दे। मुझे अपने व्यवसाय के बारे में बता ताकि मैं उन सभी के लिए आशीष का साधन बन सकूँ जिनके साथ मैं संपर्क में आता हूँ। सृष्टि के जिस भी कोने में तू मुझे ले जाएँ, मैं तेरे हाथ और पैर और आवाज बन जाऊँ, इस तरह उपयोग किया जाऊँ कि तेरी इच्छा पृथ्वी पर पूरी हो जैसे स्वर्ग में होती है।

सरकार

हे राजाओं के राजा, मैं तेरे उत्तम राज्य की अभिलाषा करता हूँ। तूने हमें अपूर्ण शासक दिए हैं। तू जो आदर्श सरकार बनाना चाहता है, वे उसकी छाया हैं। होने दे कि हम उनसे सीखें और उनके प्रति समर्पण करें, क्योंकि हम आज्ञाकारी लोग बनने और दूसरों को आशीष देने के लिए सहयोग करने में तेरे उद्देश्यों की एक संयुक्त उपलब्धि के पीछे चलते हैं, क्योंकि तूने हमें अपनी आशीष दी है। उनकी कमियाँ हमें तेरी महानता की याद दिलाती रहें क्योंकि हम बेहतर चीजों, बेहतर कानूनों और बेहतर लोगों की चाहत रखते हैं।

होने दे कि हम तेरी इच्छा की शुद्ध अभिव्यक्ति के लिए श्रम कर सकें और तेरी इच्छा की भावना को प्रदर्शित करने के लिए मनुष्य की व्यवस्था के शब्दों से ऊपर उठते हुए और आगे के जीवन को जी सकें। होने दे कि हम, तेरे लोगों के रूप में, आपस में और तेरे परिवार से बाहर के लोगों के प्रति अपने प्रेम प्रदर्शित करें, ताकि पूरी दुनिया हमारे राजा की पूर्णता को देख सके और तेरे राज्य के प्रति समर्पित हो सके। होने दे कि हम तेरे राज्य की व्यवस्था के अनुसार जिएँ, क्योंकि तूने उन्हें अपने आदेशों में स्पष्ट रूप से संप्रेषित किया है। होने दे कि हम प्रेम से रहकर और तेरे परिवार से बाहर के लोगों के उद्धार की तलाश करके तेरे राज्य के उद्देश्यों की सेवा करें। होने दे कि हम तेरी प्राथमिकताओं के अनुसार अपने संसाधनों

का उपयोग करें। होने दे कि हम तेरे उद्देश्यों के लिए अपने समय और ऊर्जा को प्राथमिकता दें। होने दे कि हम अपना जीवन तेरी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के साथ जिएँ, ताकि हम हर समय तेरे इरादे के थोड़े से भी संकेत पर ध्यान दे सकें। तू ही हमारा राजा है।

दिन 9

हे दयालु पिता, जो कुछ भी अच्छा है, उसका स्रोत, मुझे तुझ में पूरी तरह से संतुष्ट होने दें, मैं कभी भी किसी और चीज़ की तलाश न करूँ या किसी भी चीज़ से तेरी तुलना में संतुष्ट न होऊँ। मुझे अपने अलावा किसी भी अन्य चीज़ के प्रति निरंतर असंतोष दे। मैं तेरे द्वारा प्रदान की गई आशीष को स्वयं से, या दाता द्वारा दिए गए वरदान से, या मेरी इनसे कम इच्छाओं को उन बड़ी चीजों से भ्रमित नहीं कर सकता जो मेरी प्रतीक्षा कर रही हैं। हर दिन मुझे यीशु के जीवन और चरित्र के अनुरूप ढालें, और हर दिन उसके स्वरूप से भिन्न किसी भी चीज़ को मार डालें।

होने दे कि तेरी इच्छा ही मेरी प्रसन्नता हो। होने दे कि मैं खुद को या दूसरों को खुश करने के बजाय केवल तुझे ही खुश करने के लिए जीवन को जीऊँ। क्या मैं तेरे लिए कष्ट सहने के योग्य समझे जाने पर प्रसन्न हो सकता हूँ, जब दूसरे लोग मेरे विश्वास को मूर्खता, मेरी नम्रता को कमजोरी, मेरे उत्साह को मूर्खता, मेरी आशा को भ्रम और तेरे प्रति मेरे प्रेम को पागलपन के रूप में देखते हैं। जब मैं अनंतकाल के धन की तलाश में हूँ, तो स्वर्ग की आशा और सामर्थ्य के साथ मेरी सहायता करें। होने दे कि मुझे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जाना जाए जो हमेशा और केवल तेरे ही लिए जीता है।

कुम्हार

तू कुम्हार है; क्योंकि सारी सृष्टि मिट्टी है। तू इसमें अपनी इच्छा के अनुसार कार्य कर रहा है। मैं तो एक छोटी सी गांठ हूँ। मुझे इन सब से चेताने देने के लिए धन्यवाद। मैं विनती करता हूँ कि तू मुझ से कुछ उत्कृष्ट सुंदरता बनाएगा जो तेरी महानता और महिमा को प्रतिबिंबित करेगी। मैं जानता हूँ कि यह सुनिश्चित करने के लिए कि केवल बढ़िया मिट्टी ही बची रहे, तूझे मुझसे कई अशुद्धियों को दूर करना होगा। मैं जानता हूँ कि मुझे आकार देने के लिए मुझ पर दबाव डाला जाना चाहिए। मैं जानता हूँ कि आप जिस आकार देने का इरादा रखता है, उसे स्थायी बनाने के लिए मुझे भयंकर लपटों का सामना करना पड़ेगा। तेरी खुशी इसके योग्य है। वह कर जो तुझे करना चाहिए। तू मुझे अपने काम का पात्र और दूसरों के लिए वरदान बना।

दिन 10

हे प्रभु, तेरी दया और कृपा, जो मुझे जीवन और सभी आत्मिक आशीष देती है, वही दयालुता और कृपा है, जिसके द्वारा तू मेरे विश्वास का परख, शुद्धि और अभ्यास करता है। मेरे साथ तेरे सभी व्यवहारों को अप्रतिम कृतज्ञता के साथ स्वीकार करने में मेरी सहायता करें, चाहे वे क्षण में सुखद हों या अप्रिय। मैं

जानता हूँ कि तू जिन कठिनाइयों की अनुमति देता है, वे मेरी भलाई और तेरी महिमा के लिए हैं, क्योंकि तू मुझे आज्ञाकारिता सिखाता है, मुझे पूर्ण बनाता है, और मुझे मसीह के साथ पहचाने जाने की अनुमति देता है।

मेरी इच्छाओं को बढ़ा और मेरी प्रत्याशा को बढ़ा। होने दे कि विश्वास को मेरी आशा के आकार बनाए, ताकि मैं अनंत काल तक मुझे आकार देने में तेरे अनंत दृष्टिकोण को समझ सकूँ। मुझे तेरे साथ अनंतकाल की सेवा और सहभागिता के लिए तैयार कर। मुझे न केवल उस समृद्धि और प्रतिकूलता के लिए तैयार कर जिसका मैं पृथ्वी पर अनुभव करूँगा, बल्कि इससे भी अधिक मेरे भीतर और मेरे माध्यम से मुझे तेरे अनंतकाल के उद्देश्यों के लिए तैयार कर। तू ही वह सब कुछ है, जिसकी मुझे आवश्यकता है। मैं तुझ से प्रेम करता हूँ और तुझ पर ही भरोसा रखता हूँ।

संचारक/प्रकाशित करनेवाला

हे प्रभु, तेरा धन्यवाद कि तू वार्तालाप करता है, और तू हर तरह से संबंध रखता हैं। तेरी रचनात्मकता तेरे बोलने के तरीकों की अद्भुत विविधता से स्पष्ट है। तेरी सृष्टि, तेरे कार्य, तेरे लोग, तेरे वचन (जीवित और लिखित दोनों), और हमारे भीतर तेरा आत्मा - ये सभी तेरे चरित्र, स्वभाव, इच्छा और उद्देश्य का निरंतर प्रमाण प्रदान करते हैं, इसी के साथ हममें से प्रत्येक के लिए तेरे विशेष इरादे भी।

हमारे दिलों को तेरे संदेशों की आवृत्ति के अनुरूप बना। हमें तेरी आवाज को पहचानने की संवेदनशीलता, जो कुछ हम सुनते हैं, उस पर कार्य करने का विश्वास और उसके द्वारा रूपांतरित होने की बुद्धि दें। हमें तेरे स्वरूप और इच्छा के अनुरूप बना। धन्यवाद कि तेरा वचन शक्तिशाली और प्रभावी है, न केवल सृष्टि में बल्कि पुनर्निर्माण में भी।

मुझे तेरे द्वारा सुने गए संदेशों को दूसरों तक प्रसारित करने में सक्षम बना, ताकि मैं तेरी आशीष का माध्यम बन सकूँ। अपने वैभव के महिमामयी दूत और राजदूत के रूप में अपने राज्य को आगे बढ़ाने के लिए मेरा उपयोग कर।

दिन 11

हे प्रभु, होने दे कि मैं दूसरे क्रूस को, जिसे मैं उठाना चाहता हूँ, पीछे न हटूँ। मेरे साथ धैर्य रख जैसे तूने बारह चेलों के साथ रखा था, जितनी बार आवश्यक हो याद रख कि जीवन का मार्ग मृत्यु के माध्यम से है। इस प्रक्रिया में मुझे विनम्रता, आश्रित, आभारी होना और आनंदित बनाए रख। मैं अपनी माँ के साथ दूध पीते बालक की तरह निश्चिंत होना चाहता हूँ, तेरी उपस्थिति में पूरी तरह संतुष्ट हूँ। क्योंकि मैं तेरा हूँ। मुझे अपनी इच्छानुसार आकार दें और फिर से मेरी रचना कर।

सत्य

तू ही सत्य हैं। तू ही साहुल की डोरी हैं। तू ही मापदंड हैं। तू ही आदर्श हैं। आप सर्वोच्च वास्तविकता हैं। मुझे सत्य की ओर फेर दें और मुझे इसके अनुरूप बना।

होने दे कि मैं मेरे जीवन को इस तरह से जी सकूँ कि मैं तेरी सच्चाई को प्रदर्शित कर सकूँ, आगे बढ़ सकूँ और गवाही दे सकूँ। मुझे सत्य की इतनी गहन पहचान और समझ दे कि मुझे किसी भी भिन्नता का तुरंत पता चल जाए। यदि वह भिन्नता मेरे भीतर है, तो मुझे अपनी आत्मा के कार्य से इसे ठीक करने में सक्षम बनाएँ। यदि यह मेरे आस-पास दूसरों में है, तो मुझे अपने निर्देशानुसार विनम्रतापूर्वक और प्रेम से इससे निपटने दें। यदि यह दुनिया में है, तो मुझे दिखा कि मुझे कैसे प्रतिक्रिया देनी चाहिए ताकि मैं पृथ्वी पर तेरी इच्छा को आगे बढ़ाने के लिए आपका साधन बन सकूँ।

दिन 12

हे अमर और अनंत परमेश्वर, मुझे विनम्रता भरा आदर और परमेश्वर के भय में रहकर सेवा करना सिखा। मुझे अपने हृदय में पाप छिपाने या सांसारिक प्रवृत्तियों या इच्छाओं में लिप्त रहने न दे। मुझे शुद्ध करें ताकि मैं तेरी उपस्थिति का आनंद उठा सकूँ। मेरे दिल पर राज कर ताकि मैं सांसारिक गतिविधियों की इच्छा न करूँ। मुझे सांसारिक संपत्तियों, पदों या गतिविधियों के प्रति निरुत्सुक बने रहने दे। इसके बदले मुझे अपनी धार्मिकता और उपस्थिति के लिए एक शुद्ध और पवित्र इच्छा दे।

मेरे भीतर एक ऐसा स्वभाव उत्पन्न करें जो तेरे प्रति मेरी सेवा को पूर्ण स्वतंत्रता के रूप में पहचाने। मेरे भीतर से सभी तरह का घमण्ड, भय और शर्म को दूर कर ताकि मैं साहसपूर्वक तेरी महानता को सभी के साथ साझा कर सकूँ और तेरे मन के बारे में और अधिक गहन ज्ञान प्राप्त कर सकूँ। मुझे अपनी बुद्धि और प्रेम से भर। होने दे कि मैं तेरे प्रति अपने प्रेम की अभिव्यक्ति के रूप में दूसरों की सेवा करने दूँ। मुझे अपने वचन और शांति से भर ताकि मैं दूसरों के लिए प्रकाश और प्रोत्साहन का स्रोत बन सकूँ।

सामर्थ्य

सारी सामर्थ्य और अधिकार तेरा ही हैं। तू सामर्थी और शक्तिशाली हैं, यहाँ तक कि सर्वशक्तिमान भी। तू सभी चीजें अपनी इच्छा के अनुसार काम करते हैं। मैं इसे समझ नहीं सकता, लेकिन मैं इसके लिए तेरी प्रशंसा करता हूँ। मैं बेहद आभारी हूँ कि तेरी शक्ति दया, अनुग्रह, न्याय, दयालुता, अच्छाई और प्रेम में व्यक्त होती है।

जब मैं कमजोर और थका हुआ महसूस करता हूँ, और जब मुझे आशा और दिल खोने का प्रलोभन होता है, तो मुझे अपनी सामर्थ्य की याद दिला और मुझे वह सब दे जो मुझे तेरी इच्छा पूरी करने के लिए चाहिए। होने दे कि मैं मेरे भीतर के व्यक्ति को कठिनाइयों की चिंता किए बिना आत्मविश्वास से यह जानते हुए तेरा मार्ग अपन सकूँ कि तू मुझे अपने उद्देश्यों तक ले जाएगा। होने दे कि मैं दूसरों को तेरी शक्तिशाली सामर्थ्य की याद दिलाकर उन्हें मजबूत करूँ।

दिन 13

हे पिता, मुझे मेरे बड़े भाई यीशु जैसा बना दे। मेरे भीतर और मेरे माध्यम से अपनी रोशनी चमका। मुझे वह रास्ता दिखा जो तूने मेरे लिए तैयार किया है, जिस रास्ते पर तू मेरे चलने का विचार रखता है। मेरे मन को शत्रु और संसार की परीक्षा से बचा। यदि यह तुझ पर न टिकता है तो मैं अपने मन की कमजोरी और धोखे को जानता हूँ।

होने दे कि मेरे होंठ और मेरा जीवन दूसरों को विश्वास और प्रेम में जीने की अधिक ऊँचाइयों तक ले जाएँ। ऐसा हो कि मेरे उदाहरण से आलसी को अधिक परिश्रम के लिए प्रेरित किया जा सके। जो लोग इस दुनिया के सुख या शक्ति से विचलित हैं, उन्हें मेरी दृढ़ सावधानी देखकर शाश्वत चीजों पर ध्यान केंद्रित करने दें। जो लोग कायर हैं, उन्हें मेरे प्रोत्साहन से प्रोत्साहित होने दे।

सेवा का आनंद दिखाने के लिए मुझे अपनी कृपा का दर्पण बना। होने दे कि तू ही मेरी खुशी से निराश लोगों के दिलों को रोशन करे। मेरे माध्यम से प्रदर्शित कर कि कोई व्यक्ति सांसारिक जिम्मेदारियों को अनंतकाल के दृष्टिकोण से कैसे निभा सकता है। मुझे उन लोगों के लिए अपना करुणामय हृदय दे जो तुझ से अनभिज्ञ हैं या दुःख में हैं, ताकि वे सच्चे प्रेम का अनुभव कर सकें।

मुझे यीशु की तरह चलना, जैसा उसने देखा वैसा देखना, जैसा उसने सुना वैसा सुनना, जैसा उसने सोचा वैसा सोचना और अपने आसपास की दुनिया में छोटे और बड़े दोनों तरीकों से तेरे काम को समझना सिखा। हर दिन मुझे उसकी विनम्रता की ओढ़नी दे ताकि मैं दूसरों को अपने से अधिक महत्वपूर्ण मान सकूँ और तेरे प्रति प्रेम के बलिदान के रूप में "इनमें से सबसे कम" की सेवा का जीवन जी सकूँ।

अधिकार

हे प्रभु, तू ही समस्त सृष्टि पर संप्रभु हैं। तू अपनी महिमा के लिए सभी चीजों की देखरेख करता है। तू ही सब कुछ इस तरह से करता है कि हमारे दिलों को परखे, हमें मसीह की समानता में बढ़ने में मदद कर, और हमें विश्वास से चलना सिखा। तेरे द्वारा सिखाए गए पाठों को शीघ्रता से सीखने और तेरे प्रति हमारी समझ और प्रेम को बढ़ाने में हमारी सहायता कर।

तू ही लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए बड़े और छोटे दोनों तरह के रूप में लाता है, दर्द, दुःख, पीड़ा और खालीपन के माध्यम से असंतोष पैदा करता है या अपने प्रेम, दयालुता और महानता का प्रदर्शन करता है। उन लोगों को विश्वास प्रदान कर जो अभी तक तुझे नहीं जानते हैं कि वे तेरी मुक्ति की पेशकश पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दें, और अपनी सन्तान को मार्ग तैयार करने लिए भेज।

मुझे तेरे सभी कार्यों के लिए आभारी होने में मदद करें, चाहे वे सुखद हों या अप्रिय। मुझे सभी स्थितियों पर अच्छी प्रतिक्रिया देने में मार्गदर्शन कर, चाहे मैं उनके लिए तेरे कारणों को समझूँ या नहीं। मुझे अपनी इच्छाएँ दिखा ताकि जो

आप बदलना चाहते हैं, मैं उसे बदलने के लिए साहसपूर्वक आग्रह कर सकूँ, खोज सकूँ और दस्तक दे सकूँ, और यह भी कि मैं धैर्यपूर्वक और ख़ुशी से वह सहन कर सकूँ, जिसे तू बनाए रखना चाहता है। तेरे द्वारा सिखाए गए सबकों को शीघ्रता से सीखने में मेरी सहायता कर।

ऐसा होने दे राष्ट्र तेरे अधीन हों, या तो स्वेच्छा से और विनम्रतापूर्वक या तेरी गतिविधि के माध्यम से। ऐसा होने दे कि अंधकार की आत्मिक शक्तियाँ तेरे उद्देश्यों की ओर झुक जाएँ, भले ही अनिच्छापूर्वक ही क्यों न। ऐसा होने दे कि तेरा राज्य आये और तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी हो वैसे ही पृथ्वी पर भी हो। ऐसा होने दे कि तेरे अधिकार को सभी जल्द ही पहचान लें। शीघ्र आ, हे प्रभु!

दिन 14

हे प्रभु, मुझे तेरे पीछे चलने और तुझे पूरी तरह से जानने के लिए दृढ़ करजब तक कि तू मुझ में अपने सर्वोच्च राज्य को न ला आए। होने दे कि कि मेरा प्रत्येक विचार, वचन और काम विश्वास और प्रेम से भरे शुद्ध हृदय से अपने चरित्र को व्यक्त करे। होने दे कि मैं इस विश्वास और प्रेम से उत्पन्न होने वाले कार्यों से दुनिया में बुराई पर विजय पाऊँ। मुझे दिल, दिमाग, आत्मा और ताकत से अपने करीब बाँध।

जब मैं कमजोर हो जाऊँ और गिर जाऊँ तो मुझ पर अनुग्रह और दया दिखा। दूसरों को भी वही अनुग्रह दिखाने में मेरी सहायता कर जब उन्हें इसकी आवश्यकता हो। तेरे द्वारा प्रदान की गई आत्मिक ढाल के द्वारा दुश्मन के हमलों से मेरी रक्षा कर। मुझे संघर्ष के लिए मजबूत कर, और मुझे उस दौड़ के लिए धैर्य दे जो तूने मेरे सामने रखी है। होने दे कि मैं तेरी सामर्थ्य विजय पा सकूं।

तेरे इन आशीर्वादों के प्रावधान को समझने में मेरी सुस्ती मेरी समझ और विश्वास की कमी की अभिव्यक्ति है। मेरा विश्वास बढ़ा। मुझ में पवित्र उत्साह जगा, ताकि मैं आगे बढ़ने की तेरी स्पष्ट बुलाहट से संकोच न करूँ या पीछे न हटूँ। चाहे मैं आगे बढ़ूं या लड़खड़ाऊँ, मुझे विनम्रतापूर्वक चलने दें, जो किया जाना चाहिए उसे अधूरा छोड़ने में और जो तू चाहता है, उसके अलावा अन्य कुछ करने में अपनी विफलताओं को स्वीकार करते हुए।

मुझ पर गहराई से प्रभाव डाल कि समय कम है, काम बड़ा है, जिम्मेदारी गंभीर है, और अनंत काल निकट है। मैं यह कभी नहीं भूल सकता कि तू अपनी संप्रभुता में सभी चीजें देखता और सुनता है, ताकि मैं उस तरीके से रह सकूँ जो तुझे प्रसन्न करता है और तेरी इच्छा के अनुरूप है। मुझमें तब तक काम करना जारी रख जब तक कि तू लगातार मेरे दिल की धड़कन, मेरे विचारों का केंद्र, मेरे होठों का शासक और मेरे पैरों का मार्ग न बन जाएँ।

विश्वासयोग्यता

हे प्रभु, हे मैं हूँ महान्, होने के लिए तेरा धन्यवाद, जो कल, आज और सर्वदा एक समान है। तू अस्तित्व में एकमात्र ऐसी चीज़ हैं जो पूरी तरह से विश्वसनीय है। हम

किसी भी चीज़ पर निर्भर नहीं हैं और न ही किसी और पर। तू हर चीज की नींव और शिखर, स्रोत और अंत हैं।

होने दे कि मैं एक पल के लिए भी अपना विश्वास, समर्पण या आशा तुझ पर छोड़कर कहीं और न रखूँ, ताकि मैं निराश न हो जाऊँ या किसी और चीज में निवेश करके अपना जीवन बर्बाद न कर लूँ। दूसरों को तेरी पूर्ण विश्वसनीयता के बारे में बताने में मेरी सहायता कर। मैं तेरी स्तुति करता हूँ, क्योंकि तू ही योग्य है, मेरी चट्टान।

दिन 15

हे प्रभु, होने दे कि मैं तेरी कृपा और दया बर्बाद न कर पाऊँ। होने दे कि मैं तेरे लिए शर्मिंदगी का कारण न बनूँ, चाहे मैं जो कुछ करूँ या जो कुछ करने में असफल ही क्यों न रहूँ। मुझे दूसरों के लाभ और तेरी महिमा के लिए प्रेमपूर्वक सेवा करने दे। मेरा जीवन तेरे लिए खुशी लाए और तेरे राज्य के लिए उपयोगी और तेरी प्रशंसा के लिए सुंदर हो।

मेरे जीवन को मेरे शब्दों और कार्यों दोनों में तेरे आचरण और रवैये का जीवंत प्रदर्शन बना। जब मैं सड़क पर यात्रा करता हूँ तू मुझे यात्रा करने के लिए बुलाता हैं, मुझे दूसरों को अपने साथ शामिल होने के लिए बुलाने में प्रभावी बना। मेरा उदाहरण मेरे आसपास के लोगों के लिए नमक और ज्योति के समान हो। होने दे कि मैं तुझ से प्रेम करने के लिए प्रोत्साहन बन सकूँ।

मुझे आलौकिक प्रकाश दें ताकि मुझे सभी स्थितियों में ज्ञान और विवेक प्राप्त हो सके। मेरे हृदय को शुद्ध कर ताकि मैं शेष जीवन के कर्तव्यों के लिए लगातार तैयार रह सकूँ, चाहे कष्ट में या आराम में। मुझे न केवल इस जीवन में, बल्कि इससे भी अधिक अनंत काल में विशिष्टता के साथ सेवा करने के लिए तैयार कर, ताकि मैं तेरे मन में हमेशा के लिए खुशी ला सकूँ।

पवित्र फिर भी स्थायी; दूर फिर भी पास

हे मेरे महान और पवित्र प्रभु, तू पूरी तरह से अलग हैं - अपनी रचना से पूरी तरह से अलग - फिर भी तूने खुद को हमारे लिए दे दिया है। तू पूरी तरह से समझ से परे और पहुँच से परे है, फिर भी तूने खुद को हमें गहराई से अवगत कराया है। मसीह में, तूने अंतर को पाट दिया है और निकट आ गया है। पवित्र आत्मा में, तूने हमारे भीतर भी प्रवेश किया है, हम में निवास किया है और हमें बदल दिया है।

शब्द इस अवर्णनीय वरदान के आश्चर्य को व्यक्त नहीं कर सकते हैं। मैं इसे समझ नहीं सकता हूँ। मैं हतप्रभ और आश्चर्यचकित हूँ। मुझे आश्चर्य होता है। इस आश्चर्य को कभी न खोने में मेरी सहायता करें। मेरा ध्यान को निरंतर केंद्रित कर ताकि मैं तुझे जानने के आश्चर्यजनक भेद की खोज में लगा रह सकूँ। होने दे कि मैं जीवन की अपनी स्वभाविक धारणा से परे हो जाऊँ और तेरी आलोकिक युक्ति और गतिविधि को समझ सकूँ जिसके द्वारा तू अपने उद्देश्य के अनुसार सभी चीजों को तैयार करता है और अपने चरित्र और भव्यता को प्रकट करता है।

अपनी असीम योग्यता के प्रति दूसरों की जागरूकता और प्रशंसा बढ़ाने के लिए मुझे अपने साधन के रूप में उपयोग कर। मेरे माध्यम से एक ऐसे जीवन का प्रदर्शन कर जो एक बहाल की गई सृष्टि के लिए उपयुक्त है, तेरे उद्देश्यों की गहरी समझ मेरी दैनिक गतिविधियों को आकार दे। तेरे साथ गहराई से चलने, तेरे तरीकों के प्रति अधिक गहन अनुरूपता, तेरे उद्देश्यों की एक भव्य धारणा और तेरे राज्य में तेजी से नए जीवन के माध्यम से मुझे नई सृष्टि में जीने के लिए तैयार कर।

दिन 16

हे प्रभु, तेरे आत्मा से, मेरे अंदर और मेरे माध्यम से जीवित रह। तेरा श्वास मेरी प्रार्थना बने। मेरी स्तुति में निवास कर। मेरे शब्दों में बोल। मेरे विचारों को प्रेरित कर। मेरे हाथों को तेरा काम करने दे और मेरे पैरों को मुझे तेरे मार्ग पर चलने दे। तेरी इच्छाएँ और जुनून मेरे दिल की धड़कन बनें। मुझे पूरी तरह से अपने स्वरूप के अनुसार बना ताकि मैं पृथ्वी पर स्वर्ग की अभिव्यक्ति बन सकूँ।

न्याय के साथ दया

हे पवित्र परमेश्वर, तेरी धार्मिकता पूर्ण है। धन्यवाद कि तू इतना पवित्र है कि तेरी उपस्थिति में कोई भी गलती या विफलता बर्दाश्त नहीं की जा सकती है। तेरी सिद्धता पूर्ण है। लेकिन हे प्रेमी पिता, मैं तेरी दया के लिए और भी अधिक आभारी हूँ। तेरी बुद्धि और प्रेम में, तूने उन लोगों के साथ अपने एक गहरे संबंध को दर्शाया है, जो यीशु में तेरे उपहार का प्रत्युत्तर देंगे।

हम इसके योग्य नहीं हैं। हम ऐसा कभी नहीं कर सके। हमारे लिए पवित्रता और पूर्णता को संभव बनाने के लिए, तूने अपने आप को बलिदान करने का निर्णय लिया है। मुझे इस तरह से जीना सिखाएँ कि जो कार्य तूने मुझमें शुरू किया है वह स्पष्ट हो जाए। मुझे दिखा कि मैं अपने दैनिक विचारों, शब्दों और कार्यों से तेरे हृदय में खुशी कैसे लाऊँ। मुझे मसीह के स्वरूप के अनुरूप बनाने के कार्य को पूरा कर। दूसरों को भी उस अमूल्य साहसिक कार्य के लिए बुलाने के लिए मेरा उपयोग कर।

मुझे निर्देश दें कि मैं तेरे समान चरित्र वाले अन्य लोगों से कैसे संबंधित होऊँ। होने दे कि मैं न्यायपूर्ण और दयालु दोनों बन जाऊँ। मुझे दूसरों से त्यागपूर्ण प्रेम करने की अनुमति दें और इस प्रकार मैं तेरे आवश्यक स्वभाव को अपना सकूँ। मेरे माध्यम से प्रदर्शित कर कि तू अपने राज्य में जीवन कैसे जीना चाहता है। इस प्रेम का आश्चर्यजनक और चौंकाने वाला उदाहरण कई लोगों को तेरी ओर जीवन और प्रेम के लेखक के रूप में आकर्षित करे। शत्रु के सारे विरोध के बावजूद मुझे उस जीवन और प्रेम में बने रहने के लिए मजबूत कर।

दिन 17

हे प्रभु, मेरे विचारों को आकार दें और मुझे हर जगह अपनी कामों को देखने दे। मुझे तेरा प्रेम देखने दे, न केवल क्रूस और तेरी कलीसिया में, बल्कि मेरे आस-पास के संसार में भी, सुखद चीजों में या दर्दनाक और दु:खद चीजों में भी। मुझे तेरे अनुशासन और प्रशिक्षण को पहचानने में मदद कर कि वे क्या हैं, गहरे प्रेम की अभिव्यक्ति है, क्योंकि तू अपने लोगों को अनंत काल के लिए सुसज्जित और तैयार करता है।

होने दे कि सूर्य मुझे "धार्मिकता के सूर्य" की याद दिलाए जिसकी चमक उससे कहीं अधिक है। होने दे कि बारिश मुझे उन बौछारों की याद दिलाए जिनसे तू मेरी आत्मा को सींचता है। होने दे कि धाराएँ मुझे अनंतकाल के शहर में नदी की याद दिलाएँ। ऐसा होने दे कि इस सृष्टि में सुंदरता की अस्थायी छाया मेरी आत्मा को उस शाश्वत ठोस और अवर्णनीय रूप से पूर्ण नई रचना के लिए तरस जाए जिसे तू तैयार कर रहा है।

मुझे लगातार तुझे और अधिक अर्थात् पूरी तरह से पहचानने में सक्षम बना ताकि मैं तेरे विषय में और अधिकता से दूसरों को बता सकूँ। होने दे कि मैं तुझे और अधिक गहराई से समझ सकूँ ताकि मैं पूरी तरह से तेरे स्वरूप के अनुसार ढल जाऊँ। मुझे तेरे वार्तालावों और प्रस्तावों को लगातार समझने में सक्षम बना ताकि मैं अधिक ध्यान से उत्तर दे सकूँ।

त्रिएकत्व

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, तेरी अनंत एकता और संबंधपरक स्वभाव एक प्रकाशन है। पूर्ण नि:स्वार्थता इतनी मजबूत पहचान के साथ कैसे जुड़ सकती है? पूरकता इतनी पूर्ण कैसे हो सकती है कि संयोजन बन जाए? पहचान इतनी स्पष्ट और बहुआयामी कैसे हो सकती है? तू पूर्ण हैं, फिर भी तू अपनी सन्तान को अपने अस्तित्व, और परिवार में शामिल होने के लिए आमंत्रित करता है।

हे पिता, तू ही स्रोत, गंतव्य, लेखक के रूप में हर चीज़ पर शासन करता है। परमेश्वर के पुत्र, तू पिता को व्यक्त करता है, ताकि हम उसे समझ सकें। तू सृष्टि और उद्धार का मध्यस्थक है। तू सब कुछ अपने अधीन करने के लिए पिता की सेवा करता है, ताकि वह सब कुछ तेरे अधीन कर सके। हे पवित्र आत्मा, तू हममें वास करता है, हमें सिखा, और हमें मसीह के स्वरूप में ढाल। तू हमारी इच्छाओं को शब्द देता है और हमें अपने अस्तित्व में समाहित कर लेता है।

अद्भुत त्रिएकत्व, हमारा मार्गदर्शन कर, हमें आकार दे, और हमें अपने साथ शामिल कर। अपने देह के रूप में हमारे भीतर और हमारे माध्यम से अपने प्रेम को व्यक्त करने में प्रसन्न रह, अपने आवश्यक स्वभाव की पूर्ति के रूप में हमारे भीतर और हमारे माध्यम से एक दूसरे के लिए और अपनी देह से बाहर के लोगों के लिए दुनिया में तेरे सक्रिय मिलन के प्रमाण के रूप में अपने आप को व्यक्त कर। होने दे कि हमारी एकता तेरी श्रेष्ठता का एक शक्तिशाली प्रदर्शन बन जाए। तेरी सर्वोच्चता सारी प्रशंसा और सम्मान के योग्य है।

दिन 18

हे पिता, जितना अधिक मैं तुझे पूरी तरह से जानता हूँ, उतना ही अधिक मैं अपनी कमियाँ और असफलताएँ देखता हूँ। मैं देखता हूँ कि मेरे सबसे अच्छे प्रयास भी स्वार्थी उद्देश्यों से दूषित हैं। जितना अधिक मैं तेरी शक्ति को पहचानता हूँ, उतना ही अधिक मैं अपनी कमजोरी को स्वीकार करता हूँ। जितना अधिक मैं तेरी बुद्धिमत्ता को समझता हूँ, उतना ही अधिक मैं अपनी अत्यंत कमजोरी और असमर्थता को देखता हूँ।

इसलिए, मुझे शरीर में रहकर एक और क्षण बर्बाद न करने दें, बल्कि होने दे कि मैं में जी सकूँ। मुझे उमड़ने तक भर। मेरा इस्तेमाल कर ताकि मैं न केवल तेरे राज्य पर ध्यान केंद्रित कर सकूँ, बल्कि पवित्र आत्मा की शक्ति में ऐसा कर सकूँ। होने दे कि मैं अपने बारे में न सोचूँ या सेवा के आनंद से प्रेरित न होऊँ, बल्कि केवल तेरी पात्रता और तेरी उपस्थिति में आनंदित हों।

मेरी बुद्धि, ताकत, सहनशक्ति, विश्वास, आशा, प्रेम और वह सब कुछ बनें जो मुझे जीवन जीने के लिए चाहिए जो तेरे दिल में खुशी लाए। तेरे अलावा मैं कुछ भी नहीं कर सकता हूँ। तुझे में रहने से मेरे पास बहुत कुछ है, भले ही सभी दोस्त, भौतिक चीजें, या मानव निर्मित संगठन मुझे विफल कर दें, या भले ही सृष्टि मेरे चारों ओर जल रही हो। वास्तव में, सांसारिक चीजों के नुकसान में, मैं वास्तव में तेरी योग्यता और पर्याप्तता को समझता हूँ।

मुझे इस बात की ज़रा सी भी कल्पना नहीं है कि नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में रहने और सेवा करने के लिए क्या आवश्यक है। मुझे तुझ पर भरोसा है कि तू मुझे उस अद्भुत सौभाग्य के लिए उपयुक्त बनाएगा, चाहे इस दुनिया में कोई भी कीमत चुकानी पड़े। उस उद्देश्य के लिए यथासंभव अन्य लोगों को तैयार करने में सहायता करने के लिए मेरा भी उपयोग कर। तेरे सभी लोग तेरे तरीकों और उद्देश्यों को समझें ताकि हम मिलकर तेरे काम में सहयोग कर सकें।

सर्वव्यापकता

हे प्रभु, मैं वास्तव में यह नहीं समझ सकता कि तेरी उपस्थिति हर जगह लगातार कैसे रहती है। तू पूरी सृष्टि में निवास करता है, और तेरी देखरेख उप-परमाणु जटिलताओं के रहस्यों से लेकर अरबों आकाशगंगाओं के समन्वय तक स्पष्ट है। तेरी उपस्थिति की सार्वभौमिकता के बावजूद, तू समस्त सृष्टि के प्रति अपनी चिंता और भागीदारी में बेहद व्यक्तिगत हैं।

मैं इस अथाह अनंतता के लिए तेरी सराहना करता हूँ। मुझे दिखा कि मैं तेरे संप्रभु नियंत्रण और अतुलनीय भलाई की निश्चितता में पूर्ण त्याग के साथ कैसे बह सकता हूँ। होने दे कि मैं तेरे कामकाज के साथ पूरी तरह तालमेल बिठा सकूँ और किसी भी तरह से तुझ से विरोध या तुझ पर संदेह न करूँरें। मेरी प्रतिक्रियाएँ सदैव शुद्ध प्रेम और विश्वास की हों। मुझे दूसरों को तेरी महानता बताने की अनुमति दें ताकि वे तेरी अधिक सच्ची आराधना कर सकें।

दिन 19

हे पिता, मैं उत्सुकता से उस दिन का इंतजार कर रहा हूँ, जब कोई दुःख, दर्द या हानि नहीं होगी; जब कोई थकान हावी नहीं होती, कोई उत्साह नहीं असफल नहीं होगा, कोई पाप बाधा नहीं डालता; जब खुद पर या दूसरों पर कोई अविश्वास, डर या घमंड आपको दुःख नहीं पहुँचाता और हमारे बीच कोई बाधा पैदा नहीं करता; जब कोई भी विकर्षण मुझे तेरे द्वारा तैयार किए गए मार्ग से नहीं डिगाता।

अब मुझे इन अस्थायी चुनौतियों से ऊपर उठकर जीने की कृपा प्रदान कर। मुझे अपनी आंखों को तुझ पर टिकाकर एक पवित्र जीवन जीने दें। तेरा प्रेम मेरी सांत्वना, तेरी महिमा मेरा आनन्द, तेरे उद्देश्य मेरा मार्ग, और तेरी इच्छा मेरा विश्रामस्थान हो। प्रत्येक कठिनाई या असफलता केवल तुझे पूरी तरह से जानने की मेरी भूख को बढ़ाने और मेरी आशा को बढ़ाने के लिए काम करे, ताकि मैं और अधिक विश्वासयोग्यता में बना रहूँ।

सर्वज्ञता

हे प्रभु, तू सारी सृष्टि के देखे और अनदेखे हर विवरण को जानते हैं। तेरी जागरूकता निरंतर और पूर्ण है। तू हर कारण, हर प्रभाव, हर बातचीत, हर रिश्ते को पहचानता है। तू हर प्रतिक्रिया, हर संभावित भविष्य को पहले से ही देख लेता है। तू हर घटना और हर फैसले को व्यवस्थित करता है, चाहे वह तेरी इच्छा के प्रति सचेत समर्पण में लिया गया हो, तेरी इच्छा के विरोध में, या पूरी तरह से अनभिज्ञता में लिया गया हो। अपनी बुद्धि से तू अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सभी चीजें एक साथ काम करता है।

मुझे निर्देश दें ताकि मैं हमेशा जानबूझकर तेरी इच्छाओं के साथ सहयोग कर सकूँ और अपना रास्ता खोजने में अपना जीवन बर्बाद न करूँ। मेरे विचार तेरे विचारों की ओर आकर्षित हों। मुझे तेरी गतिविधि और इरादों को समझने की बुद्धि दें ताकि मैं प्रत्येक दिन के कार्यों का प्रबंधन कर सकूँ। मुझे अपने गहन विवेक और अचूक निर्णयों को दूसरों के साथ साझा करने की अनुमति दें ताकि वे तेरा और अधिक सम्मान कर सकें।

दिन 20

परमेश्वर जो दिल को देखता है, मुझे तब तक आराम न करने दे जब तक मेरा दिल तेरे सामने निर्दोष न हो जाए - न केवल कानूनी अर्थ में, बल्कि मेरे जीवन की दिन-प्रतिदिन की अभिव्यक्ति के रूप में। होने दे कि मैं आत्मा से जन्म लेने पर समझौता न करूँ; मुझे उससे भर जाने, उसके झुकावों पर ध्यान देने और उसमें चलने के लिए कोशिश करने में मदद कर।

होने दे कि कि यदि मैं भले कार्यों और सेवा में विश्वास के आज्ञाकारी जीवन के माध्यम से उस विश्वास का प्रदर्शन न करूँ, तो मुझे विश्वास जताने से संतुष्ट नहीं होना चाहिए। होने दे कि तुझे अपमानित करने के विचार से भयभीत होकर, तेरी

इच्छा जानने की चिंता, और तेरे खातिर खुद को नकारने की इच्छा के माध्यम से मेरी ईमानदारी का प्रदर्शन करें।

मेरे भीतर या बाहर की कोई भी चीज़ मुझे तुझे दुःखी करने, तेरी महिमा के प्रति अंधा होने, तेरी सन्तान को अपमानित करने, मुझे तेरे निर्देशों से विमुख करने या तेरे वायदों को भूलने का कारण न बने। मेरी सांसारिक गतिविधियों को मेरे आत्मिक जीवन को नुकसान पहुँपहुँचाने की अनुमति न दे या मेरी सांसारिक चिंताओं को मेरी आत्मिक चिंताओं पर हावी न होने दे।

किसी भी चीज़ को उस चीज़ पर हावी न होने दें जिसकी मुझे ज़रूरत है – जैसेतेरी उपस्थिति में रहना। इसके बजाय, मुझे एक ऐसा हृदय दे जो तेरे प्रति चौकस हो, तेरे मार्गदर्शन के प्रति संवेदनशील हो, तेरे सुधार के प्रति संवेदनशील हो, और तेरे निर्देश पर तुरंत प्रतिक्रिया दे। मुझे तुझ में बने रहने की कला सिखा, ताकि मैं दुनिया में तेरा साधन के रूप में रह सकूँ, लेकिन उसका नहीं।

मेरे हृदय को शुद्ध कर ताकि तू हर विचार और उद्देश्य में सर्वोच्च शासन करे। मेरी एकमात्र इच्छा बनकर मुझमें और मेरे माध्यम से महिमा प्राप्त कर। तुझे जानने के मेरे प्रयास को और अधिक गहराई से दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करने की अनुमति दें। परिणाम तेरे लिए अधिक महिमामय हो क्योंकि पापी तेरा अनुसरण करने लगते हैं और पवित्र जन अधिक ध्यान से तेरे अनुसरण करने के लिए आकर्षित होते हैं।

सर्वसामर्थी

हे प्रभु, तेरी सामर्थ्य की विशालता असीमित है, तेरी सामर्थ्य की विशालता गणना से परे है। तेरी असीम महानता वर्णन से परे है और तेरी परम महिमा समझ से परे है। तेरा अधिकार अवर्णनीय है और तेरा शासन अटल है। सर्वशक्तिमान परमेश्वर, जो कुछ भी अस्तित्व में है और होता है, वह तेरे सर्वोच्च नियंत्रण में है, और तू अपनी इच्छा के अनुसार सभी चीजों में काम करता है।

मैं पूरी तरह से इस ज्ञान में विश्राम कर सकता हूँ कि तू दया और प्रेम के साथ धार्मिक पूर्णता लाने में सक्षम और विश्वासयोग्य हैं। जब मुझे जो मुड़ गया है उसे सीधा करने की, जो बिगड़ गया है, उसे बहाल करने की कोई उम्मीद नहीं दिखती, तो मुझे पता है कि तू सभी चीजों को नया बना सकता है।

मुझे समझ नहीं आता कि तू कमजोर लोगों के बीच काम करके खुद को सीमित क्यों रखता है, लेकिन तू बुद्धिमत्ता से संयम बरतता है और इस तरह कमजोरी के बावजूद भी काम करने की अपनी अद्भुत क्षमता का प्रदर्शन करता है। कमजोरी के माध्यम से तेरी सामर्थ्य दिखाने के तेरे गूढ़ तरीके के प्रति मुझ में आत्मविश्वास विकसित कर। मुझे तेरी तरह सौम्य रहना सिखा, ताकि जो संघर्ष कर रहे हैं, मैं उनके साथ धैर्यवान बन सकूँ। मुझे निर्बलों के प्रति नम्रता और विनम्रता तथा जरूरतमंदों के प्रति करुणा दिखाने का निर्देश दें। अपनी कृपा और दया से मेरे साथ इस तरह व्यवहार करने के लिए धन्यवाद। दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करने में मेरी सहायता कर जैसा कि तूने मेरे साथ किया है।

दिन 21

हे प्रभु, मैं अपने दुखों का प्रतिफल प्राप्त कर सकूँ। अथाह गिनती में लोग तेरे शासनकाल में स्वेच्छा और खुशी से समर्पण करेंगे। तेरे शासन को सभी लोग स्वीकार करें और तेरी इच्छा पूरी पृथ्वी पर आगे बढ़े। इस कार्य में अपनी इच्छानुसार मेरा उपयोग कर। चाहे मेरी सफलता से या कष्ट से, चाहे मेरे स्वास्थ्य से या मेरी बीमारी और दर्द से, चाहे मेरे जीवन से या मृत्यु से, महिमामाय हो। मुझे दिखा कि इस अंत तक कैसे मेहनत करनी है, और मुझे ऐसा करने के लिए दृढ़ कर। मुझे उस भूमिका को निभाने दें, जिसमें तू सभी चीजों को अपने प्रेमपूर्ण अधिकार और शक्ति के अधीन लाने का इरादा रखता है।

चूँकि मैं पूरी तरह से तेरा हूँ, इसलिए मुझ पर जो भी परिस्थितियाँ आएँ मुझे समान खुशी के साथ यह जानते हुए स्वीकार करने दें, कि तू बलिदान में भी उतना ही महिमामय हो सकता है जितना विजय में। मुझे यह समझने की बुद्धि दे कि तेरे हाथ से क्या है और दुश्मन के हमलों से क्या होता है, ताकि मैं किसी भी बाधा या बोझ को स्वीकार न करूँ जिसके द्वारा वह मुझे रोकना चाहे। मेरी इच्छाओं को केवल तुझ पर ही पर केंद्रित करके मेरी आत्मा को निराशा, कड़वाहट या भय से शुद्ध कर। तू मुझे अपने भले वरदानों से मुझे संतुष्टि कर।

मुझे क्या करना है और क्या नहीं करना दोनों बता, ताकि मैं अपनी पूरी क्षमता लगा सकूँ जिससे कि तू मुझे वह दें, जो योग्य है। मुझे अपनी बुलाहट और उपस्थिति में पूर्णता प्रदान कर। तेरी सेवा करने के सौभाग्य के लिए धन्यवाद, लेकिन तेरी सन्तान होने के नाते और इस दुनिया में तेरे साथ काम करने के सौभाग्य के लिए और भी अधिक धन्यवाद। मुझे तेरी सेवा अच्छी तरह से करने के लिए तैयार कर, न केवल इस दुनिया में बल्कि अगली दुनिया में भी, जहाँ तेरी इच्छा पूरी सृष्टि की पूरी तरह से बहाल की गई पूर्णता में व्यक्त की जाती है। अब मुझमें अपनी कृपा की गवाही और प्रतिफल के रूप में उस स्थिति की एक छाया या एक पहलू बना।

अनंत काल

हे अनंत काल के परमेश्वर, मैं इस तथ्य की थाह नहीं ले सकता कि तू समय से परे हैं, आदि से अंत को देखने में सक्षम हैं। तू महान मैं हूँ है, जो कि अब शाश्वत में रह रहा हूँ। तेरी जीत पहले ही हो चुकी है। तेरा उद्देश्य पहले ही पूरा हो चुका है। तूने न केवल "पुस्तक का अंत पढ़ा है," बल्कि आपने तूने ही इसे लिखा भी है।

मुझे अनंत काल की रोशनी में विश्वास के साथ जीना सिखा। मुझे मेरी नज़रें अनंतकाल की वस्तुओं पर और मेरी आशा उन पर टिकाए रहने में मेरी सहायता कर। मुझे अपने हृदय को तेरे निरंतर स्तुति के लिए तैयार करना सिखाएँ। मुझे अपने वादों की वास्तविकता में चलने के लिए मार्गदर्शन कर जो अभी तक मेरी सांसारिक आँखों से दिखाई नहीं दे रहे हैं। मुझे उन लोगों तक शाश्वत सत्य संप्रेषित करने की क्षमता प्रदान कर जो केवल अस्थायी वास्तविकताओं को देख रहे हैं। मुझे वर्तमान में फंसे लोगों के लिए आशा और विश्वास के वाहक के रूप में उपयोग कर।

दिन 22

हे दया के स्वामी, मुझे दयालु बना। मुझे, तेरी तरह, निराश और वंचितों की सेवा करने में सहायता कर। मुझे बेघर, उदास, मानसिक रूप से बीमार, पाप-नियंत्रित, निराश, दुखी और असहाय लोगों को आशीष दें।

मेरे विचारों को अपने प्रेम को प्रदर्शित करने, अपनी दयालुता दिखाने और सेवा पाने के बजाय सेवा करने के तरीकों से भर। बहुत से लोग तेरी ओर आकर्षित हों और परिणामस्वरूप तेरे नाम की महिमा करें।

भलाई

हे प्रिय स्वर्गीय पिता, मैं तेरी भलाई, दयालुता, दया, करुणा और नम्रता के लिए पूरी तरह से तेरा आभारी हूँ। मैं इन आशीषों के लिए अयोग्य हूँ और हमेशा रहूँगा। मेरा एकमात्र गुण यह है कि तूने मुझसे प्रेम किया है। मैं इस तथ्य को समझ नहीं सकता, लेकिन मैं इसके लिए हमेशा आभारी रहूँगा।

मुझे दिखा कि मैं तेरा अनुकरण कैसे करूँ जैसे एक प्यारा बच्चा अपने प्यारे माता-पिता का अनुकरण करता है। मुझे तेरे चरित्र का प्रदर्शन करने में तेरे नमूने का अनुसरण करना सिखा। मुझे मसीह के स्वरूप में बना। मेरे हृदय को तेरे साथ अनंत काल तक बने रहने के लिए रूपांतरित कर। होने दे कि जिन लोगों से मैं प्रेम करता हूँ और जिनकी सेवा करता हूँ, उनकी योग्यता की परवाह किए बिना, मुझे दूसरों को आशीष देने के योग्य बना जब तू मुझे आशीष करता है। क्योंकि मैं सीमित हूँ, मुझे दिखा कि तू अपना प्रेम दिखाने में मुझे किस पर केंद्रित करना चाहता है। तूने मेरे करने के लिए जो भले कार्य तैयार किए हैं, उनमें से कोई भी मुझसे चूकने न दें।

दिन 23

हे प्रभु, मैं तेरे आत्मा से विनती करता हूँ कि वह मेरे चरित्र को लगातार परिष्कृत और शुद्ध करता रहे। मुझे नम्रता का वस्त्र पहना। हर-पल मेरा मार्ग स्पष्ट कर। तेरे प्रति मेरा उत्साह और भक्ति बढ़ा। मुझे मेरे सांसारिक प्रवास की संक्षिप्तता का एहसास करा और मेरे कदमों को व्यवस्थित कर। मुझे देरी और अनिर्णय की मूर्खता से छुटकारा दिला। मेरे द्वारा अपनी महिमा लें।

स्रोत, निर्माता, लेखक

हे प्रभु, तू प्रथम कारण है। अपने वचन से, तूने वह सब कुछ बनाया जो अस्तित्व में है। तू ही जीवन और उद्धार का रचयिता है। तूने ही सभी चीज़ें रची हैं। पाप के माध्यम से, हमने तेरी संपूर्ण रचना को विकृत, तोड़ा और भ्रष्ट कर दिया है। धन्यवाद कि तू एक नई रचना में सभी चीज़ों को बहाल करेगा। हम उस दिन का बेसब्री से इंतजार करते हैं जब तेरी आदर्श युक्ति नई की जाएगी।

हे प्रभु, कृपया जारी रख और उस भले काम को पूरा करें जो तूने हमें नई सृष्टि में सेवा करने और रहने और उपासना करने के लिए तैयार करने के लिए शुरू किया है। हम तेरी उपस्थिति में जीए गए उस जीवंत जीवन की पूर्णता की कल्पना नहीं कर सकते जब हम अंततः तुझे तेरी शानदार महिमा में स्पष्ट रूप से देखेंगे और तेरी अतुलनीय महिमा का अनुभव करेंगे।

हम तेरी आराधना करते हैं। यह आश्चर्य की बात है कि तू हमें तैयार करने, शुद्ध करने, प्रशिक्षित करने, सुसज्जित करने और परीक्षण करने के लिए पाप के कारण उत्पन्न विकृतियों, टूट और भ्रष्टाचार का भी उपयोग करता है। तेरा ज्ञान गूढ़ है। तू मृत्यु से जीवन, हार से विजय, कमजोरी से शक्ति और विनम्रता से महिमा को ले आता है।

हमें तुझ पर ही पर भरोसा है। हम तेरे ही हाथों की मिट्टी हैं। हमें ढाल। हमारा उपयोग कर। धन्यवाद!

दिन24

हे प्रभु, मेरी अत्यंत अधूरी आराधना के लिए मुझे क्षमा कर। मेरे हृदय को स्वर्गदूतों द्वारा की जाने वाली आराधना के साथ तालमेल स्थापित करने के लिए तैयार कर, जो तुझे आमने-सामने देखते रहते हैं। मेरे अधिकार की अनुचित भावना को क्षमा कर। मुझे तेरे द्वारा पहले से प्रदान किए गए अद्भुत और अनुपयुक्त लाभों और मेरे लिए तैयार किए जा रहे अकल्पनीय आनंद को पहचानने दें, ताकि मैं तेरी उदारता के लिए कृतज्ञता में आनंदित हो सकूँ।

मेरे मन को सांसारिक गतिविधियों या चिंताओं के द्वारा ध्यान भटकने से बचा। मेरे पूरे अस्तित्व को तुझ पर और तेरे राज्य पर केंद्रित ध्यान से भर दें, ताकि मेरा जीवन, आराधना और आत्मा तेरे सार से भर जाए। मेरा खाना-पीना तेरे वचन और तेरी आवाज बनें। मेरा विश्वास मेरी शांति बने क्योंकि मेरी आत्मा तेरी उपस्थिति में पूरी तरह से जुड़ गई है।

खुले मन, हाथ, घर, स्वर्ग

हे प्रभु, तू ही हैं, जो खोलता है और कोई बंद नहीं कर सकता है। कृपया अपने लोगों के मनों को उस चीज़ से प्रेम करने के लिए खोल जिसे तू पसंद करता है, जिससे तू नफरत करता है उससे नफरत करे और जो तू चाहता है, उसकी इच्छा करे। तेरा प्रेम पाने के लिए उन लोगों के दिल खोल जो तुझ से प्रेम नहीं करते हैं। उन्हें अपनी अधीनता, कृतज्ञता और भक्ति के साथ तेरी पात्रता का जवाब देने का विश्वास दें।

तू तेरी आशीष, अनुग्रह, दया और प्रेम की अभिव्यक्ति के रूप में सेवा करने के लिए तेरे लोगों के हाथ खोल दे। जैसे हमें आशीष मिली है, ठीक वैसे ही होने दे कि हम दूसरों के लिए आशीष बनें। एक दूसरे के प्रति हमारी उदारता और करुणा एकता का प्रमाण बनें जो तेरे नाम को महिमा लाती है। होने दे कि पीड़ितों और जरूरतमंदों के लिए हमारी चिंता और देखभाल को तेरी कृपा का प्रदर्शन

बन जाए, जिससे लोग तेरे नाम को महिमा लाते हैं। होने दे कि सेवा के हमारे बलिदान तेरे स्वयं के बलिदान को प्रतिबिंबित करें और इस प्रकार लोगों को तेरी ओर आकर्षित करें।

ऐसा होने दे कि हमारे घर निरंतर आराधना स्थलों और तेरी कृपा के प्रतिफलों के रूप में खुले रहें। हमें सिखा कि आतिथ्य का ऐसा जीवन कैसे जिएँ, ताकि हम उद्धार पाने वालों की आत्माओं को राहत, संगति और सहायता दे सकें। जब वे उद्धार पाए और हमारे भीतर तेरे जीवन द्वारा संभव बनाए गए रिश्तों और संगति का अनुभव करें तो उनकी आत्माएँ तरोताजा हो जाएँ और तेरी और अधिक इच्छा करने लगें।

पृथ्वी पर अपने परिवार को बहुतायात के जीवन का लाभ देने के लिए स्वर्ग खोल दे। होने दे कि हम तेरी आशीष के माध्यम बनें। पृथ्वी पर अजनबियों के रूप में, अपने राज्य की संस्कृति को इस टूटी हुई दुनिया में एक अजीब और अद्‌भुत जिज्ञासा के रूप में अपने लोगों में अनुकरण करने दे। हमारी नजरें ऊपर आसमान पर टिकाए रखने में हमारी मदद कर ताकि हम हमेशा तेरी इच्छा और तरीकों के प्रति उत्तरदायी रहें। हमें तेरी दिशा और इरादे के प्रति संवेदनशील बना।

दिन 25

महिमामय उद्धारकर्ता, तू ही मेरा जीवन, आशा, खुशी, शांति, खजाना, महिमा और अंत है। मुझे अपने चरित्र, इच्छा और तरीकों के अनुरूप बना, ताकि मैं अपने आस-पास के लोगों को आशीष देने के लिए तेरे हाथों का एक औजार बन सकूँ। मुझे जहाँ तू चाहता है वहीं भेज, मेरे कदमों और कार्यों का मार्गदर्शन कर ताकि मैं दूसरों की सेवा करने के लिए आशीष का साधन बन सकूँ। मेरे प्रेम का आनंद।

मुझे स्वर्गीय चमक को इतनी शुद्धता से प्रतिबिंबित करने दे कि मैं तेरी उपस्थिति से जल जाऊँ, अंधेरे में प्रकाश डालूँ। क्या मैं तेरी सन्तान में अधिक समर्पण को प्रेरित कर सकता हूँ और उन लोगों में तेरे जानने की भूख पैदा कर सकता हूँ, जिन्होंने अभी तक तेरा अनुसरण नहीं किया है। मुझे एक नमूना बना जो तेरे नाम का सम्मान करता है। मुझे तेरी छवि में फिर से बनाने का काम आगे बढ़ा।

पवित्र इंद्रियाँ

हे प्रभु, मुझे राज्य की वास्तविकताओं को समझने के लिए नई इंद्रियां दे। तूने मुझे नया जीवन दिया है। होने दे कि मैं हर दिन पूरी व्यस्तता के साथ उस जीवन को जीऊँ। होने दे कि मैं बहुतायात के जीवन की परिपूर्णता का अनुभव करने के लिए नए आकाश और नई पृथ्वी के प्रकट होने तक इंतजार न करूँ।

मुझे सुनने के लिए कान दे, जब मैं हर दिन यात्रा करता हूँ, तो तेरी आवाज मेरे तरीकों का मार्गदर्शन करती है और मेरे दिल से बोलती है। मुझे अपनी चारों ओर की गतिविधियों को देखने के लिए आँखें दे, जिन जरूरतों को तू पूरा करना चाहता है, और जिन खाली स्थानों को तू मेरे लिए भरना चाहते हैं, उन्हें देखने के लिए आँखें दे, ताकि तेरी इच्छा पृथ्वी पर वैसे ही पूरी हो सके जैसे वह स्वर्ग में होती

है। मुझे एक ऐसी नाक दे जो तेरे काम की सुगंध और दुनिया की भावना की दुर्गंध दोनों को पहचान सके, ताकि मैं हमेशा तेरे साथ रह सकूँ और जहाँ भी जाऊँ तेरी मीठी खुशबू ले जा सकूँ। मुझे एक ऐसी जीभ दीजिए जो तेरे हर शब्द को ग्रहण करना चाहती हो और मैं दुश्मन के भ्रामक संचार से दूर रह सकूं। मुझे एक ऐसा शरीर दे जो तेरी खोज के आवेग को महसूस करता है और तेरे स्पर्श के महत्व को पहचानता है, जब तू बाकी सृष्टि को प्रभावित करने के लिए अपने कलीसिया के साथ जुड़ता है।

सहयोग के ये सभी स्रोत मुझे तेरी इच्छा को तत्परता से समझने में मदद करें। वे तेरे स्वरूप और इच्छा के अनुसार लगातार मेरी आत्मा और आत्मा को आकार देते रहें। अनुदान दें कि मैं अपनी शारीरिक इंद्रियों के बजाय विश्वास से अधिक से अधिक जी सकूँ। साथ ही, हमारे अंतिम छुटकारे के लिए मेरी आशा को मजबूत करने के लिए मेरी आत्मिक इंद्रियों का उपयोग कर। मुझे अस्थायी मुद्दों के लिए कम चिंताओं के बजाय तेरे प्रेम और चरित्र द्वारा उपभोग किए जाने वाले जीवन के लिए पूरी तरह से तैयार होने दें। मेरे दिल, आत्मा, दिमाग और ताकत की आज्ञाकारिता पूरी तरह से तेरे प्रति समर्पित जीवन में व्यक्त हो।

अनुदान दें कि मेरा अस्तित्व तेरे लिए महिमा और तेरे हृदय को प्रसन्न कर सके।

दिन 26

हे प्रभु, तेरे साथ मेरा चलना सर्वव्यापी हो, इतना व्यापक हो कि अन्य सभी रुचियाँ केवल धुंधली छाया के रूप में दिखाई दें। मेरा ध्यान तेरे सरोकार की ओर आकर्षित रहे और उसी पर बना बना रहे। मुझे आत्म-भ्रम से बचा। मुझे धार्मिक नहीं बल्कि अपरिवर्तित बना दे। मैं मात्र एक अयोग्य व्यक्ति बनकर न रह जाऊँ, बल्कि अपने उद्देश्य को आगे बढ़ाने में लगा हुए एक सैनिक बनूँ।

मुझे एक सदैव नए होने वाला हृदय दे, जो सदैव तेरे जुनून को समझना सीखता रहे। तुम पर मेरी निर्भरता अटूट हो और मेरा प्रेम पूर्ण हो। भले ही मेरा शरीर और अधिक कमजोर हो जाए, मेरी आंतरिक सामर्थ्य लगातार बढ़ती रहे। हर असफलता, दर्द, दुःख और निराशा ही तेरी परिपूर्णता को और अधिक व्यापक रूप से अनुभव करने की मेरी इच्छा को बढ़ाने में सहायक हो।

चार रिश्तों का छुटकारा: परमेश्वर, अन्य, स्वयं, सृष्टि

हे प्रिय प्रभु, तेरा धन्यवाद कि तेरी मुक्ति अतीत, वर्तमान और भविष्य है। तूने हमें छुड़ाया है, तू हमें छुड़ा रहा है, और तू ही अंततः और पूरी तरह से हमें छुड़ाएगा। धन्यवाद कि तू तेरी सारी सृष्टि का उद्धार कर रहा है, और तू इसे अपनी महिमा और महानता की अभिव्यक्ति के रूप में बहाल और स्थापित कर रहा है।

धन्यवाद कि तेरे छुटकारे के भाग में तू हमारे रिश्तों के सभी पहलुओं को बहाल कर रहा है; स्वयं के साथ, अन्य लोगों के साथ, अपने आप के साथ, और शेष सृष्टि के साथ।

- तूने हमें अपने साथ सही किया है, हमारे पापों को हमारे विरुद्ध नहीं गिना, बल्कि हमें मसीह की धार्मिकता का श्रेय दिया, और हमें अपनी प्रिय सन्तान बना लिया है।
- तूने हमारे और अन्य लोगों के बीच विभाजन की दीवारों को तोड़ दिया है।
- तूने हमें मसीह में एक नई पहचान दी है, ताकि हम दूसरों के साथ-साथ खुद से भी प्रेम कर सकें।
- तूने हमें समस्त सृजन का प्रबंधन करने के लिए नए सिरे से आज्ञा दी है।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि हर दिन हम तेरे द्वारा किए गए इन अद्भुत प्रावधानों से अपनी मान्यता और व्यावहारिक जीवन में और भी आगे बढ़ सकें।

- होने दे कि हम साहसपूर्वक तेरे सामने आएँ और हमेशा तेरी उपस्थिति में और तेरे निर्देशन में रहें।
- होने दे कि हम एक दूसरे की सेवा करें और एक दूसरे के लिए बलिदान दें जैसा तूने हमारे लिए किया।
- होने दे कि हम तेरे हृदय में हमारे स्थान के संतुष्ट आश्वासन में।
- होने दे कि हम समस्त सृष्टि के प्रति तेरी सामर्थ्य और बुद्धिमत्ता की गवाही देने और उसके अनुसार उसका प्रबंधन करने के रे सरोकार से भरे इरादे को लगातार ध्यान में रखें।

हम उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जब अनंत काल तक तेरी उपस्थिति में सब कुछ पूरी तरह से और अंततः पूर्ण हो जाएगा। उस दिन की आशा हमें अंतरिम रूप से मजबूत कर सकती है और उन दिनों में हमारे प्रयासों का मार्गदर्शन कर सकती है, जो तू हमें इस धरती पर देता है।

दिन 27

समाज के विभिन्न स्तर

पवित्र त्रिएकता, हम मांगते हैं कि जैसे तू अपने भीतर सारी एकता और पारस्परिक समर्पण और प्रेम से संबंधित है, वैसे ही तू व्यक्तिगत् और सामाजिक रूप से हमारे साथ रिश्ते के उसी आदर्श बना।

- ऐसा होने दे कि हमारे परिवार तेरे प्रेम का आदर्श बनें और जीवन के हर पहलू में तेरे पोषण की गवाही दें।
- हमारे समुदाय तेरी एक दूसरे पर निर्भर होने की चिंता और सहयोग का एक उदाहरण बनें।
- हमारे शहर और कस्बे नई सृष्टि में परमेश्वर के नगर का पूर्वानुभव प्रदान कर, जो तुझ पर केंद्रित है और तेरे द्वारा प्रकाशित है।

- हमारे राष्ट्र तेरी महिमा का प्रकाश पूरी एकता के साथ प्रदर्शित करें, क्योंकि हमारा जीवन तेरे हृदय की धड़कन पर टिका हुआ है।
- हमारा सांसारिक समाज तेरे ज्ञान के प्रसार के लिए एक मंच बने, क्योंकि हम संयुक्त रूप से तेरी रचना के साथ संबंध स्थापित करने में तेरे ज्ञान की सराहना करते हैं।

समाज में पाँच निम्न स्तर वाले स्थान

हे प्रभु, तू कई तरीकों से मनुष्यों के मामलों को आकार देता है। तूने व्यवस्था दी है, जिससे हर जगह के समाज व्यवहार के साझा आकार से प्रभावित होते हैं। मैं तेरी निम्नलिखित पद्धतियों में साझा मूल्यों और युक्तियों के विभिन्न पहलुओं में राज्य सिद्धांतों को शामिल करके मनुष्यों के मामलों पर तेरे प्रभाव की मुहर लगाने के लिए विनती करता हूँ।

सरकार: जिन लोगों को तूने तैयार किया है, उन्हें नेतृत्व के पदों पर बिठा। उन्हें स्वर्गीय समझ दे। उन्हें उनके सामने आने वाली जिम्मेदारियों के प्रति उनकी अपर्याप्तता के बारे में गहन जागरूकता प्रदान कर, और फिर उन्हें मार्गदर्शन के लिए अपनी ओर फेर दे। उन्हें वंचितों के लिए सर्वोत्तम बनाए। उनके विचारों और भावनाओं और प्राथमिकताओं को अपने अनुरूप आकार दें। समाज को प्रभावित करने की क्षमता, और उन्हें उन मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित करन जो लोगों को तेरे रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करेंगे।

व्यवसाय: व्यवसाय, व्यापार और वित्तीय क्षेत्र को अपनी रूप-रेखा की अभिव्यक्ति बनने दें ताकि देने को प्राप्त करने की तुलना में अधिक धन्य माना जा सके। होने दे कि वित्तीय पद्धतियों और मानक ईमानदारी से भरे हों और सभी के लिए व्यावहारिक जरूरतों के वितरण के लिए आशीष के रूप में उपयोग किए जाएँ। समृद्धि लोगों को तेरी दयालुता और प्रावधान के लिए तेरे सम्मान और धन्यवाद करने के लिए प्रेरित करे, न कि घमण्ड की ओर ले जाए।

शिक्षा: ऐसा होने दे कि युवाओं को शिक्षित करने के व्यापक महत्वपूर्ण कार्य के लिए घर और बड़े स्तर पर परिवार प्राथमिक स्थान हो जाएँ। होने दे कि उन्हें बड़े प्रेम और देखभाल और मूल्य के साथ ऐसा करने दे जो कार्य की गंभीरता और प्रभाव को पहचानते हैं। स्कूलों या अन्य संस्थानों में शिक्षकों के रूप में सेवा करने वालों को तेरे द्वारा मार्गदर्शन और मजबूत किया जाना चाहिए, क्योंकि वे उन लोगों का मार्गदर्शन करने में निवेश करते हैं, जिन्हें तू उनकी देखरेख में रखता है। होने दे कि सारी शिक्षा लोगों को महान शिक्षक के रूप में तेरी ओर इंगित करे।

वार्तालाप: सोच और विचारों के आदान-प्रदान को इस तरह आकार दें कि लोग तेरी इच्छा और वर्तमान में मौजूद मामलों की स्थिति के बीच अंतराल पर सवाल उठाना शुरू कर दें। वार्तालाप के विभिन्न माध्यमों पर नियंत्रण रखने वाले लोगों को समाज पर प्रभाव डालने के लिए जिम्मेदारी की भावना दें, और उन्हें उन मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित कर जो लोगों को तेरे रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करेंगे। उन लोगों पर प्रभाव डाल जो तुझे जानते हैं, और उन्हें यह जानकारी दें कि तेरी महिमा कैसे करें और लोगों को अपनी ओर कैसे आकर्षित करें।

धर्म: लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए उन दोनों का उपयोग कर जो तेरे नाम का दावा करते हैं और जो अन्य निष्ठाओं का दावा करते हैं। जो लोग स्वयं को तेरी संतान कहते हैं, वे तेरी महिमा या चरित्र पर संदेह करने का कोई कारण न दें। वे जहाँ भी हों, निजी और सार्वजनिक रूप से, व्यक्तिगत और सामाजिक रूप से, उन्हें तेरी कृपा, प्रेम और अच्छाई की अभिव्यक्ति बना। अन्य धार्मिक प्रणालियों का झूठ, दिखावा और विकृतियाँ सभी के सामने स्पष्ट हों। दुश्मन को उन पद्धतियों में फंसे लोगों को अंधा करने से रोक। उन्हें अपनी दुर्दशा को पहचानने और तेरे पास अपने बचाव के लिए आने दे। अपने लोगों को बचाने के लिए उनका मार्गदर्शन कर।

मनुष्यों के मामलों में तेरे निरंतर सरोकार और संलग्नता के लिए धन्यवाद। सब मनुष्यों को अपनी ओर खींच, जिससे कि सारी पृथ्वी पर तू आदर के योग्य ठहरे।

दिन 28

आशी(ष)मय प्रार्थना

हे प्रिय पिता, तेरे उद्देश्य लोगों के लाभ के लिए है, जिससे कि वे तेरी रचना और युक्ति की सारी अच्छाइयों का अनुभव करके फल-फूल सकें। हम उनके लिए जीवन के हर पहलू के लिए प्रार्थना करते हैं।

देह: ऐसा होने दे कि उनके शरीर मजबूत और अच्छे स्वास्थ्य में बने रहे जिससे कि वे जोश और सामर्थ्य के साथ तेरी सेवा कर सकें, जिसके तू योग्य है। होने दे कि उनकी भलाई तेरी दयालुता के लिए प्रशंसा और कृतज्ञता का स्रोत बने।

मजदूरी: उन्हें ऐसे कार्य दें जिनके लिए तूने उन्हें बनाया है। होने दे कि जो काम तू उनके सामने रखता है, उनमें वे संतुष्टि, खुशी और प्रभावीपन को खोज पाएँ। उन्हें दिखा कि वे कैसे काम करते हैं, जिससे कि तुझे सम्मान मिले।

अर्थशास्त्र: उनकी ज़रूरतों को प्रचुर मात्रा में प्रदान कर जिससे वे जरूरतमंदों को उदारतापूर्वक देने में सक्षम होंगे। होने दे कि वे देने की खुशी का अनुभव करें। ऐसा होने दे कि उनके जीवन पर तेरी वित्तीय आशीष तेरी भलाई की प्रशंसा और स्तुति का कारण बने।

(भा)वनाएँ: होने दे कि तू जो महसूस करता है, वे भी उसे महसूस करें। उनके मनों को अपने मन से मिला। उन्हें तुझ में आनंदित रहने और तेरे हृदय में खुशी लाने का कारण बना। जब तेरी इच्छा निरस्त हो जाए तो उनके मन को ठेस लगने दे। उन्हें सभी चीजों के प्रति तेरे स्वभाव को साझा करने का उज्ज्वल अनुभव दे।

सामाजिक: उनके रिश्तों में किसी भी तरह की दरार को सुधार दे। अन्य लोगों के साथ उनके संबंध दुःख के बजाय जीवन प्रदान करें। होने दे कि उनके सामाजिक संपक को दूसरों को तेरी ओर आकर्षित करें और उन्हें और अधिक गहराई से तुझे जानने और प्रेम करने के लिए प्रोत्साहित कर।

आत्मिक: उन्हें ऐसा जीवन प्रदान करें जो तेरे आत्मा द्वारा निर्देशित और नियंत्रित

हो। ऐसा होने दे कि उनके आत्मिक जीवन की ताकत इस हद तक पर्याप्त हो कि वे जीवन के हर पहलू में विजेता हों। ऐसा होने दे कि उनकी आत्मिक समृद्धि दूसरों तक पहुँचे, उन्हें तेरी ओर बढ़ा। उन्हें तेरे साथ अनंत काल के लिए तैयार कर।

परमेश्वर को जानना: स्वभाव, उद्देश्य, इच्छा, तरीके, विचार, हृदय, इच्छाएँ

मैं तुझे जानना चाहता हूँ। तेरे बिना जीवन खाली और अर्थहीन है। तेरी उपस्थिति में जीवन पूर्ण और संतुष्टिदायक है।

तेरे स्वभाव को समझने में मेरी सहायता कर। मैं अनंत की थाह नहीं पा सकता, इसलिए मुझे इस पर आश्चर्य करने में मदद कर। मुझे तेरी पूर्णता पर आश्चर्यचकित होने दे। मुझे तेरी सभी चीजों के माप के रूप में देखने में मदद कर, वह मानक जिसके द्वारा सभी चीजों को आंका जाए और उनका अर्थ खोजा जाए।

तेरे उद्देश्यों को समझने में मेरी सहायता कर। मैं तेरी योग्यता की कल्पना नहीं कर सकता, इसलिए मुझे उन तरीकों की भीड़ को समझने का मौका दें जिनके द्वारा तू इसे ज्ञात करता है। जैसे ही तू अपनी महिमा प्रकट करता है, मुझे तेरे पथ का पता लगाने दें, ताकि मैं इसे अधिक प्रभावी ढंग से प्रतिबिंबित और घोषित कर सकूँ।

मुझे मेरे सामने आने वाली स्थितियों और उन अवस्थाओं में जहाँ तूने मुझे रखा है, मेरे लिए तेरी इच्छा को समझने में सक्षम बना। मेरी इच्छाओं को आकार दें ताकि वे तेरे अनुरूप हों। होने दे कि मैं उन तरीकों से जवाब दे सकूँ, जो तेरे इरादों के अनुरूप हों, और हमेशा यह देखने के लिए प्रयासरत रहूँ कि तेरी इच्छा पृथ्वी पर वैसे ही पूरी हो जाए, जैसे कि यह स्वर्ग में होती है।

मुझे अपनी विधियाँ सिखा, ताकि मैं लगातार तेरे चरित्र को प्रतिबिंबित कर सकूँ और उचित तरीकों से तेरे लक्ष्यों को प्राप्त कर सकूँ। होने दे कि तुमसे नजरें हटाने के कारण मैं रास्ते में कोई भी मोड़ से न चूकूँ। होने दे कि मैं यह समझ सकूँ कि तू मेरे आसपास काम कर रहा है, भले ही वह अप्रत्याशित तरीके से ही क्यों न हो।

अपने विचार मेरे सामने प्रकट कर। मैं न केवल तेरी गतिविधि देखना चाहता हूँ, बल्कि तेरी सोच को समझना चाहता हूँ, ताकि मैं तुझे अधिक गहराई से सराहना कर सकूँ। मुझे अपनी सोच से अवगत कराकर मेरी अपनी सोच को गहरा कर। होने दे कि जैसे ही मैं तेरे विचारों का पता लगाना शुरू, मैं तेरे काम का अनुमान लगाना शुरू कर दूँ।

मुझे सृष्टि के माध्यम से और विशेष रूप से मानव जाति के माध्यम से तेरी महिमा को महसूस करने, प्रतिबिंबित करने और घोषित करने के लिए तेरे जुनून की गहराई में उतरने का कारण बना दे। होने दे कि मेरे हृदय को तेरे द्वारा आकार दिया जाए। होने दे कि मेरी भावनाओं को तेरे द्वारा तैयार की जाएँ, ताकि मैं तेरी तरह प्रतिक्रिया दे सकूँ।

मुझे अपनी इच्छाओं की कल्पना करने में सक्षम बना, ताकि मैं उस चीज़ से मोहित हो जाऊँ जो तुझे प्रसन्न करती है। होने दे कि मुझे तेरे इरादों से कमतर चीजों का

पीछा न करूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरी इच्छाएँ पूरी तरह से तेरे द्वारा निर्धारित हों, क्योंकि एक प्रेमी निर्माता के रूप में तू जानता हैं कि सबसे अच्छा क्या है।

दिन 29

पीड़ा पर प्रतिक्रियाएँ और लाभ

[यह प्रार्थना 2017 से सताव और पीड़ा ब्लॉग पोस्ट श्रृंखला का सारांश है, जो obeygc2.com पर मुफ्त डाउनलोड के लिए उपलब्ध फ़ाइलों में से एक है। तुझ उस दस्तावेज़ में इन सभी विनतियों के लिए बाइबल संदर्भ पा सकते हैं।]

हे प्रभु, तू मेरे जीवन में आने वाली कठिनाइयों का अच्छी तरह से जवाब देना चाहता है। कृपया अपने आत्मा से मुझे आपको प्रसन्न और महिमामय होने में मदद कर रें और अप्रिय परिस्थितियों का सामना करने पर इन चीजों को करके मुझे मेरी वफादारी और परिपक्वता में वृद्धि कर:

इस पर अपने दृष्टिकोण के बारे में सोच;

मैं तेरी प्रतीक्षा करूँ और तेरे विश्राम के लिए तुझ पर ही भरोसा करूँ;

मैं तुझ में आशा रखूँ और तेरी ही खोज करूँ;

मैं तुझे ही चुपचाप खुद को सौंप दूँ;

मैं विनम्रतापूर्वक तुझे और मानवीय मथ्यस्थकों को प्रतिउत्तर दे पाऊँ;

मैं कुड़कुड़ाना या शिकायत न करूँ;

मेरे जीवन की जाँच कर;

मैं तेरी आराधना करूँ;

मैं तुझे ही पुकारूँ;

मैं न डरूँ;

न शोक करूँ;

कठिनाई में भी सेवा के लिए अपने जीवन को समर्पित करूँ;

मुझे राज्य के उद्देश्यों से ध्यान भटकाने से बचा;

इसके बीच में तुझे प्रसन्न करने का प्रयास करूँ;

भले कार्य करूँ, भले ही इसका परिणाम सताव हो;

मैं अत्यधिक आनन्द मनाऊँ;

और खुश रहूँ;

मैं मेरे विरुद्ध कार्य करने वाले दुष्ट लोगों का विरोध न करूँ;

मैं मेरे शत्रुओं से प्रेम करूँ;

उन लोगों के लिए प्रार्थना करूँ जो मुझ पर अत्याचार करते हैं;

मैं मेरे परिवार के सदस्यों सहित किसी से भी अधिक तुझे ही प्रेम करूँ;

तुझे ही जीवन में किसी भी चीज़ से अधिक महत्वपूर्ण मानूँ;

मैं तेरे लिए सब कुछ बलिदान करने के लिए तैयार रहूँ;

मैं मेरी अपनी इच्छा और इच्छाओं को अस्वीकार करूँ और प्रतिदिन तेरे उद्देश्यों को पूरा करूँ;

मैं स्वार्थी या अहंकारी न बनूँ;

मैं विनम्रतापूर्वक दूसरों को अपने से अधिक महत्वपूर्ण समझूँ और उनके हितों को पूरा करूँ;

मैं अपने लाभ के लिए अपने पद का उपयोग न करूँ, बल्कि दूसरों की सेवा करूँ;

मैं दूसरों के लाभ के लिए कष्ट सहने को तैयार रहकर स्वयं को विनम्र बनाऊँ;

और उत्साहित रहूँ;

मैं सार्वजनिक और निजी तौर पर यीशु की सुसमाचार का प्रचार करना जारी रख सकूँ;

मैं सार्वजनिक और निजी तौर पर दूसरों को राज्य जीवन के बारे में सिखाना जारी रख सकूँ;

मैं जहाँ भी जाऊँ राज्य का प्रचार करूँ;

मैं राज्य के बारे में निर्देश का स्वागत करूँ, तब भी जब यह कष्ट की ओर ले जाता है;

अन्य विश्वासियों के लिए पीड़ा के बीच में आदर्श सेवा;

मसीह के उन अनुयायियों का अनुकरण करूँ जो तेरी सेवा करने के लिए पूरी तरह से कष्ट सहते हैं;

मैं दृढ़ रहूँ, विश्वास प्रदर्शित करूँ और धैर्य धरूँ;

मैं आत्मा से भर जाऊँ;

मैं परीक्षाओं को अपने साथ और अपनी खातिर पहचान के रूप में देखें;

मैं राज्य की सच्चाइयों के लिए बोलना जारी रख सकूँ जिन पर मैंने विश्वास किया है;

मैं हिम्मत न हारूँ;

मेरी नजरें मेरी वर्तमान स्थिति के बजाय अनदेखी और शाश्वत वास्तविकताओं पर केंद्रित रहें;

मैं दूसरों को ठोकर न खिलाऊँ;

मैं हर प्रकार की अप्रिय परिस्थिति और परिस्थिति में बहुत धैर्य दिखाऊँ;

मैं पवित्रता, समझ, धैर्य और दयालुता का निर्वाह करूँ;

मैं सच्चे प्रेम, सच्ची वाणी और परमेश्वर की सामर्थ्य और आत्मा से भरपूर जीवन प्रदर्शित करूँ;

मैं किसी भी प्रतिक्रिया की स्थिति में आत्मिक युद्ध में धर्मी जीवन व्यतीत करूँ;

मैं झूठा समझे जाने, पीटे जाने, गरीब, दुखी होने और मरने से संतुष्ट रहूँ;

मैं राज्य के लिए कड़ी मेहनत करूँ;

मैं हर प्रकार की कठिनाई, खतरे, असुविधा और दुःख का सामना करने के लिए तैयार रहूँ;

मैं दूसरों के कल्याण के लिए चिंतित रहूँ;

मैं अपनी कमजोरी पर घमंड करूँ;

मैं कमजोरियों, अपमान, कठिनाइयों, उत्पीड़न और कठिनाइयों में प्रसन्न रहूँ;

मेरे कष्टों में महिमा पाऊँ;

तेरे दुःखों में भागी होऊँ;

अपने आप को वध और बलि देने योग्य भेड़ समझूँ;

मैं अपनी स्वतंत्रता खोने के लिए तैयार रहूँ;

मैं मसीह को जानने की तुलना में किसी भी सांसारिक चीज़ को हानि के रूप में गिनूँ;

मैं तेरी पीड़ा और मृत्यु में स्वेच्छा से भाग लूँ;

मैं सेवा के बलिदान के रूप में आत्म-अनुशासन के माध्यम से जानबूझकर दुख उठाऊँ;

मैं तुझे प्रसन्न करना चाहता हूँ;

मैं अपनी सेवा और बलिदान को सबसे कम समझूँ जो मैं तेरे लिए कर सकता हूँ;

मैं तेरे साथ स्वयं मर जाऊँ;

मैं दृढ़ रहूँ;

मैं तेरे आदेशों का अभ्यास करूँ;

मैं तेरे राजदूत के रूप में सेवा करूँ और दूसरों के सामने तेरी इच्छाओं और तरीकों का प्रतिनिधित्व करूँ;

विश्राम के लिए पुकारते हुए और आँसुओं के साथ तुझ से प्रार्थना करूँ;

मैं आदरपूर्वक तेरे प्रति समर्पण;

अतीत के दुखों के प्रति तेरी वफ़ादारी को याद रखूँ;

उन अन्य लोगों के साथ खड़े हो जाऊँ जो दुखी हैं और उनके साथ इसमें शामिल हो जाऊँ;

मैं मेरी संपत्ति के खोने को भी खुशी से स्वीकार करूँ;

मैं विश्वास के द्वारा जा सकूँ;

मैं तेरी सेवा करने या तेरे लिए बोलने से पीछे न हटूँ;

खुद का बचाव करने के लिए अपनी स्वर्गीय नागरिकता छिपाने के बजाय तेरे लोगों के साथ दुख सहना चुनूँ;

मैं तेरे खजानों को इस दुनिया के खजानों से अधिक महत्व दूँ;

मैं किसी भी बलिदान को देना स्वीकार करूँ जिसे करने के लिए तू मुझे बुलाता है;

मैं अपने पूरे हृदय, आत्मा, मन और शक्ति से परमेश्वर से प्रेम करूँ;

मैं तेरी आज्ञाओं में बने रहूँ;

मैं तेरा स्वागत करता हूँ और तेरे लिए हर प्रकार के विरोध और दर्द और परेशानी को चुनूँ;

मैं पाप के विरोध में संघर्ष करूँ, यहाँ तक कि मृत्यु तक;

अनुशासन को हल्के में न लूँ;

मैं हिम्मत न हारूँ;

मैं कठिनाई को सहन करें, इसके लाभों को जानूँ;

मैं तेरा सम्मान करूँ और तेरे अधीन रहूँ;

मैं इसे पवित्र आनंद समझूँ;

होने दे कि धैर्य अपने पूरे परिणाम तक पहुँचे;

मैं धैर्य रखूँ और दृढ़ रहूँ;

मैं अन्याय से भरे दुख के सामने डटा रहूँ लूँ;

मैं धैर्यपूर्वक अन्याय से भरे दुख को सह लूँ;

मैं कठिनाई से बचने के लिए पाप न करूँ या किसी को धोखा न दूँ;

मैं उन लोगों पर हमला न करूँ जो मुझे पीड़ा पहुँचाते पहुँहैं;

मैं किसी को धमकी न दूँ;

यह जान कर कि तू धर्म से न्याय करेगा, मैं अपने आप को तुझे ही समर्पित करूँ;

मैं धमकियों से न डरूँ या भयभीत न होऊँ;

मैं प्रभु के रूप में तेरा आदर करूँ;

मैं नम्रता और सम्मान के साथ मेरी आशा के लिए गवाही देने के लिए तैयार रहूँ;

मैं अपने आप को दु:ख उठाने के उद्देश्य से तैयार करूँ जैसा तूने किया और तेरे दृष्टिकोण के साथ ऐसा करूँ;

मैं तीव्र प्रलोभनों और परीक्षाओं पर आश्चर्यचकित न होऊँ क्योंकि वे अपेक्षित और सामान्य हैं;

मैं अपने दुखों को साझा करने के अवसर का आनंद लूँ;

मैं सतर्क और शांत दिमाग का बना रहूँ;

मैं शैतान का विरोध करूँ, अपने विश्वास में दृढ़ बना रहूँ;

मैं ध्यान रखूँ कि दुनिया भर में विश्वासी अपने विश्वास के लिए दु:ख उठा रहे हैं;

मैं भविष्य के दु:खों से न डरूँ; और

मैं मृत्यु तक वफादार रहूँ।

जब मैं इस तरह से प्रतिक्रिया देता हूँ, तो मैं विनती करता हूँ कि तू दु:ख के दौरान और उसके बीच में मेरे साथ बना रहे:

मुझे दूसरों को आशीष देने की अवस्था आने दे;

मुझे और मेरे विश्वास को परख, शुद्ध कर और सिद्ध कर;

मुझे आशा दे;

मुझे दिखा कि तेरा प्रेम अजेय है और तू भला है और मुझे बस तेरी ही ज़रूरत है;

मुझे दिखा कि तू सुन रहा है और पास है;

मुझे आशीष प्रदान कर;

मुझे विश्राम प्रदान कर;

मुझे दूसरों को विश्राम देने के लिए तैयार कर;

मुझे स्वर्ग के राज्य का उत्तराधिकारी बनने के लिए तैयार कर;

स्वर्ग में मेरा प्रतिफल बढ़ा;

मैं तुझे में अपने सच्चे और वास्तविक जीवन की खोज कर सकूँ;

तुझे और करीब से जानने में मेरी मदद कर;

मुझे तेरा जैसा बनने में मदद कर और तेरे साथ पूरी तरह से पहचान में आने दे;

मुझे तेरे चरित्र के बारे में और अधिक जानने में मेरी सहायता कर;

मेरे लिए अपने प्रेम की स्थिरता और शक्ति का प्रदर्शन कर;

तुझे में मेरा जीवन को बचा;

मुझे और फलवंत होने का कारण बना;

मुझे शांत रहना सिखा;

मुझे अपने भविष्य में अनंत काल के विश्राम और आशीष की आशा करना सिखा;

मुझ पर अपना विश्वास और मेरा सम्मान प्रदर्शित कर;

मुझे आनंद दें;

अपने संदेश की व्यापक रूप से घोषणा कर;

दूसरों को उनके विश्वास में प्रोत्साहित कर;

विश्वास में मेरे भाइयों और बहनों को प्रेम दिखा;

राज्य के प्रति मेरी योग्यता दिखा;

तू अपने न्याय के लिए जगह बना;

मुझमें अपनी सामर्थ्य दिखा;

मुझमें अपना जीवन प्रदर्शित कर;

मुझे मेरे भविष्य के महिमामयी होने का पूर्वाभास दें (जैसा कि तेरे पुनरुत्थान में हुआ था);

दूसरों को अपनी ओर आकर्षित कर;

मेरे बलिदानपूर्ण सेवकाई के लिए दूसरों से धन्यवाद का परिणाम;

अपने द्वारा मुझे प्रतिदिन नया कर;

अनंतकाल का प्रतिफल प्रदान कर;

मेरी असलियत साबित कर;

मेरी सेवकाई को मान्य कर;

मेरे शब्दों को मान्य कर;

मेरे जीवन को ज्ञात कर;

दूसरों के जीवन को समृद्ध बना;

दिखा कि मेरी सच्ची दौलत कहाँ है, मेरा मन कहाँ है;

मुझे विनम्र बनाए रख;

मुझे दृढ़ता, धर्मी चरित्र और आशा दे;

मुझे आदर दे;

मुझे दिखा कि मैं तेरा बालक हूँ और तेरी महिमा का उत्तराधिकारी हूँ;

तुझ में मेरे विजयी जीवन का प्रदर्शन कर;

सुसमाचार को आगे बढ़ा;

साथी विश्वासियों को विश्वास दें;

मेरे विश्वास को तुझ में प्रदर्शित कर, जो मेरी धार्मिकता है;

मुझे अपने पुनरुत्थान सामर्थ्य दिखा, और इसमें भाग लेने में मेरी सहायता कर;

अपने जीवन तक पहुँच प्रदान कर और मुझे अनंत काल तक तेरे साथ शासन करने में मदद कर;

मुझे खड़े रहने की सामर्थ्य प्रदान कर;

मुझे महिमा और सम्मान का ताज पहना;

मुझे सिद्ध कर;

मुझे आज्ञाकारिता सिखा;

मेरी प्रार्थनाओं पर विशेष ध्यान दे;

मुझे बेहतर और स्थायी संपत्ति का अनुभव करने में सक्षम बना;

अपने वायदों को प्राप्त करने का मार्ग प्रदान कर;

उद्धार का मार्ग बन;

दिखा कि संसार योग्य नहीं है, लेकिन तू तो हैं;

अद्‌भुत जीत का अवसर प्रदान कर जो तुझे महिमा देगी;

मुझे अनुशासन सिखा;

मेरी पवित्रता को गहरा कर;

मेरे जीवन में धार्मिकता और शांति की फसल पैदा कर;

धीरज उत्पन्न कर, मुझे सिद्ध कर, और मुझे तुझ में ही पूर्ण बना;

मैं तुझे ही तेरी करुणा और दया प्रदर्शित करने में सक्षम बनाऊँ;

मेरे विश्वास की वास्तविकता साबित कर;

प्रशंसा, महिमा और आदर का फल अपने पास ला;

मुझे तेरा अनुग्रह पाने में मदद कर;

मेरी बुलाहट को पूरा कर;

राज्य के शत्रुओं को लज्जित कर;

मुझे पापों के आकर्षण से दूर रख;

मुझे अपनी मर्ज़ी और इच्छाओं के लिए पूरी तरह से जीने का कारण बना;

मेरे भविष्य के आनंद को बढ़ा;

मेरे जीवन में अपनी महिमा और पवित्र आत्मा की परिपूर्णता बढ़ा;

मेरी बहाली, मजबूती, दृढ़ता और स्थिरता को पूरा कर;

मुझे विजेता का मुकुट प्राप्त करने में सक्षम बना; और

मेरे जीवन में तेरे भले उद्देश्यों को प्राप्त कर।

ये चीजें केवल तेरी दया और कृपा से ही हो सकती हैं। तेरी दया और अनुग्रह के लिए धन्यवाद!

दिन 30

सुनना, समझना, ध्यान देना

हे प्रभु, मुझे तुझ पर अपना ध्यान पूरी तरह से बनाए रखने के लिए आलौकिक रूप से सशक्त क्षमता दें ताकि मैं तेरे इरादे के जरा सा भी संकेत न चूकूँ। होने दे कि मेरा ध्यान संवेदनशील और अटल हो। मुझे तेरी हल्की सी झलक या इशारा समझने की क्षमता दे। मुझे हुड़दंग और भ्रम के बीच भी तेरी धीमी आवाज़ को

पहचानने की क्षमता दे। मेरे आस-पास तेरी गतिविधि को समझने और उसका अनुमान लगाने के लिए मेरी आत्मिक इंद्रियों को अनूकुल कर, और मुझे पल-पल अपनी प्रतिक्रियाओं के लिए तेरे मार्गदर्शन को समझने की बुद्धि दें। जीवन के हर विवरण के प्रति तेरी निरंतर चिंता के लिए धन्यवाद।

घर की याद आना *(मारानाथा!)*

हे पिता, मैं तेरे छुटकारे के पूरा होने की लालसा में सारी सृष्टि में शामिल हो गया हूँ। मैं नई सृष्टि की पूर्णता को पाने के लिए व्यथित हूँ। मैं अपने नए शरीर की सिद्धता की चाह रखता हूँ। मैं उस दिन के लिए भूखा और प्यासा हूँ, जब मैं पूरी तरह से, आमने-सामने, तेरी सारी महिमा को न देख लूँ। मैं सारे रिश्तों के नए होने कामना करता हूँ। मैं अनंतकाल के दिन को रोशन करने के लिए तेरी उपस्थिति की स्थायी और आंतरिक जागरूकता की कामना करता हूँ। मेरी गहरी इच्छा तेरी महिमामय वापसी को लेकर है। जल्दी आ! *मारानाथा*!